



# ओटवकुषल

(वाँसुरो)

मल-कृति

जी० शकर कुरुप

रूपांतर

जी० नारायण पिल्लै

लक्ष्मीचन्द्र जैन



भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

लोकोदय ग्रन्थमाला प्रकाशक २३५  
सम्पादक ए० नियामक  
लक्ष्मीचन्द्र जैन



Lokodaya Series Title No 235

OTAKKUZHAL

(Poems)

G Sankara Kurup

Bharatiya Jnanpith Publication

First Edition 1966

Price 8 00

©

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

प्रधान कार्यालय

६ अलीपुर बाक प्लेस कलकत्ता २७

प्रकाशन कार्यालय

दुर्गाकुण्ड मार्ग, वाराणसी-५

विक्रय-केन्द्र

३६२०/२१, नेताजी सुभाष भागे दिल्ली ६

प्रथम संस्करण १९६६

मूल्य = ००

मुद्रक

शानेन्द्र शर्मा

जनबाणो प्रिंटेर्स देप्ट पब्लिशर्स प्रा लि,

१७८, रवीन्द्र सरणी, कलकत्ता-३

हो सकता है कि कल यह वंशी  
मूक होकर काल की लम्बी कूड़ेदानी में गिर जाये  
या यह दीमकों का आहार बन जाये या यह  
मात्र एक चुटकी राख के रूप में परिवर्तित हो जाये ।  
तब कुछ ही ऐसे होंगे जो शोक निश्वास लेकर  
गुणों की चर्चा करेंगे ;  
लेकिन लोग तो प्रायः वृद्धियों के ही गीत गाएँगे ।  
जो भी हो मेरा जीवन तो तेरे हाथों समर्पित होकर  
सदा के लिए आनन्द लहरियों में तरंगित हो गया  
धन्य हो गया ।

मुखपृष्ठ ई अल्काजी

तूने अपनी साँस की फूँक से  
उत्पन्न कर दी है प्राणा की सिहरन  
इस नि सार खोजली नली में । (जी गवर कुरूप)

(मुखपृष्ठ की रचना करते श्री अल्काजी ने वशी की जगह वशी ध्वनि का चुनाव है एक छायावृत्त पत्ती के रूप में प्रकृति के मिखरे हुए अनक उपादानों में से—  
कि वशी का रूप चाहे जितना आधुनिक और सूक्ष्म बयो न हा उस कल्पनालोक तक नहीं पहुँचाएगा जो महाकवि कुरूप की गीतात्मक प्रकृति से सम्पन्न है और आटमकुपल् का प्रतीक भी ।)

जा के सामने आ रही है। इस काव्य-मग्न का प्रकाशन भारतीय साहित्य के इतिहास की बड़ी घटना है। इस अवसर पर यदि भारतीय ज्ञानपीठ का विरोध और गौरव अनुभव हो, तो यह स्वाभाविक है।

इस घटना के कितने कितने आयाम हैं। यह, कि मग्न भारतीय साहित्य एक इकार्ड के रूप में देखकर उसके मूल्यांकन का प्रयत्न दश में पहला बार है, कि, एक निश्चित विधि विधान के अन्तर्गत भारतीय साहित्य की कृति का निष्कारित अवधि में प्रकाशित मजनामय साहित्य की श्रेष्ठ उपलब्धि के रूप में ध्यान उस कवि और उसकी कृति की ओर आर्पित किया गया है, कि अपेक्षा है कि इस कृति का अनुवाद प्रकाशन हिन्दी का वास्तविक प्रथम दश की साहित्यिक उपलब्धि का आदान प्रदान का साथ ही माध्यम प्रमाणित होगा कि, इन प्रकाशन में यह प्रमाणित होगा कि दिल्ली में जनता और ठा हिन्दी भाषा भाषी साहित्यकार (दिल्ली में इमलिए कि, यही ही इस प्रकाशन का अनावरण पहली बार हो रहा है) मूल मलयालम का दक्षिणगरी लिपि माध्यम से पढ़ कर दूँगा और विमुक्त होगा कि जिस अखिल भारतीय सम्कृति और सांस्कृतिक स्पन्दन का ध्यान कही जा रही है साहित्य के क्षेत्र में वह कारी अपना नहीं है ठाम यथाय है क्योंकि भाषा छन्द विधान, भाव निधि इतने आने-पाने लगे हैं जम उसकी अपनी भाषा की श्रेष्ठ कृतियाँ की भावभूमि मलयालम के माध्यम से प्रस्तुत की जा रही हैं—यद्यपि कहा दिल्ली, और कहीं और।

कृतिकार, महाकवि गङ्गुलु का नाम इन पंक्तियों में अभी तक लिया नहीं गया। केरल और दिल्ली के हृदय के इस सम-स्वरीय स्पन्दन के विधाना है। आन्कुरुपुल् का साहित्यिक अर्थ मलयालम में, बाँस की नला' है हिन्दी में हमने उसे बाँसुरी कहा है, अर्थात् बाँस—बाँस की बनी। कवि का नाम

‘शंकर’ और कृति का नाम ‘वसी’—जसे देश का सारा दासनिव, साहित्यिक, सांस्कृतिक चित्र फलक एक प्रकाश बिंदु के आलोक में जगमगा उठा ।

पुरस्कार के लिए इस कृति का चरण ‘सवश्रेष्ठ’ के रूप में प्रकाशन-अवधि की सीमाया से बाधित है, यह बात ध्यान में रख लेना आवश्यक है । पुरस्कार विधान के अंतगत, १९६५ के पुरस्कार के लिए वे ही कृतियाँ विचारणीय थीं जिनके लेखन जीवित हों, जो सजनात्मक साहित्य की कोटि में आती हों और जिनका प्रकाशन सन् १९२० से १९५८ के बीच हुआ हो । कृति के चरण की पद्धति यह है कि भारतीय सविधान विहित १४ भाषाओं के लिए एक-एक ‘भाषा परामश समिति’ है जो अपनी भाषा की एक कृति को ‘सवश्रेष्ठ’ के रूप में चुन कर, भाषा वग समितियाँ के विचाराय प्रस्तुत करती है । भाषा वग समितियाँ का गठन इस प्रकार होता है कि परस्पर सम्बद्ध क्षेत्रों की दो-दो या तीन-तीन भाषाओं का एक वग बनाया जाता है, क्योंकि (अपनी मातृभाषा के अतिरिक्त पडास के भाषाचल की भाषा जाननेवाले समीपक सुविधापूर्वक मिल जाते ह) जो सम्बंधित भाषा-परामश समितियाँ द्वारा पुरस्कृत दो या तीन कृतियों पर विचार करते ह और उनमें से एक ‘श्रेष्ठ’ को चुन लेते ह । इस प्रथम पुरस्कार के सदर्भ में ऐसी ५ वग समितियाँ भी थीं जिन्होंने एक-एक कृति को चुना, और अन्तिम निष्पायक मंडल—‘प्रवर परिषद्’—के विचाराय प्रस्तुत किया । प्रवर परिषद् ने द्वि भाषी साहित्यिक समीक्षकों से कृतियाँ का पारस्परिक मूल्यांकन करवाया, एक विशेष आधार पर, इनका पुनर्मूल्यांकन करवाया गया हिंदी-अनुवाद भी सामने प्रस्तुत रहा, अन्तिम निष्पाय से पहले सम्बंधित भाषा समितियाँ के संयोजक और कृतियाँ के हिंदी अनुवादकों को आमंत्रित करके प्रवर परिषद् ने उन्हे अनुशासित कृतियों के सबंध में विचार विनिमय किया, प्रश्नात्तर हुए मूल कृतियों को चुने हुए अंशों के पाठ द्वारा यह जानने का प्रयत्न किया कि अनुवाद में मूल के छंद, स्वर लय की जा प्रति-रनिया नहीं आ पाई वे क्या ह—आदि आदि । इस प्रकार जो कृतियाँ अन्तिम चरण में विचारणीय थीं, उनमें से प्रवर परिषद् ने सब-सम्मति से महाकवि कुस्न की इस कृति ‘ओटक्कुपन’ का चरण सवश्रेष्ठ के रूप में किया ।

प्रत्येक सभव प्रयत्न किया गया कि पुस्तक का चरण सवथा निष्पक्ष और प्रामाणिक रहे । हमें प्रसन्नता है कि भारतीय ज्ञानपीठ और प्रवर परिषद् की निष्पक्षता और प्रामाणिकता के विषय में कहीं कोई सन्देह नहीं रहा । कृति के चरण के विषय में कहीं कोई मत भेद हो सकता है, वह प्रत्येक पुरस्कार के सम्बंध में सदा रहा है ।

अनुवाद के प्राह्य को आधार बना कर रूपांतर प्रस्तुत किया जा सका है श्री भट्टतिरि ने अपने अनुवाद में हिन्दी की छन्द और लय ध्वनि देने का प्रयत्न किया। श्री जी० नारायण पिल्ल की लगन, उनकी क्षमता और श्रम बहु सहायक रहे। वह दो बार बलकृष्ण आये, कुछ दिन रहे और रूपांतरण लिए मूल के शब्दा और भावा का स्पष्टाकरण किया। सग्रह की एक कविता 'बन्दनम् परम्युक्' का अनुवाद, 'गता घयवाद' श्री दिनकर ने रडिया के दिल्ली केन्द्र द्वारा आयोजित सवभाषा सम्मेलन में प्रस्तुत किया था। उसे सामा सम्मिलित किया गया है। एक समय कवि द्वारा प्रस्तुत अनुवाद को सम्मिलित करने का एक विरोध प्रयाजन यह भी था कि कवि की एक कविता का छन्दव प्रवाह नमूने के रूप में सामने आये और कवि की अथ कृतिया के अनुवाद के लिए प्रेरणा मिले।

'ओटक्कुपल्' में सग्रहीत कविताओं का चयन कवि ने अपनी १६५० तक रचित कविताओं में से ही किया था। इधर के १५ वर्षों में कवि की प्रतिभा ने कौनसे सामर्थ्य और कौनसे आयाम प्राप्त किये ह, जब तक वह सामने न आये, कवि कुरुप कृतित्व का ठीक-ठीक मूल्यांकन नहीं हो सकता। भारतीय पानपीठ ने 'ओटक्कुपल्' के प्रकाशन के माय-माय कवि की चुनौती हुई परवर्ती दस कविताओं का एक दूध सफलन, उनकी एक कविता के आधार पर एक और नचिन्नेता' शीघ्र से प्रकाशित किया है जो 'सी प्रथम पुरस्कार-समर्पण-ममारोह' के अवसर पर पाठकों को भेंट किया जा रहा है।

कवि कुरुप ने अपने काव्य विकास के मन्वन्ध में जो वनव्य 'ओटक्कुपल्' का भूमिका के रूप में तयार किया था उसका अनुवाद सम्मिलित है। हा, श्री गुप्त नायर का विस्तृत, भावपूर्ण भूमिका का अनुवाद सम्मिलित नहीं किया गया विशेषकर इसलिए कि हिन्दी के पाठक और समीक्षक कृति का समग्रहण और मूल्यांकन स्वयं करें।



महाकवि और उनकी कविता के सम्बन्ध में विनोद कुल्लू ने यह बर यहाँ हम उस 'प्रगति' को उद्धरित कर रहे हैं जो कवि के सम्मान में समर्पित है

"भारतीय नानाशैली द्वारा प्रवर्तित एक लाख रुपये राशि का यह साहित्यिक पुरस्कार श्री जी० शंकर कुरूप का उनके मलयालम काव्य-संग्रह 'ओटुकुपल' के लिए समर्पित है जिसे पुरस्कार विधान के अंतर्गत गठित प्रवर परिषद ने सन १९२० से १९५८ के बीच प्रकाशित भारतीय भाषाओं के सजनात्मक साहित्य में विधिवत सर्वश्रेष्ठ निर्णय और घोषित किया है।

"ओटुकुपल का वरण यद्यपि सन १९६५ के लिए हुआ है, किन्तु इसका प्रकाशन वर्ष १९५० है। इस दृष्टि से यह कृति कवि के न केवल १९५० तक के सर्वश्रेष्ठ कृतित्व का प्रतिनिधित्व करती है अपितु उनके अगले १५ वर्षों तक के अधिक समय कृतित्व का पूरा परिचय देती है। 'ओटुकुपल' की कविताओं में भारतीय अद्वैत भावना का साक्ष्य है जिस कवि ने परम्परागत रहस्यवादी भावना के अंगीकरण द्वारा नहीं, प्रकृति के नानास्वरूपों में प्रतिबिम्बित आत्म-छवि की वास्तविक अनुभूति द्वारा प्राप्त किया है। चराचर के साथ तादात्म्य भाव की इस प्रतीति के कारण कवि कुरूप के रमानी गीति-काव्य में भी एक आध्यात्मिक और नैतिक उदात्त स्वर है।

कवि की काव्य चेतना ने ऐतिहासिक तथा वैज्ञानिक युगबोध के प्रति सजग भाव रखा है और उत्तरात्तर विकास पाया है। इस विकास-यात्रा में प्रकृति प्रेम का स्थान यथायथ ने समाजवादी राष्ट्रीय चेतना का स्थान अंतर्राष्ट्रीय मानवता ने लिया और इस मात्र की परिणति आध्यात्मिक विश्वचेतना में हुई जहाँ मानव विराट विद्वत् की समष्टि से एकता है जहाँ मृत्यु भी विकास का चरण होने के कारण वरेण्य है।

कुरूप त्रिम्बा और प्रतीको क कवि हैं। उन्होंने परम्परागत छंद विधान और संस्कृत निष्ठ भाषा को अपनाया परिमार्जित किया और अपने चिन्तन तथा काव्य प्रतिबिम्बा के अनुरूप उन्हें अभिव्यक्ति की नयी सामर्थ्य से पुष्ट किया। इसीलिए कवि का कृतित्व काव्य में भी और शैली गिल्प में भी मलयालम साहित्य की विशिष्ट उपलब्धि के रूप में ही नहीं, भारतीय साहित्य की एक उपलब्धि के रूप में भी सहज ग्राह्य है।

कवि दीर्घजीवी हैं। शुभ भूयात् ।

—लक्ष्मीचन्द्र जैन

संपादक—नियोजक, लोकोदय प्रथमालय



महाकवि जी शकर कुरुप



## मेरी कविता

प्रकृति की कनिष्ठा सतान हाने के कारण विश्व की जपेक्षा मनुष्य आयु में बहुत छोटा है। आज भी उसका जीवन शिशु-महज कौतुक का न भरा है। रूप, नाद, रस, गंध तथा स्पर्श के द्वारा उसकी चानेन्द्रिया निर्गन्तर जागृक हैं। ये चानेन्द्रिया हृदय तथा आत्मा का माहिन करनेवाला वस्तान्त मनुष्य का सदा मुनाता आयु है। यह वस्तान्त बिना भा लम्बा क्या न हो मनुष्य की आत्मा का वह कभी दुरा नहा लगता। आत्मा को तो इस बात का दुःख रहता है कि नयी अनुभविया वे वस्तान्त जाने के लिए मनुष्य के पास नयी इन्द्रिया नहीं ह। आत्मा में इस कारण एक प्रकार की असन्तुष्टि बनी रहती है।

चानेन्द्रिया द्वारा अवगत हानेवाला विश्व मनुष्य के हृदय में एक कौतुकपूर्ण जिनामा जाग्रत रहता है। जब कल्पना चिन्तन आदि मात्मिक प्रक्रियाओं द्वारा प्रकृति का प्रतिबिम्ब आत्मा पर पड़ता जाता है तब मनुष्य हृदय में जाग्रत जिनामा, उस प्रतिबिम्ब का विन्नेपण करने तथा उसका सचय करके एक कथा वस्तु के रूप में प्रकट करने के लिए तत्पर हो जाती है। विश्व विज्ञान तथा कला का यह सजीव स्नात किसी के भीतर निरन्तर प्रकृत रहता है ता किसी में तुषार कण की तरह प्रकट हो कर विलीन हो जाता है। मेरी आत्मा के किसी उच्च स्तर पर आज भी वहनेवाने उस स्नात न ही कदाचित्त मेरे हृदय में प्रकृति एवं मनुष्य-जीवन का ध्यान से देखने तथा उनका अध्ययन व आस्वादन करने का कौतुक उत्पन्न किया है। यह आत्मोपना का भाव ही मेरी अकिंचन तथा अपूर्ण कविता का उत्पन्न है।

कुन नागा का मन्तव्य है कि वनानिक अभिन्नता बढ़ने के साथ विनक्षणता कम हान लगती है तथा चिन्तन-गति के प्रहार में कल्पना का प्रभाद नह जाता है। मूय यह मायना ठीक नहीं लगता। मूय मन्त के सम्बन्ध में मनुष्य की चानेन्द्रिया जागृकारी प्रकृत बढ़ गयी है। क्या उस जागृकारी के कारण पथी तथा यह मनुष्य की दृष्टि में और भी अधिक रम्य नहीं बने ह ? अपने प्रमत्त मूय पर प्रेम की उष्मता लिए अनन्त आकाश में कभी चुक्कर और कभी भीषे जिनिमय देखने-वाला नित्य प्रेमा मूय तथा ऋनु-परिचितन की विचित्रता जिसे अपनी निमिर

वेशागशि को पीठ पर फलाये विविध रंगों में सजकर विविध शब्दा के साथ स्वयं घूम घूम कर नृत्य करनेवाली पृथ्वी—इन सबके भव्य काल्पनिक चित्र मेर लिए आज भी दशनीय है। एक क्षुद्र 'सिल' रमणीय सुन्दरी शकुनला के रूप में विवसित हो जाता है। क्या इस वैज्ञानिक सत्य में कल्पना की उड़ान के लिए स्थान नहीं है? वास्तव में विज्ञान से कल्पना का क्षेत्र विस्तृत होता है तथा कौतुक बढ़ता है। कल्पना के दिना की बात है। इडव<sup>1</sup> मास की अंधेरी रातों में जग में अकेला अपने छोटे घर के बरामद में बैठकर घने बालू की गाद में निवन कर उसी में छिड़ जानेवाली मित्रली का दयता तो न जाने क्या, उड़ल पड़ता। आज मैं विजली से जनमिन्न नहा हूँ। वह मेरे परिवार का ही जग का गयी है और इस समय मेरी मज के पास खड़ी हो कर, पतले काच के पीने अवगठन के भीतर से मेरी लखनी उसे देख-देख कर मुस्करा रही है। फिर भी विजुत की अप्सरा के प्रति तथा उसका वाद्य कर रखनेवाले मनुष्य के प्रति भरा कौतुक रती भर भी कम नहीं हुआ है। अपने शरीर पर हाथ लगाने की अविवेकी कृत्य करनेवाला का भस्म कर देनेवाली मित्रली क्या चरित्रगुण में दमयती से कम है? वैज्ञानिक अभिज्ञता कवि कल्पना के पखा का सत्य की रक्त शिराये प्रदान करती है और उनमें उड़ान की शक्ति भर देती है।

## कला-कविता

कौतुक से सजीव कल्पना विश्व तथा मनुष्य जीवन को अपनी जोर खींचने तथा अपने वाटुपाग में करने के लिए हाथ बढ़ाती रहती है। इसलिए उसके हाथ बलिष्ठ होते हैं और उसकी पहुँच दूर तक होती है। मन में विजली-जसी उठन वाली प्रक्रिया जब मनुष्य हृदय में और विश्व-हृदय में भी अपनी प्रतिध्वनि सुनने के लिए मञ्जलने लगती है तब हमें सबव्यापी एकता की अनुभूति होने लगती है। कल्पना तथा मानसिक प्रक्रिया का यह काय जितना शक्तिशाली होता है उतना ही कलाकार का महत्व भी बढ़ता है। कवि हृदय एवं प्रकृति के बीच मधुर कल्पना तथा जादू भाव युक्त संयोग से उत्पन्न होनेवाली अनुभूति का घनीभूत रूप ही कथावस्तु है। कल्पना कथावस्तु का प्राण है तो मानसिक प्रक्रिया है उसकी शिराओं में दौड़नेवाला जीव रक्त। कल्पना सुरभित तथा भाव निर्मित इन कथा-वस्तुओं में प्रकृति तथा मानव आत्मा की छाप स्पष्ट रूप से देख सकते हैं।

१ ऋषभ राशि का तदभव रूप। केरल के महीने का नाम।

यह छाप ही कलाकार का व्यक्तित्व है, कथावस्तुओं का प्रकाश ही कला है। अपने कलात्मक जीवन की अनुभूतियां से कविता के सम्बन्ध में यही कुछ मैं समझ पाया हूँ।

मेरे लिए कविता आत्मा का प्रकाश मात्र है। जैसे घूसर क्षितिज पर सध्या की छवि प्रतिबिंबित हाती ह वैसे ही बचुर छदों के पदबन्धा में कवि का हृदय प्रतिबिंबित हाता है। इस आत्म प्रकाश ने और कुछ बने या न बने, किन्तु एक कलाकार के लिए यह परमानन्द का कारण तो है ही। जैसे मद पवन हस के पखा को ऊपर उडा ले जाता है वैसे ही परमानन्द की यह अनुभूति एक कलाकार की आत्मा का भौतिक शरीर से परे उडा ले जाती ह। प्राचीन मनुष्य द्वारा गुहा भित्ति पर अंकित हिरन के चित्र का ही लीनिये। जब मनुष्य के हृदय से निकल कर वह हिरन अचल शिला पर दौडने लगा तब उसके माथ उस मनुष्य की आत्मा ने कितनी उडानें भरी हांगा। उम मनुष्य की अनुभूति का वह प्रतीक जब उसके मित्रा के हृदया का भी पुलकित करने लगा तब वे भी उसके निकट खिच आने लगे। इस प्रकार जा केवल एक व्यक्ति की आत्मा का प्रकाश था उसका एक सामाजिक मूल्य उत्पादन हा गया। एक कवि हाने के कारण अपनी अनुभूतियां का प्रकाश ही मेरे लिए परमानन्द का विषय है। और यदि उस आनन्द का आस्वादन अथ लोगा का भी करा सका तो वह मेरी विजय होगी। उससे मेरी कला को एक सामाजिक आधार मिलेगा। लोगा का उत्कष अथ लागा के द्वारा हा अथवा मेरे द्वारा। यह अनुभूति बसी वाछनीय है, और कितनी आत्म-सतृप्ति है उसमें।

कविता व्यक्तिगत अनुभवों का प्रकाश है। मुत्तुवळ' नामक अपने कविता-संग्रह में मने अपनी यह धारणा प्रकट की थी। जीवन के यथाय-अनुभवा के आघात से हृदय में उत्पन्न होनेवाली मधुर सवेदनाओं का कल्पना का आवरण पहनाकर प्रकट करना ही रचना है। उसमें व्यक्ति की प्रधानता रहती है। ब्ल्यूज़न ऐण्ड रियलिटी नामक एक पुस्तक मैंने पढी थी। उस पुस्तक में उपर्युक्त कथन का प्रतिवादन यह प्रमाणित करने के लिए किया गया था कि कला व्यक्ति की नष्टा समाज की सृष्टि है। ये दाना बातें परम्पर विराधी लगती ह। किन्तु वास्तव में है एक ही सत्य के दो पहलू। क्याकि व्यक्तिगत अनुभव सामाजिक अनुभवा का अंग है और व्यक्ति सामाजिक परिस्थितियां की उपज है।

मेरे गाव के हरे मदान, सुनहर खेत, ग्राम्य हृदय में मस्मक ऊंचा किये लडे रहनेवाला प्राचीन मंदिर दरिद्रता में डूबा हुआ प्रतिवेग, कवि कल्पना को अपने पास बुनानेवाली पहाडियां इहा सब ने मेरे हृदय को स्वप्ना से भर दिया था और फिर

उन स्वप्नों को विविध रंगों में सजाया तथावाणी देकर सजीव बनाया था। वह खेत जिसमें कगना-हँसिया की चमक दिखाई देती है, सिर पर धान का बाँधा लिए चलने में हाफती हुई वे वृषक ब्याएँ, अपनी चापड़ी की डगडियाँ पर बैठे रहनेवाले पुलवर 'सध्या'क शान्तिपूर्ण वातावरण में मधुरता फँलाता हुआ मंदिर में आनवाला शखनाद—इन सब से मेरे कल्पना-समुद्र में अव्यक्त एक विचित्र तरंग उठी है।

मरणामुख सामंती तथा पाण्डेयी पुरोहितों के अत्याचार के कारण ही गाँव का जीवन विकृत हो रहा है यह बात बचपन के उन दिनों में मेरी समझता था। ता भी सामंती पातण्डियाँ तथा उनके नियमों के प्रति मेरे हृदय में लगा मात्र आदर नहीं था। मर हृदय में जब मेरा व्यक्तित्व अकृगित हुआ तब उमका वायु तथा प्रकाश का आहार मिला मर गाँव के वातावरण से। इसीलिए मेरी कविता भी उस ग्राम हृदय का एक अंग है। उसके बाद जब अध्यापक का काम करने लगा तब एक और गाँव का प्रभाव मेरे हृदय पर पड़ा। तिरुविल्वामला का विद्यालय हृदय की तरह फला हुआ स्वप्न साद्र मंगल, टीला-बना में आत्मिचौनी खेलती हुई सकत स्थान पर आ मिलनेवाला नदिया, हाथा में जलकुम्भ लिए खड़े रहनेवाले मेघ तराई के भाग पर मद्गति से जानेवाली वैलगाडिया ये सब दृश्य हृ जिनके कारण एकांत में भी मैं एकाकी नहीं था। वे दृश्य मेरे व्यक्तित्व के विकास में सहायक रहे। एकाकी के पक्ष के अवसर पर दयालुता का उदारता की आगा में भाग पर मिट्टी की थाली रख कर दूर जा लड़े हान वाले नायाडिया<sup>१</sup> का देण कर मुझे दारिद्र्य तथा छूत छात की भूरता के साथ-साथ किसी समय स्थापित हुए जायें के उपनिवेश का स्मरण ही जाता ता भी मनुष्य का प्रकृति चित्र के कल्पित विदुआ की तरह ही मैं देख सका था। सम्भव है उस समय प्रकृति चित्र का सत्रेनाजा के उत्थाप से सजीव बनाने के लिए ही मेरा मन मनुष्य का डूबता था। किन्तु आज मैं प्रकृति चित्र से भिन्न मनुष्य के आदर्शमय अस्तित्व का वास्तविक चित्र देखता हूँ।

## वाल्यकाल स्मृतियाँ

एक ऊँजड़ गाँव के छोटे परिवार में मेरा जन्म हुआ था। आर्थिक दृष्टि से दरिद्र होने पर भी माता तथा मामाजी के वास्तव्य धन की गाँव में मैं पला था।

१ एक जाति का नाम जो अछूत मानी जाती है

२ एक अछूत जाति

पिताजी को अभी आस भर देव भी न पाया था कि उनका देहान्त हो गया। मेरे पिताजी मुझे शाकसागर में छाड़ कर चले गये और मेरे भीतर एक ऐसी रिक्तता छाड़ गये जिसकी पूर्ति असम्भव है। उनको स्मरण करते हुए मेरा मन कभी कभी किसी अदृश्य लोक में पहुँच जाता और आध्यात्मिक ज्ञान से अपनी झोली भर कर लौट आता। मेरी मा का हृदय प्रकृति के समान विशाल था। मेरे मामाजी चाहते थे कि उनका भानजा शीघ्रातिशीघ्र आदमी बन जाए। तीन बप की आयु में उहाने मेरा विद्यारभ कराया—एक आठ बप की आयु तक पढाया। उहाने न तो मुझे खेलने दिया, न सखाआ के साथ मिल कर उधम मचाने दिया। मेरा शारीरिक नहीं, मानसिक स्वास्थ्य उनका अभीष्ट लक्ष्य था। बचपन में ही आत्मी बन जाना कोई अच्छी बात नहीं है। किन्तु म उसी रास्ते पर चल रहा था। 'अमर कोश 'सिद्धरूपम' 'श्रीरामोदन्तम' आदि ग्रन्थ कठस्थ हो चुके थे। रघुवीर काव्य के कई श्लोक पढ चुका था। ऐसे समय सौभाग्यवश मेरे गाँव में एक प्राथमिक पाठशाला की स्थापना हुई। मामाजी ने मुझे पाठशाला के हमरे बग में भर्ती करा दिया। इस प्रकार कठिन अनुशासन से सस्कृत काव्यों को कठस्थ करने के काम से छुट्टी मिली। साथ ही साथ अपनी इच्छा के अनुमान स्वतन्त्र रूप से काव्य रसास्वादन की प्रेरणा मन में जाग उठी। भर मामाजी के पास भाषा टीका के साथ सस्कृत काव्या के बहुत से ग्रन्थ थे। म उन्हें पढने लगा। कविता के प्रति कौतुक बढ़ानेवाली उस शिक्षा के प्रति अपना ऋण म कृष्ण के साथ स्वीकार करता हूँ। सस्कृत काव्य-जगत में प्रवेश करने का मरे लिए उस समय खुला था, उसका मन आज तक बन्द नहीं हाने जिय तत्परता के रूप में म अपनी गुरुशिष्या देता रहूँ—यही मेरी कामना।

कविता की ओर मुझे उन्मुख कर देनेवाली एक और घटना १०५७ के (मलयालम सवन्) लगभग, जब म ग्यारह बप का कुजिजुट्टन तपुरान अपने कुट्ट नपूतिरि मित्रा की प्रेरणा से म इतिहास प्रसिद्ध मन्दिर में गया। (बरमान परमान द्वारा निर्मित कहे जानवाले प्रस्तुत मन्दिर के चारों ओर में बहुत-सी मन्दिर की भित्ति पर अति विचित्र कला प्रमिया का चित्रण चन्द्रनूरमन के हाथी का उत्सवपाप के लिए नाम जाह्लाद प्रकट किये गये कनी मज कृष्ण मन्त्रकवि के आश्रित

१ जयण्ड केरन का अन्तिम मन्त्र

२ एक प्रसिद्ध ब्राह्मण भवन



लक्षित हुए। “कवि बनना एक महान् दवी सिद्धि है” शायद मुझे उस दिन ऐसा लगा होगा। तपुरान् व प्रति मेरे मन में उत्पन्न आदर और पशपान वषों तक रहा। त्रिन्तु बाद का उनगी कविताआ में से कुछ ही ने कविता की हैमियत से मुयको आनन्दित किया है। शायद केवल भावगोता को ही (लिरिक) कविता मान रँठनवाली मेरी मुग्धता ही इसका कारण हा। साहित्य की ओर मुये आकर्षित करने वाली एक प्रमुव घटना थी यत् मुलाकात। मेरी मानाजी गव का अनुभव किया करती थी कि आठवें महीने में गकर चलो लगा। उसी तरह मातुन भी कहा करते थे कि उसने नवें वष में कविता लिखी। आज लज्जा के साथ मैं याद करता हूँ कि वे सब पद्य की हैसियत से भी भूल्यवान् प्रपास नही थे। जब म चौथी बक्षा में पढता था, अपने एक सहपाठी के प्रति उत्पन्न दृतपता पर, अपने पुराने घर के किसी कोने में बरकर सस्कृत के छन्दा में कुछ पक्कियाँ लिखी। (वह सहपाठी जिसने पीलिया के आगत से क्या में चक्कर गकर गिर जाने पर मुयका अपने कचे पर उठाकर एक मौल पँदल चलकर घर पहुँचाया था आज जिंदा नहीं है।) वे पक्कियाँ भी छन्दा के बचन में रहने की गिस्त प्राप्त अक्षर मात्र थी। एक कुटुम्बी मित्र ने जो वान्त छन्द का लक्षण दखकर मात्रा जीर पक्किया का मिलात थे, मरी जा प्रणामा की वह शायद उनके सौजय के कारण। ‘अक्षरश्लोक एव तुकवन्दी—ये दानो, विद्यार्थिया में स हम कुछ लागा के लिए मध्याह्न भाजन के स्थान पर होनवाना कायत्रम बना हुआ था। क्षीरमाग्न मन्यन की क्या का विभाजित कर म और मेरे मित्र ने जा गतक लिखा उसका सुनकर परम्पावर स्कूल क सातवी बक्षा के अध्यापक ने कहा— गतक मुनाने की परीक्षा आ रही है।”

उस अवस्था से ही मैं साम्यवाद के पक्ष में दरिद्रा के साथ रहा हूँ। प्रसिद्ध वाग्मी एव प्रशस्त समाजसेवक था एम० एन० नायर जा बाद में नविस सामाद्री की सवा में चले गये, मुवाटदुपुपा में मेरे अध्यापक थे। वे मुये बडे लाड-प्यार से प्रात्साहित किया करते थे। ब्रिटिश हिस्ट्री और अयगास्त्र वे ही पढ़ाते थे। साश्यलिग्म के पर्यायवाची गलो क तौर पर वे कभी समष्टिवात् और कभी समाजसमत्ववाद के शब्द इस्तमाल करत थे। ‘अपनी समस्त सम्पदा का समाज की सम्पत्ति बनाकर समान रूप से उपभाग करने के लिए जा सन्नद ह के लडे हा हा जायें’—एक दिन गुरुजी न हैमते हुए कहा। म उठ खडा हुआ। इसल तो शकर कुरुष की काई सम्पत्ति नष्ट हानेवाली नही है न?’ इसते हुए फिर जब गुरुजी ने पूछा तो म लज्जित भी हुआ ही। बाद को ही मुझे पता चला कि

एगिया के राष्ट्रा में मुश्ते कम सम्पत्ति रखनेवाले ही मेरे जस सम्पत्तिवाला से कही अधिक हैं। इस उन दिना आर्थिक शान्ति का द्वार खटखटा रहा था।

मामाजी ने मेरे हृदय में पानतपणा की जो लौ लगाई थी उसकी ज्वाला बढ़ती गयी, यही मेरे लिए बड़े मौभाग्य का विषय है। 'तिरुविल्वामला' में जब मैं अध्यापक बन कर गया तब मुझे इस बात का आनन्द था कि वहा रह कर अगरेजी भाषा तथा साहित्य मे परिचय करने का अवसर मिलेगा। मेरे कविता-संग्रह 'साहित्यकौतुकम्' के प्रथम भाग की कविताएँ 'तिरुविल्वामला' जाने के पहले की ह। मुझे उस समय ही लग रहा था कि मेरे मन के विकास के लिए आवश्यक प्रकाश मुझे अपनी उस समय की शिक्षा से नहीं मिला था। तिरुविल्वामला में आकर मने अपने अध्यापक मिना का गुरु बनाया और उनकी महायता से अंग्रेजी पढ़ना आरम्भ किया। टंगार और उमर खय्याम के अनिखित बन्त से अगरेजी कविया समालाचका के पास सविनय पहुँचने का माग इस तरह मेरे सामने न खुलता तो 'साहित्यकौतुकम्' की सीमा से कदाचित् म आगे न बढ़ पाता। यह नया माग मुझे सस्कृति की खान की आर ले गया। मेरे कल्पना क्षितिज का विस्तृत तथा आदम-बाध का विकसित करने में टंगार का जितना हाथ था उतना गायद किमी और का न रहा हो। उमर खय्याम 'हाफिज' आदि फारसी कविया से परिचय होने पर मुझे लगा कि उनकी कविताओं में कल्पना के परिमाण पर नहीं, प्रति-प्रतिपादन की रीति पर विशेष ध्यान दिया जाता है। अगरेजी साहित्य मुझे गीति के आलाक की आर ले गया।

मेरी आयु बीसवीं शताब्दी से केवल छह महीने कम की है। प्रथम विश्व-युद्ध के समय जमनी की विजया की वार्ता सुनता ता मेरा विवेक शून्य हृदय आनन्द से नाच उठता क्याकि उममें पराजय ही रही थी मेरी मातृभूमि को परा-तने कुचनने वाले ब्रिटिश साम्राज्य की। गांधीजी के नेतृत्व में हाने वाले स्वतंत्रता संग्राम तथा धार्मिक शान्ति ने मेरे हृदय में देश प्रेम का मंत्र फूटा। इस की आर्थिक तथा सामाजिक शान्ति और उमके द्वारा हाने वाली जनप्रगति से मुझे अत्यन्त आनन्द हुआ और मेरे हृदय में साम्यवाद की नींव पर सामाजिक व सांस्कृतिक संगठन का सकल्प धर कर गया। एबिसीनिया पर हाने वाले फामिस्ट अत्याचारा तथा जापान की चीन पर चढ़ दौड़ने की घृष्टता ने मेरी कल्पना का देग के प्राचीरा से निवाल कर मनुष्य मात्र के दुःख व अभिलाषाओं में साय देने की प्रेरणा दी। और फिर दूसरे विश्व-युद्ध के बाद मेरी मातृभूमि ने स्वतंत्र हाकर अपना सिर उठाया तो मेरा भी सिर ऊँचा हुआ। इतिहास

की इन घटना-बहुत पडिया के कारण मृत्यु से जीवन की ओर, अचकार से आलोक की ओर निरंतर प्रयाण करने हुए दंग के एक बाने में पैदा हो कर बढ़ने वाले एक व्यक्ति के हृदय में उठने वाली ममय की, शाण प्रतिध्वनि मेरी कविता में पायी जाती ।

तुच्छ पदविन्यास लिये अधीर हो कर पहले पहल जय मने साहित्य-संसार में पनापण किया तब मेरे आराध्य देव थे महाकवि बल्लत्तोल । "साहित्यमजरी" के बल्पना-मुरभित तथा मधुर भावा से भरे गीता ने मेरे हृदय को पहले ही मंत्र मुग्ध कर लिया था । महाकवि उल्लूर के रचना-वचिन्म ने मुझे चकित कर दिया था । महाकवि कुमारन् आशान की हृदय की गहराई की भाव-व्यञ्जना करने वाली कविताओं से परमानन्द का अनुभव मुझे बाद में हुआ । बल्लत्ताल के उपग्रह, नालप्पाटन तथा वेगवननायर बुध गुण की तरङ्ग साहित्य क्षितिज पर चमक रहे थे ।

मेरी कविता का रंग प्रवेश हुआ बल्लत्ताल की पवित्रा आत्मपापिणी में । मेरी प्रथम रचना पढ़ कर महाकवि ने बड़े प्रेम के साथ एक पत्र लिखा और मुझसे सम्बालकार की तडक भडक से दूर रहने को कहा । मेरी दूसरी रचना पढ़ कर उन्होंने रचना तथा पदवचन सम्बन्धी कई विरोध बातें ममनाइ । मेरी तीसरी रचना 'घनमेघ की पाटी पर इद्र धनुष की रखा खींचनेवाली प्रवृत्ति वाला के सम्बन्ध में थी । उसको पढ़ कर महाकवि ने अभिनन्दन का पत्र भेजा । उससे मेरा साहस बढ़ा । किन्तु अल्प समय के अन्दर ही बल्लत्ताल ने आत्मपापिणी का सम्पादन छाड़ दिया । उसके बाद कविता रचना के रहस्या को मीखने के लिए मैं और किसी के पास नहीं जा सका । जिनका सीहाद सुरभित सम्पन्न मेरे साहित्य जीवन में लाभदायक हुआ है उनमें सुप्रसिद्ध समालोचक सी० एम० नायर तथा ख्यातिनामा कवि कल्लमारताटि रामुण्णिमेनन के नाम उल्लेखनीय हैं । श्री रामुण्णिमेनन मुझे अपना भाई समझते थे । इद्रधनु तथा वृन्दावन' के ऊपर भर गीता की प्रशंसात्मक आलोचना करके सरदार के० एम० पणिकर ने मेरा उत्साह बढ़ाया था । एक बार उहाने 'एयालोजी आफ बल्ड पापट्री आदि पुस्तकें उपहार स्वरूप भेज दी थी । यही नहीं अवेपणम' आदि कई एक कविताओं का जप्रेजी में अनुवाद करके उन्होंने मेरा सम्मान किया । मेरे साहित्य जीवन के प्रारंभ में ही सरदार के० एम० पणिकर और थोड़े समय बाद से प्रिंस पल गङ्गुर्न् नम्पियार ने मेरा जो उत्साह बढ़ाया है उनका मैं वृत्तता के साथ स्मरण करता हूँ ।

१ बल्लत्तोल का कविता-संग्रह

मेरे विचार में, मेरी प्रारम्भिक कविताओं में जीवन का सञ्चार किया है, प्रकृतिप्रेम तथा देश भक्ति ने। प्रकृति के प्रति मेरा आकर्षण उसके साथ मेरा निकट सम्बन्ध, उसके साथ एकाकार हो जाने की अनुभूति तथा उससे प्राप्त प्रकृति के परे रहने वाली चेतना शक्ति का आभास इन सब की पूजा केवल पर ही साहित्य साधक में प्रवेश करने तथा उसके एक कोने में घेर करने में मैं समर्थ हुआ हूँ। 'साध्य नक्षत्र' जब हँसने लगा तब मेरा हृदय भी हँस उठा था। उसी समय मुझे अनुभव हुआ कि एक ही चेतना शक्ति हम दाना में विद्यमान है। इस अनुभूति से मुझे जा आनन्द हुआ उसका वर्णन करने की क्षमता 'साध्य-नक्षत्र' से 'अन्तर्दाह' तथा 'विश्वदर्शन' तक पहुँचने पर भी मेरी भाषा में नहीं है। तरंग-ताडित नदी में मम्बेदनाआ की उथल-पुथल मचाने वाले अपने हृदय का आभास दख पाना, सूयकान्ति के कम्पित अक्षरा में अपने भाव तरल अक्षरा का देव्य सकना, अरणोदय की प्रतीया में तपस्या करने वाले कमल के रूप में सत्य-सौंदर्य की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करने वाले अपने जीवन को देख सकना—मेरे लिए परमानन्द का कारण है।

श्री ए० वालकृष्ण पिल्ल के सम्पादन में निकलने वाली 'केसरी' पत्रिका में मेरे कविता-संग्रह 'सूयकान्ति' की समालोचना हुई थी। उस समय मैंने यह दिखाने की चेष्टा की थी कि उस समालोचना से मेरा कुछ बिगडा नहीं है। वास्तव में उससे मेरी कल्पना को बड़ी चोट लगी थी। रोमाण्टिक ढंग की कविताओं का सुन्दर संग्रह कहकर 'सूयकान्ति' की प्रशंसा करने के बाद केसरी ने 'रोमाण्टिक' कविता की खिल्ली उड़ाई थी। सम्प्रेष में समालोचक का कहना था कि जिस लेखनी का 'रियलिज्म' का नेतृत्व करना चाहिए वह पथ भ्रष्ट हो कर भटक रही है। इस समालोचना से मुझे दुःख भी हुआ क्षोभ भी। असमय में पढ़ कर कई दिना तक मैं हतोत्साह भी हुआ। मेरी कविताओं की वह प्रथम प्रतिकूल समालोचना थी। इस आघात के बाद 'मेरी कविता स' नामक रचना द्वारा मैंने अपनी कविता का सान्त्वना देने की चेष्टा की। यह नहीं कह सकता उससे मेरी कविता का कोई सान्त्वना मिला। चाहे जो हा, कहानियाँ व उपन्यासों में पायी जान वाली रियलिज्म कविता के लिए मुझे अच्छी नहीं जैची। प्रसंगवत्, मैं यहाँ पर एक लेख का उल्लेख करना चाहता हूँ जो 'जॉन वाव लण्डन' नामक साप्ताहिक में रिचर्ड चर्च ने लिखा है—'कविता व यथायवाद पर उस प्रसिद्ध समालोचक के विचार हमारे यथाय-भाग्यमी कवियों का ध्यान से पढ़ने चाहिए।'

उसके बाद मुझे ऐसा मानुष होने लगा कि कल्पना में जीवित रहने वाली कविता को नयी अनुभूतियाँ स सजा कर नये परिवेशों से प्रेरणा ले कर लावण्य व

चेतनापूर्ण रूप देना ही कवि का कर्तव्य है। इस अभिज्ञता का प्रथम तिन्धान था मेरा 'नाळे' (आगामी कल) नामक गीत। उसकी रचना शला 'रोमाण्टिक कवि' की थी ता उसका प्रतीक प्रदान किया था प्रकृति ने। परम्परा में प्राप्त अधिकार के बल पर मनमानी करने वाले मुट्ठी भर लोग के आंक स छूट कर जनता का स्वतंत्र वातावरण में रहने का अधिकार दिलाने वाले एव 'नाळे' की परिवर्तनवादी थी उसमें। केसरी क ममत्वपूर्ण प्रहार ने मुझे दुबल नहीं किया, बल्कि—यद्यपि मने उनक वहे माग का अवलम्बन नहीं किया—मुझमें आगे बढ़ने की शक्ति और और स्फूर्ति उत्पन्न की। (उस कविता का भरी नौकरी पर जो परिणाम हुआ उसके बारे में कहने की आवश्यकता नहीं।)

उस कविता के बाद के तीन चार वर्ष आलस्य तथा शारीरिक अस्वस्थता की पीडाओं में बटे। वह समय किसी प्रकार के रचनात्मक कार्य के लिए अनुकूल न था। एक-एकान्ती नाटक 'इरट्टिगुमुन्नु' 'कालम' 'नक्षत्रगीतम' आदि गीत तथा कई एक लेख वस ये ही सब उस समय की रचनाएँ हैं। दूसरे विन्व-युद्ध के पहले नई जाकाशा देग प्रेम का आदर्श अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण तथा मनुष्य की प्रमुखता में विश्वास ले कर जब प्रगतिशील विचार धारा सबसे फलने लगी तब मेरी कविता भी अपनी तन्त्रा से जाग उठी। 'निमिपम्' 'चैकतिरकळ' तथा 'मुत्तुकळ' 'इतळुकळु' आदि मेरे कविता संग्रहों में भारत की स्वतंत्रता के पूर्व के घुप छाया के प्रतिबिम्ब मिलेंगे। उसके बाद की अनुभूतियाँ सगहीन हैं—'वनगायकन' पथिकनटे पाट्टु, अन्तर्दाहम् वेळिळ्ळ परक्कळुम आदि में।

बुद्ध लोग का कहना है कि सूयकान्ति के साथ मेरी कविता का विकास बन्द हो गया है तो बुद्ध लोग यह भी कहत हैं कि नहीं सूयकान्ति के बाद मेरी कविता विकसित हुई है। किन्तु मरे लिए मेरी सभी कविताएँ मरे आत्म विश्वास का प्रतिबिम्ब हैं। सूयकान्ति मेरे इमशान का फूल नहीं बरन तारुण्य के गिल्लर पर मधुर सम्बेदनाओं से प्रेरित हो कर खिला हुआ मरा ही हृदय है। उसके बाद मैं वहाँ से भी ऊपर उठ गया हूँ। मेरी आखा ने नये दृश्य देखे हैं काना ने नई ध्वनियाँ सुनी हैं। मरे हृदय ने अपनी व्यक्तिगत परिधि को पार कर विश्वमात्र के जीवन के साथ एकाकार होने की चेष्टा की है। हा सकता है सूयकान्ति के बाद की मेरी कविताओं में आध्यात्मिक या लौकिक प्रेम-स्वप्ना का उमात् छलकता हो। किन्तु मैं दावा करता हूँ कि उन कविताओं में एक अधीर हृदय का स्पन्दन है जो मनुष्य की महत्ता में यथ करता है जिसमें सुन्दर भविष्य के स्वप्नों का उल्हास है जो मनुष्यता का मलय गिरता दल कर दु खित है और जो सौंदर्य बोध का मनुष्य जीवन के लिए मृतसजीवनी मात्र समझता है।

[ मूल ओ० शम्भु रूप । हिन्दी अनुवाद—गोविन्द विचार्य ]

## अनुक्रमणिका

१	ओटवकुपल्	बांसुरी	३
२	अम्मयेविटे ?	माँ कहाँ है ?	७
३	पुष्पगीतम् १	पुष्पगीत एक	११
४	पुष्पगीतम् २	पुष्पगीत दो	१६
५	साध्यतारम्	सध्या तारा	२७
६	पिनत्ते वसन्तम्	बाद का वसन्त	३७
७	वृन्दावनम्	वृन्दावन	४३
८	कुयिल्	कोयल	५३
९	काटटुमुल्ल	वन-जूही	५६
१०	एटे पुण्यम्	मेरा पुण्य	६५
११	निपल्	छाया	७१
१२	प्रभातवातम	प्रभात-समीर	७५
१३	मेघगीतम्	मेघगीत	८१
१४	आ मरम्	वह पेड	८७
१५	स्त्री	स्त्री	९५
१६	विलम्परम्	घोपणा	११३
१७	साक्षत्कारम्	साक्षात्कार	११६
१८	ओमन	मुन्ना	१२३
१९	जीवतम्	जीवन	१२७
२०	सूयकान्ति	सूरजमुखी	-
२१	एष्ट्रे वेळि	मेरा विवाह	-
२२	अवेपणम	अन्वेपण	-
२३	भगगीति	भृगगीत	-
२४	मति	यही बहुत है	-
२५	पक्जगीतम्	पक्ज-गीत	-
२६	"इन्नु बान् नाळ नी	'आज मैं, कल तू'	-
२७	शैशवम्	शिशु	-

२८	चन्द्रकल	चन्द्रकला	१८७
२९	निमिपम्	निमिप	१९१
३०	भूणुकळ	बुजुरमुते	१९९
३१	आरु पपय एरें	एक पुराना पन्ना	२०५
३२	कम्मक्षेत्रतिल	कमक्षेत्र में	२११
३३	चत्रवाळम्	क्षितिज	२१५
३४	पूजापुण्यम्	पूजापुण्य	२१९
३५	कालम्	काल	२२१
३६	एवरस्टें	एवरेस्ट	२२३
३७	नक्षत्रगीतम्	नक्षत्रगीत	२२७
३८	नाळे	आगामी कल	२२९
३९	विश्वहृदयम्	विश्व-हृदय	२३७
४०	सागरगीतम्	सागरगीत	२४१
४१	प्रतिकारम्	प्रतिकार	२४७
४२	रक्तबिन्दु	रक्त बिन्दु	२५५
४३	आरामतिल	उद्यान में	२५९
४४	बान्चम्म	कोञ्चम्मा	२६३
४५	आ चोयचिह्नम्	वह प्रश्न चिह्न	२६७
४६	मुत्तुकळ	मोती	२७१
४७	सतीघ्य	बह्पाठिनी	२७३
४८	अपिमुखत्तु	नदी-समुद्र सगम पर	२७९
४९	शवप्पेट्टि	शव-पेटिका	२८९
५०	भारतसन्देशम्	भारत-सन्देश	२९३
५१	कल्क्वरियुटे काव्यम्	कायने वा आदि-काय	३०३
५२	नायक्कन्	नायक्कन	३०९
५३	तूप्पुवारि	झाडूवाली	३१३
५४	कल्विळक्कें	पत्थर की दीपदानी	३१९
५५	आ सघ्य	वह सघ्या	३३१
५६	वन्दनम् परयुक्	शतश घयवाद	३३९
५७	चरित्तित्ते विनाकळ	इतिहास के सपने	३४९
५८	भारतेदु	भारतेदु (राष्ट्रपिता)	३५९

ओटयकुपल्



## ओटक्कुपल्

सीलयिल् जीवितगीतिवळ पाट्टुम् दि  
क्कालातिर्वत्ति माहात्म्यशालिन् !  
आरालुमनातमामेता मण्णिल् वी  
णाराल् नशिक्कुवान् तीन्नोरिन्ने  
निन् दयावैभवम् जगमाजगम-  
नन्दनमामोरु वेणुवाक्कि !  
भावल्क्कश्वासत्ताल् चतयपूणमेन्  
जीवितनिस्सारइसूयनाळम् ।

मानसमादक लाक्कगायक,  
मानमायडडेन्निल् वत्तिम्क्कुप्पु !  
अल्लेच्चिलिज्जडसावनम् वल्लुमो  
वल्लतुम् ह्प्टमायालपिप्पान ?

तूमन्दहासत्तिन् वेणुर, निम्मल-  
प्रेमप्रवाहत्तिन् मद्रध्वानम्,  
जीवितमत्सरम् तन्नोळम् तळळल् वा-  
प्पाविलनीलनेयाल्पलडडळ  
दाट्टिद्रघक्कोटक्कार च्वात्तिन् करिनिपल्  
पारिलेप्पापत्तिन्नावत्तनडडळ,  
एन्निव चेर प्पालिच्चीट्टटे मेलक्कुमे-  
लेन्निनेस्सागीतकल्लासिनि !

## बासुरी

सीना भाव से जीवित गीतों का गानेवाले  
त्रिशा और काल की सीमाओं में निबन्ध है महामहिमामय ।  
मैं जनमा या अनान-अपरिचित  
कहीं मिट्टी में पड़े-पड़े नष्ट हो जाने के लिए  
किन्तु तेरी वैभवशालिनी दया ने  
मुझे बना दिया है बासुरी  
चराचर का आनन्दित करनेवाली ।  
तूने अपनी सास की फूँक से  
उत्पन्न कर दी है प्राणा की सिंहरज  
इस निम्नार सोखली नली में ।

भन का मगन कर देनेवाले  
अखिल विश्व के अनाये गायक ।  
तू ही ता है जा मेरे अन्दर गीत बनकर बसा है  
अन्यथा क्या विसात थी इस तुच्छ जड वस्तु की  
किंचित् मा कर सकती राग-आलाप  
इन प्रकार हर्षोल्लास में भरकर ।

मन्द-हास का मनोरम नवल घवल फेन  
प्रेम प्रवाह की कलकल मद्ध ध्वनि  
मानव अहंकार की उद्दाम लहरा का उद्घात,  
अधुसिम्न नेत्रा के नाले कमल,  
दय-दारिद्र्य के वर्षाकालीन मेघा की काली छाया,  
सासारिक पापा के भँवर-ज्ञान  
—इन सब का साथ लिये लिय बहती रहे  
मेरे अन्दर की सगीत-बल्लातिनी यह सरिता  
हे प्रभु !

आटक्कुपलितु नीट्टुट् वाततिन्--  
 कूटयिल् मूक्माय वीपाम् नाळे,  
 मण्चितलायक्का, मल्लेक्किलित्तिरि  
 वेण्चारम् मान्माय मारिप्पाक्काम् ।  
 नमयेच्चाल्लि विनिश्वसिक्काम् चिलर,  
 तिमयप्पटिटये पाट्टु लाक्कम् ।  
 एनालुम तिन कैयिलर्प्पिच्चारन जम-  
 मन्नाळुमानन्दसाद्रम् घयम् ।

—१६२६

हो सकता है कि कल यह वगी,  
 मूक हाकर काल की लम्बा कूडेदानी में गिर जाये  
 या यह दीमका का आहार बन जाये या यह  
 मान एक चुटकी राख के रूप में परिवर्तित हा जाय ।  
 तब कुछ ही एस हागे जा शाक नि श्वास लकर  
 गुणा की चर्चा करेगे  
 लेकिन लाग तो प्राय कुराश्या क ही गीत गायेंगे ।  
 जो भी हा मरा जीवन ता तरे हाया समर्पित हाकर  
 सत्ता के लिए आनन्द-लहरिया में तरंगित हा गया  
 घय हा गया ।

अम्मयेविटे ?

“एविट्टेये विट्टेयम्म, यच्छनेन्तो  
कविळ कपुक्कित्तु कण्णुनीरिनाले ?”  
पवियुमलियुमारलम् वित्तुम्पुम्  
पविपनिरच्चोर्टिपूण्ट पैतल् चाल्व् ।

चरमजलधितन् करम्क्कु पोक्कान्  
परमरसतोट्टु पूयियात्त मूयन्  
विरवोटमलसच्च्यतटे चेत्ता  
हरवसनत्ते वलिच्चिपच्चु निल्प्पु ।

पक्कलहतिपिलम्बरालयत्तिन  
मुक्कळनिलयिकलणञ्ज काच्चु तारम्  
अक्कमुपरि विळत्तुनिलक्कयल्ली  
स्वक्कजनयिन्त्रियेयड्डु कण्णिट्टाते ।

प्रणयविवशयापेट्टुक्कुवाना  
क्षणद त्ताशाक्कुमारनाट्टुक्कूट्टि  
अणयवेयुट्टुन्नु सागरम् वेण्  
मणलोळि मत्तयिलात्तवौत्तुक्कत्ताल् ।

माँ कहाँ है ?

'कहाँ है, कहाँ है मा ?  
पिताजी, आपकी आखा से  
क्या बहे जा रही है आँसुआ की धार,  
क्या आप गाला को घो रहे हैं बार-बार ?"  
—सूख रहा है मुन्ना, इस तरह रो राकर  
कि बच्चा भी पिघल जाये ।  
साल प्रवाल जैसे उसके होठ प्रस्नाकुल हैं ।

अस्त सागर के द्वार पर पहुँचने के लिए  
अत्यन्त उल्लास विक्त्र सूर्य गिगु  
आह्लात की किलकारियाँ भरता हुआ  
निमल सध्या के मनोरम आचल को  
बारबार घसीट जा रहा है ।

दिनान्त हा गया है  
एक छोटा सितारा अम्बर की ऊपरी मञ्जिल पर  
सब्डा है अत्यन्त विपन्न और पीत-वर्ण  
क्याकि नदी ल्बिवाई द रही है कही भी उस  
अपनी माँ रात्रि ।

वासन्ध मे विकल हाकर गाद में उठा लेने के लिए  
जब आती है रात्रि बालचन्द्र के साथ  
तो सागर आनन्द विह्वल हाकर  
लोट-पोट हा जाता है  
सिक्ताआ की प्रभापूण गया पर ।

कर कटलिविटतिलोक्वेयुम दुर-  
 भरकदनत्तोदु तामयेस्तदापि  
 तिरवोरु चेस्वाट्टु हः । निराशा-  
 परवगनाय् करयुनु दीनदीनम् ।  
 एवितेयेवितेयम् ?-तक्मे ती  
 कवियुवोराटलिनाल् विळिच्च देवि  
 दिवि मरुवुकयाणुडुक्कळेत-  
 भ्रविरननाळनयालनग्रहिप्पान ।

—१९२४

भूमि और सागर के इन सभी प्रदेशों में  
सगरी माँ को खोजनेवाला बाल-भवन  
निराशा से पराभूत और नितांत दीन  
बिलख बिलखकर रो रहा है  
'कहा है, कहा है माँ ?'

प्यारे मुन !

तून शोकाकुल होकर जिस देवी को पुकारा है  
वह तो स्वर्ग में निवास कर रही है,  
देख तो, वहाँ उसे कितने सारे नक्षत्रों को  
निरंतर पालना-पोसना है अपना प्यार देना है !

—१९२४



पुष्पगीतम् . १

१

श्याममुन्दरमायि

राजिक्कुमनाद्यन्त-

व्योमम, विश्वव्यापि-

याय निन् हृदयान्तम्

प्रेमशीतलमायि-

तुळिक्कुम् मञ्जिन् तुळिळ

कोळमयिर्, कोण्टेटिट्टट्टु

पूणकाममिष्पुष्पम् ।

सागरम् निरयक्कुम्

कयिनिल्लल्लो पञ्चम

वेगमीयळुक्किनुम्

वेणुम् निरवेकान् ।

पेलवम् दलपुटम्

भगवन् भवहृया-

लोलशीकरम् ताडिड-

ल्लामादभारानमम् ।

नीयारलेट्टुत्तालु-

मी तुळिळ तेजोराशे,

पायालो चेरुम् भणि-

लेडानुम् दौवल्पत्तारु ?

तावकागथी पञ्च

पिटिप्पिच्चोरिक्कुम्भित-

ताय वारप्रदेत्तित्तु

स्वातन्त्र्यम् तानाजमम्

## पुष्पगीत • एक

१

श्याम सुन्दर  
बनादि अनन्त,  
हे आकाश !  
तेरे विश्वव्यापी हृदय में स चू पडी है  
स्नह की एक शीतल ओम-बूद  
जिसने बना दिया है मुझ पुष्प को  
पुलकित और पूण-काम !  
जो हाथ सागर को भरते ह  
व भला इस तुच्छ सीपी को  
नितात भरा पूरा बनान में  
क्या कोई अभाव अनुभव करेग ?  
किन्तु मेरा यह मृदुल दल सम्पुट  
तेर दिय गय आमाद के भार से  
पहल से ही विनत है  
फिर भगवन ! आपकी कृपा का यह चचल-शीकर  
म किम प्रकार वहन करूँ ?

ममत् ला इस बूद को दया करव  
ह तजोगति !  
यह कहा गिर न जाय सूखी धरती पर  
भर दौत्रय के कारण !  
अपनी अग-श्री द्वारा तूने  
हरा भरा बनाया है इस टील की तराई को  
मन यहाँ जीवन भर लूटा है स्वातन्त्र्य-मुख

नुवर्तुं नुवर्तित्त-  
कौतुबम विटहवा-  
नुणवैकुण्ठमूलम्  
धयवयमाम्तीतन ।

२

मन्दारम् तळिरच्चेम्पान्-  
नीराळकुट चात्तुम  
वृदारकारामत्तिल्  
रत्नगलापान्तत्तिल्  
विरिवानागिक्कुती-  
तल्पुग्रमाकुम वेय्लिल्  
पोरियुम पुलक्कूम्पुवळ-  
क्कामोदमेक्कावू वान् ।

मामवस्वात अयत्तिन्  
स्वच्छमाम् मुखम् स्वग-

मामरनिपलूमूल  
माविलमाविल्लल्ली ?

पारत अयत्तिन रत्न-  
मेटयेक्काळुम् सौख्यो-

दारमे स्वात अयत्तिन्  
पुल्लणिच्चेळ्ळिमाटम् ।

भयमाणेनिक्कल्प-  
क्कल्पवक्षकच्छाय

प्रियदशनमाय  
निनमुखम् मरच्चाला ?

कोमळ, निन्नगत्तिन  
नीलिम मायिल्लल्ली

हेमशैलत्तिन् पीन-  
क्कान्तिन् तिरत्तल्लाल् ?

ओटक्कुपल्

तरी प्रेरणा से मैंने सदा ही भागा है विकास का उल्लास  
तूने मचे बनाया है नितान्त घय ।

२

जा पहनत है  
मन्दार वृक्षा के पल्लवा का  
स्वर्णजटित रेशमी छत्र—  
उन दवताओं के उद्यान में,  
रत्न शैल के प्रान्तर प्रदेश में  
नहीं खिलना चाहता हूँ मैं ।  
मैं चाहता हूँ खिलना  
उस भूमि में जहाँ  
तेज गर्मी की आच से झुलस गयी है  
दून, सिर घुन रहे हैं सूखी घास के झुण्ड ।

मेरी स्वतन्त्रता के स्वच्छ मुख पर  
स्वर्ण के उन महान् पेंडो की छाया की कालिमा न मझे  
यहाँ है मेरी प्रार्थना ।

परतन्त्रता के रत्ना से जगमगाते महल की अपेक्षा  
मेरे लिए सुन्दर और सन्तापदायिनी है  
स्वतन्त्रता की घाम में उगी-बनी  
मेरी छोटी-सी मलिन चापड़ी ।  
मुझे डर है वही दन बल्पवशा की  
छिछारी छाया  
सुन्दार प्रियदर्शी मुख का  
मेरी आँखा से आनल न कर द ।  
कहीं ऐसा ता नया कि  
स्वर्ण गला की पीला कान्ति की शिलमिलाहट में  
सुन्दार कोमल अगा की नाजूक नीलिमा तिराहित हा जाये ?

मगलम् भवमौन-  
 गान्ते लोभोलभ्रान्त-  
 भृगतिन् मुखस्तुति  
 विस्मरिप्पिविल्लली ?

३

आ रत्नाचलतेक्काळ  
 पोडिडनितीडुम् काल्य-  
 तारत्तेप्पोलिक्कुञ्जि-  
 क्काट्टुपूवितेक्कूटि  
 नित्यवुम् ममुल्फुल्ल-  
 सौभयमाक्कुन् नी ,  
 स्तुत्यमे भवदीय-  
 मेकभावनावत्वम ।

षोणजिह्वालयु-  
 प्राघकारौघम् लोक-  
 त्राणायम् नक्कित्तिम्  
 तित्तद्दुधोदुक्कुम्पोळ,  
 कुट्टिक्काट्टुत्तेत्ति-  
 क्कुलुक्कि विळिक्कवे,  
 वेडि ज्ञानुणन्नेम्-  
 मत्तुत्तस्तिमितमाय

निन्नावू नवीनमाम  
 चत्तयम् वहिक्कुत्त  
 मन्नाळुमानदत्तिल्-  
 प्पक्कुक्कोष्टनन्याशम् !  
 सौरभम् परक्काते  
 सादरन्नेहोदार-  
 पौरलोलचनातिव्य-  
 भाष्यवुम् भविक्क्वाते,

कही ऐसा ता नहीं कि  
 भौरा की लामप्रस्त चाटुवारिता के गीता की गुनगुनाहट में  
 म तुम्हारे मगलमय मौन-गान का  
 भुला बठू ?

३

ऊँचा है रत्नगिरि का शिखर,  
 उमसे ऊँचे जगमगाता है भार का तारा ।  
 प्रमात के उस तारे की तरह ही इस वनपुष्प को भी  
 मदा सुन्दर और समुत्फुल बनाते हा तुम,  
 घय है तुम्हारी समदर्शिता ।

जब अपनी लाल-शाणित जिह्वा स चाट चाटकर  
 घन अचकार का भी तुम लील जाते हा  
 ताकि मसार का परित्राण हा तमाचकार से  
 ता बाल-यवन पास आकर मुये झकचरता है,  
 मैं चौककर एक अनाले विस्मय के साथ जाग जाता हूँ ।

मेरी कामना है, मैं खडा हाऊँ  
 नव-चेतना से भरी इस भूमि के आनन्द में  
 मात्र महभागी बनने के लिए, बिना किसी अय आगा के ।  
 मलें ही न फले मेरी मुरभि,  
 न हा मरे भाग्य में नागरिका की दूष्टि का आतिष्य—  
 स्नेहतिक्त, आदर भरत ।

ई विनीतमाम् लज्जा-  
 धीरवाननपुष्पम्  
 ताविटुम् नित लावण्यम्  
 तान् नुवर्तेनुम् पुष्पम्  
 मातभूमितन् शुद्ध-  
 प्रेमतुदिलमाय  
 मारिटतिङ्गलत्तने  
 मालवद्भुतिर्नव् ।

—१९२६

म विनम्र और लज्जाशील

कानन-मुष्प

सदा तुम्हारे पावन प्रवर्द्धित लावण्य को भरपूर भागन हूँ,

प्रेम प्रमूदित और नि शोक क्षर जाऊँ

मातृभूमि के पवित्र वक्ष पर—

यही है मेरी कामना ।

—१९२६



## पुष्पगीतम् २

१

शाश्वतजगलप्राण,  
शान्तनिश्चलमायि  
विश्वपूषणे नालु  
मघरात्रियिल् निल्वके,  
रूपहीननाम नीयि—  
ल्लेनु चिन्तिच्चेनाय—  
चापलम् पास्तालुम् ।  
जाननम् वनपुष्पम् ।

त्वलपदाच्चनयक्काये—  
नितळानुतिनीं, ले—  
घ्नल्पमाम् परिमळम्  
नितक्कायिप्पिच्चील  
वेणुट्ट नि मारत्तु  
लेपनम चैयितल्लात्म—  
रेणुवाल स्वयम् पुणर —  
घ्नड्डु निशादम् निल्वके ।

अल्लेक्किल् परिमाण—  
हीननायनादिया—  
युल्लसिच्चीटुम लावा—  
लम्बमाम पवमान  
तारिनेन्तरियाम् हा ।  
तव मे मयेप्पटि ट  
वारिधि वेरुम मुत्तु—  
चिप्पियालळक्कामो ?

ओदक्कुपल

## पुष्पगीत दो

१

हे शाश्वत जगत्प्राण !  
जब तुम शान्त निश्चल होकर  
खड़े थे आधी रात में और  
यद्यपि थे विश्व भर में व्याप्त  
मैंने समझा यही कि तुम रूपहीन का  
अस्तित्व ही नहीं है।  
क्षमा करा इस अब चपलता को  
म अग वन पुष्प ही ता ठहरा !

हाथ तुम्हारे चरणा की अचना ब' लिए  
भरी एक पल्लुरी तक न झरी,  
मेरा जा स्वल्प परिमल है  
वह भी मैंने समर्पित नहीं किया।  
मैंने नहीं किया अपने पराग का आलेपन  
तुम्हारे सुंदर वक्ष पर—  
जब तुम स्वयं खड़े थे नि शब्द  
मुझे स्नेह पूर्वक वक्ष से चिपटाये हुए।

किन्तु  
हे अनादि  
साकालम्बन परिणामहीन पवमान !  
यह क्षुद्र पुष्प क्या जानना है  
तुम्हारी महिमा ?  
क्या सीपी नाप सकती है  
महासागर का ?

बलिलुम् माग्गम् वाटटुम्  
 दिव्याडुक्कळतन मौन—  
 च्चालिलेप्पाट्टानुम्  
 चितनम् चेय्तीटाते ।  
 क्षुद्रमिप्पुप्पम् भव—  
 त्सान्निध्यम् मरघेवम्  
 निद्रचेयतुपोयल्लो  
 तेनिनाल् तप्पिक्काते ।

२

विस्मरिच्चीटोल्लेघाल  
 ब्रह्मडलेघात्तडडुम्  
 विस्मयावहम् भावम  
 मारियत्युच्चारवम् ।  
 मारिभेघमाम् जटा  
 मण्डलमिळकियुम  
 पारिटम नटुडडीटुम्—  
 पाटिटयक्कलरियुम्  
 वानिनेत्तिळक्कुन्न  
 वाळिटयिक्कटयक्कूरि  
 नीनिन्नु नत्तम चेय्तु  
 नीळेयत्युप्राकारम् ।  
 नेरक्केपुम् भवल्—  
 क्कापत्तिन्निरयायि  
 धारमामिटितीयु  
 वीणारिगिरिप्रान्तम,  
 दग्घमाक्के वण्णु  
 पोत्तिमेय विरयक्कुन्न  
 मुग्घतारक्कवन्दम  
 कटल् च्चेयितताक्कन्दम

नहीं चिन्तन किया कभी  
 उन तारा के मौन गीत-तत्त्वा का  
 जो दिग्वाते हैं रास्ता रात में भी,  
 नहीं किया तपण तुम्हारा कभी  
 अपने अन्तरग के मधु से,  
 तुम्हारे सान्निध्य को भी भूलकर  
 हा गया था निद्रा निलीन  
 यह क्षुद्र वन-मुष्प !

२

शायद ऐसा साचकर कि  
 हम तुम्हें भूल न जायें  
 अत्युग्र घाप के साय  
 विस्मयकारी ढग से रूप बदलकर  
 वर्षा मेघा का जटा-जूट प्रवम्पित कर  
 अपने गजन-तजन से  
 धार-वार समूचे ससार का चौकाते हुए  
 बीच-बीच में  
 सींच लेते हो तुम अपनी नगी तलवार  
 जा आकाश को दमका देती है,  
 भयानक रौद्र रूप धारण कर  
 रच डाला है सब कही ताण्डव नृत्य तुमने ।  
 तुम्हारे इस कृत्रिम त्रयो व कारण  
 जहाँ गाज गिरी  
 वही गिरिप्रान्त दग्ध हा गया,  
 भय विवम्पित मुग्ध तारको ने  
 आँवें मूँद ली,  
 समुद्र ने वरुण स्वर में रुन् किया ।

फलसम्पत्तेल्लामे  
 पाकवे वण्णीर तूक्वि  
 दलरूपमाम् भीति—  
 वेपितम् वृक्षत्रातम ।  
 शाकड् टलाचायमार ,  
 जीवाघारमामड्डु  
 लाकव्यापियाण्णु  
 वद्धळक्कु वाघप्पट्टु ।

भगवन परिभ्रात  
 सागगन्तरत्तिलु  
 मगसकुलात्तुण—  
 कुन पवतत्तिलुम  
 दुरतिनमम् भवल—  
 प्राभवम् वापि तप्पाट्टुम्  
 स्वरमुच्चत्तिलक्कळक्काय ।  
 वेनु नी विन्वात्मावे ।

३  
 शातमाय भवलक्काप,  
 मधवारम् पाप्, पूर्वा-  
 शान्तमुज्ज्वलमायि-  
 तीत्रितनेरम् वीण्डुम् ।  
 दीनमाम् वटलात्म  
 गक्ति पिण्णैयुम् नेटि  
 यानदलास्यम् चैयतु,  
 कुतु बोळमयिक्कोण्डु ।

सौम्य कालिम माञ्ज  
 विण्णुत्तिल्लुक्काणाप्  
 रम्ययाम् शुचिस्मितम्  
 निट्टे वारुण्यत्ताले ।

ओटक्कुपल

जब फल सम्पदाएँ सारी नष्ट हो गयी  
 ता भय-वम्पित पादपा ने  
 पात-पात आसू बहा दिये ।  
 दुःख ही तो है असली आचाय ।  
 तब हमें अनुभव हा गया कि  
 आप जा जीवा के आधार है  
 वास्तव में विश्वव्यापी है ।

तब परिभ्रान्त सागरान्तर में  
 अगम सकुल उत्तुंग कुल पवत में  
 तुम्हारे दुरतिश्रम प्रभाव का स्तुतिगीत  
 सुनाई पडा उच्च स्वर में—  
 हे विश्वारमन्  
 जय हो तुम्हारी ।

३

उपगम हो गया तुम्हारा प्राय,  
 मिट गया मारा अङ्कवार  
 प्रदीप्त हुआ फिर से  
 पूब दिगा का छार ।  
 पुन प्राप्त कर अपनी आत्म-शक्ति  
 आनन्द लास्य करने लगा सागर,  
 पुनवित हा उठा पवत ।

हे सोम्य !

मिटने लगी कालिमा  
 दिग्गन्त के मुख पर से  
 चमक उठी स्मित रेखा  
 तुम्हारी करुणा की कोर से  
 विमल, रम्य ।

आशु वापत्तुवान मूव—  
 माक्लुमनड्डन्नो—  
 रेन्नितळ्चुष्टत्तात्त  
 वात्तल्यम् नी चुम्बिच्चु ।  
 मृदुहस्तत्ताल् प्रेम—  
 व्याकुलम् वीण्टुम् वीण्टुम्  
 त्वदुरस्तटत्तिली—  
 व्काट्टुपुविनेच्चेत्तु !  
 सारहीनमेत्ताल्—  
 मेटे जीवितम् पुण्यो  
 दारतावक्स्पशम्  
 परिपावनमाक्कि ।

इळकुन्नतुम्बूटि  
 निन्हितत्तालल्लो, आ—  
 निळयिल्प्पतिच्चिनि—  
 प्पाटियायप्पाकुम् मुम्मे,  
 मल्परागम् काण्टड्ड—  
 यक्कगलेपनम चेयतु—  
 मल्पमाम् सुगायत्ता—  
 तामादम् जनिप्पिच्चुम  
 चरितायमायत्तीनु  
 पिन्नयुम् भवदेव—  
 परितोपायम वल्ल  
 काट्टिलुम् विरिञ्जाव् ।

—१९२६

मेर मूक अघर कम्पित होने लगे  
 तुम्हारी स्तुति के लिए  
 अत्यन्त वात्सल्य से पूरित  
 आक दिया तुमने अपना चुम्बन  
 उन पर ।

प्रेमाकुल हाकर  
 तुमने अपने कामल हाथा स  
 इस पुष्प का उठाया, और  
 बारम्बार अपनी छाती से लगाया ।  
 यद्यपि सारहीन है मेरा जीवन  
 तथापि हे पुण्यादार,  
 तुम्हारे स्पर्शों ने इसे बना दिया नित्यपूत ।

मेरा प्रत्येक कम्पन है  
 तुम्हारी इच्छा पर आधारित ,  
 यही है मेरी कामना कि  
 इस मिट्टी में मिट्टी बन जाने से पहले  
 अपने पराग से  
 कर सकू तुम्हारा अग-सेपन  
 यह मेरा अत्यल्प सौरभ  
 यदि तुम्हें आभादित कर सके  
 ता हा जाऊँ म वृत्ताय,  
 मैं फिर भी खिलू किसी जगल में  
 तुम्हारे ही परिताप के लिए  
 —यही है मेरी कामना ।

—१९२६



## साध्यतारम्

आरु नीयानदकदमे । लोकतिन  
 चारुत चारुतिन पाटटुपाले,  
 वारुणदिकिकटे कणावतसमाम्  
 वारुट ट वाटामलरपाले  
 नीलिमापूणमामावागतीयत्तिल्-  
 च्चेलिलिरडिड वणडिप्पाके  
 धीणयाम् वासरथीयरियातूमु—  
 धीणताम् रत्नागुलीयमपोले ।

वेल वटिञ्जुम् पोटिञ्जु वियर्पाला  
 लाननरमुत्तणिञ्जुम लाकम  
 आन दनामवमादकमासवम्  
 पानम् कपिच्चतिमत्तमायि  
 लाळनीयाकृते, नाक्कुनु विश्राम—  
 वेलयक्ककम्पटि निल्वकुम् निन ।

नाणम् कुणुङ्गुन्न सुदरितनल्प-  
 शाणमधुराम् तूनेटि टमल्  
 स्वेदकणिकविल् तट्टातयत्तुतो—  
 मादम् कविञ्जपुम् कामुकाधि  
 पाटलपाश्चिमदिवकु विळिवकुम् नि  
 घ्राटणयुनितुल्फलमायि ।

## सध्या-तारा

हे आनन्दवन्द !

बताआ तो, तुम कौन हो—  
विश्व सौंदर्य के ललाट पर अकित विदी के समान,  
वाष्णी दिशा के कानो पर अलङ्कृत  
अम्लान मनाहर कणफून के समान,  
नीलाभाग के तीर्थ में प्रवेश कर  
अचना कर के लीटती हुई श्रान्त  
दिनात लक्ष्मी के अगुलि-पार से स्नलित  
रत्न-मुद्रिका के समान ?

हे प्रियदर्शिनी,

तुम हो विश्राम की घडिया की अग्रदूतिका,  
बाम घघा सब छोडकर  
श्रम-स्वेद का तरल मुक्ताहार पहनकर  
आनन्द की मादक मदिरा पिये  
निहारता है यह उमत्त ससार  
तुम्हारी ओर एकटक !

पाटल प्रभ पश्चिमी दिशा को

वात्तिमान करनेवाली

अगाध विस्मय के उमाद से मत्त प्रेमी की आँवों

तुम्हारा ही पीछा कर रही ह,

नही निहारती हूँ वे

सजीली प्रिया के इपद् आरक्त

सुदर ललाट पर चलरनेवाली

स्वेद वणिवाआ का ।

उत्सवदायिकयाकुम् युवजन-  
 वत्सलरात्रियात्तेतुम् निने,  
 मुग्घनीलाळकम भेल्लेयातुक्कियुम्  
 स्निग्घनिविडमिमननञ्जुम्  
 हपक्किसितनेत्रत्तालु मुख-  
 कपकवालिकयादरिप्पू !

ओमनप्पैतलिन् चेम्पविषप्पोळि-  
 क्कामळच्चुष्टिले वेण्णिलविल  
 अञ्जनक्कप्पुन चेलवीलत्तभुत-  
 पुञ्जमे, नीयन्तिच्चोप्पिल निलक्क !

नि मुखदशनत्ताले मति मर-  
 द्धुमुलनाय्पुक्कुमाट्टियन,  
 ईणत्तिल्मूळुमाग्गानत्ताल ग्रामत्तिन्-  
 प्राणन्नु कारित्तरिप्पुकुम्भु !

पारमपञ्जु कण्ण्णपल मूट्टुम पान-  
 नीराळम् चात्तिय स ध्यालक्किम  
 च तम् वळ न निन नेक्क तिपेलवम्  
 चेन्तळिरगुलि नीट्टिनिल्पू ,  
 वाट्टमा तोट्टाक्किलेत्त भयत्ताला  
 वाय्क्कुन्न सभ्रमाल् क वलिप्पू ?

तरुणो की प्यारी  
उत्सव का रंग बाघनेवाली रजनी के साथ-साथ  
आती हो तुम  
अपने नीले-नीले अलका को हाथों से संवार  
गदन ऊँची कर,  
गीली घनी नीलम पलकोंवाली  
आनन्द विस्मित आँखों से  
तुम्हें देखती है वृषभ वाला,  
करती है तुम्हारा स्वागत ।

हे विस्मय पुत्रिके !  
जब तुम खड़ी होती हो सध्या की अरुणिमा में  
तब माता के अञ्जन रञ्जित नयनों की ओर  
नहीं जाती है अपने प्यारे शिशु के  
विद्रुम अघरा पर चमकनेवाली  
चाँदनी की आर ।

देखते ही तुम्हारा मुख  
उमूख हो चलता है चरवाहा  
बिसार कर सुष-बुध  
छूटता है मधुर तान  
पुलकित करता है गाँव का मन प्राण ।

एडी तब पहने  
नीले-झीले सुनहले पटम्बर से  
सुशोभित सध्या  
बढा रही है  
तुम्हारी ओर  
कापला की मृदुल लाल उँगलियाँ,  
किन्तु सिकाड लेती है  
अपना हाथ डर सं  
कुम्हला न जाया कही ।

आह नीयानन्दकन्दमे । शान्तितन्  
 चारुस्मिततिटे विदुपाले,  
 पल्लवितमाय सानसमाधान—  
 मुल्लतत्राद्यत्ते माट्टुपाले,  
 प्रेमपरिमळम् वीगान तुरग्राह  
 हेममयमाय चेप्पुपाले ।

उच्चयक्कु तीवारि वपिच्चु वत्तिच्चो—  
 रच्चाण्डवासरम वाघक्कित्तिल्  
 पावनदशान, निम्ननघादार—  
 पादरजस्तु शिरस्सिलेल्कवे  
 भूवल्लयत्तिने राममुलळित्त—  
 भावम् कलनु तटवुक्याय ।  
 चेम्पट्टु नल्लुनु वृक्षलतादिककु,  
 पोन्नपोटि सागरवाचिक्कळक्कुम् ।  
 तारक्कळक्कु पक्कुत्तु वाटुक्कुत्तु  
 सारसुपममामात्मराज्यम् ।

वेन्तकम नीरिटामाननम वाटिट्टा—  
 मन्तिमलरिप्पूवेत्ताक्किलुम्,  
 पाटे मरम्भुम् चिरिच्चुम् पकलिट्टे  
 पादत्तिल् च्चेयवू सुग घलेपम् ।  
 सौम्य निन् सगमममूलम् परिणाम—  
 रम्यमी श्रीष्मदिनत्तिन् जमम् ।

हे आनन्दवन्द

यताया तुम कौन हो—

शान्ति के मन्द हास की कणिका के समान,

विश्वशान्ति की पल्लवित कुदलतिका की

प्रथम कलिका के समान,

प्रेम का सौरभ प्रसारित करने के लिए

खुले हुए स्वर्ण सम्पुट के समान !

यह प्रचण्ड तप्त-वासर जा मध्याह्न में

वरसा रहा था अगार,

अब ढलती आयु में मस्तक पर चढा रहा हूँ

तुम्हारे अमल उदार चरणा की रज,

सहला रहा है भूमण्डल का

मुराग-ललित दुलार से,

दे रहा है पेठा और लताया का

लालिम पटम्बर,

प्रदान करता है सागर-वीचिया का

स्वर्ण कणिकाएँ,

बाँटता जा रहा है तारक मण्डल को

अपनी सुपमा का साम्राज्य !

यद्यपि दुःखता है मन,

परिगुप्त हाता है आनन,

तथापि

यह साध्य भल्लिका-सुभन

भूलकर सार सन्ताप

कर रही है दिवस के पैरा पर परिमल सेपन

प्रसन्न-वदन ।

हे सौम्य

परिणाम रम्य है तुम्हारी सगति से

प्रीत्य दिवस का जन्म ।

बारु नीयानदकन्दम, दैवत्तिन्  
 वारण्यत्तिट्टे कणिकपाले,  
 ध्यानसमयमाये तरियिक्कुवान  
 वानिन्टे युम्मरत्तिण्णदि मेल्  
 मेत्तिन सौदय तलम् पक्कन्नारा  
 कत्तिच्च पोत्तिन् विळ्ळक्कुपोले,  
 लोकतत्वडडळेयेल्लामोनुक्कुतो—  
 रेक कनकलिपियेप्पाले ।

ईयक्षरत्तिन वेळिच्चत्तिलुवुद्ध—  
 मायिट्टुम तरा भावु पाडिड,  
 पारिन् निपलुकळ विट्टक्कन्नडडने  
 पाक्कुन्न पात्तिने विस्मरिच्चुम्  
 भावन मदम् विरुत्तिप्परक्कुत्तु  
 पावनमेतो नभस्थलत्तिल् ।  
 केवलनिवृत्तितन् नवलपमेन—  
 जीवनिल्पुशुम नभस्थलत्तिल् ।

क्लेशत्तिन् जीणमाम् वस्यम् वलिच्चेरि—  
 उत्राशयम् पीयूषमग्नमायुम  
 अगम् तरिच्चपोल् मेवुत्तु लोकम , नी  
 मगलात्मावे मरञ्जीटाल्ले ।  
 निम्निलुमेत्तिलुम् द्योतिक्कुम् ज्यात्तिस्सु—  
 मात्तिन पोत्तिन्नेयायिरियक्काम् ।  
 मूलमेन्तल्लेड्डिल नीयुज्वलियक्कुम्पोळ  
 मालकन्नेन्नात्मावुल्लसिप्पान ?

बताया ता हे आनन्दकन्द  
 कौन हो तुम दृश्यमान  
 प्रभु की कारुण्य-कणिका के समान—  
 उम स्वर्णिम दीपक के समान—  
 उजाला है जिसे किन्हीं अज्ञात हाथा ने  
 आकाश की वेदिका में दुलभ कान्ति-तैल भरकर  
 इमलिए कि  
 उद्दामित हा जाये ध्यानमग्न होने का मूहूत ।

इस प्रणवाक्षर की दीप्ति में उदबुद्ध होकर  
 ऊपर का उठनी है मेरी आत्मा  
 छोड़कर ममार की परछाइया को  
 मूलकर अपने नीड को  
 धीरे धीरे फलाकर भावनाशा का  
 किसी अज्ञात दिव्याकाश में  
 कर रही है विहार उम नीलाम्बर में  
 जो लाता है मेरे प्राणा में निवृत्ति का लय ।

ससार अपने केशा का जीण बसन  
 उतार फेंक रहा है  
 हा गया है उमका अन्तरंग  
 अमृत-स्राव से प्लावित  
 खडा है आनन्द से स्तब्ध ,  
 हे आनन्द-ज्याति,  
 न हा जा अदृश्य,  
 मेरे और तुम्हारे भीतर  
 प्रा-वृत्त है एक ही ज्याति का स्फुलिंग ,  
 अ-यथा वैम या यह सम्भव  
 कि जब तुम हानी हो अतिमान  
 चमक उठता है मेरा मन दुःख-मुक्त ।



ओट्टुम निरमट्टुम पाप पोटि पटि ट्युम्  
वेट्टुम् विटक्कुम् मनुप्यात्माविल्  
ओनु मुक्कन्नावु नितकुळिच्चुण्टिना,  
सोन्नु पक्कन्नावु निन्सीभाग्यम् ।

—१६२७

चूम लो अपने गीतल अघरा से  
मानव की आत्मा  
जा मलिन वृसरित पडी है,  
भर दो उसमें  
अपनी ही कान्ति की दमक ।

—१९२७

## पिन्नत्ते वसन्तम्

१

मधुमामत्तिटे विजयवाहळम  
मधुरक्णत्ताल् मूपक्कुम् कोविलम्  
विळम्बरम् चैय्वू — 'विळम्बमेयेया—  
गळम् स्वजीवितमधु नुकहविन् ।  
समयपीयूपमापुकुध्रू तृष्णा—  
गमम् वरतुवान् कपियिल्ला पिन्ने ।  
चिरियुम् कण्णीरम कलत्तिय कुप—  
म्परिय जीवितममूल्यमाविलुम्  
क्षणिकमल्लया वेयिलेट ट हिम—  
कणिकपोलतु , कळकयो वया ?'

अपकेपूम चित्रशलमडडळ निर—  
मपविल्लिन् पाटि वितरियपाले  
पिटज्जणयुध्रू पिवगीति केट्टु  
विटन्न काननमलरिन् चुट्टुम् ।  
मदकरमधु नुकनु मेल्कुम—  
लुदयभानुविन मयूळमुज्वलम  
चाक्चाक्केयाय मुखत्तिनाल वानि—  
ननमुरड्डुन्न कृगाभ्रमालये  
उटनुटन मुक्किळम् कविळत्तटम  
तुट्टुट्टुयाक्किप्पुणधुणत्तुम् ।

## बाद का वसन्त

१

अपने मधुर कण्ठ से  
मधुमाम की विजय-तुरही बजानेवाली कोयल  
घोषणा कर रही है  
“पान करो अपने जीवन का मधु  
अविलम्ब आकण्ठ,  
बहता जा रहा है समय-रूपी पीयूष  
सम्भव है तपा शमन का अवसर तुम्हें फिर न मिले ।  
यह प्यारा जीवन—  
अथु-हास्य का रमायन,  
अमूल्य होने पर भी क्षणिक है—  
जैसे घूप में नही-भी हिम-कणिका—  
क्या खाने हा इसको व्यय ?”

प्यारी-प्यारी तिलियाँ  
सतरंगी इन्द्रधनुष की फुहार-भी  
भावातुर होकर मण्डरा रही ह  
वानन-कलिकाओं के चारा आर,  
खान दी है आँवों जिहाने  
बायल की कूज मुनकर ।  
उदयारण का उज्ज्वल मयूख  
है आरवत्त आनन  
माना पी है मन्त्रिा बारम्बार,  
करता है आर्तिगन  
आममान पर मायी कृग मेघमाला का  
जगाना है उस चुम्बना म ऐस  
कि हो जाते हैं मृदुल कपोत लाल ।

अरुणमाम् गण्डम विवसिञ्चु निल्वकुम्  
 पुरुमुपमयीप्सुतुपनीरतर,  
 निरुपमलज्जानिरद्धमाकया—  
 लोरु मापि चालवानगतमाक्विलुम्  
 सुरभिलनीघश्वसितमाटिळम—  
 मरत्तु पोत्रवे तटवानायुधु ।  
 सुलद्धितस्मितवदनयाम् निल्वकु—  
 मलघुसौभगम् कलत्र मुल्लये  
 अतिकुतुक्ताल् तरळमाय् नाक्कि  
 मतिमरन्नेपुमहम्मुसतारम्  
 पक्वल् तुट्टुमिपि तुरनतुम् कूट्ट—  
 रक्नुपोयतुमरिञ्जतेयिल्ल ।

२

भरिञ्च रात्रितन् स्मरणकारणम्  
 चिरिवदुवानकूटि मरन्न सामनो  
 निरम् पक्वनु मेय् मेलिञ्जुमक्वण्णीर—  
 क्वरयानुम् पोयानपरदिविक्वनाय् ।  
 ओरिटत्तु सुखम् कतिरिट्टुनेर—  
 मारिटत्तु दुःखमतिने नुळ्ळुनु !  
 मुखम् चुक्ककाळम् तट्टिरिनु दिव्य—  
 सुलमयमद्यम् वसन्तमेक्कवे  
 भरितनराश्यम जारडडुन्नु चिल  
 करियिल्ल निलत्ततिपरुपमाय् !

मम मिपिक्कळक्कु महमायूपिक्कु  
 महस्मुक्कटिय मनाहरापस्साय  
 मरुक्किय पुण्यमटिपरिक्कयाल्  
 मरुवाय्त्तीन्नल्लो मदीय जीवितम् ।

यह नवल पाटल सुन्दरी  
 अरण और द्युतिमय है गाल जिसके,  
 वोन ही नहीं पाती है लज्जा निमग्न कुछ भी,  
 किन्तु जब प्रयाणा मुख हाता है तर्ण पवन  
 तय राकिना चाहती है वाट उसकी  
 अपने मुललित निम्बासों से ।  
 यह भाव-तरल प्रभात का तारा  
 भूल गया है स्वयं का  
 बस्मय से देय-देखकर लावण्यवती कुन्दलता को  
 खड़ी है जा मनारम मन्द हाम लिये मुख पर,  
 नहीं जानता है वह कि  
 दिवस ने अपने अर्ण नयन माल दिये हैं  
 और सायी सारे दूर चले गये हैं ।

२

दिव्यगता रजनी की स्मृतिया में डूबा यह चाद  
 हंसना ही भूल गया है,  
 चला गया है  
 क्षीण विवण, अश्रुपङ्क्ति हाकर,  
 जत्र मुख खिलना है एक बार  
 ता दु ख आ पहुँचता है उसे चुनने को दूसरी ओर ।  
 बसन्त ने कापला का  
 दिव्य मुख की इननी सारी मदिरा पिला दी  
 कि उन बं आनन नगों से लाल हा गये—  
 तभी कराहने लगी निरागा से भरे  
 अत्यन्त पण्य स्वर में  
 कुछ मूखी पत्तियाँ ।

जो धी मेरी आँखा की मुपमा,  
 जो धी इस पृथ्वी के लिए मुन्त्र देदीप्यमान ऋषा  
 वह पुष्पलतिका आमूल उखड गयी है,  
 बन गया है मेरा जीवन मरभूमि ।

कुसुमकालमे, भवानणविलु—  
 मसुन्दरमामेन् हतहृदयान्तम  
 कनिवट टु विधियरिञ्जता, णाशा—  
 कलिकयुम् सुखत्तलिरमुष्टामो ?  
 विळिप्पतेन्तिनु वथा पिबड डळे,  
 अळिञ्जुमण्णायिक्कधिञ्जल्लो सखि !  
 नरुमुमडळ्ळे, नेटुवीक्कधुत्तुम्  
 वेरुनेयेत्तिनु पक्कवुनिल्पत्तुम्  
 मरणमाकुम्भ महाजलधितन  
 नुरयाय लोकम् परिणामियने ।

“तरुणमाम् रविकिरणम् पुल्लुमी  
 निरुपममाय पनिनीच्चैम्मलर,  
 स्वकपात्रमोरु पुतियजीवित्त—  
 मकरन्दम् कोण्टु निरच्चेत्तुनेरम्  
 तिरिच्चरियुमा ?” वितुम्पिनोक्किनि—  
 शोरिक्कलोमलाळुरच्चाळिङ्गने !  
 कमनीयमतो पुतियताम् रूप—  
 ममलयामवळ्ळणञ्जिरिक्कणम् ।  
 अथवा चेत्तेत्ताम् मनागमाय वीत्त—  
 व्ययमाय नित्यवस तलोकत्ते  
 परिणतप्रेमपरिमलभरम  
 परत्तिञ्जीवित्तम् विटरम् लोकत्ते ।  
 मण्णत्तुम् चुण्टिरण्ट वारुणुप—  
 लणिञ्ज कवळाल् इमशान भूमिये  
 विक्कचपुष्पम्काण्टलङ्कुरिक्कट्टे  
 विकलभाग्यनी निहतजीवित्तन् ।

हे कुसुम-काल !

तुम्हारे पदापण की बेला में भी

मेरा मन क्यों बना हुआ है

निराशा निहत और असु-दर ?

निदयता ने उजाड़ दिया है विधि ने इसे,

कैसे फटेंगी इस में आशा की बलिया और मुख के पल्लव ?

काविलाओ व्यथ क्यों पुकार रही हो ?

तुम्हारी मखी ता गलकर मिट्टी में मिल गयी है ।

क्या भरनी लम्बी उसाँसों

नवकलिकाओ ?

क्या होती हो अकारण ही चकित ?

यह जगत् तो फेन है मरु-सागर का,

परिणामशील है यह !

“तरुण रवि किरण के आलिंगन में बढ,

अनुपम सौ-दयमय यह अरुण गुलाब

भरकर अपना प्याला नवजीवन के मकरन्द से

जब लौटकर जायेगा, तो पहचान पायेगा उसे ?”

—उसने पूछा था मुझ से एक बार,

शोकाकुल दृष्टि लिये ।

गायद, पाया हो कोई नया वमनीय रूप

उस पुनीता ने ।

अबवा पाया हो उसने वह शोकहीन चिर वास-ती ससार

जहाँ जीवन विकस्वर होता है

अपना परिपूण प्रेम सौरभ फलाकर ।

जिन हाया से मैंन

उसकी परिमल-वाहिनी काली अलकें सजायी थी,

उही से अलकृत करूँ मैं विकल भाग्य निहत जीवन

उसकी समाधि को—

अधुन पुष्प द्वारा ।



कुसुमकालमे, भवानणकिलु—  
 मसुन्दरमामेन हृत्हृदयातम  
 कनिवट दृ विधियरिञ्जता, णाणा—  
 कलिकयुम् सुखत्तलिम्मुष्टामो ?  
 विळिप्पनेत्तिनु वथा पिबड टळे,  
 अळिञ्जुमण्णायिककपिञ्जलो मत्ति ।  
 नरुम्सुमद्दडळे, नेदुवीक्कुधनुम्  
 वेस्तेयेन्तिनु पक्चुनिल्पतुम  
 मरणमाबुध्न महाजलधितन  
 नुरयाय लोक्कम् परिणामियत्ते ।

“तरुणमाम् रविकिरणम पुत्तुमी  
 निरुपममाय पनिनीच्चम्मलर,  
 स्वक्पात्रमोह पुतियजीवित—  
 मकरन्दम् कोण्टु निरच्चेत्तुभेरम्  
 तिरिच्चरियुमो ?” वितुम्पिनोक्किनि—  
 शोरिक्कलोमलाळुरच्चाळिड्डने ।  
 क्कमनीयमतो पुतियताम् रूप—  
 ममलयामवळणञ्जिरिक्कणम् ।  
 अथवा चेन्नेत्ताम् मनोत्तमाम् वीत—  
 व्ययमाय नित्यवसन्तलाक्त्ते,  
 परिणतप्रेमपरिमलभरम  
 परत्तिञ्जीवितम् विट्टम् ताक्त्ते ।  
 मणभूतकुम् चुट्टिष्टिष्ट वारुक्कुप—  
 लणिञ्ज क्कळाल इमशान भूमिये  
 विक्कचपुष्पम्कोण्टलङ्करिक्कट्टे  
 विक्कलमाय्पनी निहतजीवितन् ।

## वृन्दावन

वृन्दावन की विटप गाखाआ पर विहार करनेवाले  
मन्दानिल का स्पश पाकर, हँ मेरे मन  
अपनी पूत भावना के झीने पखा का फलाकर  
धीरे धीरे आगे बढ़ो !

देवताआ को भी पुलक-कचुक प्रद है  
यह पुण्यमय कानन ।  
यही वन आज भी सुरभित कर रहा है  
नदगाप के उस पुण्याकुर के शशव को  
जो इस भूमण्डल का भाग्य है,  
देवकी-देवी का प्राणोच्छवास है  
मगलमयी गोप बालिकाआ का  
मजुल रत्न पदक है,  
समस्त विश्व को आलाकित करने के लिए अवतरित  
मुग्धकारी सुपमा-भूरित सुप्रभात है ।

यह वन-स्थली ही तो है वह चकारी  
जिसने मुयाकर की नवनील चन्द्रिका का पान बि या  
यहाँ आज भी मुप्त पडी है  
उस नीलमणि-वणवाले की कान्ति  
इन पनी नीली घासा में,  
इन पुलक-अष्टकित वदम्ब के पेडा में ।  
अथवा उन्हें कालि-दी क्या चूमती  
अपने तरल मृदुल लहरा के अधरा से ?

गाया को चराता, धीच-धीच में बसी बजाता  
वह माया-बालक यहाँ ही ता विचरा था !

## घृन्दाघनम्

वदावनमरककोम्पिल्क्कळिकुम्भ  
 मदानिलनेट्टु मानसमे !  
 सावधानम् नी परजालुम् क्षीणिच्च  
 पावन भावनापत्रम धीशि ।

वदारक्माक्कुम् रोमाचकचुक-  
 सन्दायकम् पालिप्पुण्यारण्यम  
 सुन्दरमी वनमूल्ल सूक्षिप्पता  
 नदटे पुण्यक्कुम्भित्त्वालयम्,  
 भूवलयत्तिटे भाग्यविलसितम्,  
 देवकीदेवितनुच्छवसितम  
 मगलगापालमङ्कमार चात्तिय  
 मञ्जुळमाय मणिप्पतक्कम्  
 साक्त्तेयाक्तेत्तेळिप्पानुळवाय  
 लोभनीयाभमाम् सुप्रभातम् ।

ई निलमल्लीयात्तिङ्कळिन्नानील-  
 त्तूनिलावुण्टारिळम चकारम् ।  
 श्यामळमायिटतूर्त्तुम् पुल्लिलुम्,  
 कोळमविर कालुम् कटम्भिनमेलुम  
 आ मणिवण्णटे वान्ति मयडडुनु—  
 ष्टामदम् वाळित्तियल्लेनाविल  
 लोलमृदुलतरगाथरपुटत्तालव  
 चुम्बिक्कुमायिरना ?

पालिक्किटाडडळेच्चालेत्तेळिच्चु नल्-  
 वकोलक्कुपलिटप्क्कूत्तियूत्ति

## वृन्दावन

वृन्दावन की विटप शाखाआ पर विहार करनेवाले  
मन्दानिल का स्पर्श पाकर, हे मरे मन  
अपनी पूत भावना के झीने पखा को फलाकर  
धीरे धीरे आगे बढ़ो ।

देवताआ का भी पुलक-कचुक प्रद है  
यह पुण्यमय वानन ।  
यही वन आज भी सुरभित कर रहा है  
नन्दगाप के उस पुण्यावुर के शींगव को  
जा इस भूमण्डल का भाग्य है,  
देवकी-दबी का प्राणाच्छवास है,  
मगलमयी गोप-वालिवाआ का  
मजुल रत्न-पदक है,  
समस्त विश्व को आलाकित करने के लिए अवतरित  
मुग्धकारी सुपमा-भूरित सुप्रभात है ।

यह वन-स्थली ही ता है वह चकारी  
जिसने सुधाकर की नवनील चन्द्रिका का पान किया  
यहाँ आज भी मुप्त पडी है  
उस नीलमणि-वणवाले की कान्ति  
इन घनी नीली घासा में,  
इन पुलक-वष्टकित वदम्ब के पडा में ।  
अन्यथा उन्हें कालि-दी क्या चूमती  
अपने तरल मूदुल लहरा के अधरा से ?

गाया को चराता बीच-बीच में बसी बजाता  
वह माया-यालक मही ३१ ता विचरा घा ।

मायाकुमारन् नटक्कवे कामळ-  
 माय तूक्कालेट ट मणतरियिल्  
 मायातेयिनुम् किटक्कुनुष्टावामा  
 माघुयमेरुन्न पाटारोन्नुम्  
 तिडिडवळन्न वनत्ताटनुवाद-  
 मेडिडनेयेङ्किलुम् नेटुवानाम्  
 सायन्तनाक्ककरडडळ तिरक्कुव-  
 तायव चुम्बिप्पानायिरियक्काम् ।  
 चेशुट्ट तल्पादपल्लवम मेलेट ट  
 रेणु निरञ्ज निलत्तु नीळे  
 वीणुण्टेत्तुन्न वीताघवातत्ते  
 वेणुक्कदम्बवमाश्लेपिप्पू ।  
 सारुघतीकराम् सप्पपिमारात्तु  
 चेहन तारकमण्डलत्ते  
 वानिलुम्, रागात्तमाराय वल्लव-  
 मानिनिमारे निकुञ्जत्तिलुम्,  
 पाटट्टण्यक्कुवान पाटवम वूटियो-  
 रोटक्कुपलिटे दियनादम  
 तूविकिकटप्पुण्टाम् कल्लिलुम् पुल्लिलु-  
 माविलभूविलु मल्लेन्नाक्किल्  
 चोविविटेय्क्कु चेविकाटुत्तिडडने  
 मेविटान मूलमेन्तात्तमौनम् ?

प्रेमस्वरूपनाम् लोककात्माविटे  
 कोमळच्चुण्टिण चुम्बियक्कवे  
 स्नेहमाम् वेणुविल् सवचराचर-  
 मोहनमाकिन भयगानम्  
 स्वरम अविच्च मण्ड डळ परस्पर-  
 वैरम् मरन्नु मदिच्चुपालुम् ।  
 अत्तिनिन माघुयम् काण्टु निरञ्जुपोल  
 कुप्पिटे भीकर कदरड ञ्ळ

उसके पैरा की वे मधुर मुद्राएँ  
 आज भी वन प्रातर की सिक्ताआ में  
 अमिट अकित ह ।  
 साध्य सूय की किरण  
 शायद उही को चूमने के लिए  
 इस वीहड वन की अनुमति पाने का  
 आतुर है ।

उस मनोहर पद-पल्लवो से अकित  
 सिक्ता भूमि पर  
 लोट-पाट होकर चला आया है पवन,  
 और गले लगा लेता है वेणुवन  
 उस अधहीन का ।  
 शायद प्रकीर्ण पडा हो  
 उस वामुरी का दि-यनाद  
 यहाँ के काटा में, ककड पत्थरा में,  
 और इन आविल भू विभागा में,  
 जो अनायास खीच लाने में पटु है  
 नभ में अरुचती और सप्तपियो से युक्त  
 नक्षत्र मण्डल को,  
 केलि कुजा में प्रेमाद्र गाप मानिनियो का ।  
 इसीलिए ता यह आकाश कान लगाये  
 नितान्त मूक खडा रहता है ।  
 चराचर को मुग्ध कर देनेवाला भय गीत  
 जत्र प्रवहमान हुआ, प्रेमिल प्रभु के  
 कामल अधरा का स्पग बरनेवाली स्नेह मुरलिका से  
 ता आनन्दा मत्त हाकर मुनने लगे मृग्मसिह  
 भून गये जाति-धर ।  
 तब भर गयी पवत की भयानक गुफाएँ भी  
 इस की मधुरिमा से,

नाकवुम् भूमियुमन्तरमोक्केती-  
 श्वेकगृहत्तिन् मुखिळ्ळायि ।  
 नित्यवधिरड् डळ वृक्षड् डळपालुमा  
 निस्तुलगीनम नुकनुहत्ताल  
 आनन्दनत्तनम चैय्त्तु निरन्तरम् ,  
 काननञ्चानकळेट ट्टु पाटि ।  
 ममानुभूविनिषेप्तु काणुमा  
 मुमातिरिक्कानु मारिक्काण्मान ।

बालकदम्बकच्चिल्ल मुक्कमी  
 नीलगिलानलमाधिरिक्काम्  
 भाववदगतप्रार्थिनिपाप् चम्पु  
 राघ वसिच्च विहाररगम ।  
 आ महाभागनन् प्रेमसुरभिल-  
 कोमळालापमधुकण्ड डळ,  
 भूतलम् मुन्याट्टेरिञ्जु मरिच्चाह  
 भूतकालत्तिन पूणेल्लुपाले  
 काणुमिक्कल्लिनुळ्ळारोविटविलुम्  
 वीणु वट्टाते किटक्कुत्ताय्याम् ।  
 नल्पाळम मञ्जरि ताण, तुनाक्कित्तान्  
 निल्पाणिट्टि ट्टु तेनक्कणीर सुक्कि  
 कोमळनादत्तालक्कारक्क राजिये-  
 ककोळमयिक्ककोळिळक्कुम काक्किताळि  
 कौविट्टुत्रिल्लधुम देवित्तन् पादत्ताल्  
 पावित्तमाक्कियारिप्रदेगम् ।  
 जीवितच्चालिन मरुक्कपट्टीट्टु-  
 मीविषमुळ्ळ स्मृति तन् निपल् ।

मुल्लक्कळ सुक्किक्कुत्ताय्यावाम पूचेप्पि-  
 लल्लपिदेणित्तन इवासण्णम्

मिट गया स्वर्ग और भूमि का अंतर  
 बन गये एक ही भवन के वे दा कस,  
 नित्य बधिर वृक्षा ने भी  
 उस हृद्य संगीत का पान किया प्राणा से  
 करने लगे आनन्द-नतन,  
 अनुगान किया कानन के बरना ने उसका ।  
 न जाने कब देखेगी मेरी मातृभूमि यह दृश्य  
 परिवर्तित होने के लिए पूववत् ।

हो सकता है  
 यही गिलानल हो  
 माधव-दगन के लिए उत्सुक राधा की बिहार-स्थली  
 चूम रही है जिसे बाल कदम्ब की मदुल डाल ।  
 उस पुण्यगालिनी की  
 मृदुल प्रेमालाप की कामल मधुकणिकाएँ  
 आज भी अभ्रण्य पड़ी हागी यही  
 इन गिलाखण्डा की दरारा में  
 जिन्होंने आगे धकेल दिया है धरा को  
 और स्वयं बन गये हैं  
 मृत अनीत की रीड की हड्डी ।  
 राधा-देवी के पद-स्पर्शों से  
 पावन बने हुए इस प्रदेश का  
 छाड़ना नहीं चाहता कोयला का झुण्ड,  
 पुलकित किया है अपने कोमल नाद से  
 कलिकाभा का जिहाने ।  
 जीवन-सरिता के पार तक फैली हुई है  
 ऐसी स्मृतिया की धाराएँ ।

मलिनबाआ ने आज भी सुरक्षित कर रखा है  
 अपने पुष्प-सम्पुटों में  
 गहरे तम-नी कुण्डिल कुन्तला राधा की  
 स्वास-सुरभि का



अल्लोकिलेन्तिनु वीष्पिट्टिळ्मवाट टु  
 चेल्लुन्नतेधुमवय्यवरिविल ?  
 हेमन्तरात्रि करञ्जुपावुघुण्टि-  
 श्रीमलप्रदेशत्तेस्स दशिवके ,  
 ई मणल्लत्तट्टि-मलल्लो विहरिवका-  
 रोमनवक्खणनुम् गापिक्युम ।

ओरा पाटियिलुम् त्तुविक्किटक्कुनु-  
 णटारामल्लप्पुविळ्ळम्पुचिरिप्पाल् ।  
 अन्तिवत्तन्तिनाणल्लोकिल् नियवुम्  
 पिन्तुरियुत्तनुम्, तमुग्गाञ्जम्  
 श्यामच्चिबुरभरत्ताल् मरप्पतु-  
 मामन्दम् मौनम् भजिक्कुवतुम्,  
 ध्यानत्ताल् मूकनाम् वानमिटक्किटे-  
 क्कानन्दपूर्वमिड्ड डाट्टु नाक्कि  
 मन्दस्मितत्तिनाल् गारदनीरद-  
 वदमाम् मौश वेळ्ळुप्पिच्चतुम् ?

सामनाम् तूमलर मज्जुपयेत्तिव-  
 क्षीमणल्लत्तट्टि-मेल सच्चरिवके  
 कण्णिन्तु कौतुकमट्टुमारेल्लक्कुत्तु  
 वेण्णिताविन्नुम् वेळ्ळुप्पु वरे ।

आराभ्ययायि नी राघे महपिमा-  
 राराञ्जु वाणात्त नीलरत्नम  
 श्रीमति, निन वैक्कळ तट्टिवन्नीलया  
 प्रेमम् महत्तरम् पानत्तक्काळ् ।

अथवा

क्यो जाता यह तरुण पवन

नित्य उस आर

अपनी सासा में गघ भरने ?

इस श्रीमय प्रदेश पर आकर फूट फूट पडती है

हेमन्त की रजनी ,

हाय, इसी सकत पर ही तो होता था

प्यारी राधा और कृष्ण का बिहार !

यहा के प्रत्येक धूलि-कण में

बसा हुआ है

उस प्यारे फूल-से कोमल मन्द हास का दुग्ध !

नही तो क्यो सध्या

यहा नित आकर श्यामल केशो से

मुह ढँककर लौट जाती है नितान्त मूक,

और ध्यान-मग्न मूक गगन

बीच-बीच में जब इस ओर निहारता है

तो अपनी मद स्मित प्रभा से

और भी घबल कर लेता है

अपना गरदभ श्मश्रु ?

जब इस सँकत पर टहलती है स्निग्ध चन्द्रिका

हाथा में लिये सोम पुष्प की मजूपा,

सब अत्यधिक नयन माहक हो जाती है

उसकी अलौकिक घबलता !

आ राधिके, वन्दनीय है तू

सतत साजने पर भी

जिस नीलरत्न का न पाया ऋषिया ने

वह तुम्हारे हाथा का स्वय खोजता आ पहुँचा !

निश्चय ही प्रेम गान स श्रेष्ठ है ।

श्रीलव्णुन्दावनलक्ष्मिक्कु नीराळ-  
 नीलशरियुटयाट तुति  
 कालम् कपिकुम् वळिन्दकुमारी, निन  
 वूलत्तिल् वाणुवाणैन् जीवितम्  
 अतरगतिल् नी लाळिवकुम श्रीराधा-  
 वातस्मृतियोट्टु याजिञ्चाव ।

ममरव्याजत्ताल् गोपिकामाघव-  
 नमसभाषणम् चोल्लिच्चोल्लि  
 चारुवृदारण्यम् चेक्कट्टे नलत्तीय-  
 चारिकळ्क्केधुमम दानन्दम् ।

—१६२६

हे कालिन्दी !

बिताया है तुमने जीवन

मृदुल नीलाशुक्ल धुन-धुनकर

सुन्दरी बन्दावन-लक्ष्मी के लिए ।

निरन्तर तुम्हारे तट पर बसकर

विलीन हो जाऊँ मैं राधाकृष्ण की उन स्मृतियों में

जिन्हें तुमने अपने अन्तरग में संजो रखा है ।

राधाकृष्ण के मधुल प्रेमालाप को

ममर ध्वनिमा के बहाने गुजरित करता हुआ

यह मनाहर बन्दावन

विगुद तीर्थचारिया को

सदा ही आनन्द प्रदान करे ।

## कुयिलू

“ओरु चाणु तिवयिल्ल  
जीवितम्, व्योमम्पाले  
वेरताम्तानुम् वृत्य -  
भेन्निट्टुम् पिवोत्तम,  
पपुते पाटिप्पाटि  
प्पायुमी वसन्तात्ते  
मुपुवन् कळञ्जालो ?”  
तुटनू चोद्यम् पायन्

“ई विशालारामतिल—  
क्काट टटिक्कूट्टम निनु  
जीवितप्पोरिनुळ्ळ  
काहळम् विळिक्कुम्पाळ  
अलसम् वसिक्कुम् निन्  
मुग्घगीतत्तिन्नेन्नु  
विलयाण, पहास्य—  
जीवितम् परभतम् ।

तक्कमालक्कळ पूण्टु—  
निल्लकुन्न कोनक्कूट्टु—  
त्तिङ्गलनिन्नत्तुप्पितन्  
मम्मरम् वेळक्काकुप्पु !  
मतियेन्नताम् भावम्  
श्रेयस्सिन् प्रतिवच—

मतियामसत्तप्पि—  
थौन्त्यसौधद्वारम ।

अन्नलक्ष्मियादित्य—  
मण्डवचत्ति-मेल

शुन्नूल् नूट्टीट्टुम्—  
ष्ठालस्यम् भावियक्काते ,

## कोयल

“जीवन तो नहा है उँगली की पोर जितना  
किन्तु कतय है विशाल व्याम-सा ,  
तो फिर पिकवर,  
क्या खोये दे रहे हा दुलभ वसन्त को  
व्यथ ही गा-गाकर ?”

पथिक ने अपना प्रश्न जारी रखा—  
“इस विशाल उपवन में खड़े होकर  
चपल तरुण  
जब जीवन-सग्राम की भेरिया बजा रहे हैं  
तो तुम निरे आलसी के गीता का मूल्य ही क्या है ?

‘हे परभृत  
परिहासमय तुम्हारा जीवन है !  
स्वर्णमाल विभूषित कर्णिकारा की ओर से  
आ रही हैं अनृप्ति की आवाज  
अलभाव बाधक है श्रेय का  
किन्तु  
चिर-अनृप्ति द्वार है  
उन्नति के सौध का ।  
यह आकाशलक्ष्मी  
आदित्य मण्डल के चरखे पर काते जा रही है शुभ्र सूत  
बिना किसी आलस्य के,

दिवसम् सितामभोद-  
 च्छेन्माम् पुत्तन्पञ्चि-  
 यवळतन् समीपत्तु  
 नगाविक वेच्चीट्टुनु ।  
 पकलिनिल्ला नीळम,  
 वेळिच्चम् वक्कुम् रानि-  
 यक्लत्तल्ले नयक्कु-  
 मायुप्पत्तच्चिट्टुम् मुम्पे,  
 स्वकपोलान्तम तुट्टु-  
 प्पोळवुम् कणमपोलुम्  
 मिकवेरीट्टुम् जीवि-  
 तासवम् पोयीटाते  
 नुकहततिनल्ली  
 पोल्पनीप्पूविन वक्त्रम्  
 मुकरम् समीरणन्  
 मनिप्पू सनिश्वासम् ?  
 कटल् तन्साभ्राज्यत्ते  
 नीट्टुवान् तिट्टुड्डुन्न ,  
 कर कीपट्टड्ड हाते  
 निल्क्कुवान् यत्तिक्कुनु ।"  
 कोक्किलम् चोली —"साधो,  
 मगळम् ! भवान् चेन्नु  
 पूक्कुट्टिष्टस्थानम्  
 पुष्पमागतिलक्कूटि ।  
 लोकलावण्यक्करिम-  
 कूवळप्पूविनपत्र-  
 माक्कभ्रस्वातश्च श्री-  
 देवितन् पुण्य क्षेत्रम  
 नाक्कमण्डलम्, वरण्के-  
 तन्नेलान् मरत्तव-  
 नाक्याम् जा, नेन् पाट्टु  
 सायमो निरथमो ।

और यह दिन  
 उस के निकट रखे जा रहा है  
 स्वने नीरद की नयी-नयी पूनियाँ  
 धुन धुनकर ।  
 दिन लम्बा नहीं है  
 और उजाले को  
 लूट ले जानेवाली रात भी दूर नहीं ,  
 हमेशा के लिए सो जाना पड़ेगा  
 उससे पहले ही दोगा हाथो लूट लो  
 जीवन की मदिरा,  
 व्यय न करो उसकी एक कणिका भी,  
 हो जायें तुम्हारे कपोल नक्षे से लाल—  
 यह समीर  
 जो गुलाब के अघरो का चुम्बन ले रहा है,  
 निश्वास भरकर यही तो कह रहा है ।  
 सागर  
 अपने साम्राज्य का विस्तार करना चाहता है  
 और घरातल  
 पराधीन न होने का यत्न करता है ।”

कोपल बोली—

“भद्र, कल्याण हो तुम्हारा,  
 पुण्य-पथ द्वारा तुम अपने लक्ष्य को प्राप्त करो ।  
 स्वातन्त्र्य की श्री-देवी का पावन निवास-मन्दिर है  
 विश्व लावण्य के नीलोत्पल दलो में,  
 इस नभोमण्डल को देखकर  
 भूल जाता हूँ मैं स्वयं को,  
 मालूम नहीं  
 मेरा गीत सायक है या निरप्यक ।



तारणिककेपुम् भगि—  
 यिल्ल मे, वपुकटे  
 दूरदृष्टियुमिल्ली  
 मामरक्कोम्पत्तेट डान  
 आकाशत्तिटे नित्य  
 सौदयम् पाटिप्पाटि  
 शोकास्पृष्टात्भावयि—  
 ककालयापनम चयवेन ।  
 जीवितप्पोरिल तोट टु  
 तोट टुळ्ळम् कीरिक्कीरि  
 मेवीटुम् सहोदर—  
 मारिलाक्कानुम पक्षे  
 आनन्ददानम् चैय्वान्  
 शक्तमायेक्कामेन्टे  
 गानम्, जानतिक्षुद्र—  
 पक्षियायिट्ताडे ।'

—१६२६

मुझ में न तो फूला की सी सुकामलता है  
 न भीष की सी दूर दृष्टि ,  
 मेरी तो कामना यही है—  
 पेड़ की इस डाली में पड़ा रहूँ कहीं शाक मुक्त  
 आकाश की अनश्वर सुन्दरता का गीत गाता हुआ ।  
 जीवन-संग्राम में निरन्तर पराजित होनेवाले  
 विदीर्ण हृदय बघुओ में अवश्य हागे ऐसे कोई,  
 जिन्हें मेरा गाना आनन्द-दान करेगा ,  
 मैं तो क्षुद्र पक्षी हूँ  
 यही सही । ”

—१९२६

## काट्दुमुल्ल

नियतितन् मृदुनिम्मलहासमे,  
 नयनचुम्बियाम् नयप्रकाशमे,  
 वियति निस्नलविश्वत्सवत्तिना-  
 युयरुम् नीराळच्चेद्धोटिकूर नी ।

निरथ, निन्द्युतिनीरपियिल् द्विज—  
 निरयिळक्कुनु नीळवे वीचिक्कळ ।  
 नुरक्कळ चेक्कुन्नु मालयमास्त-  
 तरळितड डळ्याम् वेण्मलर तोत्तुकब्द ।

वियियुम् ह्यत्ताल् वानिनु तारक्-  
 मिपि तव स्पशमीलितमाकुनु ।  
 कटलिन्मारिटमानदजूभित,—  
 मटवियापादबूडम् पुळकितम् ।

मुखमिरष्ट जीमूतत्तिनु, कविळ  
 सुखमदरागसु दरमाकुन्नु  
 दलकुलम् भवदशुक्तल्लज—  
 तल मुक्कन्नु ताण्डवम् चेम्पुन्नु ।

जनगणादरमेन्तेन्नरियाते  
 वित्तयलञ्जाविधुरमाय् नित्त्वक्कुम् ज्ञान्  
 आह वनमुल्ल, दिव्यातिथे भवा-  
 न्नरळितेष्टेष्टेत्तेङ्ङने स्वागतम् ?

## वन-जुही

हे नियति के मृदु निमल हास  
नयनों को चूमनेवाले नव्य प्रकाश,  
तुम हो अनुपम विद्बोत्सव के निमित्त  
आकाश पर ऊँचे पहरानेवाली लाल रेशमी ध्वजा ।

हे निष्पाप

तुम्हारी सुन्दरता के सागर में  
हिलोरें लो रहे हैं पल्लव ,  
तरुण-पवन के स्पश से दोलायमान  
ये विवसित श्वेत सुमन मजरियाँ  
उठा रही हैं धवल फेन ।

आकाश के तारक नयन  
मूद लेते हूँ पलकों हृषातिरेक से ,  
तब पाकर तुम्हारा स्पश-पुलक  
आनन्द से फूल उठा है  
सागर का वक्षस्यल  
और पुलकित है अरुण्य नख गिलान्त ।

श्यामलता से भरा बादल का वपोल  
अभिराम बन गया है आनन्द की अरुणिमा से,  
चूमकर तुम्हारे अंगुल का आँचल  
ताण्डव कर रहे हूँ ये पल्लव-दल ।

मैं हूँ एक वन-जुही,  
नहीं जानती जनगण का आदर,  
विनय और लज्जा से विह्वल  
कैसे बहेंगी तुम्हारा स्वागत ?  
हे मेरे दिव्य अतिथि ।

पुरटवण्णमाम् पूम्पटटु मलिट्टु  
 मरतकमणिशैलपीठान्तिके  
 ललितशालाप्रलम्बियाम काचन—  
 त्तिळिहपट्टिनाल् वीशान् लतवळुम,  
 फलभरोपहारत्तेस्समप्पिप्पा—  
 नलमुयत्तेपुम नाना नगड्डळुम,  
 रजतनक्षत्ररत्नदीपत्ताटे  
 भजनलालप्रभातवुम् निल्क्कव  
 मृदुलहासम् कलर्नु वध्न भवान  
 मदुपकण्ठत्ति लेरे लज्जिण्णु जान् ।

कटलिनेप्पोले मद्रमधुरमाम  
 पटहमिल्लादरिच्चेतिरेक्कुवान्  
 हृदयमल्लातेयिल्लिरुत्तीट्टुवान्  
 सदनमी क्षुद्रपुत्तित्तनड्डुये  
 नवपनिनीरलरिट्टे वासना—  
 लववुमिल्लेनिक्कानन्ददायकम  
 परिचितमल्ल हारियाम पाट्टेनि—  
 ककरिमकालुमरुवियेप्पोलवे ,  
 मधुवुमिल्लविट्टेय्क्कु सर्माप्पिप्पान  
 मधुरदशन, हा ! अपामक्क जान् ।  
 करळिलेत्तविट्टेय्क्कु तानुमा ?  
 परमगुद्धमेन प्रेममरियुमा ?  
 हिमकणाधुक्कळ शक्कड्डुळ्ळुकुमा  
 मम मनागतमाक्केयुरय्क्कुवान् ?

सुनहरे पटम्बर से समाच्छादित  
 मरकतमय शैल-मीठ के समीप  
 खड़ी थी लतिकाएँ ।  
 अपनी ललित शाखाया में  
 स्वर्णम पल्लव-वसन लेकर  
 चामर झुलाने के लिए,  
 अनेक ऊँचे पवत  
 पत्ता का उपहार समर्पित करने के लिए,  
 सेवा निरत प्रभात  
 रजत-नक्षत्रा का दीप लिये ,  
 तब आप मदुल मुस्कान के साथ  
 मेर ही समीप आये, मैं लज्जा विभार हूँ ।

आपकी सादर धम्ययना के लिए  
 समुद्र का सा मद्र-मधुर वाद्य नहीं ,  
 आपको विराजमान करने के लिए  
 हृदय का छाडकर दूसरा सदन नहीं  
 इस क्षुद्र पुष्प के पास ।  
 सद्यः स्फुटित गूलाब की  
 आनन्द-दायक मुरमि का एक लघु वण तक मुझ में नहीं,  
 मुग्ध घरना की तरह  
 मनारम गीत गाना भी मुझे नहीं आता ।  
 तुमका समर्पित करने के लिए  
 मधु भी ता मरे पास नहीं ,  
 हे मधुर दान, म लज्जा म बाल भी नहीं पाती ,  
 न भानूम आप क्या सावेंगे अपने मन में ?  
 क्या जानेंगे मेर परम विगुड प्रेम का ?  
 क्या ये आस-वशा के अधु  
 प्रकट कर सकने ह मेरे मन के सब भाव ?

मुकरुकेते मकरुकेमुळिल्लु नि-  
सकलुवोळम् तमोभरम मदुरम् ।  
प्रणयियाम् निन वपियिलन जीवित-  
क्षणमपद्धिलम् वेळळ विरिन्चावू !

—१६२६

चूम लो मुझे, चूमते रहो  
जब तक कि मन का तुमुल अघकार न मिट जाये ।  
हाय ।  
मेरे जीवन का प्रतिक्षण  
तुम प्रणयी के पथ पर  
अपकिस पांवडा बिछा पाता ।

—१९२६



तेट टु पास्तालुम् तेट टाकि, लार्थे, निन्-  
चुट्टुम् पास्ततेन् चित्तभगम्

२

चैकित्तुम्पुवळ नीट्टियरिवत्तु  
तक्कतिरवनुल्लसियवके,  
अञ्जनवण्णविण्णपञ्जरवद्वयाम्  
पचवण्णक्किळियाय सग्घ्य  
सञ्जनिताह्लादम् भेल्ले विट्तिनाळ  
तञ्जगमोहनचित्रपत्रम् ।

पुचिरि तचिनिघ्नोमलाळोतिना-  
ळैचिरसचित्तपुण्यपुजम् —  
“वेण्णुमुळड टळ विट्ठुं तुट्टि डय  
विण्णुमुल्लवल्लिव नालुपाटुम्  
भारत्ताल तूडि ङक्किट्टुत्तु, पदिचम-  
भागत्तु वतन्ति पूनुळ्ळुत्तु ।  
ऐत्तित्र तूण्णयिल्लातावान् वण्णिण-  
य्ककन्ति चेम्मद्यवुमेन्तिनित्त्वे ?”

चेवटिच्चेन्तारिलोळमटियवकुत्त  
पूवणिवकार वेणित्तुम्पु वारि  
आमन्दम चुम्मिच्चुच्चुम्बिच्चु चोल्लि ज्ञान्  
प्रेमविकसितलाचनान्न् —  
‘चाप्पिरट्टिच्चारिस्सुन्ऱफालत्तिल  
वेत्तिनाल् तारक्क मिन्निमिन्नि,

अगर है यह अपराध  
तो प्रिये इस अपराध को क्षमा करो,  
मेरे मन का भौरा तुम्हारे चारा आर मँडरा रहा है ।'

२

जब बजक-सूय अपनी अरुण रश्मिया फैलाये  
पास खडा हुआ तो  
अजनबण गगन पिंजरे में वन्द  
पञ्चरंगी सारिका सध्या ने  
अत्यन्त आनन्द के साथ  
अपने जग-मोहन रग विरगों पख धीरे धीरे फँसा दिये ।

मेरे चिर-सचित्त पुण्य की पुजीभूत प्रतीक प्रिया ने  
मन्द-हास के साथ

मुझमें मधुर स्वर में कहा—

‘खिले हुए घबल मुकुला से लदी

यह नभ-मालती

अपने भर से चारा ओर से

नाचे की ओर खुली जा रहा है

और पश्चिमा दिन से अन्तर

संया रूल चुन रहा है ।

खडी है वह अरुणाखण मदिरा लेकर

आज क्या आपकी आखा की तपा सूख गयी है ?’

समेटकर हाथा में गध-मदिर नील अलकावलि

जा लहरा रही थी अरुण चरण कमन पर

मने उन्हें चूमा

और प्रणयाकुल दृष्टि लिये वाला—

“इस अरुणाये हुए ललाट पर

श्रम-वणिकाआ के तारे चमचमा रहे हैं

तेल्लिलळकीटुस नीलाळकडडळा-  
 लल्लिन समागममोतियोति,  
 वेलकळेल्लाम वेटिञ्जोरेतिद्रिय-  
 वेलक्वाक्कानि दमेटि टयेटि ट,  
 रागमधुरमाम् तोट्टाले मन-  
 स्सागरमारक्तमाक्कियाक्क,  
 नानाविकारत्तिरक्ळुणसुवो-  
 री नेटुवीण्णुक्ळ वीशिवीशि  
 म्ळानमाम् मामकसन्तप्तजीवित-  
 सूनत्तिन्नु मेपमेक्कियेकि  
 अन्तिके माहनदशने, नी नित्क्के-  
 यन्तिये वेरेयारवेपिक्कुम् ?  
 तेट टु पोस्तालुम्, तेट्टाकि, लार्ये, निन्  
 चुट टुम् चरिप्पतेन चित्तमेघम् ।

--१९२८

धीमे धीमे दोलायमान नील अलकों  
 रजनी के आगमन की सूचना दे रही है,  
 कमजाल का समेट लेनेवाले  
 कर्मेन्द्रिय भारवाहका का श्रम-भुक्ति का  
 आनन्द दे रही है,  
 नेह भरी मधुर चितवन से  
 मर मन के सागर का आरक्त कर रही है,  
 नाना विकार - वीचिया का विशाभ पदा करनेवाली  
 लम्बी-लम्बी साँसें चल रही हैं,  
 द रही हैं नवोमेष  
 मरे म्लान मलिन तप्त जीवन के सुमन को,  
 तू जब खड़ी है अत्यन्त निकट, माहनर्दागिनी !  
 ता कौन क्या किसी दूसरी सव्या की खाज करेगा ?  
 अगर यह अपराध है,  
 ता क्षमा कर दो इसे प्रिये !  
 मेरा हृदय घन घुमड रहा है तेरे चारो ओर ।

—१९२८

## निपल्

आनयमट ट निप , लस्थिरमाम् किनावु-  
तानल्लयो मलिनमाय मदीयजमम्  
आनन्दवुम् तेळिवुमटि टपयुनु पारिन्-  
क्कानल्ज्जलत्तिलारु निद्रयिल् मुडिड् मुडिड् ।

घारम् निदाषवेयिलेट टु तकनु निल्वकुम्-  
नेरम् तुणयक्कणयुमेन् बुळिर मेनि पटिट्  
स्मेरम् मुलम् सुरभि निश्वसितम् कुनिच्चु  
पारम् त्रपामघुरमाम् मलर् निल्प्पु मूक्म् ।

मत्तिल्च्चिरिच्चुमरुवुम् पक्कित्ते कण्णु  
पात्ति, स्तनिद्रवयलित्ते कविळत्तत्तिल्  
मुत्ति, क्करिम्पुमुळ्याल् पुळ्ळवावुरम् क-  
ण्टुळ्त्तिडिड्दुम् सुखमाटड्डने आन् चरिप्पु ।

मारुधु मल्स्थितियिट्पिक्कटे पुप्रवेय्लिल्  
नीरुन्न ताप वरयिल्निश्वरियातेतन्ने  
केरुधु दीतळमहाद्रियिलेन्ने मिक्क-  
वारुम् नयिप्पतोरदृश्य वलिष्ठशक्ति ।

गन्तव्यमाकुमिटम, तिवित्तेक्किट्त्त-  
त्यन्तम् भ्रमिप्पतिनिपेत्तारु वस्तुविज्ञो ?

## छाया

मैं हूँ एक अयहीन छाया रूप,  
मेरा मलिन जीवन केवल अस्थिर स्वप्न है,  
जग की मृग-मरीचिका में आनन्द और उल्लास से वंचित  
किसी स्वप्न में डूबना-उतराता सरकता हुआ चला जा रहा हूँ मैं ।

निदाघ की कड़ी धूप में  
जब मल्लिका म्लान हो जाती है  
ताम उसकी सहायताय पहुँच जाता हूँ ,  
मेरे शीतल शरीर से लिपटकर  
मुस्कान से मनाहर मुख झुकाकर  
मनिश्वास मूक खड़ी रहती है  
वह लज्जा-मधुर लता-वधू ।

मैं भाव देता हूँ नयन दिन के  
जा परिहास शीडा में ठहाका मारकर हँस उठता है,  
और चूमता हूँ निद्रा निमग्न कृपिस्थली के कपोल,  
और आनन्दित हाता हूँ  
ईश के प्रराह-मुलका का दल-देखकर ।

कभी-कभी दगा बदलती रहती है मेरी !  
कभी मैं कड़ी धूप से तपती तराई में रहता हूँ,  
कभी अनजाने शीतल शैल गिरर पर चढता हूँ—  
निश्चय ही काई महान् अदृश्य शक्ति  
चला रही है मुझे ।

कहाँ है मेरा गन्तव्य स्थान ?  
किस वस्तु का प्राप्त करने के लिए भटकता रहा हूँ मैं ?

एतन्तरम् गिरिनिरयक्कुमनिक्कु , मद्रि  
कान्तम् स्थिरम् , चपलमेटे विरुप जभम ।

अल्ला, महागिरियुमापियुमीनिलयक्कु  
निल्लाते मायण, मताणु निम्मगरीति ।  
एल्लात्तिलुम् परमसु दरमेकसत्थं—  
मिल्लायक्कयिल्लि, वयतिटे बहि स्वरूपम् ।

हा ! वनु सच्च्य रमणीयधरे ! पिरिञ्जु—  
पावट्टे, जानिक्किलाशु लयिक्कयायि ,  
एवम् पापिक्कस्तु पिच्चक्कवल्लि, कण्णीर—  
प्पूव , ल्पधैयमिवनुळ्ळतलिच्चिटोल्ने !

—१९२८

मुझ में और इन पहाड़ों में कितना अन्तर ?  
पर्वत है अचल मनोहर,  
किन्तु मैं जनमा हूँ चपल विरूप ।

नहीं,  
महाशूल और महासागर भी मिटेंगे एक दिन,  
बाई भी यहाँ न रहेगा तद्वत्—  
यही ता है सृष्टि की स्वभाविक गति ।  
सब के भीतर है किन्तु एक परम सुन्दर शाश्वत सत्य,  
ये जा दीखते हैं, उसी के बाहरी रूप हैं ।

हाय ! सध्या आ पहुँची,  
विदा, अयि मनोहारिणी धरिणी,  
मैं क्षण भर में तम में विलीन हो जाऊँगा ।  
हे मल्लिके ! पुष्प-अधुक्कण न झरने दा,  
इस तरह न खोने दा मुझे, रहे-सहे धैर्य को ।

—१९२८



## प्रभातवातम्

सजातमाकट्टे जयम प्रभात-  
समीर, भावल्ककमहोद्यमत्तिल् !  
वरुधु नी वानवदिक्किल् निद्रुम्  
वानिटे सदेशमिळयक्कु नलकान ।

उदारयाकुम् पुलर काललश्मि-  
युत्तिप्तहस्तागुलिपल्लवत्ताल  
आरब्धयात्राविजयोपलब्धि-  
क्काशीवदिवकुधु विकारमकम् ।

पक्चुनोक्कुधु तमस्तिनुळळ  
पारावुकाराक्किय तारकड डळ  
प्रत्यक्षमाकुनु विळप्पवक्कु  
प्रकाशदूताग्र्य तवप्रभावाल् ।

मदम् चरिक्कुम महनीय निमेल  
मरम् तळिप्पू पनिनीक्कणड डळ,  
परागसिन्दूरमुणघनित्र  
लताक्कदम्बम् तोट्टुविच्चिट्टुत्र ।

तट्टुनिल्क्कुम् गिरितन तट्टे-  
त्ताने विरप्पिच्चोरु सत्ववाने,  
चुम्बिच्चिट्टुम् कोच्चुतणाकुत्त-  
क्कोचित्तलोट्टुम् प्रणमाद्रना नी ।

हा ! निटेनेक्के तिरियुधु हारि-  
हपत्तुट्टुप्पाघ्न हरिमुत्तळ डळ ,

ओटवकुपल

## प्रभात समीर

जय हो तुम्हारी, हे प्रभात-पवन !  
सफल हा तुम्हारे महान यत्न ,  
तुम आ रहे हा देवताया के देश से  
स्वर्ग का सन्देश पृथ्वी का देने के लिए ।

उदार-हृदया प्रभातलक्ष्मी  
अपनी पल्लव-हस्तागुलिया का उठाकर  
तुम्हारी आरव्य यात्रा की विजयोपलब्धि के लिए  
विकारमूक हाकर आशीर्वाद दे रहा है ।

तारे जा तम के पहरेदार हैं,  
देख रहे हैं चौक-चौककर तुम्हारी ओर,  
हे प्रकाश के अप्रदूत !  
तुम्हारे प्रभाव से दिखायी देते हूँ वे कैसे पाण्डुवर्ण !

मन्दगति से चलनेवाले महात्मन !  
पेड़-पादप मुरझिल गुलाब जलकण छिटक रहे हूँ ।  
सजग सतिकावाला कदम्ब  
पराग सिन्दूर लेप रहा है ।

हे महासत्व !  
रास्ता रोककर खड़े रहनेवाले गिरि निकरा का  
तुम अकेले ही हिलाकर रख दते हा,  
किन्तु चूम चूमकर दुलारते हा  
नन्हें नन्हें नवल तूणाकुर का ।

दिगाया के हर्षादिग मनहर मुख  
तुम्हारी ओर घूम गये ह

परनिदुघ्न तव पुण्यनामम  
पत्रङ्ङळतन कम्पितमाय चुण्टिल ।

निलयिक्कळक्कम कलराते नीळे  
निल्कुत्त पुल्लकुत्तणिमेय् तरिच्चुम,  
विश्वैक्कविस्मापक्क, वन्दरास्यम  
पिळ्ळत्तियुम निनगति नाक्किट्टुनु ।

उरक्कमिच्चिळप्पवरात्तिट्टे—  
युमत्तनेनाय् मुखपानमत्तर ,  
तदनभावम् कर्त्तिककनिञ्जु  
तान वीष्पिट्टुम् नी पुळ्ळक्कप्रदायि

इरुण्टु जीर्णिण्णच्चेपुमित्रलत्ते—  
यिळ्ळातलम नूतनशोभमाक्कान  
मुत्तिन मूलप्रवृत्तियक्कु हत्तिल  
मुळच्च दुर्वारनवाश्यम नी ।

चराचरङ्ङळक्करियाम भवाटे  
चातुयमेरम् सुकुमारभाप  
अल्लायिक्कलासेतुहिमाचलात्त—  
माविर भविक्किल्लितुपालिळक्कम् ।

अक्कु तन् 'मास्मर विद्ययालि—  
ङ्ङ डालस्यमुष्ठाक्कियोरक्ककारम  
पुण्यप्पुळ्ळप्पात्त पुराणदेगम  
पुण्णु वीष्पिट्टुम पुत्तुपोलप्रकागम ।

विशिष्ट मदेशमरिञ्जतापि  
वीचिप्परप्पुम गिरित्तन निरप्पुम

पत्ता के कम्पित अघरो पर  
छा गया है तुम्हारा पुष्पनाम ।

अविचल रहनेवाले ये हरे भरे पवत  
पुलकित हा विस्मय स विस्फारित गुहा-मुख,  
निहारते रहते हैं तुम्हारी गति  
हैं विश्व के एकमात्र विस्मायक ।

कहत है सुखपान-मत्त जागरण विराधी  
कि तुम पागल हो—  
कि तुम हे पुलकप्रद,  
उनकी इस अगता पर द्रवित हाकर  
तुम उसासे भर लेत हा ।

तुम्ही हा  
विगत काल के जीण-मलिन घरातल का  
नयी छुति से जगमगानेवाली  
मूल प्रकृति के मन में अकुरित  
अप्रतिरोध्य नव-सकल्प ।

जानता है चराचर जगत  
तुम्हारी चतुर मुकुमार भाषा ,  
अचया,  
आमेतु हिमाचल  
ऐसा स्पन्दन कमे आविभूत होता ?

हट गया है वह अचकार  
जिम्ने भर दिया आलस्य अपने इन्द्रजाल मे यहाँ,  
मुनहले नवीन प्रकाश को  
फिर मे आलिंगन कर रहा है  
यह पुण्यपूण पुरातन देग ।  
जान गये हैं तुम्हारे सत्ता का  
ये गल शृङ्खलाएँ और यह तरंगित विपुल पारावार ।

आटुनु शैलद्रुमराजि, याञ्जा-  
ञ्जटिञ्चिट्ठु कटलिटे चित्तम् ।

एरिञ्जिटुनु निज जीवित्तड ड-  
ळेननाट्टिलेप्पुक्कळ भवाटे भुम्पिल्,  
मत्तेटि टटुनुष्टवतन सुगघ-  
मटुत्तोलिक्कुम् पुपकळक्कुक्कुटि ।

मुळयक्ककत्तुम भवदीयशक्ति  
मूळुनु चैतयदनाम् महात्मन ।  
प्रेमप्पुत्तुप्पुचिरियानु तम्मिल-  
क्कक्कुत्तु निलक्कुनितु नालु दिक्कुम् ।

चुवन्नु पक्कच्चु वेळुत्तु मेले  
चुटि टप्परक्कुत्तु मुक्किलप्पताक्क,  
उमेपदायिन । मम जमभूमि-  
यूणन्नतिन छाययिल् निनिटावू ।

—१९२८

लो, पहाडा की पादप-वक्तियाँ  
नृत्य कर रही हैं,  
और सागर का उरस्थल भी  
उच्छलित और तरंगित हा रहा है ।

मेरे देश के सुमन  
समर्पित कर रहे हैं आपको अपना जीवन,  
उनकी मंदिर गाय बना रही है उमत्त  
आस-पास बहनेवाली सरिताओं को ।

हे चतुर्दायक महात्मन्,  
गूँज रही है तुम्हारी शक्तिध्वनि वेणुवन में !  
प्रेम-मग्न मन्दस्मित के साथ  
उठी है चारों दिशाएँ हाथों में हाथ डालकर ।

ऊपर मँडरा रही है  
श्वेत-लाल-हरी मेघपताका,  
हे उमेप-दायक !  
मेरी जन्मभूमि जाग उठे  
और खड़ी रहे सदा इसी क्षण की मंगलछाया में ।

—१९२८

## मेघगीतम्

निपलुम वेळिच्चवुम  
लीलयिल् निर्म्मिच्चूपि-  
क्कपकुम वच्चिच्चवुम्  
वायिपय्वकुम् सवितावे,  
हिमशीकरत्तिलुम्  
सागरत्तिलुम् काणु-  
ममलप्रकाशमे,  
लोकचक्षुस्त, स्वामिन्  
गेयमाम् भवनीय-  
माहात्म्यमाक्कोतावू,  
नीयल्लो सनातनन्  
प्रकृतिप्रवत्तकन् ।  
प्रमत्ताल भवानोटु  
लोकवधो नी लोक-  
स्तोमत्तेव्वच्चिक्कुभू  
नी कालम् निर्म्मिक्कुनु ।  
पल धातुजातमामगलेपनम पटि ट  
विलमुम् वनप्पच्चमल्लच्चयुलयवे,  
कुटिलायतम् सरिलक्कुन्तळमपिञ्जु त-  
धुटलिल सुमाकीणम् चित्तरिक्किटक्कवे  
अलयापियाम ज्जरिप्पट्टपञ्जिपयव  
मलरिभणम वीणुम् वीप्पुकळुदियक्कवे,  
राविनालिटयिक्कटक्कण्णिम चिम्मिम्मूमि-  
देवि चय्युनु नित्यशयनप्रदिणम्,  
आरुटे पवित्रमाम् पार्त्तिन् परागडळ  
तारक्ळ् सर्वोपास्यनाकुमाब्भगवाने ।

## भैरवगीत

हे सविता,  
छाया और प्रकाश की सलील रचना कर  
जग को सुन्दर और विचित्र बनानेवाले,  
ओस-वृषण में और महासागर में  
समभाव से प्रतिबिम्बित होनेवाले अमल प्रकाश,  
लोकचक्षु, हे स्वामिन,  
कौन कर सकता है कीतन  
तुम्हारी गय महिमा का ?  
तुम हो सनातन, प्रकृति के प्रवक्तक ।  
प्रेम की डोर से बाँध लिया है तुमने  
अखिल विद्व ब्रह्म को,  
तुम्हा करते हो निर्माण काल का भी ।

यह धरित्री-देवी,  
विविध धातुआ के अग्रागा से अकित  
मनहर बानन हरीतिमा के उजागर उत्तरीय से शाशित  
अगा पर मिलरे ह सुमन  
शोभित है बक्र चचल सरिताआ की कुन्तल राशि से  
उमिल सागर के विलुलित निधिल बसन धारण कर  
कुमुम मुरभित निदवाम के साथ  
मूद लेती है रजनी की पलकें,  
कर रही है तुम्हारी गयन प्रदक्षिणा ।  
हे सर्वोपास्य  
ये तारापण है तुम्हारे पद्मगल के पराग मात्र ।



भूवमामोह वेष्टम्—

मुक्त्वा ज्ञानं, घनीभूत-  
लाववाप्यम् निनुसग-  
सामध्यनिदशनम् ।

इयमेतिरुष्टोरेन

जीवितम् भवान् तीर्तुं  
चित्रवेष्टितन् वेष्टम्  
वितम्कुम् करतिनात् ।

हा ! जडात्मवनाम् आ-

नतभुतसनातन-  
तेजस्से, रूपान्तरम्  
प्रापिष्व वीष्टुम् वीष्टुम् ।

सवदा तमोमय-

माकुमेनात्माविकल्  
दुवहमोहशामि-  
येन्ति आनुपलुनु ।

मामकेच्छय ल्लावकुम्

दश्यमल्लावकुम्  
भीमशक्तिवन्तील  
मलगति निर्वात्रिषू ।

ओन्नतूतियाल् धीर-

सागरम् जाताकम्पम्,  
उन्नतमहागिरि  
मून्नालु मणलत्तरि ।

वानपेतलदयमा-

याक्याल् ध्रमिक्कुम्  
वानत्तिलिट्टिट्ट द्यु  
वात्तुवात्ताशालम्बि ।

मैं हूँ क्षुद्र भेष, निरीह,  
 और हूँ ससार का धनीमूत बाप्य,  
 मैं तुम्हारी सृजन चातुरी का निदर्शन हूँ ।  
 हे चित्रचैष्टित  
 प्रकाश बानेवाले अपने हाथा से ही तो  
 तुमने बनाया है मेरा जीवन  
 कालिमामय ।

हे निरतिशय सनातन तेज,  
 मैं जडा मक  
 बारम्बार रूपान्तर पाता हूँ,  
 अपनी तमोमय आत्मा में  
 दुबह ज्वाला लिये सबदा भटकता फिरता हूँ ।

नहीं है मेरी इच्छा से यह,  
 करती है मेरी गति का परिचालन  
 कोई महती अदृश्य शक्ति ।  
 उसकी एक फूक से  
 घेर सागर प्रकम्पित होता है,  
 उन्नत महाकाय पवत  
 परिवर्तित होता है सधु धूलि-कणिकाओं में ।  
 मैं तो सक्षयहीन हूँ,  
 इसलिए अँगू बहाता हुआ  
 नम में आगावलम्बी हाकर  
 भटक रहा हूँ ।

चित्रहेतियाम् देव,

नावत्तिलक्कूटिज्जैत्र-

यात्र नीयारभिवक्त्रे-

येनुळळु पोट्टुम् शब्दम्

भेरिनादमामेकिलि द्रकाम्मुवरत्न-

तोरणम् वेष्टान् वेणमेनाकिलेन् हृद्रक्तम्

एधिरुष्ट जीवित-

मानीलत्तपयायि

मुञ्जिलित्तिरि नेरम्

मिनुवान मतियाकिल,

नेचकत्ताळिक्काळुम् दुस्सहानलज्वाल

काचनपताकयाय कालक्षणम् भविच्चाकिल्

अपकाद्र वीथियिल पट्टुक्कळ विरिप्पाने-

घ्नपलिन् निपलिनालेड्डानुम् साधिच्चाकिल,

पनिनीर तळिप्पानेन नेत्रनीस्तकुकि -

लिनियुम् आनाशिष्पू मेघमायत्तने तीरान ।

मलिनम्, क्षणनागि -

लेध्रालता मागत्तिल

ज्वलिताभिमानम् हे

देव ! निघ्नभिमुखम् ।

नितावू हृपस्तभलज्जादिभावत्ताले

वघ्नाळुम् नानावण्णम् कविळिल पकनु ज्ञान ।

लोकते प्रेमत्तिटे

वगवत्तियाक्कीटा-

नाकट्टे वाष्पापूण्ण-

मेन समाद्रमाम जमम् ।

नित्यनामविट्टुत्तेस्मुप्रकागतौ दय-

मत्यतम् नुकट्टे हृदयम् तैळिज्जावु ।

हे चित्रहेती भगवन !

स्वर्गपथ से जब तू जंत्र-यात्रा करने लगता है  
तब यदि मेरे हृदय के टूक-टूक हाने की ध्वनि  
वन सके तुम्हारा भेरी रव,

यदि मेरे हृदय का गाणित काम आ सके  
तुम्हारे हेतु तारण बांधने के,  
मेरा श्यामल जीवन

हा सके घाड़ी दर के लिए ही सही, तुम्हारा अलकार चिह्न,  
मेरे अन्तरंग की अमहनीय ज्वाला  
वन जाये काचन पताका,

मेरे सुख की छाया

विद्या सके कालीन तरे मुमग मग में,

मेरे आसू छिड़का सके गुलाब जल,

ता मैं चाहूँगा यही

कि अगले जन्म में भी मैं मय ही बनूँ !

म मलिन हूँ और हूँ भी नश्वर—

किन्तु इसमें क्या ?

प्राणवल गरिमा के साथ

हे देव, तुम्हारे सम्मुख

हृष-स्तम्भ न जा आदि

विविध भावा की रजक रगीन छटा

कपाला पर विलाये

सदा रह पाऊँ, और

मेरा आद्र बाष्पयुग जीवन

जग का प्रेमाधीन करने में सफल हा ।

हे मनावन,

तुम्हारे मुद्रवाग की मुन्दरता पाकर

मेरा मन जगमगाता रहे ।

—१०३०

## आ मरम्

आ मरम्—आमरमिनु काणुम्पापुम्  
 कोळमयिर कोरियिटुत्रितेन् जीवनिल् ।  
 कालिटरनु, जलाद्रमाकुनु कण-  
 पीलि, व्रणितम् तुटिक्कुनु ममनम् ।  
 एन्करळे, नीयिनियुदिककात्त पू-  
 न्तिड्ड डिनायिक्कुतिप्पतेन्तिड्ड डने ?  
 सन्तप्तजीवन्नु नष्टसुख स्मृति-  
 तन् तणलपोलुमत्यन्तमादवासदम ।  
 कालविहगिक् राप्पकलाकिय  
 लोलच्चिरकटिच्चेत्र मुन्योट्टु पोय् ।  
 एत्र तारडडळ तेळिञ्जु मरञ्जुपो,-  
 येत्र पुष्पडडळ विरिञ्जु कोपिञ्जु पाय्,  
 चेताहरडडळाम् सध्वक्ळेत्रपो-  
 येतो किनाविन् चुपियिलाणोक्केयुम् ।  
 'प्रेमतिनाल् जानटिम' एन्निड्ड डने-  
 या मधुराधरत्तिकलनिनुम् स्वयम्  
 तू मधुस्यन्दम् नुक्कु जान् निघ्नोरा  
 श्रीमन्निगामुलम मात्रम विभित्तमाम् ।  
 अन्नत्ते नक्षत्रमन्नत्तेयन्तियु-  
 मन्नत्ते मन्दममीरनुम् बेरेयाम् ।

## वह पेड़

वह पेड़

आज भी जब वह पेड़ दिखाई देता है  
मेरे प्राणा में पुलक फूटने लगता है  
पैर लड़खड़ाने लगन ह  
बरोनियाँ गीली हा जाती ह  
और ध्याकुल मन स्पन्दिन हाने लगता है ।  
आ मेरे मन !

जिसे आगे बभी उदित नहा हाना है  
उस चद्रमा के लिए क्या चौकडियाँ भग्ने हा ?  
किन्तु नहीं—नष्ट प्राणा के लिए  
लुप्त मधुर सुख की स्मृति की छाया भी  
अत्यन्त आदवासदायक हो सक्ती है ।  
पल फर्फडाकर दिन रन के  
कालविहगिनी कितना दूर चला गयी है !  
कितने ही तारे टिमटिमाकर बुझ गये,  
कितने ही सुमन खिल खिलकर झर गये  
कितनी ही माहव सध्याएँ अम्ल हुईं—  
हाँ, सब बुद्ध किमा स्वप्न के भँवर में घूम रहा है ।  
किन्तु वह सध्या—

जब मने उन मधुर अघरा स  
यह मधु स्पन्दी बाणी सुनी  
“म अनुराग की दामी हूँ”—  
वह कितनी भिन्न थी !  
उम तिन के तारे बुद्ध और ही थे  
उस तिन की सध्या बुद्ध और ही थी  
और उम दिन का मन्द पवन भी भिन्न था ।

अन्तिकतिरवप्पात्रत्तिल् नलच्चुव-  
 प्पेन्तिय मद्यम पक्नु पक्लुमाय्  
 स्वरम् नुकम्भु मदिच्चु सध्यादेवि  
 पारम् तुटुत्त कविळुमाय निल्वनवे,  
 मम्मरत्ताल् प्रतिपेधवपुमुकळ  
 नम्मपरनाय तनाटुरयिक्कलुम्  
 भीरुलतकळतन् वेपितागद्र डळे  
 मारतन पिन्नेयुम् पिन्नेयुम् पुल्कवे  
 प्रीतित्रपाभरमूक्मायत्तीनु कण  
 पातितुरन्नेमपुन्तिमलरिये  
 सौरम्यमत्तमधुकरम चुम्बना-  
 दारसौख्यत्ताललम् मदप्पिक्कवे,  
 दूरेयाणैकिलुम्, वीक्षणत्ताल् चिल  
 तारकळ् भावम् ग्रहिप्पिक्कवे स्वयम  
 नमणम वीशुन्न निश्वसितत्तिनाल्  
 रम्यपुप्पाळि मरपटि नल्कवे,  
 पोमहर ल्लक्षिमये मिनुन पाटल-  
 हेमनीराळाणुक्त्तिट्टेयचलम  
 व्योमम् ग्रहिच्चु चुम्बिच्चु चुम्बिच्चुतान्  
 तामसिप्पिक्कुम्भु पिन्नेयुम् पिन्नेयुम् ।

अट्टम् चुरण्ट करिम्बून्तल् वेट्टिव-  
 च्चोट्टप्पनारलर चूट्टियत्तिम्भुमेल  
 हारियामुच्चलवक्षमित्त्नेरिय  
 सारियथ्रद्धमाम् मट्टिलिट्टुङ्गने  
 अत्यन्तमाहनम् नूतनपीवनम्  
 प्रत्यगकम विक्कसिक्कुमुट्टुमाय्

साध्य-सूय के चपक में  
 भरकर अम्णासव  
 पान कर रही थी साध्यादेवी दिन के सग  
 मदारण गुलाबी कपान थे उसके ।  
 रसिक पवन  
 चकित लतिकाआ के अगा का  
 बारम्बार आलिंगन में भर रहा था,  
 यद्यपि वे करती थी प्रतिराध ममर स्वर में  
 सुरभि-मत मधुकर  
 प्रीति-सभार से मौन-मूक  
 अध खिली चमेली को  
 उदार चुम्बन रम मे  
 बना रहा था उमत्त ।  
 नम में दूर स्थिन तारे  
 जता रहे थे भाव लाल लाचना द्वारा  
 उत्तर दे रही थी  
 रम्य सुमनराजियाँ  
 सुरमिल निरवासा के द्वारा,  
 वामुक व्योम  
 गमनोद्यन दिन-लक्ष्मी के  
 सौवण कौशेय का अचल पकडकर  
 चूमता था उमे बारम्बार—  
 जाने ही नहा देता था ।

खड़ी थी वह  
 घुघराली नील के-गणि का जूडा बांधे  
 गुलाब-शोभित,  
 हिल्लोन मनोहर उराजा पर डाले ममून-भाडा  
 अग-अग में प्रम्फुटित  
 मोहक यौवन मे उद्भामित तन



प्रेमवाचालमाम् स्निग्धाद्रपमळ-  
 श्यामळक्वणकोणिनालतिरम्यमाय्  
 मामकयोवनस्वप्नद्व डळोक्केयुम्  
 कोमळरूपभेदुत्ततिनुमातिरि  
 आ मधुभापिणिया तित्र निल्विनु-  
 मामत्तमाक्कुत्तु मामवात्माविने ।

आमलाळ् पूण्णसोभाग्यमाम् जीवितम्  
 हा, मल्वकरत्तिल सवाप्पमप्पिकवे  
 ज्ञानभिमानीच्चु साम्राज्यनायक-  
 स्थानम् लभिककुत्त नित्स्वनेप्पोलवे ।

आ निमिपत्तिट्टे दुल्लभसोभगम्  
 वानित्तयविरक्कीट्टुवान मात्रमाय् ।  
 प्रेममहाजत्रयात्रयुम नित्क्वणम्  
 प्रेतप्परम्पिल, मतिराज्यसीमयिल् ।  
 चारमाय्त्तीत्तिता लावण्यसवस्व-  
 सारवुम् मामकसक्त्पनाक्कुम् ।

कार विल्लु कालक्षणम काण्डु मायित्तया ?  
 पूविट्टोट पक्कल् मायमत्रे निल ,  
 नेच्चिन्प्रभातम मुक्कहम हिमविट्टु  
 पुच्चिरिक्कोळ्ळुम्पापेक्कुम मरञ्जुषाम  
 मानत्तु मायुनु मित्तलुदिच्चुटन्  
 माधुपधम्मम् स्वभावणिकत्त ।

स्निग्ध गीली पलका से युक्त  
 प्रेम-वाचाल नील नयनाचला  
 मेरे युवा हृदय के सपना की साकार  
 प्रतिमा बनी हुई,  
 आज भी मधुनापिणी की उम  
 मुद्रा भगिमा की याद  
 बना देती है मरे मन का उमत्त ।

जब कामल कामिनी ने  
 अपना पूण सुभग जीवन  
 सानन्दवाप्य सौपा मर हाथा में  
 तो मने अनुभव किया सगव,  
 मानो कोई अविचन  
 अकस्मान् बन गया हा राजाधिराज ।

अब तो उस घटी के दुलभ सौन्दय का  
 केवल रोमन्थ करने क लिए ही मैं बच गया हूँ ।  
 हाथ, प्रेम की विजय-यात्रा का भी  
 रुक जाना पडता है श्मशान में  
 मृत्यु की साम्राज्य-सीमा श्मशान में पहुँचकर ।  
 लुट गया लावण्य का वह साम्राज्य  
 और नष्ट हा गया मेर स्वप्नों का स्वग ।

पल भर में ही मिट जाता है इन्द्रधनुष,  
 मात्र दिन भर में मुरथा जाता है मुमन,  
 अपने वशस्यल में प्रमान का चुम्बन पानेवाली हिमकणिका  
 मुस्वराने भा नहीं पाती है कि मिट जाती है  
 विजला नष्ट हो जाती है उन्दन हाव हा,  
 शणिकता ही तो है धम लावण्य का ।

रागमे । नीपोष पोल्पनिनीरलर  
वेगम् सुभगदलङ्कृतिसुपाम् ,  
केवलम् म्ळळुक्ळकोष्टु कीरतु नी  
जीवनेप्पिने , वेक्कुतु नित्ते जान

—१६३०

।

हे अनुराग,  
तुम हो स्वर्णिम गुलाब  
झर जाते हैं जल्दी ही सुन्दर दल—  
फिर काँटा से बेघर हो तुम हृदय—  
तुम से मैं घृणा करता हूँ ।

—१९३०

खी

इलायकयल्ल समरेच्छ , भटाग्रिमद्रु  
पुल्लायिरुद्रु मरणम् रणमेतु केट्टाल ,  
निल्लाते पोरिनु निजालयमेत्तुवाना-  
युल्लासि विक्रमनिटय्यकु तिरिच्चु पोघु ।

श्वेळाघनस्तनितमार्धु करोच्चलताम्  
वाळाप मित्रलोट्टु वासि पिटिच्चट्टुत्ताल,  
चूळातेयिल्ल चुणयेरिय शत्रुयोध-  
वाळाहिमण्डलियिलोद्गुमवटे मुम्पल ।

तन् नाटिनाणु पट , मातृघरित्रियेधु  
चोत्रालयाळक्कु परदेवतपायिरुद्रु ,  
अन्नायतन् महितवेदियिलात्मरक्नम्  
अन्नाळोपुक्कुवतिनुत्मुकनायिरुनु ।

पारम् रसत्तोदरिसैनिकयूथरक्न-  
पूरत्तिलाण्टवनौराण्टु पुळ्ळु न्नीन्ति ,  
दूरत्तिलाणिनियुमज्जयलक्षिम निल्लकुम्  
तीरम् , गृहत्तिलणवान् कोतियायि तानुम् ।

स्नेहत्तिनानुक्कुमेक्कमनस्नेयुम् तन्-  
गेहत्तिल निम्पुमोश वीप्पविट्टित्तिलेत्ति ,  
साहन्तशत्रुक्खाळ वेरुमोलयेतु-  
देहत्तिनाच्चेरिय काट टतिनेत्तर्त्तित्त ।

## स्त्री

नहीं था ऐसा कि उस वार योद्धा के मन में  
ममर की इच्छा न रहा हो  
रण था उसके लिए तृणवत्—नो भी  
वह विलासी विक्रम भरे युद्ध के बीच  
छोड़-छाड़कर समर लौट पड़ा आतुर अपने घर ।

उसकी हुँकार ऐसी जमे बादलों की गरज  
वर की कृपाण ऐसी जैसे चमचमाती तड़ित्  
जब वह सामय सघप करता तो बड़ी से बड़ी ग्निपु-मण्डली  
काल-सप-कुण्डलियो-सी समय सहम मिषुड जाती ।

चल रहा था समर उस मातृभूमि की रक्षा के लिए  
जा थी उसकी आराध्य देवी जिसकी पवित्र बलिदेवी पर  
वह सघन रहता था  
सदा अपना रक्त गहाने के लिए ।

दानु-सैनिक-समूह की रक्त-सरिता की धारा में वह  
तरता रहा था वप भर  
विन्दु जयलक्ष्मी खड़ी रही दूसरे ही तट पर  
वह लालायित हो उठा घर पहुँचने के लिए ।

प्यार से भरा जो एक हृदय उसके भवन में द्रविण हो रहा था  
उसी का एक निश्वास उसके मन में आ लगा, वर दिया उसने  
वह तन प्रशीण जिसके सामने दानुआ की दर्पोली अस्ति  
रह जाती थी बाँपकर एव सूखे पत्ते की तरह ।

प्रेमतिनुळळ दुरितत्रममाम् प्रभाव-  
 स्तोमम् महात्भुतदम , अल्पमतेट टुवेग्नान्  
 श्रीमज्जलद्रवि , विक्स्वरपुण्डरीकम्  
 भीमन् मृगाधिपति साधुतयाळुमणम ।

प्रेमम् नटत्तुवोरु सैनिकशासनति-  
 नामत्तनायेतिर परञ्जु तटञ्जु निल्प्यान,  
 सामय्यमिल्लवनु तानतु च्युपोयाल  
 भूमण्डलम् चुटल , कीर्ति वेळुत्त चारम ।

प्राणाधिनाथये विभागविपण्णयायि-  
 क्वाणामयाळुटे विचारतत्तिलेत्लाम्  
 एणाइक्खलेखयेयक्खलसम नभस्सिल  
 वाणालुमापियुटे कोळलयिलक्खणक्के ।

तान् जायक्कतयाटेटि टटवे रणोर्वी-  
 सजातमद्रतर भेरिरवत्तिनेक्काळ,  
 वञ्जातपेन्व वधूपदनूपुरत्तिन्  
 शिञ्जारवम् श्रुतिपुटम् स्फुट्माय् थविच्चू ।

नीराल ननञ्जोरिम नीलिम पूण्डु नीण्टो-  
 रारागविह्वल विलोलविलोचनइळ,  
 नाराचमेय्युक्खिलुम एतुमट्तिटात्त  
 धीराशयण्टे हृदयत्ते नुरुक्खिक्ख नूराय ।

तारण्यमाम नववसन्तमुदिच्चु रण्टु  
 वारट ट पाञ्जुक्खिळि र मोट्टु कुरत्त मारम  
 चाहत्वमान्न निपलपोलेयपिञ्जु मेले  
 चेरम् करिक्खुपलुमेइन्ने विस्मरिक्खुम् ।

कसा विस्मयकर होता है प्रेम का दुनिवार प्रभाव  
 उसके सामने भय्याह का प्रखर सूप  
 बन जाता है सुकामल मनहर कमल  
 भीम मृगाधिपति बन जाता है सीधा-सादा मृगसावक ।

वह या प्रेमोन्त प्रेम के कठोर सनिक शासन के विरुद्ध  
 नहीं बोल सकता था वह एक शब्द  
 यदि उसका प्रम पय अवरुद्ध कोई करे तो  
 भूमण्डल बन जायेगा स्मशान, कीर्ति बनेगी श्वेत भस्म ।

कल्पनाजा मे वह देखता था अपनी प्राण प्रिया को विरह विपण्ण  
 जैसे सागर अपनी वाचिया में दखता है  
 प्रतिप्रिम्ब उस शक्ति कला का  
 जा रहती है ऊपर नभ में बहुत दूर ।

रणभेग मे युद्ध की सजग बेला में  
 गुनायी पडता है जो मन्द गम्भीर भेरी रव  
 उगमे भी अधिक स्पष्ट गुनायी पाने लगी उसे  
 प्रेयमी के परा की नूपुर-पञ्जार अपने काना में ।

प्रिया की हठीनी गीली पलकें और  
 राग विह्वला नाली-नीली नम्बी आँवें  
 दोना की स्मृति न कर दिये गत गत खण्ड  
 उस धीर-गम्भीर हृदय के जिमसे टनराजर  
 हो जाते थे गभुआ क तीर कुण्डिन ।

कैसे भूल सकता है वह  
 तारण्य के नव वसन का उग्य  
 कमनीय मौवण कुम्भना से मुगाभिन वह उर  
 विदलय हाजर अगा पर पडी रहनवागा नाच-बेणी ।



इल्ला तनिक्कु चिरवानिभिपत्तिलदड्डु-  
 चेल्लान् , युवावतु निनच्चु शपिच्चु तने,  
 अल्लाम् करिक्कटल् , अहमरमूतलड्डड्डु  
 एल्लाम् कटनु भाटि कोण्टवनेत्ति नाट्टिल् ।

नानापदानमियलुम भटनेत्तियप्पा-  
 ल्लानादु कोळमयिरियनु तूणाकुरत्ताल्  
 मानानिगोत्सुवत पूण्ट मरुत्तु बेप्पो-  
 प्पानाय् मुत्तिन्निनु मुक्कन्नु मुक्कन्नु मेय्यिल् ।

वेणप्पु निरञ्ज चरमाणुमदणुमाल  
 पोन् पूशुमप्रमाट्टु मुल्ल पटर्नु केरि  
 सपूणशोभमोर् क्कुत्तिनट्टुत्तु काणुम  
 तन् पूवपुण्यसदनम् नयनम् विट्टत्ति ।

वेगम गतिक्कधिकमाम् , युवयोधभाग्या-  
 भोगप्रसन्नघदने दुदिदुक्षयालो  
 रागम् क्षणत्तिलुयर्कम् हृदयत्तिल निन्नु-  
 भागण्डभित्तितलमेत्ति , यट्टुत्तु सौधम् ।

आळट्ट ट विणमुरियिलेरि निरन्न तारा-  
 गाळड्डड्डाम लिपिक्कळाम्प्रौर वामलेखम्  
 चीळेन्नु नीत्तळवु कोमळमाय साव्य-  
 वैळय्यवु पूक्किल्ळु तुट्टुत्तु मिन्नि ।

लोलस्वरम् सुभगनिम्नग पाट्टु पाटि-  
 क्कूलद्रुमड्डड्डे मयक्कि मदिच्चोन्निच्चु ,  
 येलन्नयुम पुळक्कमेत्ति मेलिञ्ज मेघ-  
 मालय्यवेयुम कुळिरि मुखम् मुक्कन्न शतम् ।

चाहता था वह उठकर घर पहुँचना उसी पल  
 किन्तु पल कहां ? वंसा अमागा हूँ, उसने चाचा ।  
 किन्तु रजनी-म्पी नीलसागर का और  
 दिन हपी महम्यल का पार करके  
 पल-भर में वह अपने देग पहुँच ही गया ।

विविध विरुदाबलिया मे विभूषित वह अवदानी वीर योद्धा  
 जब आ पहुँचा तो देश की भूमि पुलकित हा उठी  
 रामाक्षित तूणाकुरा से, अभिमान और औयुक्त से भरे पवन ने  
 लहराकर उसके शरीर के श्रम-सीकरा को चुम्बन से पाछा  
 —उसे आश्वम्न किया ।

रम्य पहाडी को उपत्यका में स्थित उसका सदन  
 उसके पूव पुण्या का पल, आँखा के सामने उत्फुल्ल हो उठा  
 उम पर फनी हुई थी धवल कुमुम रागियों से भरी जूही वल्लरी  
 जिस पर चढा रही थी साने का मुलम्मा अस्नगामी सूर्ये की रश्मियाँ ।

युवक योद्धा आतुर था अपनी भाग्य-मर्वेस्व का चद्रमुख निहारनेको  
 गायद इमीलिए भर गया उसकी वेग गति में  
 हृदय उच्छलित हो रहा था प्रतिपल,  
 अत उममें का राग चढ गया उसके कपोलो पर, आ पहुँचा समीप सौष ।

कोमलागी मध्या  
 विजन आकाश के सौष में पहुँचकर  
 तारक लिपिया से अकिन काम-लेख को जब खोलकर बाँधने लगी  
 तो उसके मुदुल कपोल आगक होकर चमकने लगे ।

सुमग सरिताआ ने लोच स्वर में गीत गाया—  
 चढ गयी आगे तट के तराज का गान-मग्न बनाती हुई  
 कृगागी नीरद-भाजा का मुख चूम-चूमकर  
 पवन नय गिग्व पुलकित हो गया ।

आसन्नरान्निमुटे कालञ्चुवटोच्च केळप्पा-  
 नासक्तमाम गगनमयविचारमेये  
 श्वासम विटाते निल काण्टु , युवावणञ्जु  
 वासस्थलत्तु निज वाजियिल् नित्तिरन्दि ।

पारम कित्तप्पोरु वहिश्चरजीवनाय  
 घीरप्पटक्वुत्तिर तन् मुखमानु मुत्ति ।  
 चारत्तु चाञ्ज तरुशाखयिलागु वधि-  
 च्चारवतमानसनणञ्जु गहावणत्तिल् ।

एताणभूतचरवीरयसत्तु नेटि  
 ह्वनाथनेत्तिट्टुक्वनेनिलयिट्टु नोक्कि  
 तनाद्रमाम मिपियिट्टुक्कु तुटच्चु मुट ट-  
 त्तनाळुम् इन्दुमत्ति' निल्क्कुवयाविरनु ।

सामट्टे वेणक्त्तिर काण्टु चिरिच्चिक्कि-  
 ता मञ्जुळक्कुळिर मणलत्तेळ्ळिमुट टमेट टम् ,  
 आ मडक्कतन गियिलमक्कक्कशिकत्ति-  
 सोमत्तिलावु पुत्तुपिच्चक्कमाल चात्ति ।

इल्ला विभूय विलयेरिय वस्त्रमोनु-  
 मल्ला घरिप्पनक्कळ भेनि मलिञ्जिरनु ,  
 सल्लाळ्ळनीयमळ्ळक्कम पोटि पटि टयिट्टु  
 वल्लातिरनु मुटि वेट्टियिरनुमिल्ल ।

पूविनु वेण्टणियल , पुष्कल्लोभ वेण्णि-  
 लाविनु वेण्टुल्लोळ्ळिक्कु नवागरागम,  
 आविभवलप्पुळ्ळमत्तनुविल प्पत्तिञ्जु  
 तावित्तुळ्ळुम्पि निरवद्यनिसगवान्ति ।

आकाश खडा था आतुर शास राके अनय चित्त  
 आसन्न रजनी के परो की आहट मुनने के लिए  
 तभी वह युवक पहुँचा अपने सदन—  
 उतर पडा घोडे से ।

चूमा उसने मुख अपनी वहिश्चर आत्मा-से तुरग का  
 हाँक रहा था जो समर धीर  
 अत्यन्त वेग गति से चलने की यवान के कारण  
 बाध दिया उसे एक समीपवर्ती विनम्बित शाखा से  
 पहुँचा वह प्रेमातुर वीर अपने घर के जागन में ।

कव लौटेगा मेरा हृदयेश्वर अप्रतिभ यग को प्राप्त करके ?”  
 —पन्ना उलटकर देखती थी वह करती थी भाग्य-परीक्षा  
 पोछनी जाती थी बीच बीच में अपनी अश्रुपूण आँखें  
 खड़ी हुई थी अपने आँगन से डडुमती ।

मनोरम सिक्ताजा से भरा वह विमल आन  
 चन्द्रमा की घवल करा का स्पग पाकर उमुक्त हास कर रहा था  
 सजा रही थी मोहक चन्द्रिका उसने विश्लय  
 बजरारे वैश-पागो का जूही की नवल घवल मालाजा से ।

नहीं थे उसके अग पर गहने  
 नहीं था परिधान अमूल्य वस्त्रा का  
 शरीर बन गया था कृग हो गयी थी धूल धूसरित  
 उसकी लालनीय अलकें चिबुर था असज्जित ।

किन्तु, क्या आवश्यकता है पुष्प को अन्वार की ?  
 सौन्दय से परिपूण कौमुदी का अगराग की ?  
 उमके शरीर पर विराजित अहृन्निम सौन्दय  
 स्वय पुलकित हो रहा था, नया निवार पा रहा था ।

क्षामागितन् मधुरदशनमाय तोळिल्  
 प्रेमाकुलन् मुदुलपाणियणच्चु निम्नु ,  
 रोमाळियाक्वेयुमुणन्नु , विटन्न कण्णा-  
 थ्रीमाटे नेक्कुं निपतिच्चतु पाति कम्पि ।

चेरन्नु सौरभमेपुम् चेरवाट ट्टु वीशि  
 वारट्ट रण्टु मुक्किलिन् शकलडडळ तम्मिल ,  
 चोरन्नु चद्रकरचुम्बि मुपत्तु निम्नु  
 चारस्मितम तनु विकम्पितमायिट्टुन्नु

वल्लिक्कु मेल तल चुरण्टु तपच्चुलञ्जो-  
 रल्लिद्धकान्तियाटपिञ्जु विटतिपञ्जु  
 चिल्लिन्नुप्पतिञ्जु पविपद्मळ , तेळिञ्जु तिकळ-  
 सेल्लिल्सुधाक्किक् , अद्दन्ने निरित्तन्पम ।

वीरन्नु तन् कठिनवेदनमाय मारिल्-  
 क्कूरम्पु कोण्टु निरयुम् मुरिविडकलेल्लाम्  
 आ रम्य कोमळ करत्तळियालत्तलोट्टु-  
 सेरत्तु वेण्ण पुरळुन्नतु पोले तान्नि ।

चिन्नुम् करिकुपलपिञ्जतानुक्किटाते  
 तन्नुत्तस्तनपटम गरियाक्किटाते,  
 मिन्नुन्न पाम्पुटलोत्तरणटे देहम  
 ओन्नुन्वणप्रणय वीण्टुमणच्चु चाप्पाळ

सावण्यमिल्ल धनमिल्ल कुलीनयेन्न  
 भावत्तिनिल्ल वक् एकिलुमेन्नुवाण्टा,  
 जीवन्नु नेरिवळ भवान्नु कुलमाय  
 देवत्ते येद्दन्नेयेनिक्कु पुक्कप त्तिटेण्टा ?



“भीतम् रिपुप्रकरनीरन्माय, खडग-  
 वाततिनाल् च्चितरि दुर्दिनमस्तमिच्छु,  
 स्वातन्त्र्यहसियुटे पूञ्चिरवाम पताका-  
 जातम् जनिक्षितिनभस्सिल् निरञ्जु तानुम् ।

आ नेरमातियुयरम त्रपयाल शिरस्सु  
 ताने कुनिञ्ज तरुणन ‘पट तीनतिल्ल,  
 मानेलुमक्षि यनुरागवृतात्त तळळान्  
 आनेरे नाक्कि योट्टुविलग्गतधयनायि ।

भीरुत्वमा ! भयभेनिक्करिविल्ल, वेल्ला-  
 नात्तळ्ळु ? वेत्ततु जलाविलमीमिपिक्कोण  
 ई रक्करम्म्यतनु, वी नेट्टुनीप्पु, पन्तेन  
 चोदन्नोरामायि, पराजितपौरुपन आन ।’

‘हृताथ विन्नमनोत्तरनेत्तरिञ्ज-  
 तित्ताणु, वीरवधुवेनु वृथा नटिच्चवेन्  
 इन्नाटिनायिवल्लेयट्टु मरक्किलेत्त-  
 ननायिदनु ! कुलनारि तटञ्जु चोत्ति ।

“प्रेमतिनुळ्ळ विल जानग्गिमुनु, मात-  
 भूमण्डलत्तिनाटेपम मुग्ग नाक्किट्टुम्पाळ  
 त्तूमञ्जुतुळ्ळियतु, मट दत्तनधहीरम्  
 धीमन्न ! स्वधमरतनाम नरनाणु धयन् ।

‘जीवन् ज्वलिककुवतिनुळ्ळ विट्टन्नु दहम्  
 एवम् भ्रमिक्करतु नश्वरभणचेरातिल्  
 लावण्यमायतिलेपुत्त मयनकुवेन,  
 भावल्कङ्कवुद्धि मिपि माहमि पात्ति रागम ।

शत्रुबा का भय प्रकम्पित मेघ-ममूह विदीण हा गया  
 आपके अग्नि की पत्तावात में, उड़ने लगी मव कही  
 ज मभूमि के अन्तरिक्ष में पनाकाएँ  
 स्वतंत्रता की मुस्कान व पक्ष पनाकर ।

मुक्क की लज्जा उत्तरात्तर बढ रही था ।

बाला विनम्र होकर,

“समर का अन्त नहा हुआ है अभी मुन्दरि, मृगभावकाग्नि  
 बहून किया मने यल अनुराग की आना टालने का  
 किन्तु अन्त में छूट ही गया मेरा घय ।

क्या यह भीरुता है ? भय ता मने जाना ही नहीं,  
 कौन है मुझे पराजित करनेवाला ?

किन्तु पराजित किया है मुझे इन सजल बाका चितवना ने  
 इस स्वर्णिम रम्य शरीर-मण्डि ने इस निश्वास ने,  
 इन मधुसूदावी बना ने—मेरा पौरुष पराजित है इनके आगे ।’

‘हृदयनाय, आज मालूम हुआ कि आप विक्रम नहीं उत्तर’ है ।  
 हाय, व्यथ ही म गव अनुभव करती रही कि म बीर-यत्नी हूँ ।  
 कितना अच्छा हाना यदि इस मातृभूमि के लिए  
 मूल जाने आप मुझे —बीच में ही टाककर कहा कुलागना ने,

“म भी जानती हूँ प्रेम का मूय, किन्तु जत्र तुतना करती हूँ  
 उसकी मातृभूमि व प्रति यत्तय भावना मे ता बन जाना है प्रेम  
 एक तुपार की कणिका-मा और दूमरा निवाद् दना है अनघ्य रत्न-सा  
 धीमन केवल वही मनुष्य घय है जा स्वधम में निरत है ।

“यह शरीर केवल एक दीपक है प्राणा के प्र-वन्धन हाने के लिए  
 मिट्टी के इस दीप के प्रति इस प्रकार मुग्ध हा जाना क्या उचित हुआ ?  
 लावण्य ता मात्र इन्द्रजाल है उस दीप का  
 हाय, साहमी अनुराग ने आपकी बुद्धि का आँवें मूद दी ।

१—महाभारत का एक कथा-भात्र जा मुद्ध ने डरकर गस्ते में ही रथ से  
 उतरकर भागने का उपक्रम करने लगा था ।



“आयायि । दुम्महमेतिक्कित्तु भारतीय-  
स्त्रीयाणु ज्ञान , सुविदितम् करणीयमिप्पोळ  
प्रेयाटे धमपयसञ्चरणंक्विन्न-  
मायालिरिक्करतु” वाळु वलिच्चेटुत्ताळ ।

“स्वातयलक्षिमियिह नाटकमाटुकल्प-  
चातछलाल् सुरभियाम् नेटुवोर्णुं विट्टुम्  
स्फीतप्रभम् गयनवीथियिलुत्तप्पताका-  
जातच्चुळ्ळिप्पुरिकवल्लियिळक्कि निम्भुम् ।

‘वीरप्रभो तव सुगेषयशास्सु पौरि-  
मारत्तुतोत्पुळ्ळक्कम्पक्कळ पाटिट्टुम्पोळ  
स्फारप्रहयभरमेन विजनदमसान-  
च्चारम किट्टिक्कित्तुम् , चरिताययाम जान् ।”

तन गहणीयनिलयोत्तवळ नैजजीव-  
भगम् वरुत्तिट्टुवतिन्नु मृत्तिन्न निल्क्के,  
अगम् विरप्पोळ विकारतरगितान्त-  
रगन पिट्टिक्कु करम इत्तरमोति पिन्ने

प्राणाधिक वेटिक् साहसचित्त निजा-  
लाणाय विक्रमनिरड्डुक्कयायि वीष्टुम् ,  
वाणालुमन्न मम पौरपमाधुरच्चु  
काणान महासमरमाम् निक्कपोपलत्तिल ।

‘ ई विश्रुतामियिनिय जयलम्भि पुल्लान  
भाविक्के वेक्कुमयवा मृत्ति क पिट्टिक्के ,  
जीविच्चिट्टुन्नु मृत्तियाल चिलर चत्तु वीष्टु  
जीविकरयाणु पलर मत्पुविल् दान् मरिक्का ।”

नही सह सकती भ इसे, मैं हूँ एक भारतीय वनिता  
 मैं जानती हूँ अच्छी तरह, अब क्या करना चाहिए मुझे  
 बने जो प्रियतम के धयपथ विहार की बाधा  
 उसे जीते रहने का अधिकार नहीं,"—खींच ली उमने अपनी तलवार

"कामना है मेरी कि यहाँ स्वातन्त्र्य लक्ष्मी  
 मद पवन के सुरभित निश्वास लेती  
 गगन में फहराती विजय-पताका में अपना भू विलास व्यक्त करती  
 सदा नृत्य करती रहे ।

हे वीर जब पौर-वनिताएँ आश्चय से पुलकित  
 तुम्हारी कीर्ति के अनुरूप निमल यशोगान गायेंगी  
 तो दूर निजन स्मशान भूमि में मेरी चिता भस्म  
 यदि चंचल-मुलकित हो उठेगी तो मैं धय हो जाऊँगी ।"

सोचकर अपनी गहणीय दगा  
 चाहा वीर भामिनी ने जीवन का अन्त करना  
 तब विकम्पित गरीर भावाकुल-उर युवक ने  
 हाथ पकड़ लिया और बोला ।

"प्राणाधिके छोड़ दो इस दु साहस का प्रयत्न  
 तुम्हारे आत्म से प्रेरणा पा यह विन्नम फिर से पुष्प बन गया है  
 लौट जाता है रणक्षेत्र की आर मट्टामर की कमीठी पर  
 सरा निखरगा मरा पौरय रहा तुम यही उमे देखने ।

"म्यान में वापिस जायेगी यह तलवार अब उमी दिन  
 अब विजय-लक्ष्मी करेगी इमका आलिगन  
 अथवा मृत्यु आकर मग हाथ पकड़ ले जायेगी  
 कुछ साग मरण का धरण करके जीवन जीन है कुछ लोग जीन हुए भी  
 मृत हाने ह—मृत्यु द्वारा मेरा मरण नही हागा कभी ।"

राज्यरत्नमापुत्रुम् तस्मिन् चत्तो-  
 राजस्सु वीण्टुमुपिर कोण्टु पाले तोत्रि ,  
 तेजस्सुपनु मिपियिल , तिरिये ममिप्पा-  
 नाज मधीरनथ वाळवळाटु वाडि ।

धीरटे मारिलवळ चाञ्जु , ननञ्जु नील-  
 नीरधपममिपि , हूतटमुच्चलिच्चु ,  
 आ रम्यमाक्कि विळत मुखत्तेयेरे-  
 नेरम् मुक्नु पटयाळि , परञ्जु पिते

‘पोरिल्ज्जयापजमनिश्चयमिल्ल , चेतु-  
 नेरिट्टु निटे पतियावतिनह्नावेन  
 वैरित्वमट टु विधि निल्लकुक्किलात्तु चेराम्  
 चारित्र्यालिति, तमुक्किनिपिस्थलत्तिल ।

“मालान्निटाय् । पिरियामिनि , यिल्ल निल्लकु-  
 छीला मुखाम्नुजमुयत्तु पोरक्कणम नी ।’  
 मेलातेयायिळकुवान रसनध्वु यात्र  
 लोलाद्दलोचनपुट्टळ परञ्जिरिव्काम् ।

तूमिल्ल पोलय मरञ्जु युवाव वळक्कु  
 मूमिक्कु मलिरळ पुरण्णु पोले तोत्रि ।  
 यामि यधीगमुलि नित्रिनु नाक्कियश्चु-  
 ध्यामिश्चदृष्टिमुनया वपि नीट्टि नीट्टि ।

वार मूटियम्पिळिये , रावु विटुन वोर्पा-  
 लामूल्लारमारु कोळमयिराद्दु वक्षम ,  
 नी मूक्कयायविटे निरनुवनेन्नु ? राग-  
 ध्यामूह्नायिनि वरा धतधमवाधन ।

प्रतीत हुआ, मानो शीथ-शोणित से भरा  
 नवयुवक का मृत उर फिर से जी उठा  
 आखा में दीप्ति चमक उठी,  
 उठा ली उसने तलवार रणक्षेत्र में लौटने के लिए ।

हटातू वह युवती वीर योद्धा के वक्ष पर खुब गयी  
 सजल हा गये उसके साँद्र नील-मधमल नयन  
 तरुण वीर दर तरु वारम्बार चूमता रहा  
 उन पाण्डुर त्रिन्तु वान्निमय कपोला को  
 बोला वह फिर या रमणा से

‘समर में निश्चित नहीं जय ही पराजय  
 ता भी मरण में कूदकर प्रयत्न करेगा कि वनू  
 तुम्हारे योग्य वीर पति अनुकूल है यदि विधि हमारे  
 तो मित्रों हूँ फिर इसी जगह, पुण्य चरित ।’

‘मत करा शोक प्रिये विदा दो मुझे  
 नहीं अब खान रहना चाहता मैं अबिक देर  
 लो उठाओ ता अपना मुख-वमल धमा कर दो मुझे —  
 जिह्वा ता त्रिन्तु भी नहीं पाया उमकी—त्रिन्तु बटे हा मानो  
 ये शब्द विदा के तरुन वाग्पाहुन नयना ने ।’

विजली की गति से वह युवक आल-आसल हो गया  
 युवती का लगा जमे महानर में तरु जगन अचवार हो गया  
 निगाय के गगाव-भी वह सुमुखी साधु-नाचना के बाना को  
 फना-फलाकर राह को ओर ठपी-भी खड़ी दलनी रह गयी ।

चन्द्रमा को घेर लिया बादला ने रचना व निचाम से  
 तरुजा पर नय त्रिस्तान्त पुनर प्रम्फुटित हो गया—  
 अत्र क्या लडा हा मृक यहाँ ? जान गया है वह युवक  
 अपने घम का, जय नहीं लौटगा वह प्रमाथ हातर ।

धीराग्ने, मिपि तुट्य्क्कु, मुकध्नु वोळ्ळु-  
 वा रागतुदिदलपदड्डळ पतिञ्ज मण्णिल्  
 तारागणड्डळ्ळुटे निश्चलदृष्टि निने-  
 तीरात्त लज्जयिललिककुक्कयिल्लयैक्किल् !

नी नाथजीवितरथम् शरियाय्त्तेळिञ्चु  
 मानाहमाम् वपियिल् विट्ट, कृतापयाक्क ,  
 म्ळानाभमाक्करुतये, मुल्ल, मिच्चरिन-  
 मी नाट्टुकाक्कु पुळ्ळोद्गमकारियेन्नुम् !

—१९२८

पोछ लो अपने नयन धीरवनिते !  
यदि तारकदलो की एकाग्र दृष्टि  
तुम्हें असीम लज्जा में डुबा नहीं देती तो चूम ला  
उस मिट्टीको जिसे प्रेमवान प्रियने अपने पादस्पर्शसे पवित्र बनाया है ।

तुमने अपने प्रियतम का जीवन रय  
ठीक प्रकार से प्रचलित किया है,  
ले गयी हो उसे अभिमान-योग्य माग पर  
अब बनी रहो वृत्ताय मत करो अपना मुख म्लान  
तुम्हारा यह चरित देवासियो के लिए सदा पुलकोदगमकारी रहेगा ।

—१९२८

## विळम्बरम्

बेल नाळे जगतिनिनुत्सव-  
 वेळयेधु विळम्बरम् चय्युक ।  
 वित्रमियाय विलसुमृतकुल-  
 चनवत्ति वसतमेपुनळिळ  
 चित्रवणवनाटिकळिळविकवरो-  
 षटत्र पारिण्डुळणु पूम्पाट टकळ ।

गानम् चेषवित्तपदानमा वीर-  
 नानदत्तिटे साम्राज्यमाकवे  
 काळवेयतली वनिरिकुभत-  
 इण्डुळनाकवे यथेच्छमरुद्वान ।  
 बेल नाळे, च्विल निमिपडळाल्  
 कालत्तेपिच्चयावकीययवकुय ।

लोकतिभिन्नापिवुदिवममा-  
 णाकमानम् पवमाननिङ्गने  
 स्वामियाम् वमततिन् विळम्बरम्  
 भूमि चुटि नटत्ररिपिकुभु ।  
 १ मतलिभ्रवकागमाप्पमाम्  
 नामुणभ्रतनुभविच्चीक ।

## घोषणा

कर दो घोषणा  
कि काम सब होंगे बल,  
आज तो उत्सव की बेला है !  
पधारे हैं  
पराश्रमी वसन्त  
ऋतुआ के सम्राट् !  
देखा ना,  
रग विरगी झण्डिया पहरानी हुई तितलियाँ  
उमत्त होकर मँडरा रही हैं !

गाआ उसकी विरुदावलियाँ,  
वह वीर  
आनन्द का साम्राज्य लूटकर  
वहा की मारी सम्पदाएँ  
जी भर वांटने को ही आया है ।  
काम सब होंगे बल,  
अमी तो हम  
बुद्ध क्षण  
बाल का भिलारी बनाकर छोड देंगे ।

'जगत् के लिए आज छुट्टी का दिन है'—  
अपने स्वामी वसन्त की यह घोषणा  
पृथ्वी के चारा ओर घूमकर  
मन्द पवन सब का सुना रहा है ।  
इस घन पर  
सब का समान अधिकार है  
मव जागें और इसका उपभाग करें ।



वीणककम्पि मुखकु, मुखकु मल्-  
 प्राणप्रेयसि, पाटू मधुरमाय ,  
 गानतिन्टे लहरियिलेघ्निले  
 जानलिञ्जलिञ्जिल्लातयावट्टे ।  
 जीविततिन्टे नूलिट्टालेत्तात्त  
 भूविलेयक्कतिल्मुड्डिड आनेत्तट्टे ।

हा, नियतितानयाल् नित्तियो—  
 रा निलविट्टिळकात्त कुनुक्कळ  
 कौकिलगळनाळत्तालुच्चतिल्  
 कूकिप्पात्तुघ्नितेन्तिनेनिल्लात्त ।  
 पारत्तम्यत्तेयानन्दम् स्पर्गिक्के—  
 प्पारमुष्टायोरस्वाम्यमाम् वराम् ।

तुळिळट्टुनू वेळिच्चम् कुटिच्चल-  
 तळिळट्टुन्न मदत्ताल् मलरक्कळ ,  
 पुचिरि तूक्कि नित्त्वकुम् पक्कलिट्टे  
 कुचिताळक्कमाकुम् निपलुक्कळ  
 सचलिप्पिच्चु सीलक्कृत्तिपूण्णिता  
 सचरिप्पू विलासि मन्दानिलन ।

मेच्चतिल्प्पल पूक्कच्चु तुन्निच्च  
 पक्कप्पट्टट्टयाटयणिञ्जिता,  
 कोमळागतिलावेयकारणम्  
 काळ्मयिर्मुळ पूण्ण्टु मदात्तुलम्  
 वाननस्यलि निल्पू विहगम-  
 स्वानत्ताले चिरिच्चु किलुक्किले ।

ओटक्कुपल

अपनी बीगा के तार  
 छेड़ो उस पर मधुर-मधुर तान,  
 गीत की खुमारी में  
 विलीन हो जाये  
 मेरे भीतर का 'म' !  
 उसके सहारे पहुँचू  
 जीवन के सीमा रहित अतल-तल तक !

नियति की आना से  
 अविचल विवग खडे रहनेवाले ये टीले  
 कौकिल के कण्ठों में  
 अप्रत्याशित बूब उठते हैं,  
 जब परतत्रता को छूता है  
 आनन्द अपने कर-स्पर्श से  
 तो भारी हलचल उत्पन्न हो जाती है,  
 यही कारण है शायद ।

प्रकाश का पान कर  
 उमत्तता की तरंगों में  
 नतन कर रहे हैं मुमन !  
 सड़ी है दिन-लक्ष्मी मुस्तुराती,  
 यह रहा है यह रसिक पवन सन्सीकार  
 उसकी कुचित अलक-ध्यायाभा का  
 संचालित कर बे !

यह वनस्पली सड़ी है,  
 विविध पुष्प चिह्ना से सज्जित  
 हरित साड़ी पहनकर  
 अपने कामल शरीर पर  
 अकारण अबुरित पुलक से सिहरी  
 पक्षियों के बलरव में  
 बारम्बार बलहास बरती हुई ।

लोकचित्तम् समाक्रमिञ्चीदुप्त  
शोकयोद्वाक्कळायुधम् वयक्कट्टे ।  
जीवनेट ट मुरिवुणदडीट्टे  
केवलमतिन् पाट्टुमे वाणाते ।  
ई वसन्तत्तिलारानुम् दु लिच्चाल्  
दैवकोपमवनिल् पतियुमे ।

—१९३४

दुनिया के दिल पर  
हमला बोलनेवाले शोक के सैनिका,  
अब हथियार रख दो !  
भर जायें जीवन के सारे घाव !  
मिट जायें उसके सारे क्षत-चिह्न !  
करेगा दुःख यदि कोई इस वसन्त में  
ईश्वर-क्रोध की गाज उसी पर गिरेगी ।

—१९३४

## साक्षात्कारम्

मुकळिलेवकाळ मुकळिलाय् वत्तिकुम्  
सकलगमाम सनातनाकाशमे ।  
परमभेयमाय शुद्धमाय् मित्रिटुम्  
परमलावण्यतत्वमे, वदनम् ।

गिरिपरम्पर दूरयोत्तरमुत-  
भरितमुमुखम् नाक्कुत्तु निन् मुखम,  
वरुक्कळो तणुत्त वविळत्तटम्  
नेरुक्कयिलेट टु, कोळ्मयिर वकोळ्ळुनु ।  
अक्केयेक्काळकलेयाकुनु नी-  
यरिक्किलेक्काळरिक्किलाणत्तमुतम् ।

बोरु हिमक्कणम भावमाणघया-  
मिरविन सत्ततियाय आनेक्किलुम्,  
भवदनुग्रहत्तिट्टेयाक्कस्मिक्क-  
नक्किरणमेत्तात्ताविलेक्कवे,  
इट्टयिलुण्टायिरन तमोमय-  
पटमतिनालुटमक्कनीट्टवे,  
क्षणिकमाक्किलेन्तेट्टेयिक्कजीवित-  
क्कणिकयिल् कण्टितट्टइय्येत्तने आन् ।  
उलक्कम् वण्टु आन् यालमाम् पुलुक्कूम्पिन्-  
तलयिल् मिन्नुन्न त्तुमन्नुत्तुळ्ळियाय् ।

## साक्षात्कार

हे सबव्यापक,  
सर्वोच्च विराजमान,  
अति अमेय, अनुपम लावण्य-सार,  
परमशुद्ध, सनातन आकाश !  
नमस्कार है तुम्हें !

ये पवत पवित्रियाँ  
तुम्हारी दूरी से स्तब्ध  
आश्चय के साथ मुह उठाये  
तुम्हें ताक रही हैं ।  
किन्तु दूर,  
तुम्हारे शीतल नपोल का स्पर्श भाये पर अनुभव कर  
पुलकित रहती है ।  
कितना आश्चय है यह कि  
तुम दूर से भी दूर हो  
और निवट से भी निवट !

मैं हूँ एक शुद्ध हिमकणिका,  
अथ रजनी की सन्तान  
किन्तु जब तुम्हारे अनुभव की नवल किरण  
अचानक मेरी अन्तरात्मा पर पड़ी  
और बीच का तमामय आवरण हटा  
तो इस अपने क्षणभंगुर जीवन की बनी में  
मैंने आप ही को देखा ,  
और देखा इस दुनिया को  
बाल-रूपी दूर के गिर पर चमकनेवाली  
क्षयनम के रूप में ।

वल्लभमत्तमुत्तहृपडडळाल्लत्तळ-  
 घिळविट्टुमेटे मूवमाम् जीवनिल  
 विळरुमानन्दपारवश्यम एक-  
 तिळ पुळकमुळकळणिकयाय् !  
 निमिपमात्रानुभतियालात्माविल्-  
 क्कुमियुमानन्दवेलियेट्त्तिनाल  
 करकळोक्केमुम् मुडिडय जीवित-  
 ककटलु कष्ट्त्तानेकमाय, पूणमाय् !

—१६३२

विस्मय और आनन्द के मार  
 मैं शिथिल-सा हो गया,  
 और मेरे प्राणा में तरंगित हानेवाले  
 आनन्द की विवश हिलारा में धूल मिलकर  
 यह घरती पुलक-कण्टकित हो गयी !  
 तब इस पल भर की अलौकिक अनुभूति से  
 आत्मा के भीतर उमड़नेवाले आनन्द के ज्वार भाटे में  
 मैंने जीवन-सागर का  
 सीमा विहीन, एव, अखण्ड और परिपूर्ण देखा !

—१९३२



## ओमन

ओमने, निनेप्परिचयमिल्लात-  
यी महाविश्वत्तिलाक्षमिल्लत्मुतम् ।

राविले निनेयेटुत्तुम्भरत्तेत्ति  
मेविट्टुम् नेरमा वेळ्ळिनक्षत्रवुम्  
पुचिरि तूकुन्न नीयुम् परस्परम्  
कण्चिम्मियेन्तो परवतु कण्टु ज्ञान ।  
पेटियाणक्कोच्चनुजन् विळ्ळिच्चुको-  
ण्टोटिक्कळ्युमो कण्णिन् वेळ्ळिच्चमे ।  
प्रेमत्तिनेत्तने कावलाय नित्तुवेन  
ओमनयेड डने पोमनु काणणम् ।

२

ओमने निनेयेटुक्कान कोत्तक्कात-  
यी महाविश्वत्तिलाक्षमिल्लत्मुतम् ।

मम्पिळि वन्नेयुम् तापत्तु वेच्चता,  
कुम्पिट्टुनित्पू चिरिच्चुकोण्टम्बरम् ,

## मुन्ना

कितना आश्चय है, मुन्ना !  
इस विशाल विश्व में  
कोई भी तुझ से अपरिचित नहीं !

सबरे

जब तुझे गोद में लेकर  
मैं बरामदे में खड़ा था तब मने पाया  
तू मद हास कर रहा है और  
प्रभात का तारा आँखों चपका-चपकाकर  
तुझ से वार्तालाप कर रहा है ।

मुझे डर है

वही वह तेरा छोटा भाई

बुलाकर न ले जाय

तू जो मेरी आखों का तारा है !

मैं अपने प्रेम को ही क्या न बना दू

तेरा पहरेदार ?

फिर देखू कसे मेरा मुन्ना कहा जाता है ।

२

कितना आश्चय है मुन्ना !

इस विशाल विश्व के भीतर ऐसा कोई भी नहीं

जो तुझे गोद में उठा लेने का तरमता न हो !

मह शम्बर

खंदा का गोद से नीचे उतार कर

सिर झुकाये मुस्तुराता सदा है ,

चेंकुरुध्रगुलिकोण्टलिवोटिता  
निन् कुळिर, नेटिट तसोट्टुनु पोनवेयिल ,  
फुल्लपुण्यत्ताल् चिरिप्पिच्चुकोण्टळम्—  
चिल्लियाम् कै नीट्टिनिल्वुनु मल्लिक ।

निन्ने ममत्वच्चरट्टु मुहक्कि आन  
मने नोविककयार्येकिल् क्षमिक्कुक् ।

—१९३३

यह सुनहली धूप  
निज कोमल करगुलियों से  
तेरा ही मृदुल ललाट सहला रही है ,  
यह मल्लिका खड़ी है  
नवल शाखा करा को फैलाये तेरी ओर  
ओर दिखाकर खिले हुए फूल  
बहला रही है तुझे ।

मुझा, क्षमा करना मुझे  
यदि मैं ममता की डोरी में बसी गाठ लगाकर  
तुझे व्याकुल करूँ ।

—१९३३

## जीवितम्

१

जीवितपतगमे

देहपञ्जरवद्धम्

नी विपादिष्णु पारम

पारत श्रयतेच्चोल्लि

पेलवच्चिरकिने

विटर्त्तान् पोलुम तीरे

मेलल्लो चुपतेषुम

विधि तनपिमूलम् ।

कालम् निन् नेरे नीट्टि-

बलिच्चु नितीटनू

लीलयक्काम् सुखत्तिटे

पविपक्कतिर क्कुल ।

वल्ल नेरत्तुम् कोत्ता-

नेत्तियाल् पतिरल्ला-

तिल्ल , नीयारेट टेथ

वेदन विपुड्डील ।

द्योविनेक्किनाविनाल्

चित्रणम् चेतुम कोण्टु

मेविट्टुम निन्निल्लत्तावुम

कनिवालनिवायम्

मरणम् पेट्टेन्नेत्ति

मोचनम् नल्लुकुन्नेड्ड विल्,

परमानन्दम् पूण्टु

नदि चोल्लुक नल्लू ।

ओटक्कुयल

## जीवन

१

हे जीवन विहग,  
देह के पिजड़े में बद्ध  
अपनी परत-प्रता के बारे में सोच-साच कर  
कितना दुःख भोग रहे हो तुम ।

नियति की छत्रा ने  
घेरा है तुम्हें चारों ओर से  
तुम अपने पक्ष-पुटा को खालने में  
असमर्थ हो गये हो नितान्त ।

यह सीलालालुप काल  
तुम्हें ललचाने के लिए  
सुख की विद्रुम बालियाँ  
तुम्हारी ओर बढ़ाना है ।

चुग भी पाते हो यदि कभी  
तो मिलती है तुम्हें निरी भूखी ही  
उसकी अनी चुभ जाने का  
कितना दद सहा है तुमने ।

स्वप्ना में स्वर्ग का चित्र बनानेवाले,  
मृत्यु यदि कष्टना से भर कर  
तुम्हारे पास आ जाये और  
पिजरा खोल कर तुम्हें मुक्त कर दे  
तो तुम उसे महत्त्व प्रयत्न दोगे ।

पिटमुनतेतितनु  
पिन्वलिप्पतेन्तिघ्नी-  
तटविल् स्वयम् पर-  
डडीटवान् मोहिकुम्भो ।

२

जीवितम भागतिटे  
मुळच्चेटियाले पच्च  
पाविय तारुप्यत्तिन  
कुत्तिलुम् चेरविलुम्  
मेञ्जु मेञ्जाशारूप-  
मगतण्णयिल्क्कूटि-  
प्पाञ्जुपाञ्जिळ तनि-  
क्किरळानारभिक्के,  
अणितम् मुखम नावाल्  
नक्किक्कोण्टनुभूत-  
क्षणिकमुखप्रास-  
रोम यपरायणम्  
तळ्ळु किटक्कयाम  
तन् वयर निरञ्जालुम्  
वळन्न विशण्णोटे  
राजमागतिन् वक्किल् ।  
एवनुम् चरिक्कुवा-  
नुळ्ळोरा मागम् दीन-  
भावमाय् निरीक्षिक्के  
निपलल्लातिल्लेड्डुम् ।

भीदमाम् चेन्नायल्ल,  
पिन्पुरत्तिटयटे  
पादवि यासम् वेळ्ळप्पू,  
भयमेन्तिनाणावो ।

ओटवुपल

मगर तुम क्यों इस तरह तडपते हो ?  
 क्या पीछे की ओर ही मुड़ना चाहते हो ?  
 क्या तुम इस कारागार में ही  
 भयभीत दुबके रहना चाहते हो ?

२

यह जीवन चरता रहा  
 भोग की कँटीली झाड़ियों से सहलहाते  
 तारण्य के टीला में और तराइयों में,  
 लगाता रहा दौड़ आशा की मृगतुण्ड्याओं में,  
 और, जब यह धरित्री दिखाई देने लगी तमिस्सा तो  
 जीभ से चाटता हुआ  
 अपने व्रणित मुख को  
 जुगालियाँ करता हुआ  
 भोगे हुए क्षणिक सुखा की,  
 प्रतिफल बढनेवाली भूख से तपता  
 भरपेट खाने पर भी,  
 यह राजपथ के किनारे  
 पडा हुआ है थक कर चूर ।  
 यह पथ  
 है सब के प्रयाण का,  
 किन्तु दीन दृष्टि से देखने पर  
 सब जगह केवल परछाइयाँ ही दिखायी देती हैं ।

क्या तुम डरते हो  
 पीछे मुनाई देने वाली आहट से ?  
 यह पगध्वनि नहीं है भयकर भेड़िये की,  
 बल्कि है गरुडिए की !



आलयिल् निनुम निते  
मेयुवान् विट्टू काल,-  
त्तालयिल् पूकानन्ति-  
यक्केन्तिनु मटिक्कुम्बु ?

—१६३४

सुबह का तुम्हें थान से ला कर  
छाड़ गया था चरने,  
ता अब क्या सक्ताच करते हा शाम का  
लौट चलने में ?

—१६३४

## सूर्यकान्ति

मन्दमन्दमेन् तापुम्  
मुग्धमाम् मुखम् पोकिक-  
स्सु दरदिवाकरन्  
चोदिच्चू मधुरमाम्  
"आर नीयनुजती ?  
तिरिञ्जेपयाम् एन्तेन्  
तेरु पोकवे नेरे  
नोकिक निल्लकुधू दूरे ?  
सौम्यमाम् पिन्नेप्पिन्ने  
विटरुम् कण्णाल् स्नेह-  
रम्पमाम् चीक्षिक्कुधू  
तिरिञ्जु तिरिञ्जेन्ने ,  
वल्लतुम् परयुवान्  
आग्रहिकुधूण्डावाम्  
इल्लयो तेट्टाणूहमेड्डिल्  
आन् चोदिच्चिवा ।"

ओनुमुत्तरम् तोप्प्री-  
लेडडने तोप्पुम् ! सव-  
सन्नुतन् सवितावे-  
डडेडडु निगधम् पुप्पम् !  
अयमाविने स्नेहि-  
क्कुधु धिक्कारत्तिन्नु  
'सूयवात्ति' येन्नेन्ने-  
प्पुच्छिप्पताणी लोवम् !

## सूरजमुखी

मेरा झुका हुआ चेहरा  
धीरे धीरे उन्नमित कर  
मनोहर दिवाकर ने  
मधुर स्वरा में पूछा  
कौन हो तुम वहन !  
क्या दूर खड़ी रहती हो,  
अनिमेष नयना से देखती  
जब मेरा रथ जाता है ?  
फिर देखती हो मुड-मुड कर  
सौम्य स्निग्ध हो,  
बहना चाहती हो कुछ ?  
अगर नहीं, और मेरा अनुमान गलत है  
ता समझो मैंने पूछा ही नहीं”

मूझको कोई उत्तर नहीं सूझा ,  
सूझेगा भी कैसे ?  
वहाँ मैं निगध सुमन,  
वहाँ सविता सबस्तुत !  
मेरी तो घृष्टता यह है  
कि मैं गूथ से प्रेम करती हूँ  
इसी से ‘सूरजमुखी’ नाम देकर  
गसतार मेरी होंगी उडाता है !

परनिद वीशुत  
 वाळिनाल् चूळिप्पोका,  
 परकाटियिलच्चेन  
 पावनदियस्नेहम् ।  
 धीरमामुखम तने  
 नोक्किनिनु जान , गुणो-  
 दारनाम अबिटत्ते-  
 च्चकेन्नु तोनियो हूत्तिल् ।

भावपारवश्यते  
 मरय्कान् चिरिप्पति-  
 नावतुम् श्रमिच्चालुम्  
 चिरियाय् तीर्त्तिल्लो ।  
 मञ्जुतुळिळयाणेन  
 भाविच्चेनान दाधु,  
 माञ्जु पोम् कविळत्तुट्टु-  
 प्पिळवेयुलिलेध्वात्तेन् ।  
 वेपमुण्टायगत्तिल्  
 कुळिर वाटि टनाल्, लज्जा-  
 चापलत्तालल्लेशु  
 नटिच्चेनधीर जान् ।  
 शुद्रमामिप्पुप्पतिन  
 प्रेमत्तेग्गणिच्चालो  
 भद्रनादेवन् निद-  
 नीयमायगण्यमाय् ।  
 मामक्प्रेमम निरय-  
 मूकमायिरिक्कट्टे,  
 कोमळनविटन्न-  
 तूहिच्चालुहिनक्कट्टे ।  
 स्नेहत्तिल्नित्रिल्लत्तो  
 भट टोनुम् तभिच्चीटान् ,

किन्तु, पराकाष्ठा को पहुँचा हुआ  
 पवित्र दिव्य प्रेम  
 पर निन्दा के खड्ग प्रहार से  
 क्या सङ्कुचित हो सकता है ?  
 मैं उस सुधीर मुख की ओर  
 देखती रही—  
 न जाने क्या सोचा होगा  
 उस गुणोदार ने मन में ।

मने अपनी भावनाओं की विवशता को  
 भरसक छिपाने का प्रयत्न किया,  
 किन्तु न दे सकी उन्हें  
 मन्दहास का रूप ।  
 अपने आन-दाय्युआ को  
 हिमवणिका बनाने का बहाना किया मैंने,  
 और आगा की—  
 कि प्रभात की धूप में घुल मिल जायेगी,  
 कपोलो की अरुणिमा ।  
 मेरा अग-अग काँपा  
 ता मने बहाना किया—  
 काँप रही हूँ मन्द पवन के कारण,  
 लज्जा चापल्य से नहीं ।  
 वही वह मद्र पुरप न समझ बैठे  
 इस क्षुद्र सुमन के प्रेम का  
 निन्द्य और नगण्य  
 इसलिए मेरा प्रेम  
 सदैव के लिए बना रहे मूक ।  
 वह मुन्दर यदि स्वयं ही  
 अनुमान कर पाये ता पाये ।  
 प्रेम का नहीं है कोई प्रतिदान,

स्नेहतिन् फलम् स्नेहम् ,  
 ज्ञानतिन फलम् ज्ञानम् ।  
 स्नेहमे परम् सौख्यम्,  
 स्नेहमगमे दुःखम्,  
 स्नेहम् मे दिक्कालाति-  
 वर्तिमाय ज्वलिच्चाव ।  
 देहमिन्नतिन चूटिल्-  
 द्दहिच्चात्तद्दहिवकट्टे  
 मोहनप्रकाशमे-  
 ध्यात्मावु चुम्बिच्चल्लो ।

मामकमनोगत-  
 मविटन्नरिञ्जेशो ,  
 योमब्बद्देहतिन्  
 मुखवुम् विवणमाप् ।  
 वळरेप्पणिप्पेट्टा-  
 णेन्देमेल्निच्चुम देवन  
 तळरुम् सुरक्कलामाम  
 कयेदुत्ततु नूतम् ।  
 अक्षरम् पुरप्पेट्टी-  
 लन्यो यम नोक्की अडडळ्ळ ,  
 तल्लक्षणम् करम्पिरा-  
 वेन्तिनड्डोद्रेक्केत्ति !  
 नन्दि काणिप्पानेन्दे  
 गिरस्सु कुत्तिञ्जतु  
 मन्दितोत्साहन् पोवे-  
 क्कण्टिरिक्किल्ला देवन् !  
 निद्रपिल्लाञ्जारक्क-  
 नेत्रनाम् पुलर्च्चम्बु  
 ह्दमनेत्तुम् , नोक्कु-  
 मिप्पुरमुट्ट टत्तेने ,

ज्ञान का ज्ञान ही है फल ।  
 प्रेम ही परम सुख है  
 प्रेम भग ही है परम दुःख  
 मेरा प्रेम, दिक्काल से परे  
 सदा ज्वलन्त रहे ।  
 अगर उमकी अग्नि गिला में  
 मेरा शरीर दग्ध हो गाये  
 तो ही जाये ।  
 कम से कम मेरी आत्मा ने  
 उस मोहन प्रकाश का चूम लिया,  
 यही काफी है ।

क्या वे भर मनारथ का भाप गये ?  
 लौटने की बेला में उनका भी मुख विवण बन गया ।  
 यत्न से ही ता प्रभु  
 भर कंधे पर से  
 अपने आरक्त निधिल हाथ हटा पाये,  
 मैं भी भाप गयी ।  
 देखत भर रह गये दाना,  
 मुह से एक भी शब्द नहा निकला ।  
 तभी वह बलमुही रजनी  
 क्या हमारे बीच में आ गयी ?  
 घृणता से मैंने अपना सिर झुकाया,  
 मगर मन्नासाह प्रभु ने जाने की जन्दी में  
 गायन ही उसे देखा हा ।  
 बल प्रात बाल  
 इस प्रागण में  
 उन्मिद्र आरक्त नयन  
 मेर प्रभु मुझे खाजेंगे ।



विळरुम् मुखम वेगम ,  
 तेक्कन् वाट टटिच्चट-  
 त्तिळमेल किटक्कुमेन्  
 जीणमगवम् काण्के ।  
 क्षणमामुखम् नील-  
 वकारुमालालोप्पि-  
 प्रणयाकुलन नाथ-  
 निड डने विपादिवक्काम्  
 "आ विशुद्धमाम मुग्ध-  
 पुष्पत्तेक्कण्डिल्लेङ्किल ।  
 आ विधम परस्परम  
 स्नेहिव्वातिरुत्तेक्किल !"

—१६३२

उनका मुह हो जायेगा विवण  
 मेरे जीण शरीर को देख कर  
 जिसे लुण्ठित कर दिया हागा घरा पर  
 दक्षिणी पवन के झकारे ने ।  
 तब प्रणय विह्वल मेरे प्राणेश्वर  
 पोछ लेंगे अपना मुख काली बदली के रमाल से  
 और कहेंगे विपण्ण हा कर—  
 “बाग, न देखा होता यह मुग्ध सुमन  
 न किया हाता प्यार हम दीना ने ।”

—१६३२

स्तोमत्तेयेत्तिष्कुभ्र  
राप्पक्लिप्पराबुक्ळ  
वानिलेप्पोपुम् वाणाम्  
सचरिप्पतायिट्टु ,  
जानिवट्टयेब्बधि-  
ञ्चीट्टुवानाशिककुशु ।

पत्तरेप्पाणिप्रहम्  
चेयित्तरिष्कुनु पण्टे ,  
पत्तमदिदरत्तिलु—  
मिप्पोपुम नटक्कुनु  
पत्तिगेहत्तिलुच्चेरान्  
यात्रयाकलुम बधु-  
तत्तितन् निरर्याधु-  
वपवुमिट्ठियिक्कटे ।  
कुट्टिवच्चत्तित्त्तु शेपम्  
जमगेहत्तेक्काणा-  
नित्ठयाक्कुमेकुश्री-  
लुग्रशासननेश्रो !  
हा ! त्तिरिच्चवित्तेनि-  
न्नागमिक्कुत्तिल्लाह-  
मोत्तितान् ,—अन्त पुरम्  
नाक्कमो, नरक्कमो ?

३

मामक्कहृदन्तत्तिल्  
माट्टोलिक्कोप्पीट्टुशु-  
ण्टामन्दम् समीपिक्कुम्  
पत्तितन् पदयासम् ।  
काल् विनापिक्कूटि  
जान् पिरशोरी वीट्टिल्  
भेवितान् कपिञ्जेक्किल् !—  
इत्त वेगमो यात्र ।

ओटक्कुपन्

आसमान में हर घड़ी उड़त देखती हूँ  
उस व सन्देशा को पहुँचानेवाले  
दिन रन रूपी कपाता का  
मैं उन को पकड़ कर बाध रखना चाहती हूँ ।

वे कर चुक है अनेक पाणिग्रहण,  
अब भी  
अनक घरा में हो रहे हैं  
पति गेह चलने के विदा-आयोजन,  
बधु-बाघवा की निरथक अश्रुवर्षा ।  
वह ले जाता है तो फिर  
मायके आने का अवसर ही नहा देता  
कया इतना कडा है अनुशासन उसका ?  
हाय  
काई भी तो वहाँ से लौट नहीं पाती  
कि सुनावे उसका अन्त पुर स्वर्ग है या नरक !

प्रतिध्वनित हो रहा है—  
मेरे अन्तरग में  
मेरे पति का पन्थास  
जा आ रहा है मेरी आर धीरे-धीरे मुस्तुराता हुआ ।  
काग !  
म ठहर पाती एकाप घड़ी और इस घर में  
जहाँ मने जन्म लिया है—  
कया इतनी जल्दी याना करनी पड़ेगी ?

मेनि मे विरयिक्कल्ल,  
 चुण्टिण चलिक्कल्ल,  
 ग्लानि वधुदिवक्कल्ल,  
 विळरिप्पोक्किल्लास्यम्,  
 समयम् वरुधेरम्  
 सवशक्तमाक्कयिल्  
 ममजीवितम् क्षुद्रम्  
 सस्मितम् समप्पियक्कुम ।

४

स्नेहपूण्णमायेते  
 नोक्कि वीप्पिट्टुम् जम-  
 गेहमे, पोड्डनिल्ल  
 यात्र चोदिप्पान् शम्,  
 इधु निन्सोन्दयत्ते-  
 पूण्णमाय् आन् काणुन्नि-  
 तिन्नु निन् प्रेममूलम्  
 ममनम पिळ्ळुम् ।  
 विरहत्तिलल्लाते,  
 लावण्यम समप्रमाय्  
 निरवद्यमायिट्टु  
 काणुवान् कपिवील ।  
 प्रेमत्तिन् तिळक्कम् क-  
 ण्टतु चेन्नेट्टुक्काय्क ,  
 भीममाम् खडगतक्काळ  
 मूच्चयेरियतन्ने ।

५

उद्रसम् निपलुक्-  
 ल्लयोयम् पुल्लिप्पुल्लि  
 निद्रचेयतीट्टुम् पच्च-  
 प्पट्टाश्र पून्तोट्टित्तिल्

भाट्टकुपल्

नहीं, कम्पित नहीं होगा मेरा शरीर,  
 चंचल नहीं हागे मेरे अघर,  
 ग्लानि नहीं आयेगी मुझे,  
 और मरा मुख भी होगा नहीं विवण,  
 जब मुहूत आयेगा  
 उन सबगक्त हाथा में  
 सस्मित समर्पित कर दूगी  
 मैं अपना जीवन ।

४

मेरे जन्मगृह !  
 मेरी आर देख कर तुम भरते हो आहें  
 स्नेहातिरेक के कारण !  
 तुमसे विदा माँगने  
 नहीं निकल रही है मेरी आवाज ,  
 हाय ! आज मैं देख पायी  
 तुम्हारे सौन्दर्य की समप्रता का,  
 और आज होता है मेरा मन विदीण  
 तुम्हारे प्रेम के कारण ।  
 केवल विरह की बेला में ही  
 दिखाई देता है लावण्य, समग्र और निरवद्य ।  
 न जाओ प्रेम की इस दमक पर,  
 न करो उद्यम उस लेने का,  
 असल में वह  
 भयानक तलवार से भी अधिक तेज है ।

५

इस रम्य उद्यान में  
 जहाँ हरी-हरी मखमल के ऊपर  
 परस्पर आनिगनबद्ध परछाइयाँ  
 रम विमुग्ध साना रहती ह

तावुमौत्सुक्यतोटे  
 नाळ्येयुम पुलच्चय्क्कु  
 पूवुकळ् जलाद्रमाम्  
 कण्त्तुरस्य्यो । नोक्कुम ।  
 अत्र घन्निरियक्कार-  
 ण्टवयाम् ससारिप्पा-  
 नेत्रयुम् मेलिञ्जु नी-  
 ण्टुळ्ळोरु रूपम् सौम्यम् ।  
 अपलालव पर-  
 ङ्गीटुम योयम् नोक्कि --  
 "निपलायिरत्नेन्नो  
 स्नेहाघारमा रूपम् ।"

—१६३१

वहाँ देखेंगे सुमन  
 अपने जलाविल नयन खाल कर  
 कल भी प्रातःकाल  
 उनसे बातें करने के लिए  
 यहा आ बैठता था  
 एक सौम्य कृश-दीर्घ-आकार ,  
 और तब बड़ी विपन्नता के साथ  
 वे एक दूसरे को देखेंगे और कहेंगे—  
 “क्या यह स्नेहाघार आकार  
 मात्र एक प्रतिविम्ब था ?”

—१९३१



## अन्वेषणम्

कवि चोदिञ्चू "कोञ्चु-  
तेत्रले भवानारे-  
क्वविषुम् प्रेमम् मूलम्  
वम्पलाघ्नवैषिप्सु ?  
इल्ल विश्रममाय-  
त्रिल्ल मट टोह चिन्त,  
अल्लिलुम् पकलिलुम्  
भ्रान्तनेप्पोलोटुम् ।  
कोच्चतर तवोमाद-  
चापलम् कण्टिट्टावाम्  
उच्चलम् पक्चलम्  
नोक्कुत्तु भेलुम् कीपुम् ।

"प्रेमत्तिन् पेरोन्नल्ली  
दादिप्पतव्यक्तम् नी,  
प्रेमत्तिन् सहारियाल  
कालुरव्यकाम्कल्लल्ली ?  
लन्यनु लभिव्कयि-  
ल्लीदगम् दि यस्नेह-  
जयमुमादम् , सत्यम्  
आनितिलसूयात्तु ।  
तिरयू ! वेगम् तोप,  
तिरयू ! मुळकाटिन्  
चिरियेग्गणिव्वाते , ~  
इल्लतिघ्नन्तस्सारम् ।"

## अन्वेषण

कवि ने प्रश्न किया—

“हे तरुण पवन,  
तुम किसे खोज रहे हो  
सीमातीत प्रेम से अवीर हो कर ?  
तुम्हें विश्राम ही नहीं,  
न है कोई और चिन्ता  
बस दिन रात दौड़ते रहते हो  
उमत्त की भाँति ।

शायद तुम्हारे उमाद-चापल्य को देख कर ही  
ये चकित, तरल नन्हें सुमन  
गदन उठाये कभी ऊपर निहारते हैं,  
कभी नीचे, विभ्रान्त ।

“यह प्रेम का नाम ही है  
जा तुम में ममरित हो रहा है,  
यह प्रेम का ही नाम है  
जिसने वारण तुम्हारे पाँव डगमगाते हैं,  
ऐसा दिव्य प्रेम-जय उमाद  
और किस को मिलेगा ।

सच तो यह है  
कि मैं तुम से ईर्ष्या कर रहा हूँ  
खाजा मेरे मित्र खाजा—  
इस वणी-वल्ग्व की हँसी की परवाह न करा  
अतः सार ही वहाँ है इस मालती में ।’

उदयनिश्वासतो-

टुच्चरिञ्चितक्काट्टु

सदयम् मदगते-

त्तटविस्सगदगदम्

“श्रीमन्, निघ्ननुमानम

तेट टल्ल , चुट टुधू जान्

प्रेमसवस्वत्ति टे

मुत्तदशनत्तिन्नाम् ।

चिरकालमाय् जडडळ

चेर पिरिञ्जिट्टेग्नालूम

स्मरण नटुक्कुनि

नेत्तेयिट्टलट्टुधू ।

जानुणत्तप्पोळादि

णुलर कालत्तिप्पारुम

वानुमन्योयम् नोक्कि

शोकमूकमाय् निल्प्पाम् ।

मामकवक्षस्यलम्

शूयमाय्क्कण्टू , पोया

ळोमलाळ्य्यो । राग

विश्वामपरीक्षाधम ।

चेणियन्तो रण्टो

वेणतारम दारप्पू

वेणियक्कल् निल्लनु

वीणिरुधित्तु पोके

कळनूपुरारवम्

केट्टु जान्य्यो, पक्षि

गळनिगळन्नाद

मेत्तल्लो विचारिञ्चु ।

पुलरिन्तुट्टुप्पेधु

चित्तिञ्चु पोयि पाद-

मलरिन्नलक्क

रक्तमाम् पाट्तेरम् ।

पवन ने  
मेरे अगा को दयापूर्वक सहलाया  
और उसास भर कर कहा—

“श्रीमन्

ठीक है आप का अनुमान,

म घूम रहा हूँ

प्रेम मूर्ति का ही मुख-दशन पाने के लिए ।

चिरकाल से हम बिलुड गये हैं,

किन्तु स्मृतिया धीच-धीच में आ लडी होती ह

और मुझे सताती हैं ।

जब मैं आदिम प्रभात में जगा

तो देखा

यह जगत जोर भूतल

एक दूसरे की ओर निहारते

शोक मूक खडे थे ।

मने अपना वक्षस्यल नूय पाया

वह चली गयी थी

प्रेम की दृढता की परीक्षा लेने के लिए ।

हाँ,

एकाध तारक-मन्दार-मुमन

उसकी बेणी में से

गिरे पाये गये ।

मने उसवे नूपुरा का नाद सुना था

किन्तु हाय ! मने समया

उसे

पक्षिया के गले से विनिगलित कलरक ।

पदकमला के अलकनक चिह्न का

मने समझा

प्रभात की लालिमा

कनकागुलीयक

भूरियिट्टिरुमत

द्विनद्विम्बमाणेतु

ज्ञान विचारिञ्चु मूढन्

वानिलोम्मय्कायिट्टु

पोय पट्टुरुमालु

वारिदशकलमे

घोर्तु ज्ञान् सूक्षिञ्चील ।

पाटलम् पारावार-

मत्तोत्तु पादारक्त

प्याटणिञ्चुळिविरि-

त्तलपिल् चुम्बिञ्चील ।

अन्नु तोट्टुन्वेपिप्पू

नालु दिक्किलुम तेण्टि

येघुटे कयमर-

घ्ना रसस्वरूपते ।

कण्टवरिल्ला पारिल

कण्टुवेघुरप्पवर

कण्टवरल्ला , वाणान्

ज्ञान् स्वयम् यल्लिक्केणम् ।

आरे ज्ञानन्वेपिप्प

ता प्रेमपुञ्जम् तत्रे

तीरेयिल्लेघोत्तुन्न

नावेनिक्कविश्वास्यम् ।

आ मुग्धमुल्लप्पूककळ

मुक्कुरन्न नेरम ज्ञान

आ मुत्तमनोहर

सौरभम् स्मरिक्कुत्तु ।

ओटवकुपल

वह छाड़ कर गयी थी वनवागुलीय  
 ताकि उसे म पहचान सकू  
 किन्तु मने उसे समझा सौरबिम्ब ।  
 वह अपनी निशानी के रूप में  
 नम में छोड़ गयी थी रेशमी रुमाल,  
 किन्तु मैं मूढ़  
 समझ बैठा उम का बादल का टुकड़ा ।  
 हाय ! वह छोड़ गयी थी सिबुडे हुए कालीन का अचल  
 अपने अलक्त चिह्नो से अकित  
 समझ बैठा उसे मैं गुलाबी-सागर,  
 चूम भी न पाया उसे ।

उसी दिन से  
 होकर आत्मविस्मृत  
 चारो दिशाआ में घूम फिर कर  
 उस रस स्वरूप की खोज कर रहा हूँ ।  
 किसी ने नहीं देखा है इस ससार में उसे,  
 जो कहते ह कि देखा है  
 नहीं देखा है उहोने भी ,  
 अत देखने का यत्न मुझे स्वय ही करना होगा ।  
 मैं जिसे खोज रहा हूँ  
 उसी रसमयी प्रेममूर्ति का  
 नितान्त मिथ्या बतानेवाली यह रसना  
 मेरे लिए अविदवात्य है ।

जब मैं मुग्ध बुन्दकलिकाआ का चूमता हूँ  
 तो याद हो आती है  
 उस मनहर मुग्ध के मोरम की

चोलयिल् सतष्णनाय्  
चुण्टटुप्पिक्वे स्निग्ध  
लोलमक्कपोलत्तिन  
तणुप्पु जानोम्मिप्पू ।

मानसम स्मरणया  
लु मत्तमाविल्ललो  
जानलज्ज वेपिक्कु  
मोमल विध्ययार्णेक्किल् ।

वल्लि तन परिमदु  
पल्लवक्कत्तण्टि मे  
लुल्लसनीहारत्तू  
वेणविरिक्कटक्कमेल  
डल्ल मे मनससान्ति -  
योमलिज्जरिक्कु  
वल्ल कालत्तुम् चेल्लाम—  
ईयासायाणेन गक्कि ।

क्षीणनाय निगीथत्तिल  
धीतवोधनाय काट्टिल  
वीणु पोवुम् जान काणा  
तोमलाळटुत्तेत्तुम  
शातळक्करत्तिनाल  
तटवुम् पिटज्जेत्क्कुम्  
प्रीतनाय क्षणत्ताल जान—  
विलपिक्कुवान् मात्रम् ।

उरड्डुम् वटलिने  
च्चेनुणत्ति जान तोपर  
परञ्जु तरणम  
प्रोमनेड्ढेप्राय चाल्वे,

जब मत्तुष्ण में थरने की आर अघर बढ़ाता हूँ  
ता मुझे उस म्निग्ध मृदुन कपाल की शीतलता  
याद हा आती है ।

जिसकी खोज में मैं इतना विवग घूम रहा हूँ  
वह मेरा प्रेम-मुज अगर मिथ्या है  
तो क्या मेरा मत  
उम की स्मृतिया से इतना उमत्त हो जाता है ?

मुझे कही भी ता गान्ति नहीं मिलती—  
न लतिकाआ की परिमटुल वाटुआ में  
न कमनीय धवल-नीहार गय्या में,  
कित्ती दिन मैं उसक समीप पहुँच जाऊँगा—  
इसी आशा का आलम्बन मुझे बल न्यिे हुए है ।

निगीय में जब नितान्न बलान्न हो कर  
मैं बनान्तर में अमहाय गिर पडता हूँ  
तब बट लुक द्विप कर—  
आती है मेर समीप,  
सहलाती है शीतल बरा से ,  
और प्रेम गद्गद मन मे तब  
पल भर में मैं जाग पडता हूँ  
केवल प्रनाप करने के लिए ।

जब मैं  
जाकर मुज सागर का जगाना  
और गिडगिडा कर पूछता—  
'मित्र, कहीं है मरी प्रिया ?



दीननामां ज्ञान् भ्रान्त  
नाणेनु चिन्तिच्चावाम्  
फेनप्पल्लिरहम्मिको  
ण्टुरक्केग्गज्जिकुनु ।

पादपत्तल पिटि-  
च्चिट्ठक्कु कुलुक्किज्जान्  
पारमुल्ककण्ठाभार  
मात्तेत्र चोदिच्चील ।  
कम्पितागमाय् अय्यो  
कण्टिल्लयेत्तलाते  
वेम्पिटुम् मरम् तरुन्निल्ल  
मे समाधानम् ।

ध्याननिश्चलम् निल्लकुम्  
पवत्तम् चूण्टिक्काट्टि  
वानिन् नेक्कङ्कत्तिङ्कल  
वीणु ज्ञान् विलपिक्के  
तानरिञ्जिल्लेत्तप्पोळ  
सुव्यक्तमाक्की नाकम्  
मौनत्ताल् , निरन्तमो  
डुत्सहम् विरहम् मे ।”

—१९३१

तो शायद  
 वह मुझे दयनीय और पागल समझ कर  
 फेनो के दाँत भीच कर  
 उग्र स्वर से गरज उठता है ।

तरुओ के शीश झकझोर झकझोर कर  
 कितनी ही बार मैंने उन से पूछा,  
 किन्तु विह्वल कम्पिताग तरुवरा ने  
 सदा केवल यही उत्तर दिया—  
 “आह, नहीं देखा है ।”

उन की गोद में गिर कर  
 जव-जव मने विलाप किया  
 तव-तव ध्यानमग्न निश्चल पवता ने  
 आकाश की ओर केवल सवेत भर कर दिया !  
 गगन ने अपने मौन से यह स्पष्ट किया  
 कि नहीं देखा उसने ।  
 “क्या मेरे इस दुस्सह विरह का  
 कहीं काई अन्त ही न होगा ?”

—१९३१

## भृ गगीति

१

अगसोभगम् कणि-

काणुवानिल्लात्ताए

भृगमाणेभालेन्ता-

पूविनु ज्ञाने जीवन !

प्रेमतिन चिल्लिलवकूटि

नोक्कुम्पोळेतुम् तानुम्

कामिनीयकतिटे

कळिवीटाधित्तने ।

२

नेटुवीप्पिनाल् चुट टुम्

नेत्त सौरभम् वीदि

ञ्चुट्टमुच्चवेयलत्तुम्

चूटरिञ्जितातोमल्

वेवियात्तु निग्रीटुम्

मलसमागम् मुन्पि-

ट्टिविटे ग्रहिप्पिक्कु-

मेन मूळिप्पाट्टिन्नायि ।

अरिक्केच्चरिक्कुम्प्यो-

ळटे काट टेट टालप्पोलुम्

विरियुम् मुखम् वेग-

मगक्क् वेपम् कालुम् ।

आनटुत्तणञ्जाविल्

मिण्टुक्किल्लटक्कक्का-

प्टानरुम्स्मितम, निल्वकुम्

क्कण्ट भाववुभेये,

## भृ गगीत

१

म हूँ भृग

अग-सौ दय जिसे छू तक नहीं गया,

फिर भी,

उस फूल के लिये मैं ही हूँ सवस्व प्राण ।

प्रेम का चरम से दखा जाय

ता सब कुछ ही प्रतीत होने लगता है, लावण्य का लीलाभवन-सा ।

२

जलती दापहरी में,

भूल कर आतप-गह

फलती हुई अपनी झीनी सुरभि चारा और

लम्बी-लम्बी उमासा स—

खड़ी रहती है मेरी प्रिया बान लगाये,

मेरे आगमन की पूव-सूचना देने वाली

मेरी गुनगुनाहट के लिए ।

जब मैं उस के पास से निकल जाता हूँ

ता गिल उठता है उसका मुग

मरे शरीर की हवा से,

कौपने लगता है उसका अग-अग

बिन्दु जब मैं पहुँचता हूँ सन्निकट

ता बालती वृद्ध भी नहीं

गड़ी रहती है चुपचाप मुस्कान रावे

माना दया ही नहीं उगने मुझे ।

प्रणयाघनायुत्तीनु  
 सौरभम् वीशुम् गात्रम्  
 पुष्परिल्ल ज्ञान् गाढम् ,  
 पूवल्ले, पतिच्चालो ।  
 उत्तरम् तराञ्जालु-  
 मोमनपूवेकाग्र-  
 चित्तमाय् वेळक्कुम् मारिल  
 च्चुम्बिच्चु ज्ञान मन्त्रिके ,

अरिक्त्तुनिघ्नेदुजान्  
 पाकुवान् पुरप्पेट्टाल्  
 तिरिये चेल्लुम यात्र  
 चाल्लान ज्ञान् नूरावत्ति ।  
 कालमेश्रोत्रिल्लेन-  
 ल्लुग्र भास्कररश्मि-  
 ज्वालय्क्कु चूटिल्लल्पम्  
 ब्रह्मडळ तद्दञ्जिल्चवर्नाल् ।

४

एत्तुमश्रालुम् पेट्टे-  
 नेताह पूविन् कण्णुम्  
 पोत्तुवान् मटिक्कात्त-  
 त्रिविवेकयाम् सध्य ।  
 हा, निलम् पतिच्चीटुम्  
 तेक्कन्वाट टटिच्चारात्,  
 वानिलामलिन् नित्य-  
 चतयम् मरञ्जुपाम् ।

ई विचारम, श्रालुम्  
 चित्तप्याळ्पणम् पोविन्-  
 व्भीविक्कम्पितमाक्कि-  
 स्तीवन्नु मत्तोस्यत्ते ।

प्रणयाप्य वन कर  
 म उस सुरभिल शरीर को  
 प्रगाढ़ परिरम्भण में नहीं बाँधता,  
 कोमल क्ली है न ? कहीं गिर गयी तो !  
 जब मैं उसके वक्षस्यल को चूम कर  
 बाना में गुनगुनगुनाता हूँ  
 ता वह कसे एकाग्रचित्त मुनती है  
 यद्यपि जवाब नहीं देती !

विदा लेते-लेते  
 मैं सौ बार लौट आता हूँ  
 अनुमति लेने के लिए ।  
 जत्र हम मिलन-आवद्ध हाने हैं  
 ता फिर प्रचण्ड सूर्य किरणा में गर्मी नहीं रहती,  
 और बाल का अस्तित्व ही नहीं रह जाता !

४

किन्तु आ जायेगी निर्विवेक सध्या,  
 वरेगी सभी सुमना की आँखें बन्द  
 बिना सवाच और साच विचार के ।  
 हाय, दक्षिणी पवन का झोका खा कर  
 मेरी प्रिया की नित्य-नूतन चेतना  
 विलीन हो जायेगी नभ में ।

यह विचार  
 अपने पत्र फला-फँला कर  
 मेरे परिताप-मुख को  
 मयकम्पित कर देता है ।

कालतिनघीनमाम्  
 नश्वरजगत्तिक-  
 लालम्बहीनमूतने  
 शाश्वतगुद्धस्नेहम् ।  
 अलमल्ललाल् , विश्व-  
 त्तिटे नश्वरभावम्  
 विलयुम् सौदयवुम्  
 वस्तुक्कळक्कुष्टाक्कुम्भु ।

—१९३२

यह नश्वर ससार काल की चपेट में है  
यहाँ निरालम्ब है, विगुद्ध प्रेम ।  
तब क्यों करें विपाद ?  
घास्तव में विश्व की क्षणभंगुरता ही तो  
वस्तुओं का मूल्य और सौन्दर्य बढ़ाती है ।

—१९३२



## मति

मुरके मुकदमभ्रलक्षितम् कार्-  
कुधनिर तद्धिडय भगियाग्न शलम् ,  
नरुमणि चितरुम्विद्यम् चिरिपूक्कुम्  
चेरुपुपतमुटे चेणियन्न कूलम् ,

कुल पवुति चुवन्न पच्चनेल्ला-  
ललवळ निरनु परन्न वाञ्चुपाटम् ,  
चलकिसलयराजि तीत्तसाध्यो-  
ज्वलमधुरद्युति पूण्ट पुष्पवाटम्

सुलळिन हसितम् बलधु तुळळुम्  
मलरिनेयिक्किळियाक्किटुन्न वातम् ,  
उलकिनु सुखमूच्छ नल्लिटुन्नो-  
रलधुमदाकुलकोकिलाळिगीतम् ,

हरिनगिरितटत्तिलाट टुक्क-  
त्तरियारु दान्ति तुळुम्पीटुम् कुटीरम् ,  
परिसरवनि नीत्तियिट्टीटुम् पुल्-  
विरियिलिरुन्निट्टुवान् कुरच्चु नेरम् ,

कपियुममलरागमाशु चेलनेर -  
मिपियिल् मदाशु पोटिञ्जोरेटे पुण्यम्  
मटियिल् मति ! जपिच्चु ! सधमेन्क्-  
प्पिटियिलोनुद्धिड , येनियुन्नु विण्णपण्यम् !

## यही बहुत है

रुचिर शल

जिस पर छितराये है मेष-अलक अम्र-लटमी ने,  
खड़ा है चुपचाप गाढ़ चुम्बन-स्तन,  
प्यार स करने का मनहर कून,  
बिखर जाते ह मानी जिस पर उसकी हँसी के  
छाटा-मा खेत, जहाँ लहरा रही है हरे धान की बालियाँ,  
ईपद आरक्त मुदर उपवन  
मनारम मध्या की द्युति में प्रोज्वल  
चचन किमनय राजि द्वारा निर्मित ।  
मलय पवन

जा गूदग जानी है मुस्वान-झूमते सुमन का,  
मोहन बन-गान मस्त वाविल का  
जो करता है जग को मुख-मूर्छा लीन ।

एक गाल कुटिया

हरित गिरि-स्त में बहने झरने के विनारे विद्याम-स्थली,  
अल्प-काल आराम करने के लिए  
विद्या दिया हा हरी धाम के कालीन पर जिसे  
उपवन लटमी ने ।

और, गाढ़ में प्रिया मेरी चिर-मचित पुष्प प्रतीक  
मधुर तारुण्यमयी

जिमक रागपूज नेत्रा स झरता हा रम —

यही बहुत है मेरे लिए  
आ गया मेरी मुट्ठी में मय कुछ  
नगण्य है फिर गुर-स्ताव भी ।

## पकजगीतम्

अघमाम् तमस्सिल नि-  
घघनानिरपेक्षम्  
हत, माम् प्रकाशते-  
पूक्चिच्च पुण्यालाव,  
लोकवाघव, भव-  
त्तादशदयापरी-  
पाकतिन् स्मरणयाल्  
एमनम् तुळुम्पावु ।

परिपावनप्रेम  
तलकृतनतय्यकल्प-  
परिणाहमेधुळ्ळ-  
मेड्डिडने मतियाव ।  
नीरवम् दलाधरम्  
वेरते चलिपू निन-  
सारमामपदानम्  
गनत्तिल् पक्त्तुवान ।

सेवनव्यप्राकम्पि  
वक्षस्सिल चक्काम दिव्य-  
तावकपदम्, ममेल  
मुक्काम् नट्टीवक्काम् ।  
आवते तस्लातेभाल ?-  
एन् अशवनततन्न  
देव जान् तिरुमुन्पिल्  
उपहारमाम् वय्वकाम् ।

ओटवकुयल्

## पकड़ गीत

हे पुष्पालोक !  
अयाचित ही तुम मुझे  
अघतम के अन्दर स निवास कर  
प्रकाश की आर ले गये ।  
हे लाकवाचक,  
तुम्हारी इस सायक दया की स्मृतिमा स  
मेरा मन सदा आप्लावित रहे ।

हे परिपूत प्रेमशील,  
मेरा यह लघु हृदय  
कैसे वहन कर सकता है,  
इस उदार कृतज्ञता के भाव का ?  
मेरे नीरव अपर-दल  
तुम्हारा महान् यगागीत गाने के लिए  
बचल हाते हैं,  
किन्तु कहीं जा पाते हैं ?

तुम्हारी परिचर्या के लिए उत्सुक अपने वक्षतल में  
मैं तुम्हारे दिव्य चरणा का लगाऊंगा  
और करूँगा वारम्बार अधीर चुम्बन ।  
मूझ मे और हा ही क्या मकता है ?  
हे देव !  
अपनी दुबलता को ही  
तुम्हारे पंखों पर  
भेंट चढ़ा रहा हूँ ।

पापमणिन विकारमाम  
 बानेड्डु ? तेजोरूप-  
 श्रीमन्, अडडेडडी शुद्र-  
 पकजकपोलत्ते  
 नाकत्तित्तिळक्कुन्न  
 तूक्कय्याल-अय्या ! मदो-  
 द्रेक्त्ताल् जानम्मट्टु  
 तुळ्ळिल्ल-तलाटुम्पाळ ।  
 लेखमागसञ्चारिन,  
 मल्लक्कविळत्तटराग-  
 रेख नी पोहत्तालुम ,  
 स्नहत्तिन चापल्यत्ताल  
 मुग्धमाम् मदीयात-  
 रगम् हा जगतगुरा  
 स्निग्धनाय्, अय्यो वरुम्  
 स्निग्धनाय गणिच्चत्ता ।

३

धीरमाम् भवद्रपम  
 वाणुन्नु जानीक्कान्नु-  
 नीरल तोरुम् , तापम  
 निन्नत्तान स्मरिप्पिप्पू ।  
 वापितन् वितुम्पुन्न  
 चुण्टिनुम चिरिक्कुन्न-  
 वारिजट डळनन्  
 तुण्णेरिट्टुम् कविळिलुम्  
 चेणुट ट निन् चतयम्  
 आणुतान् आरे मटिटल्  
 वाणुवान् एन् कण्णिन्नु  
 काय च्च नीयहळ्ळाम्बिल

ओटवक्कुपल्

मैं कहा, जड़ मिट्टी का विकार !  
 और तुम कहीं श्रीमय तेजामय !  
 मगर जब तुम,  
 जो स्वर्ग को भी आलोकित कर देते हो,  
 अपने हाथों से  
 इस क्षुद्र पक्षज कपोल का  
 सहलाते हा  
 ता उमत्त भाव विभोर उछल-उछल पड़ता हूँ मैं ।  
 हे देवमागचारिन् !  
 मेरे कपाला पर स्फुरित राग रेखा के लिए  
 क्षमा कर देना मुझे ।  
 हे जगद्गुरा,  
 स्नेह चापल्य से मुग्ध मेरा अन्तरग  
 समय गया है  
 कि तुम हा केवल स्निग्ध ।

३

इन नहीं नष्ट लहरिया में  
 मैं तुम्हारे रूप का दर्शन कर रहा हूँ,  
 और यह आतप दिला रहा है  
 तुम्हारी ही याद ।  
 अगर, तडाग के कम्पित अचरा में  
 मुस्कुरान उत्पला के आरक्त कपोला में  
 वही तुम्हारा मातृक चैतन्य  
 समान भाव से देखने की दृष्टि  
 आपने नहीं दी हानी

निद्रयिल्पिरन्न ज्ञान  
निद्रयिलज्जीविच्चेने ।  
निद्रयिल् अवसान-  
कालत् लयिच्चेने ।

४

लब्धबोधमाम् ज-म-  
देशतिभिळक्क ताल  
क्षुब्धमन्तरीक्षतिन्  
दुनिवारमाम् वीप्साल्,  
निमुखाल्लसप्रित्य-  
सौन्दयम् नुकरवान्  
उमुखम् निल्लकुम् निल्लिप्पल्  
निनु ज्ञान् उलयाल्ला ।  
उणरावु निन् दिव्य-  
स्पशत्ताल अत्यारुढ-  
प्रणयात्तरगत्तिल्  
शुद्धवासनयिनि ।  
आनन्दसकल्पदडळ  
नुकरान चायम् तेच्च  
पानपात्रमायावू  
क्षण भगुरम् जमम् !

—१९३३

तो मैं, जो निद्रा में जनमा,  
निद्रा में ही निमग्न रहता,  
और अन्त में  
निद्रा में ही विलीन हा जाता ।

४

मुझे जन्म देनेवाली भूमि के प्रबुद्ध कम्पन में  
तथा प्रक्षुब्ध अन्तरिक्ष के दुर्निवार निश्वास में  
मैं तुम्हारे ही मुख का निय नूतन सौन्दर्य देखू  
और उम्रगा पान करने के लिए खड़ा रहूँ,  
न हटू अपने स्थान से ।  
तुम्हारे दिव्य स्पर्श से  
मेरे स्नेहपूरित अतरंग में  
प्रोज्ज्वलित हो जाये विगुद्ध वासनाएँ ।  
मेरा यह क्षण भगुर जीवन  
बन जाये तुम्हारा रगीन चपक  
जी मर छक्कने के लिए आनन्द सकल्प ।

—१९३३



“इनु बान्, नाळे नी”

“इनु जान्, नाळे नी , इनु जान् नाळे नी’  
इधुम् प्रतिध्वनियुक्कुधितभोम्मयिल् !

पातवक्कत्ते मरत्तिन् करिनिपल्  
प्रेतम् कणक्के क्षणत्ताल् वळरवे,  
एत्रयुम् पेटिच्चरण्ट चित्त शुष्क-  
पत्रङ्ङळ मोहम् कलनु पतिक्कवे,  
आसनमत्युवाम निश्चेष्टमारतन्  
श्वासमिटयिक्कटय्क्कान्जु वलियुक्कवे  
तारकरत्नखचितमाम् पट्टिनाल्  
पारमलकृतमाय विण्पेट्टियिल्  
चत्त पक्कलिन् शवम् वच्चेटुप्पति-  
नात्तमौनम नालु दिक्कुक्कळ निलक्कवे,  
तन्पिताविन् शवप्पेट्टिमल् चम्बिच्चु  
वम्पितगात्रियायन्ति मूच्छियुक्कवे,  
जीवितम्पोले रण्टट टवुम् वाणात्ता-  
रा वरियिक्कल् तनिच्चु जान् निधुपोय् !  
पक्षिक्कळ पाट्टियि, ल्लाट्टियिल्लालील —  
यिक्षितित्तन्ने मरविच्चपोलेयाय !

अन्तिकत्तुळ्ळोश्च पळ्ळियिल् निधुटन  
पोन्ति ‘णाम्-णा’ मेधु दीनम् मणिस्वनम्,

ओटवकुयल

“आज मैं, कल तू”

“आज मैं, कल तू, आज मैं कल तू”  
मेरी स्मृतियाँ मैं आज भी प्रतिध्वनित हा रहा है यह !

सड़क के किनारे खड़े पेड़ की काली छाया  
एक क्षण में ही प्रेत की तरह बढ जाती है ।  
सूखे हुए पत्ते भय से नि द्रवत हा कर  
गिर रहे हैं गिरते जा रहे ह ।  
सना गूँथ हवा जिसकी मृत्यु आसन्न है ।  
जन्तव गहरी साँसें ले रही है ।  
चारा दिगाएँ चुप्पी साधे खड़ी ह  
उठाने के लिए दिन की अरथी,  
जो मिनारों जडे आकाश का  
झिलमिलाता कफन आढे पडी है ।  
अपने पिता की गव-भटिका चूम कर  
गण खाती हुईं गायूँलि थर-थर बाँप रही है ।  
और, मैं सदा हूँ अवेला उम गलियारे पर  
जिसके दाना छार अदृश्य हैं जि दगी की तरह,  
न चिडिँ चटकी न बरगद की पत्तियाँ पिरकीं,  
घरती जैसे जम गयी थी ।

और अचानक पाम के गिरजापर की पश्टियाँ  
बीस उठीं । ‘गाम् ! ‘गाम् ! !’

रण्टायिरत्तोळमाण्डुकळक्कपुर-  
 त्तुण्टायोरा महात्यागतेयिप्पापुम्  
 मूकमाणैकिलुमुच्चत्तिन वर्णियक्कु-  
 मेकमुखमाम् कुरिगिने मुत्तुवान्,  
 आरालिरडिडवरुम चिल 'मालाख'—  
 माराय्वराम् कण्ट तूवेणमुक्किलुकळ ।  
 पापम् हरिच्चु पारिष्नु विण्णेरुवान्  
 पात काणियक्कुम् कुरिशे जयियक्कुक् ।

आ वपियक्कप्पाळारु दरिद्रटे नि-  
 ज्जीवमाम् देहमटक्किय पेट्टि पोय ।  
 इल्ला पेरुम्पर, राद्याम् विश्वस्त—  
 वल्लमतमुटे नैचिटिप्पेन्निये ।  
 इल्ल पूवपम्, विपादम् किटतल-  
 तल्लुत्त पतलिन् कण्णुनीरेन्निये ।  
 वप्पु तरच्चिनेन् कण्णिलाप्पेट्टिमल्  
 निष्पुमारक्षरम् 'इष्पु जान् नाळे नी' ।  
 ओष्पु नट्टुडि इ आ, ना नट्टुक्कम् तप्पे  
 मिष्पुमुडुक्कळिल् दूश्यमाणिप्पापुम् ।

—१६३१

आँवों के सामने बादला की स्पहली पतें छा गयीं  
 माना दबदूत उतर रहे हों  
 उन गूनी का म्ग बरने  
 जो है शानी महान बलिदान की  
 जीर जा मूक हा कर भी  
 कह रही है कहानी उन महान् उत्सव की  
 जा घटित हुआ था दो महत्काब्द पूव ।  
 घय है गूली  
 जा दिलाती है मुक्ति पापा से  
 जीर दिखलाती है धरती को राह स्वर्ग की ।

फिर उसी रास्ते से गयी एक अरथी  
 एक जीवनहीन अभावग्रस्त शरीर,  
 वही काइ वण्ड नहीं  
 लेकिन है निष्कलुष आम्श्यामय  
 जीवनमयी के दिल की घडवन ,  
 पूना की वारिण नहीं है,  
 लेकिन बरम रहे हैं बच्चे के आँसू  
 जिसकी वेदना, नहरा की तरह, एक पर एक  
 चढ रही है ।

अरथी से उमर कर अक्षर उठे  
 और मेरी आँखा का वेध गये  
 'आज मैं बन तू !'  
 और मैं सिहर उठा  
 दवा वही सिहरन अब तक  
 सिनारा में पिलमिला रही है ।

—१०३१

## शैशवम्

जीवितम् स्वयम् वेपम्  
माह्न माट टत्ताटे  
भूविनुम् वरुम् भाव-  
भेदमाणसह्यम् म ।  
शैशवतिङ्कल कण्ट-  
जानल्ल जानिवकालम्  
शैशवकवण्णाल् कण्ट  
पारल्ल पारुम् नूनम् !  
एत्तिट्टुम् तोटान् क्या-  
लाकाशमेन् मुट टत्ते-  
पुत्तिलञ्जि तन काम्पिल्  
केरि निघ्नेत्तालघ्नाळ ,  
गिरि पिनाले निधु  
कै नीट्टियालुम् कळळ-  
च्चिरि पूण्टोटिप्पारम्  
मुप्रसन्ननाम् तिङ्कळ  
पटुवृद्धनाम् माविन  
वेण्णुर कलघ्नोह  
जट चिक्कि निरक्काह-  
ण्टेत्तेयुम् विळिच्चाराल्  
क्किपवन् वात्सल्यत्ताल्  
विरय्कनुम् चिल्लवर्वाको-  
ण्टपक्किल्ललाटार-  
ण्टा राविन् पुमारने  
श्रूरतारण्यम् वन्न तन्तिनन् वात्पत्तिट्टे  
दूरदर्शनि तट्टि' प्परिप्पानसूयाल् ।

श्रीटक्कुपल

## शैशव

जीवन के बेप-परिवर्तन के साथ-साथ  
भाव-परिवर्तन आ जाना है भूमि में भी,  
अमह्य है यह मेरे लिए ।

मैं अब वह नहीं हूँ

जा गाँव में शिवायी बना था,

समार भी अब वह नहीं रहा

जिस गाँव की आँखा म दखना था ।  
तब ता—

आनाग मुझे छूने का आ जाना था ।

यदि म आँगन में खड़े मौलियी की ढाल पर

खड़ा हा जाना था ,

नटखटी चाद दौड़ा चला आना था ।

मन्द मन्द मुस्कराना

यद्यपि पहाड़ खड़े रहन पाटे-पीये

हाथ बढ़ाय, उम उठाने के लिए ,

प्रमप्रवन्न चन्द्रमा

बूँद आम की मफ = दाढ़ी सटाना हुआ

मुझे बुलाने के लिए खड़ा रहता था

और

बूँद आम काँगन हाथा वात्मन्यपूर्वक

सटाना था उम रजना-मुन का ।

साबना हूँ

कना आमी जवन भरी यत् शूर तगाई

मरे बचन का दूरवान छीनन के लिए ?

ज्ञानमेन्तिनु कट-

त्रिककटुम् कै चेष्युः

ज्ञानकधोराळायी

विश्वत्तिलेलातिनुम् ।

मन्दभाग्यनायिः

मारि , लाळिककाष्टु

मुन्दरप्रकृति तन्

सवभाववुमघ्नाळ ।

अनुपस्सयल्लवक-

क्कारियाणु , णत्तं टु

तप्तुटे जालिकवेड डो

सध्रमिच्चोटुम्पोपुम्

वेलिल् तन् तुटुत्त कै

एन् नेक्कु नीट्टीटात

वेलिक्कल वध्नेत्तिच्चु

नाक्काते पाकारिल्ल ।

उ मुल्लम् पनिनीप्पू

चारिवा तुरधल्प-

भेमुध्रिल् निल्लकुम मुट ट-

त्ताऱु ज्ञान् मुक्खवान् ।

कण्मुध्रिलक्कुनिञ्जऱु

निध्रिटुम् चिरिप्पिक्कान्

वेण्मुक्किल् नरमीण

वेच्चु वेट्टिय वानम् ।

अरिबिन् वेळिच्चम,

दूरप्पो, दूरप्पो । नी

वेरुते सौदयत्ते

क्काणुन्न वण् पोट्टिच्चु ।

जान क्या इतनी क्रूरता करता है ?  
 हाय,  
 मसागर की सारी वस्तुआ बं लिए  
 म अब द्वार का आदमी बन गया हूँ ।  
 अब म मन्दभाग्य हूँ,  
 कितना पुचकारता था  
 सुन्दर प्रकृति के विविध भावा का उन दिना ।  
 सुन्दरी उपा मेरी पढासिन थी,  
 अपने काम के लिए  
 घबडाती हुई भागती थी  
 किन्तु मेरे बाढा पर झाँक कर देखना  
 और  
 अपना पेलवारुण हाय मेरी आर बढ़ाना  
 नही भूल पाती थी ।

आँगन में गुलाब क फूल  
 अपने नन्हें-नहें मुह खाले रहते थे  
 ताकि मैं चूम लू,  
 सफेद बादला की नज़ली दाढी बाँध कर  
 आकाश झुक कर सडा हाना था  
 ताकि म हँस पडू ।  
 जान की ज्याति,  
 तू हट जा, हट जा ।  
 पाठ दी तूने मेरी मौन्दय-आँक आँखों ।



मानुष, मवद् भाय-

यम्यसिच्चप्पोळ्ळते

आनय्या, मरधु पाय

विश्वसु दरभाय ।

धा नल्ल भायथिवरुला

स्नेहमल्लाते शास्त्रम्,

आनन्दमल्लातयम्,

रुपमल्लाते वृत्तम् ।

अन्ति वसनाशक्ति-

लक्षरम् कुरिच्चिट्टु

चेन्तळिर्क्कयाल्, देवि

मारि निघ्नोटुम् मुम्पे,

अप्पोपे भिवि तुर-

धुळ्ळ पूक्कळुम आनुम्

आप्यमायतु नाक्कि

वायिञ्चु जातोल्लासम् ।

जालकान्तिवत्तोप्या,

आपयिल पल वय-

यालपिक्काण्टे, ल्लाम्

सुप्रहमतिल् पिन्ने ।

मपयाम्, मरदुळ्ळाय्,

पूक्कळाय्, आम्पम् वूट्टुम्

निपलाय् ससारिच्चेन्

एल्लाक्कुमोरे भाय ।

मरधाल् मरकाट्टे

मट टुळ्ळतेल्लाम् तन्ने

मरधु वयिञ्जारा-

आप ववरमैविल् ।

हे मानव !

जब मैंने तुम्हारी भाषा सीखी  
ता भूल गया वह विश्व विमाहक भाषा  
जिसमें,  
स्नेह को छाड़ कर कोई शस्त्र नहीं,  
आनन्द का छाड़ कर कोई अय नहीं,  
रूप को छाड़कर कोई छन्द नहीं ।

अपने पल्लवारुण करा से  
सध्या आती थी  
आकाश पर अक्षर अक्षित करने  
और  
जसे ही वह दिव्या बहा से हटती  
ता उमीलित नयना स पून और मैं  
पड लेते थे उन्हें साल्लाम ।

मेरी खिडकी के पास का उपवन भी  
उसी भाषा में कहानियाँ सुनाता था ,  
बाद में  
सब कुछ मेरे लिए अत्यधिक मरल हो गया  
तब मैं बातें करने लगा  
वर्षों से, वृक्षा से, कुसुमा से  
इगितकारी प्रतिछायाआ स ।  
—गव की ही तो भाषा थी समान ।

बाईं हज नहीं, अगर मैं भूत जाऊँ सउ कुछ  
किन्तु करता है मन—  
फिर से प्राप्त कर पाता मैं वह भाषा  
जिस मैं भूल गया ।

सञ्चितसुवृत्तनाम्  
 पैतले, तारप्यताल  
 वञ्चितनाय् जान्, निट्टे  
 नाटिनिदुदुरापम् म ।  
 इत्र मेल् पापात्रात-  
 मित्र मेल् परतत्र-  
 मित्र मल् निरमेप-  
 मल्ल तावक्लावम् ।

परबाप्पत्तिनाटिट्टल  
 नी नीन्तिकक्ळिप्पील ,  
 करयुनू नी कोच्चु-  
 तोपनाम् पू वीपुम्पोळ ,  
 नी मुखस्तुतिप्पूवा-  
 लारेयुम् पूजिप्पील  
 नी मुट्टि चूटीटात्त  
 राजावु निन् राज्यत्तिल ।  
 मामरम् निपल्प्पट्टु  
 विरिप्पू नी चेल्लुम्पाळ  
 तूमलर् तल कुनि-  
 च्चाचारम परमुशु ।  
 वल्लिकळिलत्ताळम्  
 पिट्टिकक्चेट्टिकळ पूम्-  
 चिल्लयाल् कै वाणिच्चु  
 नटनम् नटत्तुशु ।  
 अयमाम् पुप्पस्यलम्  
 पूवुवानागिप्पील  
 घन्यमाम् शिगुपद-  
 प्पाटान्न दिक्कल्लान ।

हे पुण्यगाली गिगु

तारुण्य के कारण वचिंत हुआ गया हूँ मैं

अप्राप्य हा गया है तेरा वह माम्राज्य अब ।

नहीं है तेरा संसार इतना परतंत्र इतना पापाशान्त

और इतना उमेषशून्य ।

दूसरा वे आँसुआ की सरिता में

नहीं करता है तू जलविहार

किन्तु

जब क्षर जाता है तेरा नहा माथी फूल

बिलख उठता है तू ।

तू नहीं करता

चाटुकारी के फूला स

विसी की अचना ।

तू है अपने राज्य का

बिना-मुकुट राजा ।

पादप

तुम्हारे भाग में परछाइया के पाँवडे बिद्या बते ह

मनाहर सुमन

सिर झुका कर अभिवादन करते हैं

वल्लरियाँ

अपने पल्लवो के मजीर बजाती ह

पौधे

फूलो लदी डालिया द्वारा भाव-मुद्राएँ दिग्ना कर नृत्य करते हैं ।

म बबल उसी पुण्यस्थान में जाना चाहता हूँ

जहाँ गिगुआ के पगाकना की घायमुद्राएँ अंकित ह ।

## चन्द्रकल

तारककूपुवळ ताविमिनुम् दिव-  
 नीरवशाद्वलभूमियिल्कूटवे  
 पारमद्विडद्वु पटभुपिटिच्चपुम  
 नीरदच्छेदच्चेरमुळच्चेटिकळिळ  
 वारियनून निरनिलावाकिय  
 नैरिय सारियपञ्जिपञ्जोटवे,  
 इज्जगतोक्के मयक्कुम निज्जमुखम्  
 लज्जयाल तानरियाते वुनिञ्जता,  
 ओच्चकूटातेया नग्नपादम् वच्चु-  
 वच्चतिमात्रमधीर चद्रववल  
 एकयाम् मूकयाम् सवेतमेत्तुवान  
 पोकयाम् वयनाक्कामुक्कनारवान ।

नल्लकिनावुवळ कण्टु चिरियक्कुनु  
 मुल्लमलरम्, तळन्न तटिनियुम् ।  
 जागरक्किण्टनायस्वस्थचित्तनाय  
 मागरम मात्रम विरिमणलमेत्तयिल्  
 ताने तिरिञ्जुम परिञ्जुम् किटक्कया-  
 णी नेरमाक्केत्तुटिक्कुम करळुमाय ।

कामुक्कनतन नेञ्चिटिप्पु केट्टेद्वने-  
 या मुग्ध मवुमक्कुदासानयाम् ।  
 प्रेममदृश्यवरत्ताल् वनियक्कयान्  
 व्यामत्तिवनिनुमटुत्तटुत्तवे  
 सामक्कनपुटेनेक्कु चुम्बिवक्कुवा-  
 मोमलत्तिरच्चुप्पु नीट्टिञ्जु कटल् ।

## चन्द्रकला

गगन में चमक रहे हैं तारका के कुकरमुत्ते,  
उसकी शाद्वल भूमि में इधर उधर पनपकर  
फँले हैं मेघ-खण्डा के छोटे छोटे बँटीले पौद,  
उन्हीं में अटककर जब खिसक खिसक पडती है  
कमनीय कौमुदी की मदुल साडी तो  
सहज सज्जा से वह खुवा लेती है  
अपना विश्व विमोहक आनन ।  
कौन है इस गशिकला का सौभाग्यवान प्रेमी  
जिसके अभिसार के लिए यह  
चली जा रही है चुपचाप एकाकिनी  
नीरव पग धरती हुई सक्त-स्यली की ओर ?

हँस रही है बुद-बसिवा,  
देख-देखकर मुमधुर स्वप्न  
विधाम कर रही है षकी हुई तटिनी ,  
किन्तु, जाग रहा है केवल सागर, स्पर्दित हृदय  
सोट रहा है सक्त-शया पर करवटें बदल-बदलकर ।

गुनवर अपने इस प्रेमी के हृदय की घडकन  
कसे रह सकती है वह मुग्धा उदासीन ?  
प्रेम उरावा सींच रहा है अदग्य करा स  
उत्तरी आ रही है वह ध्याम स निकट निकटतर  
ता, लो, सागर ने बढ़ा दिये अपने सहुर-अधर  
चन्द्रकला की ओर उस घूमने के लिए ।

स्फारदु खत्तालिरुण्ट ममानस-  
नीरधियेनेटे तिद्वक्ळ् तिळक्कुमा ।

—१९३२

ओटक्कुपल्

तुमूल शक्ति तम से आच्छादित मेरे मन को  
न जाने कब प्रोज्ज्वलित करेगी  
मेरा शक्ति-बला ।

—१६३२



## निमिपम्

जीवितपूविलेतेन् मुक्कनङ्कने  
ताविन कौमुकाल परिप्पारि  
नीरवम पावुन्न कोच्चु निमिपमे !  
चोरलाम् तिटे चिरबुवळे  
काळमयिर कोलुम् तन्वैवळिलाक्कानेन्  
कोमळभावन मोहिय्क्कुनु ।  
चुम्बिच्चुचुम्बिच्चेन् नैच्चलटक्कुवान्  
वेम्पुमी मुग्घये वचिक्कोल्ले !  
कालिण केट्टे नैरिय वाक्किटे  
नूलिनालोमने ! नोविककाते ।

कोचुमी मुग्घिक सूक्षिच्चुनोकट्टे  
पिचुचिरवि मेलमयाय ।  
एणियात्तीरात्त वण्णविशेषड्डळ  
वण्णीरालाद्रमामीच्चिरक्किल्  
मानवमानसच्चायड्डळ्ळाक्कित्त  
नानाविवारड्डळ्ळे चेततल्ली ?  
मायिकमाकुमाट्भावड्डळ्ळे कार वित्तित्तन्  
माघुयम् पूगुमित्तुम्पिलक्काण्णु,  
आगयाल् चचलमायेपुमात्माविन  
पेशलमाविय वेम्पलेल्लाम् ।

मुम्पिल् निन्नेत्तुनू, पिन्तिल मरयुनू  
मित्तलुम् बेट्टुन्न वेगमाटे ।

## निमिष

जीवन-मुमन के मकरन्द का पान कर  
अत्यन्त कौतुक से पत्र पहरा कर  
नीरव उड जाने वाले हे लघु निमिष,  
कमे चार हा तुम ।

मेरी यह कामल भावना  
बद कर लेना चाहता है,  
अपने पुत्रवित्त करा में तुम्हारे पखा का ।  
मत करा निराग इन मुग्धा का  
जा तुम्हें बार-बार चूम कर  
अपने हृदय के सम्पुट में मूढ लेना चाहती है ।  
प्रिय कमे बांध दू तुम्हार दाना परा को  
कामल गला की निष्पीड डार स ।

अस्फुट-वाक यह मुग्धा देखती है अधीर  
इन नहे-नहे अश्रु सिक्कन पखा को ,  
इन पर जा विविध रग दाखन ह  
क्या बे हा नहीं ह मानव मन क बहुरंगी भाव-अनुभाव  
अरिक्त हा गये हैं जो चित्र विचित्र रूप से  
ये ऐन्द्रजानिक भाव जिन पखा के द्वारा पर  
इन्द्रधनुष के माधुय की रागानी रचत ह  
जन्हा पर देख लेते ह आगा के चाञ्चल्य से स्पष्टित  
आत्मा की समग्र कोमल उत्सुकता ।

प्रत्येक पत्र आता है गामने से  
और विनाम हा जाता है पीछे जाकर बही  
इस बेग से कि  
विजनी भी विरिमित हा जाती है ।

एङ्ङु नित्रेङ्ङुनित्रेका तवचिन्म  
 तङ्ङुमिक्काच्चुनिमिपमेल्लाम ?  
 एङ्ङुपोयेङ्ङुपाय मायुनु भावन-  
 पिङ्ङु पक्कच्चुमिपिच्चुनिल्लवे ?  
 नेम्मयिल्लतानविरलत्तुम्पि मेलोद्वियो-  
 राम्मतन्स्निग्धमाम रणुक्कळे  
 पुचिरि त्तुक्कियुम कण्णुनीर् वात्तुमी  
 वचिन नोन्कुनु मारि मारि ।

एत्रमेल् क्षुद्रमल्लोरा निमिपमा-  
 प्पत्रमटिच्चतु पारील्लेक्किल्  
 एण्णियालेत्तात् जीवितस्सदङ्ङुळ  
 मण्णिलुम विण्णिलुमुण्डाकुमो ?  
 बुट्टियेक्काणानुपरुत्तोरम्मतन्  
 मट्टिलुपलुम्भ कम्ममल्लाम्  
 तनुटेतनुटेयाय फलङ्ङुळे-  
 च्चेत्तु कण्ठोत्तु पुण्णोत्तुमो !  
 पिच्चुचिरक्किट्टे वाट्टिन्नाल् पापितन्  
 नेच्चिक्किल् ज्वलियक्कट्टे भीतिनाळम् ।

एत्रमेल क्षुद्रमल्लोरो निमिपम-  
 प्पत्रमटिच्चतु पारीत्तुम्पोळ  
 अण्डक्काहुवुम मुन्पाट्टु मुण्णोत्तु-  
 च्चण्डमाम वेगत्ताल् नीङ्ङुत्तुम्भु !  
 ओरो चिरक्किट्टि जन्नुचित्तङ्ङुळि-  
 लोरोविधत्तिल प्रतिध्वनियक्के  
 कम्ममस्कारत्तित्त्तु माग्गत्तिलूट्ठे  
 जम्ममृत्तिक्कळ चविट्टिक्केरि,  
 चेत्तिट्टुम जीवितथापयान्णक्कत्तु  
 तन्नेयाणानक्कव्वानवेळि ।

किम एकान्त रहस्य-लोक से आ जाते हैं  
 ये विचित्र लघु निमिष !  
 और विनाश हा जाने ह जाकर कहा ?  
 चकित है भावना, देखती है यह  
 विस्फारित नेत्र ।

मेरी यह ठगी गयी भावना देखती है  
 अपनी उँगलिया के पारा पर लगे  
 अत्यन्त सूक्ष्म स्मृतिया के स्निग्ध पराग वा,  
 कभी मुस्कराते हाठा  
 कभी बरसने नयना !

कितना क्षुद्र है यह निमिष,  
 किन्तु यदि उठे नहा यह अपने पक्ष फडफटा कर  
 तो कम हा इस मिट्टी में और इस विपुल व्याम में  
 सभ्यानीत जीवा का स्पन्दन ?  
 कस हो मिलन आतुर कम का अपने फला म  
 कस हा आलिगन उनका  
 उम मा की तरह जा व्याकुल दौड़ती है  
 अपने गिगु का देखने के लिए !  
 इन नन्हें पखा का ममर भारत  
 प्रज्वलित कर भीति-ज्वान पापिशा के मन में ।

कितना लघु हाता है प्रत्येक निमिष  
 किन्तु जब वह डने फला कर उठता है  
 तो आगे-आगे भागने लगता है प्रचण्ड वेग म सारा ब्रह्माण्ड !  
 प्रत्येक पक्ष का ध्वनि  
 प्रतिध्वनित हाती है विभिन्न रूपा में  
 प्राणिया क मन में ।  
 यही प्रतिध्वनि बन जाती है नगाडे का नीला धोप  
 जब जावन का जुनूम  
 कम-मस्कारा क माग म आगे बढ़ता है  
 जम और मृयु का लाघ कर ।

पिन्नाले पिनाले तोट्टुतोट्टुडिडने  
 वघ्रीटुम् मुग्धचलनडडळे,  
 निडडळ परत्तुम् चिरक्किन् निपलल्ली  
 बडडळ तन्नत्तुत्तमाय वानम् ?  
 नित्यमाय् निश्चलमायतु वाणुन् ,  
 सत्यमाय तोन्नुन्न मिथ्यमात्रम् ।  
 कुञ्चिक्किरक्किक्काट्टि टनाल् गाळडडळ  
 मञ्जिन् कणिकपोल् कम्पिक्कुनु  
 मानवशक्तितन् गवत्तिसाम्राज्यम्  
 मारालपोले विरच्चीट्टुनु ।

जीवित्तित्तिन् पपम्पूक्कळ कोपिञ्जाले-  
 न्तीविघमुळळ चिरक्कटियाल् ?  
 नूरुनूरायिरमल्ला परिणाम-  
 नूतनभगिकळ माट्टिट्टुन्नु ।  
 अम्बरमध्यम् तिळक्कुन्नोरादित्य-  
 विम्बवुम् केट्टुपामेक्किलाट्टे ,  
 अक्करियूतिप्पिट्टिप्पिञ्चु मट टोरु  
 ताक्कट्टुमुण्टाक्कुम सगगाक्किन् ।  
 चूट्टुम् वेळिच्चवुम् पिन्नेयुम् पिन्नेयुम्  
 नेटि विट्टिन्निट्टुम् जीवित्तडडळ ।

कोञ्चुनिमिपमे । यात्र चोदिच्चुवा  
 प्पिट्टिच्चिन्त नित्तुन्नु पोवुक नी ।  
 आनटक्कीट्टुमेन् कण्णुनीत्तुळिळ वी-  
 णी नत्तञ्चिरक्कु कुपयुम् मुन्ये ।

परम्परित हो कर आनेवाले  
 मुग्ध स्पन्दना ।  
 हमारा यह विस्मयकारी आकाश  
 तुम्हारे पनाये पना की छाया ही तो है ।  
 दिखाई देता है यह नित्य और निश्चल,  
 किन्तु है यह मात्र मिथ्या जा प्रनीत होना है सत्यम् ।  
 इन नन्हें पला की हवा स  
 ग्रह-समूह प्ररम्पित हा जाते ह  
 आम की बूदा की भाति ,  
 मानव की गक्ति और दप का साम्राज्य  
 हिल जाता है  
 मकड़ी के जाले की तरह ।

इन पना के शाका स  
 झड जाने ह जीवन के वासी फूल,  
 हज ही क्या है मला ।  
 ला विकास का अगणित नूतन सुपमाएँ  
 मुकुलित हो रही ह ।  
 हो सकता है आकाश पर दिपता यह तरण रवि विम्ब  
 बुझ जाये ।  
 यह सगगक्ति अपनी फूल से उमे फिर  
 प्ररञ्जलित अगारा बना देगी ।  
 और विकसित हागा तब नवजीवन  
 पा कर ताप एव निमल प्रकाश ।

विश्व, प्यारे सधु निमित्त !  
 समाप्त करता हूँ मैं यह चिन्तन,  
 बड़ जाओ तुम आगे,  
 इससे पहले कि मेरे अयु-रूप से  
 तुम्हारे पम भीग जायें ।

तन्चिरप्राथितसौ दयमूर्तिपक्कु  
सचितकौतुकमिस्स देशम्  
पूचिरकि मेत्क्कुरिक्कु वानुत्क्कण्ठ-  
तच्चुमेन् भावन वेम्पल्कोळ्वू -  
“आदशम् तनुळ्ळिल सक्ल्पच्छाय क-  
ण्टादरिच्चेत्र नाळ पोक्कणम् जान ?”

—१९४५

म तुम्हारे फून-स पग्या पर  
सबौतुक लिखना चाहता हूँ यह सदेश,  
अपने चिर प्रायित सौ दम-श्वता के लिए  
“आदग के भीतर देखना हुआ  
अपने सक्ल्य की छाया,  
करता हुआ उसका आदर  
कितने दिन बिताऊंगा म ? ’

—१९४५



धूणुकळ्

पुतनाम् दिनतिन्टे

माणिक्यमुळ, पूव-

दिक्त्तटित्तिवळ-

छीटवे बोटि वाशि,

कोम्पिटे तुम्पिल्चेम्म-

ण्णाघ्न वाळवळेत्तन्-

मुम्पिलाय् नटत्तियुम्

तप्पाळिच्चिवटियक्कटे,

मानवसस्कारत्तिल-

प्परिवत्तनत्तिटे

गानरेखवळाद्यम्

कुरिच्च कलप्पये

तप्पुटे मेलिञ्ज क्य-

च्चुमलालेन्तिक्कोण्डुम्

चेनु कपकन् नीण्ट

वरम्पिन्वक्किक्कूटि ।

नालुभागत्तुम् बीजा-

घानक्कीतुवमुळिळ-

सेलुमा वयलुव-

ळात्तग घक्कळायि,

वाट टुवचिप्पूवालि-

ट्टनक्कि मणप्पियक्कुम्

वाट टु वन्नवन्नेवी

नेत्तौराद्रमाम् सौम्यम् ।

ओटवपुपस

## कुकुरमुत्ते

नये दिवस का मणि-अकुर  
पूव दिशा में फूटा  
और उसकी बेल पनप कर  
सब जगह फरने लगी ।  
खेता की लम्बी मेडा के किनारे किनारे चतता हुआ  
आ पहुँचा किसान  
हाँकता हुआ अपने बला को  
जिनके सींग ह धूल धूसरित  
कभी-कभी सहला दता है पीठ उनकी  
अपने दुबल बघा पर उठाये हुए है वह हल  
जिसने मानव-संस्कृति में परिवर्तन की  
प्रथम गीत रेवाआ को अर्पित किया ।

उमड़े चारा ओर  
बीजाधान बौतुव स भरी  
घरती  
मादर गध लिये लठी रही ।  
बर्म की पूछ का  
हिना हिना कर  
आनवानी हवा  
उगवा गुन देने लगी ।

मगळम् वितक्कुवा-

ना नरन मृगशकिन-

तन् गळत्तिडक्क् स्नेहाल-

त्तटवि नुक्क् वयक्क्वे

मुन्पिले मन्निनुडिळम्-

क्कलन गानम कोपु-

त्तुम्पुरञ्जुण्टाम् चालिल-

निघ्नुमिदरने पोडिड --

“सौम्यमाम् कलप्पतन सदेशम् वानेनेनुम्  
साम्यवादिया, णेटे मूच्चयेरिय नावाल्  
पारिनेयिळक्कुम् वान् निरप्पाक्कुम् जान्, चता-  
हारियाक्कुम वान हप हरितरोमाञ्चत्ताल् ।  
इटिञ्जु निरडिडय काविलिन तरवळ वी-  
णटिञ्जु तुटडिडय काट्टवळ मतिलुक्कळ,  
जीण्णमाम किट्टडुक्कळ, तरिदायतीनोरस्थि-  
वीण्णमाम् मृगीयोम्र युद्धभूमिक्कळेल्लाम  
नावुमेन् गानत्तिन्टे चालुक्कळाले माञ्जु-  
पावुमाववे नव्य चतयम् मुळच्चाक्कुम्’

जीवितत्तिनेयुण

त्तीट्टुमारावारात्ति-

ली वितक्कालम्पाट्टु

माट टोलिक्काण्णेशालुम्,

चेणुलाविट्टुम् कोट्ट-

क्कुट्टयुम पोक्किक्कोण्टु

क्कूणुक्कळ् कुलुडडाते

निल्क्कयाण्णेरत्तुम् ।

विण्णिलुम वलियता-

णेशु तान्निप्पाम् पुट्टु-

मण्णिलाञ्जीण्णोडरयम्

निवत्तुम् वळिक्कुट्टु !

जब अपने समार की मगल-कामना के लिए  
 मृग-शक्ति का सप्रेम पुचकारकर  
 उसके कंधे पर जुआ रखा  
 तो घरती की आत्मा में सोया पडा गान  
 हल की नोक से कुरेदी गयी मिट्टी में से या फूट पडा  
 सौम्य हल का सन्देश

"मैं हूँ सनातन साम्यवादी  
 मैं अपनी पैनी जीभ से ममूची घरा का हिला दूंगा  
 और लाऊँगा समता  
 उसे बनाऊँगा हरी भरी हृष-मुलकित ।  
 ढहते महना की नीवें  
 गिरते हुए दुग प्राचीर  
 पटती हुई खलकें  
 उजडते हुए अस्त्यकीण उग्र मृगीय समरागण  
 सब मेरे दद भरे गीता की धारा में विलीन हो जायेंगे  
 और नवचेतना के अक्षुर पूटकर लह-लहा उठेंगे ।"

जीवन के जागरण का यह बुआई-गीत  
 धारा ओर अन्तरिक्ष में गूजना ही रहा  
 किन्तु  
 बुकुरमुते खडे रहे अचचल ।  
 भूरी मिट्टी में इस जीण अभिमानी ने  
 जो छाते रोप लिये हूँ  
 उन्हें वह समझता है  
 जैसे वह आसमान से भी ऊँचे और महान् है

मधिनोरलकारम्,

कालतिनहवारम्

विष्णिलेतारडडळको

विस्मयमेन्ते तल्ल ।

नाटिनेप्पुतुकुन्न

परिवननतिटे

नावु नक्कुपोयेय्वी

गौरवम् मरवकाले ।

—१९४५

पृथ्वी के अलकार है,  
 काल के अहकार है  
 आकाश के तारों के लिए विस्मय की वस्तु है  
 और न जाने क्या गया है ।  
 ओ ब्रुकुरमुत्तो,  
 इस पृथ्वी को नव्य बनानेवाले परिवर्तन की  
 क्षुब्ध जिह्वा जब तुम्हें चट कर जायेगी  
 तब भी तुम अपने अहकार का नहीं भलागे !

—१९४५

ओरु पपय एट्टे

कुन्निल्लिन्निरडिड आ-

नस्तमिच्चप्पोळ , सध्व

पोन्निरक्कतिक्कट ट-

येट दुवानोरुड्डवे

चिन्नियोरुतिरुमणि-

येन्नपोलाकात्तु

मिन्नियडिड्डजयिट्टु

तरळम् ताराजालम् ।

कट टमेल् तिरुक्किय

काच्चियोररिवाळि--

म्रट्टमन्नेरम् काणा-

मम्पिळिप्पाळियायि ।

प्रेमपूण्णामाम् कण्णु-

पोलोर् विळक्कता

श्याममैतानत्तिट्टे

वक्किलेक्कुटिल्क्कुळिळल् ।

'वयपुष्प मेन्नारे

वाप्ति जान् पण्टा ग्राम-

कयतन् स्मरणयाल्

क्कण्णिम ननञ्जुपोय् !

वालि मेय्क्कुवानायि-

ट्टी मलचेरुविला-

व्यालिक वरुम् पोक्कुम् ,

अम् कूट्टायी अड्डळ ।

## एक पुराना पत्रा

अस्त हा गया सूर्य  
और मैं उतरा टीले से नीचे ,  
संध्या  
मुनहरी किरणा के धान का  
भूटा ले जाने लगी,  
बिखरे हुए घाय व समान  
इधर-उधर चमकने लगे तारक  
ज्या खासा गया ही भूट्टे पर  
चंद्रमा की रखा दिखायी दे रही थी—  
सान दिये हँसिए की तरह ।  
श्यामल मदान के किनारे की झापडी में  
जल रहा है एक दीप,  
प्रेमपूण नयन की भाँति ।  
बयपुष्प कह कर  
जिसकी पहले मैं प्रगसा करता था  
उस भ्रामीण बयका की याद  
मेरे मन में आ गयी,  
और मेरी बरौनियाँ गीली हा गयीं ।

वह बाला आया करती थी  
गाय को कराने के लिए इस तलहटी में,  
इस तरह हम बन गये थे मित्र ।



चेरुपैक्किटावानु-

प्टायवळ्क्कतिनधु

करुक्कवूम्पेवुत्त-

ताणोरु विनादम् मे ।

चोल्लियालाटुड्डिल्ल,

वात्त जड्डळक्कतेन्ना-

लल्लिट्टक्कतिरिट्टुम् ,

जड्डळळ पोम् सनिश्वासम्,

कुनु नल्पूच्चेण्टायुम्

ताप वारम् वासन्तश्री-

तनुटे मरत्तक-

पू तालमायुम् निल्वे ,

अनोरन्तियिल् चाञ्ज

वाट्टुत्तमाविन् कोम्पिल्-

च्चेन्निरुत्ततिन पूवा-

लेरिञ्जु विहरियक्के ,

एमुटे नोक्कारोनु-

मा मुग्घकुमारितन

स्विन्नमाम् कविळ्पूविल्

पुळकम् मुळप्पियक्क ,

आ मनोहरियुटे

नीचनेत्राक्कात्ति-

सामन्दम् परशुपाप्

ममनमतिदूरम् ।

'अल्लल्ला । पूवालिप्प-

म्येड्डे सु चोल्लियेट्टे-

न्नल्लणिककुपलपि-

ञ्जेपुत्तेट्टवळ पोवे,

उसकी एक छोटी-सी गय्या थी  
 जिस दूब का अकुर खिलाना मेरा विनाद था ।  
 हमें कितनी ही बातें करनी हाती थी  
 जा कभी पूरी ही नहीं हाती थी,  
 तब रात्रि आकर हमारे बीच में  
 सीमा खींचती थी  
 और हम सनिश्चाम चले जाते थे ।

बात है

एक साध्या की—

जब कि पहाड़ी दिखायी देती थी कुसुम मजरी-सी  
 और

तराई मधुलामी की मरकत मय कुसुम थाली-सी,  
 बन रमाल की चुकी डाल पर बैठ कर  
 हम दाना एक दूसरे पर फूल फेंक कर  
 खीड़ा कर रहे थे ,

मेरी चितवन उस मुग्धा काया के  
 खिन्न कपाला पर

पुलक अबुरित्त करती थी,

उस सुन्दरी के नील-नयन-गगन में

मेरा मन

धीरे धीरे बहुत दूर तक उड़ गया ।

अरी मेरी पूवाली, 'कहाँ चली गयी तू ।'

कहती हुई जब वह उठी—

उसकी बेग रागि सुल गयी

उसकी आँखा भी चरौनिया पर

१ गाय के प्रति असीम वात्सल्य दिखाने के लिए यह शब्द प्रयुक्त होता है ।

अन्तिककार वक्किलत्तारम्—  
 पोले, वण्पोलित्तुम्पि—  
 लेन्तिय पोटिककणी—  
 रिप्पोपम् वाणुनू जान् !  
 इल्लवळिप्पोळ—एन्ना  
 ला स्मतिप्रकाशमे—  
 मल्ललिन् काट्टुमुटि—  
 तुम्पित्तुम् तिळक्कुट्टु ! !

—१९३४

जसे चमक उठा हा सितारा  
साध्या भेष के किनार,  
चमक उठी एक अश्रुवणिका  
जिस म आज तक  
याद कर रहा हूँ ।  
आज वह नहीं रही  
किन्तु उमी स्मृति की ज्याति  
मेरे गाक गिरि के उच्चतम गिखर का  
आज भी चमका रही है ।

—१९३४

कर्मक्षेत्रतिल्

(गद्यकविता)

प्रभातमे,

कालम् वात्तुकोण्टिरिक्कुन प्रभातमे,  
स्वागतम् !

उत्तगिरस्तुकळाय मलयसह्यमार ,  
उदारदगनयाय केरळावनियुटे  
अगरक्षकमार ,

भरतवत्तळिकवळिल् मधरोपहारमेति,  
अविटत्ते आगमम् प्रतीक्षिच्चं  
अक्षमम् निलकोळळुधु ।

राजकीयप्रभावतिटे रामणीयकम् निरञ्ज मुद्र,  
श्याममाय भाग्भवरामनन्दिनियुट पिरकिल्  
ओळमटिच्चं अटियाळम् उलञ्जिपयत्त  
नीलनीराळम्  
चप्रवाळम् वरे परधु मिनुनु ।

सत्यदगव, वम्मप्रेरव, वर !

पुण्यदगनमरळु !

प्रकागतिटे वनवप्परिचवाण्टें,  
अन्नरीक्षते आवरणम् चयितरिक्कुधु  
मलिनमुखमाय अतरीक्षत्तपुम्  
आत्माविने

अतिदीनम् आलिगनम् चयितरिक्कुधु  
आलस्यत्तेयुम् दूर नीवकु ! तार माय्वकु !

## कर्मक्षेत्र मे

हे प्रभात,  
काल की प्रतीक्षा में स्थित हे प्रभात,  
स्वागत !  
समुद्रत शिरस्क ये शैल  
मलय और सह्याद्रि,  
जो ह इस उदार-दर्शिनी केरल अवनि के अगपाल,  
अधीर सडे ह  
मरकत की डाली में मधुर उपहार लिए ।  
तुम्हारे आगमन की प्रत्यागा में ।  
आशितिज फला उद्दाम लहरें उद्दालता  
यह नील महासागर चमचमा रहा है,  
दयामल परगुराम-नदिनी<sup>१</sup> की पीठ पर  
एडी तक सटकता  
राजसी प्रभाव वा रमणीय चिह्न-सा ।

आआ हे सत्यवाक, कम प्रेरक,  
दे दा अपन पुण्य दान ।  
दूर कर दो प्रवाग वा वनव-दान से  
इम मनिन-मूल धार अपकार वा  
छा गया है जा अन्तरिक्ष पर ।  
जड से उगाढ फेंत दा आलस्य को  
बाधना है जा आत्मा वा  
अपन्न दीन आलिंगन में ।

१ पुगा प्रसिद्ध है कि परगुराम ने अपना परगु फेंत कर केरल का समुद्र में निराला था ।

सुमनम्मुक्लुटे सुभगजीवितम्  
 स्वतन्मायि विटरट्टे ।  
 विस्मयमान आद्रहृदयम्  
 वेळिच्चम् नुकनुणरट्टे ।  
 निभयभाय सुरभिलाशयम  
 उयनुपधु वीशट्टे ।

इन्नलत्ते इरुण्ट निपलुकळिल् निल्लं  
 इळये विटर्त्तात्तु वन्न मोचक्क,  
 नवचत्तयदायक्क,  
 प्रवत्तिमागप्रवाचक्क,  
 अविटत्ते विजयम् लाक्त्तिनुदयम् ।  
 निणमणिज्ज इरुट्टे  
 निटे काल्क्कल् किटक्कुत्तु,  
 निरमियन्न गगनम्  
 निन्ने वन्दनम् च्चेय्युत्तु ।  
 प्रकागत्तिटे तक्त्ताक्कोलकाण्टे,  
 अघयुम् जीण्णयुमाय तमिस्सयुटे  
 अनन्तमाय तुरुत्तु तुरक्कु ।  
 अक्त्तट्ठच्चिरिक्कुत्तु दिव्यग्यातिस्सुकळे मोच्चिण्णियक्कु,  
 उदयत्तिटे विटनुवहन्न च्चेपताक्क उलक्कमाक्के निवरट्टे ।  
 कुटिलुकळिल्, वयलुकळिल्, जीवितोप्पमावु वितरट्टे ।  
 आलस्यम, अत्तले ।  
 भयमे अक्कने ।  
 जीण्णते, विलक्कि निल्लक्के ।  
 एल्लाम् इन्नले ।  
 वरुविन कम्मदोत्तत्तिल्  
 ओत्तचेरविन ।  
 विनच्चस्वप्पण्डडळुटे  
 तक्क्कत्तिरुक्कळ कम्म्युविन् ।

सु-मना का सुभग जीवन  
 स्वाधीन और विक्स्वर हा ,  
 जाग उठें, प्रकाश पीकर  
 विम्मित आद्र हृदय ,  
 फल जायें, ऊँचे ऊँचे  
 निर्भीक सुरभिल भाव ।

विगत रात की काली छायाआ से  
 वसुधरा की विमुक्ति के लिए आने वाले विमाचक,  
 हे नवचैतन्यदायक,  
 कम भाग सन्देश-वाहक,  
 तुम्हारी विजय हा जग का उदय हा ।  
 पडा है तुम्हारे परा पर  
 रक्तपक्विल अघकार,  
 खडा है तुम्हारी वन्दना में  
 रगीन गगन ।  
 अपने प्रकाश की वनककुजिका से  
 खोल दा तमिस्रा का अनल्ल बारागार ,  
 कर दा दिव्य ज्योतिया का उमुक्न  
 ताकि उन्म की विकस्वर पताका  
 समस्त समार में उल्लाहित हा उठे ।  
 कुटिया में, येता में  
 फल जाऐ जीवन की ऊम्मलता ।  
 भाग जा रे आलम्य ।  
 दूर हा जा रे भय ।  
 हट जा मामने स, रे जीण भाव ।  
 आभ्रा भादया  
 हम मिल-जुल कर उतर जाऐ कम-क्षेत्र में  
 काट लें वनक-यातियाँ  
 बोये हुए रापना की ।



## चक्रवाळम्

मानवविज्ञानमेत्र वळ्न्नालुम्  
 नूनम् पराधीनमाणतेधुम् ।  
 उल्पतिष्णुत्ववुम्, सकेतलघन—  
 तल्परभाववुम् काणिव्वट्टे,  
 वेवलस्वात श्र्य, मयानपेक्षितम्  
 पावत्तिन्निल्लेत्र गविच्चालुम् ।

नालच्चु पेराणु तन् तुणक्कारिमा—  
 रालम्बमिल्ल भट्टे इडायालुम् ।  
 भतप्रपचत्तेप्पटि टप्पल क्य  
 चातुयमाटवर् विस्तरिप्पकुम्  
 नेरेतु पोय्येतेधारामतिल्लति—  
 ध्राह्मे सायम् वध्नाल् तीप्पान् ।

तन् 'चक्रवाळ' मरक्कुट तन्नुळ्ळल्  
 सचरिच्चीटेणमेधुमधुम् ।  
 अक्कुटक्कुळ्ळिल्लोनुड्डुधु तन्लोस—  
 मोक्कयुम्, सायम् तन्ने चुट्टुम् ।  
 अक्कुटवट्टित्तध्नुपुरत्तेप्पकोधु  
 नोरकुवान् धयमधुण्टाकुधु ।

## श्रित्विज

मानव की प्रतिमा  
कितना हा विवाय बसों न पाये  
द्वि भी बट्ट है मुदा परासीन,  
चाटे कितना तू गर्व बह कर  
प्रगतिगीतना वा—  
गदितन की गमता वा गव—  
गिनु नु बेचारों के भाग्य में  
स्वावसम्बिनी स्वतंत्रता नहीं निखा है ।

नुका चाग-जीव गृहेतिनी है  
छाहकर उन्हे और कार्टे बवसम्बन नरा नुका,  
नून उगतू के सम्बन्ध में  
श्रितना हा दन्त-कमारों  
चतुर्ग के माय वे मुनाया कर्मी ह ।  
इनमें कौन मुव है और कौन मठ है,  
इस मुन्हे का दूर उगनेवाला कार्टे नहीं ।

श्रित्विज-गना छत्र के नीचे-नीचे तू  
उस अन्त-पुर का बानिनी का तर्ह  
मना चतना पन्ना है ।  
नु छत्र के छाटे-मे घेर में ही  
उतका माय उमाग गामित है ।  
चारों ओर बेदन मुन्द ही मुन्द है ।  
गिनु नहीं है मादुस उमे  
उस छत्र के बाटू मादुस इतने का ।

चेष्पित्तकम्पेष्ट तुम्पिपाल् जिनास  
 तप्पित्तटञ्जु पिटञ्जिटुनु ।  
 कोम्पुम् चिरकुमोटिञ्जारज्जीविपोल  
 वेम्पुमिज्जिनास वीणिल्लेक्किल्,  
 नाकवुम् लोकवुम् तम्मिल्पिरियुत्त  
 रेखावलयम् शिथिलमाक्क  
 सत्यत्तिन् पूण्णामाम् दीप्तिपिल्च्चेन्नतु  
 तत्तिप्परनु कळियक्कुक्किल्ले ?

अक्षममानवजिज्ञासतनुटे  
 पक्षम् विट्तिक्कवानेनुमेनुम्  
 वेल्लुविळ्ळियाम् विक्स्वरशीलमा—  
 युल्लसिच्चीटावु चक्रवाळम् !

—१९४४

द्विविधा में बन्दिनी बनी नितली की तरह  
 जिनासा चारों तरफ़ तटपती टटानवा घूमती है  
 यदि पर-कटे, डक-टूटे, गलन के समान  
 मानव की जिनासा घरागायी न हा गयी हानी  
 तो क्या वह क्षितिज की  
 उम नीमा रेखा का ताड  
 सत्य की पूग दीप्ति में पहुँचकर,  
 पृथ्वी-भँडराती हुई नहा खेलती ?

मानव की आतुर जिनासा के पखा का  
 खालने के लिए  
 स्वय एव चुनौती के रूप में  
 यह क्षितिज  
 अनुपम फनता हुआ  
 सदा विराजमान रहे ।

—१०४४

## पूजापुष्पम्

सत्यसौ दयमे । निन्प्रवाशतिनाल  
नित्यम विटरमाराबुकेन जीवितम् ।  
एन्करळिवल निरयुमाराव निन—  
सकल्पमत्तिन् समाद्रमाम् माधुरि ।  
मुट टुमितिलनिघ्नयन्ननिर्वाच्यमाय्  
चुट टुम सुरभिलोमादम् परबुकु ।  
एनुमनियक्कु निरम पिटिप्पियक्कु  
निनुज्ज्वलानुग्रहत्तिटे रश्मिक्कु ।  
वीणुपोयैविला, तच्चेवटियक्कु  
चेणुट टोरच्चनमाकुमाराबुक ।

—१०४२

## पूजा-पुष्प

हे सत्य सौंदर्य  
तुम्हारे प्रकाश से  
सदा प्रफुल्ल हो जाये  
मेरा जीवन ।  
मेरे हृदय में भर जाये  
तुम्हारी कल्पना के सार-तत्त्व का मरम माधुरी  
मेरे प्रफुल्ल जीवन से उठनवाला  
अनिवचनीय सुरभित मकरन्द  
फल जाये चारा आर  
तुम्हारे अनुग्रह की उज्ज्वल किरणें  
सदा ही मुझको रगीन बनानी रहें  
अगर मैं झट जाऊँ बनी  
तो तुम्हारी पद-अचला का सुमन बनकर गिरूँ ।

—१९४२

कालम्

माळमेदडरिञ्जील

सचरिक्कुनू काल-

काळकुण्डलि जग-

मण्डलदडळेचुटि ट ।

नेरियनाना शुक्ळ-

पटलदडळलि ति-

धूरियोरकळा-

णव्यक्तस्थला ततित् ।

‘विरियुम् विरियुमि -

निदने माहिचुम्को-

ष्टरिक्त्तिरिक्कुमु

पावम वियल्पक्षि ।

गोळमुद्रकळतिन्-

चिरविनकीपिल्कनाणाम्

नीळवे , कालम कोत्ति-

क्कुटिच्च ताण्टाणेल्लाम ।

पक्कुलुम् रावुम् नाविन

रण्टुतु म्पव नीट्टि-

प्पवयोदुग्रानन्त-

द्विजिह्वम् नक्कीदुम्पाळ

उटलु तरियक्कुम्भ

पवतम् स्तभिक्कुम्भू ,

कटलुम् जानाक्कुम्भ-

सरभम् चुळुङ्कुम्भू ।

इविपभिरिक्कुवे तन्क्ळिक्काप्पुम् कोण्टु

जीवितम् कळियक्कुवानीमितिन् भागति मल ।

—१९४०

## काळ

ना जाने

बाबी कहा है उसकी ?

काल-नाग अखिल जग-मण्डल को

अपनी कुण्डली में घेरकर रेंग रहा है

कहा जा रहा है वह ? क्या खोजने ?

ये जो दीख रहे हैं महीन-महीन

नहीं हूँ ये नीहाग्निवा-पटल

हूँ ये उसकी कंचुलियाँ

जो अत्यन्त अपारता की श्यामाधरा सीमा में छूट गयी हैं ।

पाम हा आकाश-वर्गी

अण्डे में रही है

आगा कर रहा है कि

अण्डा से निवर्लगे बच्चे

उसके पखा व नीच

लिखायी दे रहे हूँ गालाकार अण्डे

जा काल के चूसे खोखले-पापले हूँ ।

उसका जीभ की दा नाकें हूँ दिन रैन

जिन्हें वह अनन्त द्विजिह्व,

जब अत्यन्त विद्वेष के माय लपनपाता है

तो पवत स्तम्भ हूँ जाता है

और विनाश सागर

सबुचित्त हो जाता है ।

किन्तु ऐसी अवस्था में भी जीवन अपना खिलौना लिये

काल भुजंग के पत्र पर खेलता रहना है ।

—१९४०



## एवरस्टॅ

निश्चलम् नीण्टु निवनु निनू दृ-  
 निश्चलनाय कोट्टुमुटि पिन्नेयुम् ।  
 'उन्नतमामेन्, मुटियिल् चविट्टुवा-  
 निन्नरनाग्रह मेन्न भावत्तिलो  
 पुचिरि तूकियिहन्नू निजमुख-  
 त्तञ्चित्तमायी स्फुरियक्कुम हिमतिनाल ।

तूमञ्जुतुळिळ निरयेत्तिळ्ळुन्न  
 कोमळत्तामरप्पन्चिलपोलवे  
 आरुटे जिनासतन् वयिल मिन्नु  
 चारत्ताराकुलमाकुमपारत,  
 आरुटे सिद्धियोळिच्चुक्ळियक्कुनु  
 वारणमदिरत्तिलशक्तिम्  
 आरुटेयिच्छ विळियक्कुम् विळिप्पुर-  
 त्तारालणवू जगत्तिन्टे गक्तिवळ,  
 आरुटे साहसिकत्वमटुवक्के  
 भीरवाय् मारिक्काटुक्कुनु मृत्युवुम्,  
 आरु विधितन् वट्टुमक्केट्टुक्कुनु  
 पौरपत्तिटे निगितमाम् वाळिनाल्  
 आरसाध्यत्तिटे साम्राज्यविस्तृति  
 पारम् चुक्कुमन्तपरान्नमन्,  
 आनमिप्पियक्क शिरस्ताज्जगज्जयि-  
 मानवन्तन्मुन्पचलमे, सादरम् ।

## एवरेस्ट

दृढ़ सक्लप ठाने उतत गिलर  
वह वसे ही तनकर निश्चल खडा था  
मुस्कुरा भी रहा था  
अपने आनन पर चमकनेवाले हिम से,  
मानो सोच रहा था—  
“क्या मेरे अत्युच्च शीप पर  
पैर रखने की अभिलाषा करता है,  
यह मनुष्य ?”

हे अचल !

जिसकी जिनासा के हाथ में  
यह मनोहर तारक-सकुल असीमता  
श्वेत तुपार कणिकाआ से भरे  
कोमल कमलपत्र की भाँति चमकती है,  
जिसकी सिद्धि वरुण मन्दिर में  
जाकर निश्शक आख भिचौनी खेलती है,  
जिसकी इच्छा के आह्वान पर  
जग की गविनयाँ समीप आकर  
सविनय खड़ी हा जाती ह  
जिसकी साहसिकता के सामने मृत्यु भी  
बायर बनकर रास्ता छाड देती है  
जो पौरुष की पनी कटार से  
विधि की विवट ग्रन्थ को काट डालता है  
और जो अदम्य पराक्रमी  
असम्भव के साम्राज्य की सीमा को छोटा करता रहता है,  
उस विश्वविजयी मानव के सामने सादर मिर\_झुका दो !

ओटवहुपल

मम्पन्नकीतुक्मुत्साहमूचकम्  
 वेणुपटटुस्माल् विटति वीशि पक्ल ।  
 नीलगगननयनम् विटरम-  
 क्कालवुम निधुपोय् पूरितात्वक्कण्ठमाय् ।  
 म दमोपुकिटुम् वेणमुक्लिमालमल  
 सु दरस्वप्नतिल्मुड्डिड नग्नागराय  
 स्वैरम शायिक्कुघ्न किन्नरदम्पति-  
 मारतिसभ्रममु मुखम् नाक्कवे  
 मानुपघष्टत वक्कयायी पदम्  
 सानुविन् गौरमाम् गौरवति टोमेल ।  
 पोवुक, मेलोटटुपोवुक, सिद्धि, वेणु-  
 पूवुटल चेतार्ज्जु फूलबुनतुवरे  
 एधुरच्चेरित्तुटड्डी यशस्सित्तु  
 तन्नुयिर कोण्टु वळ्ळिमिटुम रण्टुपेर ।

आ मलत मेलमन्नु मयड्डिडुम्  
 व्योमपतगम्, निजस्वरजीवितम्  
 मञ्जनम् चैव्युधतारेतु नोक्कुवा-  
 नञ्जनवण्णच्चिरकुम विरिच्चुटन  
 ओनुयर्मीट्टुधत्ता प्रियसाहस-  
 रन्नमन्नकीतुक्कम् वण्टुक्कण्टुड्डने  
 पिन्नेयुम् पिन्नेयुम् मेलोटटु मेलोटटु  
 तने नटन्नारच्चलमानसर ।

आ युववीरर निन नित्यरहस्यमा-  
 रायुवान् वन्नतिन्नेन्तु चैयुत्तु भवान् ?  
 चाल्लुमो मत्यट्टे धीरजिनासये  
 वेल्लुविळ्ळियुक्कुम् महोदतशृगमे ।

—१६३८

दिवस ने उत्साहित होकर अत्यन्त कुतूहल के साथ  
 अपना श्वेत रेशमी रुमाल बार-बार हिलाया ।  
 काल अपने नील गगन के नयन विस्फारित कर  
 समुत्कण्ठित खड़ा रहा ।

विघ्नर मिथुन

जो मन्दगामी श्वेत मेघ-दला पर नग्न-देह लेटे  
 स्वप्नो में डूबे रहत ह

ससभ्रम देखने लगे कि मानवा की घृष्टता  
 पवतसानु की गौराभ गरिमा पर पैर रख रही है ।

“ऊँचे चढो, ऊँचे चढो,

जब तक कि सिद्धि के कुसुम-बोमल गात का  
 आर्लिगन प्राप्त न हा ।

इन शब्दो के साथ कीर्ति-बल्लरी को अपने शरीर का  
 खाद देनेवाले दो तरणा ने आरोहण प्रारम्भ किया ।

उस पहाड के ऊपर

पख समेटकर झपकी लेनेवाला आकाश विहग

अपने विचित्र नील-पखा को फलाकर उडा

यह देखने कि उसकी

स्वच्छ-दता को भग करनेवाला कौन है यह ।

वे अचञ्चल हृदय तरण

इस दश्य को अत्यन्त कौतुक के साथ देखते हुए

बराबर आगे ही बढ़ते रहे ।

मानव की धीर जिनासा को चुनौती देनेवाले,

हे परम उद्धत श्रृग ।

बताओ तो

वे जा युवा साहसी तुम्हारे चिरन्तन रहस्य को खोजने आये थे,

उनका तुमने क्या किया ?

—१९३८

एक वष दो उत्साही तम्घा ने हिमालय पर चढने का प्रयत्न  
 किया था और उनमें से एक का पता नहा चला था ।

## नक्षत्रगीतम्

एरियुम् स्नेहाद्रमा-  
 मटे जीविततिटे  
 तिरियिल् ज्वलियक्कट्टे  
 दियमाम् दु खञ्वाल ,  
 एक्किलुम्, नेट्टुवीप्पिन  
 धूमरेखयाल् नूनम्  
 पकिलमाक्किल्लेन्नुम  
 देवमागामाम् वानम् ,  
 एक्किलुम् मदीयात्म-  
 व्यापियामूप्पावानक्कुम्  
 पकिटिल्लाज्जा तम्  
 जानतिलेरिञ्जालुम् ।  
 एन् चित्तियिकल्त्तत्रे-  
 याणु जा, नेन्नालेतो  
 पुचिरित्तिळक्कत्ते-  
 प्पयिकन दगिक्कुन्नु ।

वीणु जानाकागतिन्नत्तयगावत्तियिक्कल्-  
 त्ताणुपायेक्काम् मूच्छाधीनमा , यल्लेन्नाक्किल्,  
 भस्ममायेक्काम् , तीरे द्दुदनामेषेन्निन्ने  
 विम्भरिच्चेक्काम् वातन् एन्नालुमित्तु सत्यम्  
 जीवितमेनिक्काक्कुळ्मायिरत्तप्पाळ-  
 न्भूविना वेळिच्चत्ताल् वेण्म जानुळ्वाक्किन् ।

## नक्षत्रगीत

स्नेहाद्र हो कर जलो वाली  
मेरे जीवन की दाती में  
सदा ही दु स की निव्य ज्वाला  
प्रोज्ज्वलित रहे ।  
किन्तु नही बरूंगा मैं पकिल  
अपने निश्वासा की घूमरेखा से  
देवताआ के गगन पथ को ।  
आमरण, नही बाटूंगा विसा को भी  
अपनी आत्मा में व्याप्त ताप का  
चाहे भस्म ही बयो न हो जाऊँ ।  
म तो  
दहकता रहता हूँ अपनी चिता के भीतर  
किन्तु पथिक का दीखती है मुख में  
मन्द हास की आभा ।

हो सकता है म मूर्च्छा हा कर  
गिर जाऊँ गगन की गहन गहराइया में,  
अथवा हा जाऊँ भस्मीभूत, क्षार-क्षार  
और भूल जाएँ काल, मुख क्षुद्र तारे को ,  
तथापि यह सत्य है—  
जीवन मेरे लिए रहा घषकती भट्टी,  
किन्तु उसके प्रकाश से मैंने उजियारा दिया घरा का ।

नाळे

१

जमसिद्धमाम् पदम्

पुण्यलब्धमेन्नोर्त्तुं

वमदम् भाविय्क्वुश्रो-

रुततनक्षत्रमे ।

वेम्पुक ! विळरुक् !

विरकोळळुक ! नोक्कू,

निन्पुरोभागत्तता,

धीरतेजस्साम् 'नाळे' ।

कूरिळ्ळ परक्कुनु

निद्धडळतन्भाग्यतोटे

परिटमुणरुनु

निद्धडळतन् भयत्ताटे ।

रक्तमामुट्टुप्पिमेल्

रक्तपुण्यवुम् कुत्ति

व्यक्नवभवम् वन्न-

तेन्तिनाणेप्रो 'नाळे' ?

वेलतन् जयत्तिन्टे

पविपक्वाटिक्कूर

लीलयिल्परप्पिच्चु

पारिनेप्पुतुक्कुवान् ,

निद्धडळ वयटवियय

मादवुम् प्रकागवुम्

मद्धडलित्विक्कटक्कुन्न

मन्निन् पक्कुक्कुवान् ,

ओदक्कुयल

## आगामी कल

१

अपने जन्म सिद्ध पद को  
पुष्प-लघु मानकर  
अत्यन्त अभिमान के साथ रहनेवाले ऊँचे तारो !  
हो जाओ परिभ्रान्त,  
पड जाओ पीले  
कापने लगे भय से  
देख लो तुम्हारे सामने आ पहुँचा है  
वह वीर-तेजोमय 'बल' ।  
अधकार विलुप्त हा रहा है  
तुम्हारे भाग्य के साथ,  
विश्व जाग रहा है  
तुम्हारे भय के साथ,  
क्या तुम जानते हो  
क्या आ गया है यह 'बल'  
अपने रक्षित कवच पर लाल पुष्प लगाये  
अपने वभव को प्रगट करता हुआ ?

तो सुनो—

वह आ रहा है  
कम विजय की विद्रुम पताका को  
लीलापूवक पहराकर  
जग को नया बनाने के लिए,  
दुनिया को बाँट देने के लिए  
के आमोद और प्रकाश  
जिन पर तुमने अधिकार कर लिया है ।



नालचु तारडडळकु  
 पुचिरिककोळळान् नित्र  
 कालमाक्वरियिल-  
 तुम्पिमेल् विरय्क्कुन्नु ।  
 पावमाम् कृपिककारन्-  
 त मुखमान दाधल-  
 पावनश्रीयाल् वेल्लु-  
 विळ्ळिक्कुम भवा मारे ।  
 वैम्पुक । विळ्ळुक ।  
 विरकोळ्ळुव । नोक्कू,  
 निन पुरोभागत्ता  
 धीरकम्भावाम 'नाळे'

२  
 नैचिटम् तुटिच्चिट्टुम्  
 कटलुम् रोमाचम मेल  
 तचिट्टुमवनियुम  
 हपमूक्कमाम् वानुम्  
 काण्ट्टे विचित्रमाम्  
 लिपियिल्क्कुरिक्कुम्  
 कालत्तिन् विळ्ळम्बरम्  
 पूवचत्रवाळ्ळित्तिल ।  
 नीलनीरदच्छेद-  
 रेखवळ्ळुला नून-  
 मा लसल्प्रवागत्तिन्-  
 चेम्माप्प पात्रत्ति मेल ।  
 आनतु वायिक्कुवेन्  
 'मगलम् प्रायिक्कुन्नु,  
 वानत्तिन् तापेक्काणुम्  
 सवजीवित्तिसुम् ।

वह युग

जा स्वयं का दा-एक तारका के मदहाम के उपयुक्त  
बनाये खडा था

आज थर-थर कांप रहा है

सूखे पत्ता की कारा पर ।

अब भोले कृपका के मुख

प्रस्फुटित आनन्द की पावन ज्योति लेकर

तुम लोगा को ललकारेंगे,

परिभ्रान्त हाथा, पीले पटो, काप उठा

तुम्हारे सामने आ पहुँचा है

वह धीर-तेजामय 'वन' ।

२

देखें अब

यह ममुद्र जिसका दिल धक धक कर रहा है,

और यह वमुघरा जा पुलकित हा रही है

और यह आकाश जो हृपमूक बन गया है,

काल की उम घापणा का

जा पूव के श्रितित्र पर

विचिर लिपिया में

अक्षित्र हा रही है ।

उम मनोहर श्रवाण के ताम्र-पत्र पर

ये जा दिख रही ह

वे निश्चय ही नान-भीरद की रखाएँ नहा ।

मैं पटूया उस घापणा का

'मगन हा

नीन गगन के नीचे जीनेवाले

सारे जावा का,

इल्लिनिहरिदत-  
यिप्रभाततिन् पोतिन्-

पुल्लिनुम् मरतिनुम्  
तुल्यमाणवकाशम् ।

इल्लिनियसमत  
तळिक्वाम् कुरक्कुति-

मुल्लयक्कुम् वानम् पुल्लुम्  
मुक्किलिन् पटाप्पिनुम् ।

शुद्धमाम् कुळिक्वाट्टुम्  
स्वच्छमाम वेळिच्चवुम्

सिद्धमिच्छपालाक्कु, -  
माक्कुविनाह्लादिप्पिन् ।

अयर्त्तनाध्यतिव-  
लुत्तासम् कोलुम धयम-

मन्यमाम् नक्षत्रमे  
निनविमल्लिनिन् स्यानम ।

वेम्पुक् । विळरक् ।  
विरकोळ्ळुक् । नाक्

निन्पुरोभागत्तता  
विश्वजेतावाम नाळे' ।

३  
नीतिनन् चुटुवण्णीर  
तुटप्पान् वधू नाळे

नी तिक्च्चानदिच्चु-  
काण्टानुम् शृपीवल ।

पारिते मरतक्-  
प्पच्चयानुट्टिप्पिच्च

पावम, भवानड-  
नग्ननाय् कालम् पावना

ओटवकुयल

आगे अब नहीं रहेगी दरिद्रता  
 इस प्रमात के स्वर्ण पर  
 तरु और तण दोना का  
 समान अधिकार है ।  
 आगे अब नहीं रहेगी असमता  
 यहाँ कुन्दलता और  
 गगनाश्लिष्ट मेघा के दल  
 दोनो पल्लवित हो गवते है ।  
 होवें आनन्दित सभी  
 सब को यथेष्ट मिल जायेगी  
 स्वच्छ हवा और विमल प्रकाश ।  
 औरा की अघना में  
 आनन्दित रहनेवाले  
 रे घयमानी नक्षत्र  
 केवन तुझे ही इसमें स्थान नहा मिलेगा ।”  
 घबडा उठो, हो जाओ परिभ्रान्त  
 पड जाओ पीले  
 काँपने लगे भय मे  
 देख ला तुम्हारे सामने आ पहुँचा है  
 वह घोर-तेजोमय 'कल' ।

३

हे कृपक  
 तुम आनन्दित हो जाओ  
 आ पहुँचा है कल'  
 नीति के वेदनाश्रुआ का पादने के लिए  
 तुमने बसुघरा का  
 मरकत हरीनिमा पहनायी  
 किन्तु स्वय अङ्गनम्न रहकर  
 अपना दिन बिताया ।

नाटिनु कतिरिटुम्

वनकम नलकी , नाटो,

कूटिय वटतिनु

कुटि विट्टिरडिड्चु ।

पुचिरि विटति नी

पुल्पोटिप्पिलुम भाग्य-

वचितमपहत-

मदहामम् निनववनम ।

निन् निणच्चूटिल्लेक्किल्

मरविच्चेने राज्यम् ,

निन नेटि ट वेत्तिल्लेक्किल्

मरुवापेने लाकम ।

निन् नटुवळ्ज्जतु

नाटिटे भारममूलम ,

इत्ततु कुपड्डुनु

निटे भारत्तालत्रे ।

वालितन् नखक्षतम्

कोपुविन दन्तक्षतम

मेलिव पतियक्कुन

घयमेदिनियक्केन्ये

कुळिरुण्टाकुनील

कोळमयिर कुह्णील,

तळिरम् तारम चूटान्

वालवुम् लभिप्पीन

नीतितन् चुटुक्णीर

तुटप्पान् वन्नू नाळे

नी तिकच्चानन्दिच्चु-

कोण्टालुम् वृपीवल ।

तुमने देश को बनक-बालियाँ दी  
 किन्तु देश ने तुम्हारी बेदखली कर दी  
 क्योंकि बढ गया था वज्र का भार तुम्हारे ऊपर ।  
 तुमने तण-दलो के अघरो पर भी  
 म-दहास खिलाया  
 किन्तु तुम्हारा मुख  
 सदा ही मुस्वान से वचित रहा ।  
 यदि न होती तुम्हारे रक्त में गर्मी ।  
 तो यह देश ठिठुरकर सुन्न हो जाता,  
 यदि तुम्हारे ललाट पर  
 नहीं चमकते स्वेदवण  
 तो यहा सब बन जाता बयाबान,  
 तुम्हारी कमर देश के बोझ से झुकी  
 किन्तु आज देश तुम्हें बोझ मान  
 झुक्ता जा रहा है ।  
 जो सहती बला का नखक्षत  
 और हल का दन्तक्षत  
 उस परम धय वसुधरा को छोडकर  
 और कही भी नहीं उगता पुलक  
 न होता भाग्य पल्लव-पुष्प धारण करने का ।  
 आ पहुँचा है 'कल'  
 'याय के तप्त औसू पोछने के लिए  
 हे वृषक  
 अब तुम पूणतया आनन्दित हो जाओ ।

—१९४०

## विश्वहृदयम्

वदनम् शाश्वतविश्वहृदयमे ।  
सुन्दर भीकरमीलितत्वम ।

कालम् पिरतु तावकस्पदनम्-  
मूलम् नवनवाभेयस्वभावमे ।  
निभरानन्द विजृम्भितमानिय  
निन्देयपारतयिकलनन्तरम्  
लोलम् स्फुरिञ्चुपालव्यक्तसकल्प-  
जालमामुज्वल गुणलपटलिकळ  
दिव्यमवतान विभक्तमाय व्यवनमाय  
नव्यप्रपचदङ्गळायि वळतुपोल ।

लोकगोळदङ्गळ महासत्वमे, भव-  
देवविचारघटवदङ्गळलयो ।  
आवपणमेनु चालूवतापाणय-  
भागङ्गळतन नित्यसम्बघमाप्वराम् ।

निक्कुदिकुवुन्नु नित्कुनुन्नु मायुन्नु  
सकल्पमारो, ध्रुवयिलाप्राय आन  
सन्ततम् कोळमयिकसोणुपोकुन्नु निन्  
धिन्तकळ कण्टुकण्टाद्रनयननाय ।

## विश्व-हृदय

हे शाश्वत विश्व-हृदय,  
हे सुन्दर किन्तु भयकारी मौलिक तत्त्व  
प्रणाम है तुझे !

हे नवनवाभषशील,  
काल उत्पन्न हुआ है तुम्हारे स्पन्दन से  
तदनार स्फुटित हुई ये निहारिकाएँ  
अव्यक्त कल्पनाओं की भाँति  
आनन्द निभर होकर फैलनेवाली  
तेरी अपारता के भीतर !  
व्यक्त और विभक्त बन गयी  
ये ही दिव्य निहारिकाएँ  
परिणत हो गयी अगत के नाना रूपा में ।

हे महामत्त्व !  
ये सारे गोलात्मक विश्व  
तेरे एक ही विचार के अंग हैं,  
कदाचित् इन अंगों के नित्य सम्बन्ध का नाम ही है आत्मपण ।

तुममें से पैदा होने हैं विविध सकल्प  
तुझी में समा जाने हैं वे सब,  
मैं जा उनमें से एक हूँ  
तेरा चिन्तन धारा को दन्त-श्रेणिकर  
पुलकित हो जाना हूँ  
आँसू भर आनी है मेरी ।



निटे रक्तोष्मावुयन सूयनुम्,  
 निन्टे सन्तोषम तिलदडुन तिवळुम्,  
 निटे विकाससकोचडडळोटोत्तु  
 नित्यम् विटनु चुरुडडुम् समुद्रवुम्  
 तावक सकल्पभेदडडळ-भावल्-  
 पावनसौ दयनिर्व्याजरेखळ ।

घोरदारिद्र्यवुम् घोररागडडळुम्  
 घोरयुद्धडडळुम् निटे विनावुळ ।  
 नि मनोराज्यसौभाग्यमरियुन  
 जममे जमम , नमस्वरिक्कुनु नान ।

वन्दनम् शाश्वतविश्वहृदयम् ।  
 वन्दनम् सग्नस्थितिलयलीलमे ।

—१९३८

तुम्हारे रक्त की ऊष्मलता से भरा सूर्य  
 और तुम्हारे आनन्द की चमक से भरा चन्द्रमा  
 तुम्हारे सर्वोच्च विकास के साथ  
 समुचित और विनसित होनेवाला यह समुद्र  
 ये सभी ह तुम्हारी विभिन्न कल्पनाएँ  
 सभी ह तुम्हारे पावन सौन्दर्य की अवलक रेखाएँ ।

घोर दृष्टिना,  
 दारुण व्याधियाँ,  
 भयानक सग्राम,  
 सभी तेरे ही ता स्वप्न ह ।  
 जो तेरी कल्पना का सौन्दर्य जानता है  
 केवल उसीका जन्म ही जन्म है ।  
 मैं प्रणाम करता हूँ तुम्हें ।

हे शाश्वत विश्व-हृदय,  
 प्रणाम है तुम्हें ।  
 हे सग स्थिति-लयशील,  
 वन्दना है तेरी ।

—१९३८

## सागरगीतम्

श्रान्तमम्बरम निदाघोष्मच्छ्वप्ताश्रान्तम्  
तान्तमारब्धक्लेशरोमन्वम मम स्वान्तम् ।

दृप्तसागर ! भवद्रूपदगानालद्ध-  
मुप्तमेघात्मावन्तल्लोचनम् तुरक्कुत्र ।

नीयपारतयुटे नीलगभीरादार-  
च्छाय , निम्नाश्लेषत्ताले मनम जृम्भिकुन् ।

क्षुद्रमामेन् कण्णत्तालक्वेळक्वुवानाकात्ताह  
भद्रनित्यतटयुटे मोहनगानालापाल,  
उद्रसम फणोल्लोलकल्लालजालम् पाक्वि  
रौद्रभगियिलाटिनिद्रिटुम् भुजगम् ।

वानम्, तन्विणालमाम् श्यामवक्षसिलक्कोत्ते-  
ट टानन्दमूच्छाधीनमङ्गने निलक्कोळ्बु ।

तत्तुरेघ्नात्माविवल् । -

क्कोत्तुवेन हृदन्तत्तिन् ।

उत्तुगफणाप्रति-

सेन्नेयुम् वहिञ्चालुम् ।

## सागर गीत

यह श्रान्त गगन  
निदाघ के उज्ज्वल स्वप्ना से आक्रान्त है  
मेरा अवसन्न हृदय  
अपने बीते हुए अवसाद विपादो की  
जुगाली कर रहा है ।  
हे दप-पूण सागर,  
तुम्हारे इस रूप को देखकर  
मेरी अद्धसुप्त आत्मा अपने आन्तरिक नयन खोल रही है ।  
तुम असीमता की  
नीलिमापूण उदार गम्भीर छाया हो,  
तुम्हारा आसिगन पाकर  
मेरा मन पुलकित हो रहा है ।  
जिसे मैं अपने क्षुद्र कानो से सुन नही पाता  
उस मगलमय चिरंतन क  
फोहन गानालाप की वीन सुनकर  
हे भुजग,  
तुम अपने कल्लोलित उत्तुग तरंग रूपी फना को फलाकर  
अत्यंत आनन्द के साथ  
रौद्र सुन्दर नतन करते हो ।  
यह गगन अपनी छाती में तुम्हारा दगन पाकर  
आनन्द-मूछना में लीन होकर खडा है ।

तुम मेरी आत्मा में नतन करो  
मेरे अन्तरण में दगन करो  
उत्तुग फना के ऊपर  
मुझको भी बहन करो ।

नीरदलतागहम् पूकयिप्पोपुतन्ति  
 नीरखमिरियक्कुधु रागविभ्रममेन्ति ।  
 हृदयम् द्विपियक्कुमेतारज्ज्वलगान-  
 मुदयल्लयम् भवानालपियक्कुनू स्वरम् ?  
 वनवनिचोळमूर्ध्नांगनारस्साय् मेवु-  
 मनवद्ययाम सध्यादेवितन कपोलतिल,  
 क्षणमुष्टालिक्काराय भिनुन्न तारावाप्प-  
 कणमाघ्ननिवाच्यनव्यनिवतिविन्दु ।  
 अट्टिडल्निन्नरिञ्जु वान पूष्णमामात्माविकल  
 तिडिडट्टुमनुभवम् पक्करम कलागती ।  
 नित्यगायक ! पटिपियक्कुकेन् हूलस्प दत्ते-  
 स्सत्यजीविनाखण्डगीतत्तिन् ताळत्रमम ।

जीवितम् ग नम, कालम्

ताळ मात्माविन् नाना-

भावमारारो रागम् ,

विश्वमण्डलम् लयम् ।

अम्पिळिच्चयकत्तिल् नुरयुम् दिव्यानन्दम्  
 अम्पिलेन्तिक्कोण-त्ती मुक्कट्टपचमि मन्दम् ।  
 वानतमुत्तियुटे नीलधू निपलिच्च  
 पानभाजनम् वेम्पुम् करत्तालस्वयम् वाडिड,  
 फेनमञ्जुळस्मितम् कलधुं नक्कुय-  
 ञानमेन्निवे पाट्टुम् हृपजमितत्तव  
 भावत्ताल तरगायमाणमाम् विरिमार-  
 ता वधु तल चाच्चु निल्वुडु लज्जामूक्कम् ।

अनुराग विह्वला सध्या  
 नीरद लता-श्रुज में प्रवेश कर नीरव बठी हुई है ।  
 हृदय का द्रवित करनेवाले किस गीत का आलाप  
 तुम तमय होकर कर रहे हो ?  
 सुदरी सध्या देवी का स्वर्णांचल खिसक गया है  
 किंचित् अनावृत हो गया है वक्षस्थल  
 कपाल पर चमक उठी है आसू की तारक-श्रुद  
 मानो अनिवचनीय नवल निवृत्ति की कणिका है यह  
 जो दुलकने ही वाली है ।  
 अपनी परिपूण आत्मा के भीतर एकत्र अनुभूतियों को  
 अभिव्यजित करने की शिल्प चातुरी  
 तुम्ही से मने सीखी है ।  
 हे चिरन्तन गायक !  
 हृदय के स्पन्दनो को सिखा दो  
 शुद्ध-सत्य जीवन के अखण्ड गीतों की ताल-धाप ।

जीवन ही गान है,  
 काल ही ताल है,  
 मन के विविध भाव ही विभिन्न राग हं  
 समूचा विश्व-मण्डल ही लय है ।

मृगाक चपक में फैनिल आनंद की मदिरा भर,  
 मद चरण घरती हुई शुक्ल पचमी आ गयी  
 तुमने अपने आनुर तरंग-बरा से ले लिया वह चपक  
 जिस पर विनम्रवदना सुदरी की नीली भोंओ की छाया अंकित है,  
 तुम पीते हो उसे फेना के मद स्मित के साथ  
 अथ सारी चिन्ताएँ भूलकर गान करनेवाले  
 हे हृष-श्रुम्भित महासत्त्व ।  
 तुम्हारे भाव-तरंगित विशाल वक्षस्थल पर  
 वह मुग्धा लज्जामूक होकर सिर टिकाये खडी है ।

अल्लणिककुपलितन् श्लथवेणियिलनिनुत—  
 फुल्लमामारायिरम् मुल्लमाट्टुक्ळिता,—  
 विम्बितम् ताराजातमाविल्ल ननम्—निन्दे  
 वम्पितस्निग्धोरस्सिलक्कोपिञ्जुल्लसिक्कुट्टु ।

वामुक् । मुक्क,  
 नित्ते मूट्टुक्, वाना—  
 प्पुमुट्टिच्चुक्ळिम्मु  
 सौभाग्यमाशसिप्पु

नि.यिल निलीनमायक्कपिञ्जू पारुम वानुम् ,  
 हृद्रम । तनिच्चायिच्चमञ्जू नीयुम वानुम्,  
 निम्मुटेयगाधमामाशयरहस्यत्ते—  
 योनु नीममात्मावित कण्णत्तिल् मत्तिच्चालुम् ।  
 धीरमामोह परिवत्तनोत्ताहत्तिटे  
 गौरवम् विड्डुम् गानवीचिकळुच्चण्डात्मन्,  
 जीवितपरिमितियेतुमे सट्टियक्कात्त  
 दैविकास्वास्थ्यम् पूण्ट नित्तिल्नित्तनुवेलम्  
 स्थितिपालनम् नित्यधम्ममाय याव्यानिक्कुट्टुम्  
 क्षितियेस्समुल्लक्कम्पयान्नुमारयत्तनु  
 निश्चयम्, त्वत्सदेवाम् वेपमुण्डान्नुणुण्डु  
 निश्चलनमश्चरन्त्तसाम्भ्राज्यत्तिल् ।

धीणमामभ्रात्मावु  
 तक्कन्नाल् तन्नोत्ति,  
 वीणयाक्कुक् भव—  
 दासपम् गानम् चेम्वान् ।

अस्त-व्यस्त-सी उसके ढीले जूड़े से खिसककर  
 सौ-सौ प्रस्फुटित बुद बलिकाएँ  
 तुम्हारे कम्पित स्निग्ध बगस्थल पर धर रही ह  
 निश्चय ही वे नहीं ह प्रतिविम्बित तारिकाएँ ।

हे कामुक चूम ला उस बेणी को,  
 आच्छादित कर लो उससे अपने को ।  
 म उस मनोहर नवरी भार को  
 सौभाग्य की गुम कामनाएँ देता हूँ ।

निद्रा में विलीन हा गये ह अपनी और आकाश ।  
 है हृदय, अब जागे हुए ह केवल हम और तुम ।  
 तुम अपनी आत्मा के अगाध भावों का रहस्य  
 मेरा आत्मा के कानों में फुमफुसा ता दा  
 जीवन की परिमिति को विंचित भी सटन न करनेवाले  
 हे समुद्रत चण्ड-हृदय ।  
 स्वर्गिक अतपित से भर हुए तुम्हारे मन से  
 धीर शान्ति की उत्साह भरी नयी-नयी  
 गौरवमय गान-बीचिया उत्पन्न हो रही ह  
 जो प्रकम्पित कर देती ह वसुधा के उस मन को  
 जो रुढ़ि सरक्षण को ही सनातन धर्म समचता है ।  
 निस्सन्देह तुम्हारे ये सदेश अकमण्य नमचरा से भरे  
 नक्षत्र-साभ्राज्य में कम्पन पदा कर रहे ह ।

अगर मेरी प्रक्षीण आत्मा  
 खण्ड-खण्ड हो जाये तो हो जाये  
 तुम बना ला उसे बीणा  
 झट्टत हा जिसमें तुम्हारे अन्तर्भावों के गीत ।

—१९४२



## प्रतिकारम्

पोनुचिद्धत्तिलत्तिरु-  
वाणमाणिन्ने , न् नाट्टिल-  
निप्पुमेन्नया वातम  
दूरेयाम् आनेघालुम  
मामक्कहृदन्तरम  
चिरक्किट्टिवकुन्नि-  
ता मनोहरमाय  
मलनाट्टिलेयक्केत्तान् ।  
शान्तिये विळम्बरम्  
चेय्युमारपञ्ज आ-  
जेन्तिट्टुम चेरमार्त्तन  
वेतुचिह्लमाम चापम्  
इप्पुमा इलयायत-  
मलयाचलपवित  
मिप्पुमेन् नाट्टिन्ऱुप्-  
मोम्मयिल वरयक्कुम्भ ।  
अद्धोरु मरवत-  
क्कुन्निन्ने तापत्ताण-  
सेट्टुक्कळ कुट पिटि-  
च्चीट्टुमेन् चेरकुटिल् ,  
लीलयिल् ग्रामत्तिट्टे  
पच्चप्पट्टि मेल् मुत्तु-  
मालयोन्नणियिच्चु  
मूळिप्पाट्टुवट्टाट्टे

## प्रतिकार

आज

स्वर्णिम 'सिंह' मास का 'तिरुवोणम्' है

मैं

अपने गाँव से कितनी दूर हूँ ।

मेरा मन,

पवतमालाओ से घिरे

अपने उस मनोहर प्रदेश पर पहुँचने के लिए

पल फडफडा रहा है ।

शिथिल आयत मलयाचल पत्तियो में

और वकिम सागरतीरा से सुशोभित

वह मेरा दश ।

आज भी

मेरी स्मृतिया

चेर सम्राटो के ध्वजचिह्न धनुष का चित्र खींचती हूँ

जिसकी ढीली प्रत्यचा

माना शान्ति की घोषणा कर रही है ।

दूर मरकत पवत की तलहटी में

मेरी कुटिया है

जिस पर छत्र तान रहे हूँ

नारियल के पेड़,

ग्राम के हरित कौशेय को

सीलाभाव से मुक्ताहार पहनाती, गुनगुनाती

---

—तिरुवोणम्—'ओणम' केरल का प्रसिद्ध त्योहार। 'तिरुवोणम्' वास्तव में 'श्रावण' का ही तद्भव रूप है। यह अब 'सिंह' मास में, अगस्त सितम्बर के बीच, पड़ता है।

चिरिञ्चु पुञ्चुका-  
प्टावपिक्वेत्तिञ्चुटिट्-  
त्तिरिञ्चु पटिञ्जाटटु  
पाकुमुण्टोरु चोल ।

कोञ्चुतोट्टियिल्पुवुम,  
चेंचुण्टिल्पाटटुम्, नेञ्चिल  
वाच्चिट्टुमाह्लादवुम्  
निरञ्ज पोन्कुञ्जुड्डुळ  
पूक्कळत्तिनुचुट्टु-  
मोणमल्लयो—कूटि-  
निल्क्कवे, मतिमर-  
न्नञ्चनम्ममार नोक्कुम् ।  
अचु चिट्टुमायिप्पाळ-  
वण्टिट्टु वानेन कोचुम  
पिचुपैतलिन मुलम्,  
नयनम ननयुम् ।  
मारुविन् मलक्कळे ।  
मायुविन् कटलक्कळे ।  
नीरमेन्मनम चेन्ना  
वदनम् मुक्कट्टे ।

अचु पोन्नाणम् पायी,  
विळक्कुम्, स्मितत्तिनाल्-  
च्चेंचोत्तळिर वक्कुम्,  
तेळियिञ्चुकोण्णोराळ  
लोलमामोण वळ  
मिन्नूपालित्तळड्डुम्  
पेलवक्करम्कोण्डु  
विळम्पुम् चोरुणाते ।

मोटक्कूपम्

किलकारती, बल खाती हुई  
 वह रही है छोटी सरिता  
 जा उस प्रदेश में पहुँचकर  
 पश्चिम की ओर लौट पड़ती है ।

छोटी-छाटी टोकरियाँ में फूल लिये ।  
 मृदुल अरण्य अघरा में गीत लिये  
 और मन में अमित उमंग लिये  
 जब छोटे-छाटे प्यारे-प्यार बच्चे  
 फूला की रगवन्ली के चारा और  
 इकट्ठे होने हैं—  
 क्याकि आज 'ओणम्' है न ?—  
 तो माता पिता मुग्ध-बुध भूलकर  
 मुग्ध सड्डे देखत ह ।  
 अपने तुतलात बच्चे का मुख देखे  
 आज पाँच सुनहले 'ओणम्' चीत गये ।  
 हाय मेरी आँखें गीली हो जाती हैं ।  
 हट जा पहाड़,  
 पट जा सागर  
 मेर कसकते हुए मन को  
 वहाँ पहुँचकर वह नन्हा-सा मुह चूमने दे ।

अपने कामल हाथ से दीप को  
 और मन्दहास की दीप्ति-से मनोहर अघर को  
 प्रकाशित करती हुई  
 बिजली-से कौंधनेवाले कक्कण से सुशोभित  
 मृदुल कर से  
 वह जो खाना परोसती थी  
 उसे खाये  
 आज पाँच सुनहले 'ओणम्' चीत गये ।

कुम्पिटुमाफिकवतन्  
 मुटियिल्चविटडुवान  
 वेम्पुनयूरोपिन्टे—  
 युद्धतपादम् पोले  
 मूपटतिलेय्वकोधु  
 नोविमयाल्काणा मद्ध—  
 द्वीप' मोत्तिलोष  
 बुत्तिलाणिवनिप्पोळ ।

मुग्घवेणूपरवक्—  
 छिटयिल्प्पारम नील—  
 स्निग्घ नीरदमाल—  
 यल्लेटे मेल भागतिल् ,  
 तीमप पोपिच्चुप्प—  
 दशनम् विहरिक्कुम्  
 व्योमयानौघम् चपुम्  
 पीरक्किप्पुवयत्ते ।  
 पुत्तनामोराशयाल्—  
 प्पुळ्वम कलघ्नीप—  
 द्रक्तमायत्तीरुम् नाटिन्  
 निम्मलवपालम्पोल्  
 चेन्नेल्लाल् चेम्मेहन्न  
 पाटङ्कळल्लन चुट्टम् ,  
 चेत्तिणम् नुरवुत्तुम्  
 युद्धभूमिवळ्ळे ।

वीरवीत्तियाम् मूटल्—  
 मञ्जुपाद्दुवानल्ल,  
 चोरयाल् साम्नाय श्री—  
 तन् कपल् पूगानल्ल,

म इस अद्व-द्वीप के एक टीले पर  
 पडा हुआ है  
 जो नक्शे में दिखाई देता है  
 योरोप के उद्धत चरण-सा  
 अफ्रीका के सिर पर  
 पाँव रखने के लिए आतुर झुका हुआ-सा ।

मुग्ध सारस पकिनया से अलकृत  
 स्निग्ध नीरदमाला अब मेरे ऊपर नहीं चलती  
 अग्नि-वर्षा करते हुए विहार करनेवाले  
 उग्रदशन व्योमयानो से घिरी घरा पर  
 तोपो की गरज ही चारो ओर मुनाई पड रही है ।  
 नवीन आशा के जागरण से पुलकित होकर  
 कपोलो पर हल्की-हल्की लालिमा धारण करनेवाले  
 जमभूमि के निमल आनन-से न दिखाई देनेवाले  
 पके धान की अक्षणिमा-से शोभित वेदार यहा नहीं है  
 किन्तु फेनिल रक्त से भरी  
 युद्धभूमियाँ चारो ओर फली ह ।

मुझे लालसा नहीं कि  
 घोरकीर्ति की नीहारिका मेरे चारो ओर फैले,  
 म नहीं चाहता कि  
 रक्त से साम्राय-सन्धी के परो का तपण कल्ले,

तल कोय्वतिन् कनि  
 वाडिडच्चेन् कुटुम्बतिन  
 निलयोनुयत्तुवा-  
 नल्ल मामकमोहम्—  
 मामकमोहम्, मट टु  
 खण्डड्डक्केल्लाम् वैकळ-  
 क्काममेविय महा-  
 सत्त्वयाम यूरोप्पिने,  
 निजक्म्मत्तिन् केट्टिल-  
 निम्नु, चड्डडल वच्च  
 भुजत्तालपिक्कुवान-  
 इत्यतन प्रतिकारम् ।  
 एकिलुम् विळरिय  
 कविळ्ळिक्कोलुम कण्णीर  
 च्चैकतिर विळ्ळिक्कले  
 प्रभयाल् प्रकाशिक्के,  
 मगळाचारत्तिन्नु  
 'पत्तुप्पू' पालुम् चूटा-  
 तगलावण्णम् मात्रम्  
 भेलिञ्ज भेय्थिलच्चारत्ति  
 उरळयुरुट्टिय-  
 तुण्णानुम् मरन्निन-  
 यूक्करिकत्तिरिय्क्कुमा-  
 हीनदगनरुपम्  
 मामक्कुदन्तते-  
 यड्डडोट्टु वलिक्कुप्पू,  
 माश्विन् मलनळे ।  
 मायुविन् षटलवळे ।

मुझे मोह नहीं कि  
 गला काटने की मजरी लेकर  
 अपने परिवार की दशा सुधाहें ,  
 मेरी लालसा तो बस यही है कि  
 मुक्त कर दू पाप-कर्म के बधन से  
 इस महासत्त्व यूरोप को  
 जिसने अय भू भागो को बेटी पहनायी है,  
 अपने श्रृंखलाबद्ध हाथा से ही ।

किन्तु

अपने पाण्डुर कपाला पर अश्रुज्ज्वल टुलनाती  
 जो दीपक की अरण रश्मि म और भी चमक उठे हैं,  
 जिसने मगलाचरण के लिए अपनी बेगी में  
 'दशपुष्प' तन नहा लगाये  
 जिसने अपने वृग शरीर पर  
 केवल अग-लावण्य की भपा ही पहनी है,  
 जो बेले की पत्तल के सामने  
 हाथ का कौर हाथ ही में धर  
 दीन मूर्ति बनी बठी है—  
 वह मुझे खींचे ले जा रही है अपनी ओर—  
 हट जा पहाड,  
 पट जा सागर !

—१९४४

१—मगलाचरण के लिए स्त्रिया दशपुष्प बेगी में लगाती हैं ।



## रक्तविन्दु

ई निणवणम नोक्कु,  
गौरवणताल्दय-  
मानियाय् मुखम वन-  
प्पिच्चेषुम् मुग्घात्मावे ।

सगरम् मोहिवुघ्नी-  
लैकिलुम लोकत्तिन्टे  
मगळम् वळत्तुवान्  
घम्मत्तिन् विळि वेळक्के,  
गीततन राज्यात्तिकल्-  
निन्नुमी विद्दुरत्ते-  
बभूतल नटुक्कटल्-  
क्करयिल स्वयमेत्ति,  
जीवितयनम् चैय्युम्  
योद्धाविन् हृदन्तमा-  
णो विगिष्टमाणिवयम्  
विळयुम् दिव्याकरम् ।

ईयकृत्रिममाय  
चुवप्पिल्ग्भीष्टत्वत्तिन्  
छाययो नराश्यत्तिन्  
रेसयो वाण्मीलैक्किल,  
इनियुमितिन्नोप्पम्  
लोकपोरपत्ति ३  
सुनियित्तिरञ्जिट्टु  
मट्टोन्नु नेटीलैक्किल

## रक्त-विन्दु

अपने गौर-वण पर  
अपने को धन्य माननेवाले  
सदा मुह चनाये फिरनेवाले  
र मूढ़ हृदय,  
देख ता इस रक्त-वण को ।

जो चाहता नहीं था युद्ध  
विन्दु सुनकर धम की पुकार  
जा पहुँचा  
गीता की इस पुण्यभूमि से दूर  
भू-मध्य सागर के तट पर  
जग के मंगल की अभिवृद्धि के लिए ,  
जीवन का मन करनेवाले  
उसी वीर योद्धा का हृदय है  
वह दिव्य सागर  
जहा से उपजा है यह विशिष्ट भाणिक्य ।

यदि नहीं दिखायी देती है  
इसकी अकृत्रिम अरणिमा में  
भीरता की छाया, या  
नरास्य की रेखा ,  
यदि नहीं मिलती है खोजने पर भी  
विश्व-यौस्य की खानों में  
इसकी दूसरी जोड़ी  
तो—

शान्तिमल्लखोटीरत्तिल्-  
ञ्चात्तट्टे जयलक्ष्मि ,  
शान्ति-लोकत्तिन शान्ति-  
याणित्तिन विल पक्षे ।

—१९४३

धारण कर ला विजय-लक्ष्मी  
इसे अपने कान्तिमय किरीट में  
किन्तु इसका मूल्य है—  
शान्ति, विश्वशान्ति ।

—१६४३

## आरामत्तिल्

चेनु वानारामत्तिल्  
नव्यमाम प्रभातत्तिन्  
पोनुवाग्दानम् कोण्डु  
दिद्रमुखम् तुद्रुत्तप्पोळ् ।  
चित्रमाम् चिलतितन्  
वलयोनावासात्ति-  
लेत्रयुम विशालमा-  
सुल्लमियक्कुनू तोप्पिल् ।  
स्वीयमाम साम्राज्यत्तिन्  
वलवुम् वपुल्यवु-  
मायतगवम् नाक्कि-  
क्केट्टुपाटेल्लाम् नीक्कि,  
वलयिल्क्कुट्टुडिडत्तन्-  
चिरकोत्तनक्कुवान्  
वलयुम् पूम्पाट दतन्  
धिवक्कारम सहियक्काते,  
'वालुक्ळिक्कट्टयिला-  
णेन्दु दिक्कुवळ , नास-  
मेतुक्किल्लाम् नाळु -  
मन्नभावनयोटे,  
अन्नरीक्षत्तिन् वण्णार -  
कोण्डु मुत्तुवळ चात्तुम्  
तन्तलस्थानत्तिक-  
लेक्कासनमायि,  
वानिने मरच्चुत्ताण्टट्टन्ने वाणू वीर-  
मानियाम् तन्निर्मातावुक्कुरूपमाम् कीटम् ।

## उद्यान में

नव्य प्रमात के स्वर्णिम वाग्दान से  
दिशाआ के कपोला पर अरुणिमा छा गयी ,  
तभी म जा पहुँचा उद्यान में  
जहाँ फूलो की ब्यारी में  
एक विचित्र-सा मकड़ी का जाला  
फँसा हुआ था अन्तरिक्ष में  
खूब चौड़ा ।  
वही बटा था मकड़ा  
करता था अपने इस साम्राज्य के  
बल और वपुत्य का निरीक्षण  
अत्यन्त गव के साथ—  
कही भी नहीं थी कमी  
उसकी सुरक्षा और दृढता में ।  
जाले में फँसी तितली  
आतुर थी अपने पख फडफडाने के लिए-  
उसकी यह घुष्टता ? बसी असह्य !  
मेरे पाँवा के नीचे है आठो दिगाएँ  
मेरा साम्राज्य है सतत और अक्षय  
इस अहम्मय भाव को मन में लिये  
बठा था आकाश को आवत किये  
जाले का साम्राज्य निर्माता  
एकाधिपति दर्पो उग्र कीडा  
अपनी उस राजधानी में  
जिसे सजाया था उसने अन्तरिक्ष की अयु-वणिक्जालो से  
मोतियो की पच्चीकारी की तरह ।

ओन्ननड्डियालप्पो—  
 ळरियाम् , वचिच्चीटा—  
 वुन्नतो निरालस्य—  
 नूरमाम् कण्णावर्कानुम् ।  
 निद्रये त्यजिच्चीटु—  
 मन्तरीक्षतिघ्नघ्ना  
 क्षुद्रजीवितन् दप्पम्  
 सहिप्पान् साधियक्काताम् ।  
 केवलमतिन् नेटु—  
 वीप्पिनाल् नूराय् चीन्ती  
 पाप वल, चिलन्तित—  
 ध्रभिमानत्तोडोप्पम ।  
 वाननुस्मरिच्चुपोय  
 कालत्तिनूपररप्पिकल्  
 मानवन् विरचिच्च  
 साम्राज्यमोरोन्नप्पोळ ।

—१९४३

कही हुई यदि थोड़ी-सी भी आहट  
 तो जान लेता था वह  
 कौन कर सकता था छल  
 उसकी निरलस क्रूर दृष्टि से ?  
 त्याग कर निद्रा जब उठा अन्तरिक्ष  
 तो सह न सका उस क्षुद्र प्राणी के दप को—  
 उसके एव निश्वास मात्र से  
 छिन्न भिन्न हो गया वह अनमोल जाला  
 और उस मक्कड़ का दप !  
 उभर आयी मेरी स्मृतियों में  
 उस प्रत्येक साम्राज्य की कथा  
 जिसे मानव ने रचा  
 काल के वितान में ।

—१९४३



## कोच्चम्म

उम्मर्त्तिलममणि-

त्तिण्णमल मेल्लेक्कोचि-

च्चम्मवेच्चो चेर-

पूच्चयेक्कळिप्पिच्चुम

मिन्निट्टुम् वेळ्ळिक्कण्ण-

त्तिवलेप्पालेतानुम्

त्तन्निटम करम्काण्टु

तटविक्कुटिप्पिच्चुम,

मेविनाळोर मक,

पिन्निजेज्जनालच्चि-

ल्ला विलासिनी रूपम

भगियिलेपुत्तवे ।

उच्चयामवरत्तुळ्ळ-

क्कञ्जिवेळ्ळवुम्कूटि-

प्पिच्चक्किट्टाते, वाटि-

प्पोयक्कुम्पिळुमायि,

तेल्लु दूरत्ताय निल्लू

दुग्गिम्मम् मासम कान्नि-

ट्टेल्लुमात्रमायत्तीन्न

याचक्कुमारक्कन ।

नाविनाल् नुपयुम्

पाल नुक्किट्टुम् घय-

जीविये क्षुधाजड-

दृष्टियाल् वीशिवक्कुम्

## कोचम्मा<sup>१</sup>

वह बठी थी विलासिनी बनिता,  
बरामदे के चमचमाते फश पर  
अपनी छोटी-सी बिल्ली को  
पुचकारती, घूमती  
चादी की चमकीली बटोरी में  
दूध पिलाती  
वाये हाथ से उसकी पीठ सहलाती ।  
पीछे की खिड़की का वह शीशा  
उस विलासिनी के रूप का  
और भी सुन्दर आलेखन कर रहा था ।

थोड़ी दूर पर आगत में  
सड़ा था एक याचक बालक  
दुर्भिक्ष ने उसके मांस को कुत्तर-कुत्तरकर  
हड्डियाँ शेष छाड़ दी थी  
दोपहर तक घूमा था बेचारा  
किन्तु नहीं हुई थी नसीब  
माँडी की बुद तक उसे  
मुरचा गया था उमके हाथ का दोना भी ।  
दूध पीनेवाले सौभाग्यवान जाव पर  
वह क्षणा से जड़ बनी अपना दृष्टि दौडाता  
और अपने मुह में  
खाली जीभ का घुमाता—

१ रईस घराने की विलासिना नारी ।

मानवकुलतिल् व-  
 श्रेन्तिनु पिरश्रेनु-  
 तानवन् विचारियक्क-  
 कण्णुक्कळ कलड्डुनु  
 कम्मसाक्षियाम कालम्  
 तच्चित्रम् वेळिच्चत्तिन्-  
 नेम्मपेरीडुम् तूवेण-  
 पटतिल्प्पक्त्तवे,  
 आच्च वेळक्कयालेन्तो  
 तमुत्तम् तिरिच्चाळा-  
 क्कोच्चम्म काटि टत्तण्टो-  
 सुलयुम् तण्डार पोले ।

पुरिक्कम् चुळिच्चुप्पम्  
 गज्जिच्चाळ "क्कट्तुपा  
 करिमोत्तयुम्कोण्टे न्-  
 मल्लियक्कु' कोति पट ट म ।  
 मोळिलेयक्कवनोत्तु  
 नोक्किना ना नोट्तिन  
 काळिडुम् चूटिलद्वम्  
 पारिञ्जुपोयीलल्ली ?  
 ओप्पवन नटुतायि  
 वीप्पिट्टान् , धम्मत्तिन्टे-  
 मुत्ततमणिध्वजम्  
 कुलुड्डिप्पोपीलल्ली ?  
 माञ्जुपोयवन मन्दम्  
 मुत्त टत्तुनिशुम् , तन्वि  
 चाञ्जु तन्वसालमेल  
 मयड्डानुवकीलल्ली ?

क्या लिया है मने जम मानव वश में ?”  
 सोच-साचकर उसकी आँखें कलुषित हो रही ह  
 बाल ने, जो साक्षी है कम का,  
 उस बालक का चित्त  
 प्रकाश के सूक्ष्म धवल पट पर अंकित कर दिया ।  
 गायद कानो में कोर् पडी हो आवाज  
 हिल गयी विलासिना  
 देखने लगी मुह घुमाकर  
 जैसे डाल गयी हो कमल की डाल  
 हव। के शक्ति स ।

भौंहा को तानकर  
 चिल्ला उठी वह उग्र स्वर म  
 “निकल जा कलमुहे  
 मेरी ‘विल्ली’ को तरी नजर लग जायेगी !”  
 बालक ने एक बार आकाश की आर ताका  
 क्या उसकी दृष्टि की घघवती आग में  
 ईश्वर स्वयं जल तो नहीं गया ?  
 उसने एक बार लम्बी सास छोडी  
 क्या इससे धम का ऊँचा मणिध्वज वाप तो नहा गया ?  
 बालक धीरे धीरे आगन से हट गया,  
 नारी ने आराम-नुरसी पर अपनी पीठ टिका दी—  
 अपनी लेने में देर हो रही है न !

—१९४४

## आ चोद्यचिह्नम्

पोनु ज्ञान पाटत्तेयवकु नगरारामतिबल—  
 निम्नु मीस्सायाह्लतिन जीष्णमाम् प्रकाशतिल् ।  
 शातमाय्, विशालमाय एन्नालुम वरण्टरे  
 कलान्तमाय्कराण्म् पाटम ग्रामीणचित्तम पोल ।

स्नेहपूष्णमाम् नाट्टिन—

पुरतिन् नटुवीप्पेन्—

देहत्तिलेट ट वेन—

लन्तितन् चुट्टु काटि टल्  
 चूपवे वयलित

वक्वत्तु भावुम प्लावुम्  
 वापयुम्मूलम मर—

ञ्जातुड्डम् कुटिलुक्क  
 ओम्नु दीनमाय नोक्कि—

प्पुचिरिक्कोष्टुमक्कोण्  
 निम्नु पण्टेन्नो तेच्च  
 कुम्मायम मुक्कालुम पोय ।

पवलोन पटिञ्जाट्टु  
 चाञ्जप्पोल वरिक्कोलम  
 नुक्कुम् चुमन्नुका—

ष्टेत्तिय कृपिसारन्,  
 चालुक्कट्टुक्कुन्नु—

ण्टप्पापुम् चटच्चेल्नुम्  
 नोलुमाभेरनिन—

च्चुक्किच्च वय्यालुत्ति ।

## वह प्ररन-चिह्न

सध्या के ढलते प्रकाश में  
पार कर नगर के उद्यान को  
मैं बढ चला खेत की ओर  
दिखायी दिया खेत  
ग्रामीण हृदय की तरह  
शान्त विशाल, किन्तु उजड और उदास ।

निदाघ की सध्या का गरम-नरम ज्ञाका  
मेरी पीठ पर पडा  
जसे स्नहिल ग्राम का निश्वास ।  
खेत के किनारे चारो ओर  
आम, बटहल और बेले के पेडा में  
छिपी सिमटी शोपडिया—  
जिन पर पुता मारा झड चुका था—  
दीन दृष्टि से देखकर मुस्सुराती खडी रही ।

दिवाकर पश्चिम की ओर ढल चुका था  
लेकिन यह किसान  
आया था खेत पर हल का जुआ कचे पर उठाये  
अब भी जोन रहा है हल  
अपने दुवले हाथो से  
घकेले जा रहा है बला को  
जो क्षीण होकर रह गये ह मान हाड-चाम के ढाचे ।

वेलये, इयितय—

प्योलिद्युम स्नेहिकुत्र

शीलमुळळोरास्साधु—

तन वळज्जोर निपल्,

ईविषम् निजाह्लादम

वट्टतारेनारामुम

जीवितम् कुरियक्कुन्न

चोयचिह्लमल्लल्ली ?

तळरुम कृपीवलन्

तन्टे मुम्पिलाच्चिह्लम्

वळरुनतायत्तात्री

वरम्पुम वूट्टाक्कात ।

एन्तिनाणिरुट्टिनाल्

मायक्कुवान् भावियक्कुन्न—

तन्तीरीम्म ? कण्टु—

कपिञ्ज कृपीवलन् ।

—१९४४

जिसके लिए काम पत्नी की तरह प्यारा है,  
 उस किसान की परछाई  
 पड रही है खेत पर ।  
 यह परछाई  
 कही वह प्रश्न चिह्न तो नहीं है  
 जिसका उत्तर वह अपने जीवन द्वारा खोज रहा है  
 — 'बौन है मेरे सुखा को चुरानेवाला ?'  
 मुझे लगा कि  
 कमश्रान्त कृषक के सामने  
 बढ़ता ही रहता है वह प्रश्न चिह्न  
 सारी भेड़ों की सीमाएँ लाँघकर,  
 हे अन्तरिक्ष  
 क्या करना चाहते हो अदृश्य इस प्रश्न को  
 अघकार की चादर डालकर ?  
 निश्चय ही  
 किसान ने उसको देख लिया है ।

—१९४४



मुत्तुकळ्

जीवितसमुद्रतित्—

क्वणुनारिनालुप्यु

ताविन पल महा—

सभवमिरम्पवे,

धीरमाय् प्रवर्तियुक्कुम्

चित्तद्रुळ तान वाक्कुम

चौरतन पणवळाल

पविपम रचियक्कुम्

कोच्चुराष्ट्रतेतिधु

वीक्कुम् वनुराप्ति—

नुच्चललक्कोटितुम्पाम

चितम्पल् तिळडडुडुम् ।

कालतिनुळळमक्कयिल—

क्कोळवताक्कुम् तीरम्

काणात्ताक्कटलि—

निम्नमामारिटतित् ।

चिप्पियाय चरिक्कयाम्

नित्यगान्तिप्रदडेधु

तप्पियुम तटवियुम्

व्यानुलम क्वचित्तम् ।

जीवितमतित्रिटयक्के तिनानातिलावा

पाविन्नतीक्कूत्त सत्यत्तिन् तरिक्क ?

एत्रमेल्प्पटञ्जालु मधुपाकुन्निल्लेन्न—

एत्रमेलिव वटन्नक्कम नावियक्कुम् ।

मूटुक् हृदयम मुग्धभावनकाण्ठी

मूक्केदनक्के मुपु वन—मुत्तावट्ट ।

## मोती

जीवन-सागर में  
जब खारे आमुआ से निर्मित महान् घटनाए  
उमड़ती-गरजती ह  
ता धीर-साहसी कम निरत हृदय  
अपना रक्त स्वय बहाते ह  
और उससे प्रवाल का निमाण करते ह ।  
छोटे राप्टा को निगल निगल कर  
जा मोटे बन गये हैं बडे राप्ट  
उनकी चचल ध्वजाआ में चोइष्टे  
चमक रहे ह ।  
जीवन-सागर मीमाणीत है सब के लिए  
विन्तु काल के लिए है वह मान चुल्ल भर ,  
स सागर की गहराइयो के किसी कोने में  
शाश्वत शान्ति की खोज में  
टटोलवा चला रहा है कवि हृदय  
स्वय सीपी बनकर ।

जाने क्या जीवन बीच-बीच में चुमो रहा है  
सत्य के नुकीले कण छुप जात ह जो गहरे  
जितना ही छत्पटाते ह उन्हें निकालने का बाहर  
घुसते जाते ह उतने ही अधिक अदर बढ़ाते ह द ।  
हे मेरे हृदय  
इन मूक वेदनाआ को लपेट दो अपनी मुग्ध भावनाआ से  
ताकि बन जायें वे सब की सब माती ।

मूनुकाल्लतिन् मुन्या-  
 णा गस्तिनारभत्तिल  
 तद्दुटे सताय्यनाम  
 प्रियदशानन इ'दु',  
 पूनिलावोळि कोलुम  
 त्तुवेळळक्खदरज्जुब्ब  
 मेनियिल्च्चात्तिककोण्टु  
 यात्र चादिप्पान वनु ।  
 जा मुट टत्तत मुल्ल-  
 त्तरमल ववुत्तिकको-  
 ण्टा, मट्टिलन्तित्तारम्  
 वाण्णयेकनाय निधु ।

अद्दु तानिळम चुण्टिल्-  
 प्पतरम् स्नेहम वण्णिल्  
 निधु निर्गळिक्खवे  
 हत्तिनाल् पुण्णालिम्  
 तन् करद्वळे, वेम्पुम्  
 चुण्टिने, प्पल मुग्घ-  
 सवल्पम् कुत्तिप्पिवुम्  
 मारिन, व्वलाल नित्ति  
 मुल्ल तम्मिल तेर-  
 प्पिटिच्चु सनिस्वासम्  
 तेल्लवन्नाद्रस्निग्घ-  
 भावयाम् निलक्कोण्टु ।  
 आ मनाहरमाय  
 रगवुम् पात्रद्वळुम्  
 ओमत्ताळ्ळे मन-  
 स्सिप्पोपुम् वरम्क्कुधु ,

तीन बरस पहले  
अगस्त के आरम्भ में ही  
आया था, सटपाठी इन्दु,  
प्रियदान ।

चादनी सा गुभ्र धवल  
खद्दर का कुरता पहनकर  
आया था वह  
विदा लेने के लिए ।  
हा इसी आगन में  
इसी जूही के चबूतरे पर  
हाथ टिकाये खड़ा था  
देख रहा था उसे  
यही सध्या-तारा ।

उस दिन  
बोमल अघरा पर आतुर रहनेवाला प्यार  
आँखा से प्रकट हो रहा था,  
मन से ता उसे आलिंगन में बसती  
किन्तु रोकती थी बरबस  
अपने कमल-करो को  
अपने आतुर-अक्षम अघर-पुटा को  
विविध कल्पनाओं से उठेलित उर को  
जूही की पत्तियाँ को मसलती  
वह सनिदवास खड़ी थी याडा दूर पर  
आद्र स्निग्ध भावाँ स पुलकित,  
आज भी उस मुन्दरी का मन  
चित्रित कर रहा है  
वह मुन्दर दश्य  
और वे मुन्दर कथा-मात्र,

पाणु ज्ञान, स्वतत्रमाम  
 अतरीक्षतिल, पक्षे  
 काणु'मिन्दु'व', ई वाक्कि-  
 प्पापुम मुपद्दुत्त ,  
 मुल्ल तन परिमळम  
 पुणततद्दो पोय  
 नल्ल काट्टि धुम वतु  
 कोळमयिर वितक्कुनू ।  
 एद्दन्ने तटुक्कुमा-  
 क्कण्णुनीरोपुक्कवळ ?  
 एद्दन्ने तुटक्कुमा-  
 क्कविळिन तुटुप्पवळ ?  
 कम्पिक्कळ मुरिञ्जु पाल् ,  
 वण्टिक्कळ मरिञ्जु पोल् ,  
 तन् पिताविनुम् कूटि-  
 यतिनाल मृत्ति पटि ट ।  
 'इन्दु विन्नतिल् पक्कु  
 वाणिल्ल कळक्कतिन-  
 बिदुवा स्वभावति-  
 लवळिल्लारोपिक्कान् ।

जेलिलेक्कवाटतिल च्चेन्नटिक्कयाम् प्रम-  
 णालिनिपुट तुटिक्कुन्न मानसमिधुम् ,  
 चिरवद्धमामिण तन्नपिक्कूट्टिन् मीते  
 चिरविट्टिक्कुन्न कोच्चुततयप्पाल ।  
 एद्दन्न अटक्कुमानेदुवीप्पुक्कळ अवळ  
 एद्दन्नयमत्तुमाक्करळिन् तुटिप्पवळ ?

'म जा रहा हूँ,  
 दायद देश के स्वातंत्र्य-वातावरण में  
 देख सकोगी अपने 'इंदु' को—  
 गूज रहे ह आज भी ये शब्द  
 जूही के परिमल का आश्लेष कर  
 कही दूर चला गया तरुण पवन फिर लौट आया है  
 और वही पुलक दे रहा है—  
 कसे रोक पावेगी  
 वह अपने आसू  
 कसे मिटा पावेगी  
 अपने कपोलो की अरुणिमा !  
 सुनती है  
 कट गये ह तार  
 उलट गयी ह रेलगाडिया  
 बन गये ह पिता जी भी मृत्यु के शिकार  
 इस आन्दोलन में ।  
 नहीं, उसमें हाथ नहीं होगा  
 अपने 'इंदु' का !  
 नहीं, उसके चरित्र पर  
 कलक के छीटे वह नहीं डाल सकती ।

चिर-वृद्ध सगी के पिंजरे पर  
 चिर विमल हो पक्ष फन्फानेवाली सारिका की भांति  
 उस प्रेमशालिनी का धडकता हुआ हृदय  
 कारागार के द्वारों से जा टकराया है—  
 कसे वह रोक पावेगी आहें,  
 कसे वह रोक पावेगी दिल की धडकन !

## अपिमुत्तु

वचि यिलपिमुखत्तेत्ति जान समुद्रत्तिन  
 नैचिल् वानमत्तुन वट्टारिप्पिटिपोल  
 चारयिलप्पटिञ्जारे चन्नवाळत्तिलक्काणाम  
 सूरविवत्तिन्नट्टम ! नट्टुड्डित्तेरिवकुनु !  
 सागरम पिटयवे, विनुम्पि विनुम्पिक्का—  
 ष्टागमिच्चोत्तुम नीलवणि चूण्णिये स्नहाल  
 चालवे तट्टुक्कुवान वलप्पण नीट्टम वय्यु-  
 पालता विलड्डने विळरम् मणलूक्कर !

तन्नवरोषत्तिलरुगपयम् जलरेख-  
 येनु मत्तटिच्चिट्ट नियताधिकारत्ते  
 पिन्नयुम परत्तुवान् जनतारक्षकरायि-  
 निन्न नीनियत्तट्टिक्कटक्का नारभिक्के,  
 शूरनामोश् परमाळ मुन्पी नाटिट्टे  
 धीरमाम् सिरारक्तम् तिळन्नुमता हस्तम्  
 कुत्तिय वयपिल वीरमभवम कोण्टु  
 तीत्त नाटक्कम् नट्टिप्पिक्कयल्लल्ली विरवम् ?  
 हा ! सहिच्चिरनील पूवक्कळ्ळम स्वेच्छा-  
 दासमाम् चवात्तिट्ट दूप्तमाम निपन पोनुम !

## नदी-समुद्र सगम पर

म पहुँचा

दूर पश्चिमी क्षितिज पर स्थित बचि<sup>१</sup> के

नदी-समुद्र सगम पर ।

सूय विम्ब की नौक

समुद्र की छाती में भागी गयी कटार की मूठ सी लग रही थी ,

लहू में लथ-मथ भय-स्तब्ध तडप रहा था समुद्र ।

और रोती-कलपता आ रहा थी नील-वेणी चूर्णी<sup>२</sup>

जिसे स्नेहपूर्वक राकने के लिए

बढ़ आयी उसकी सखी सागर-तट रखा

अपना तिरछा पांडुर सक्त-कर फनाये ।

जिसने अपने अभिषेक के समय की प्रतिज्ञा को

जाना मात्र जल धारा और जिसने उमत्त हा कर

अपने अधिकार की सीमा रेखा को करना चाहा विस्तृत,

जिसने चाहा जनता की रक्षाय निर्मित नीति को नष्ट करना,

उस सूरमा पेरमालु<sup>३</sup> की छाती में कटार भाकने के लिए

बढ़ आया था एक हाथ जिसमें उबल रहा था

मेरे केरल का पौरुषमय रक्त ।

क्या यह सच्चा उन वारतापूर्ण घटनाओं पर आधारित

नाटक का अभिनय ता नहीं कर रही है ?

हाय, प्राचीन केरल जो

स्वेच्छाचारी शासन की दण्ड-शूल छाया तक

नहीं सह सकता था

१ बचि—अर्थात् तिरुवच्चिक्कुलम्—प्राचीन केरल के शासक चेर सम्राटों की राजधानी जिम्का सम्बन्धित नाम 'बचि' है ।

२ चूर्णी—केरल की प्रसिद्ध नदी जिम्का दूसरा नाम है परियार ।

३ पेरमालु—चेर राजवंश का अंतिम राजा ।



रगमद्भन् मारि ? जनतातत्रत्तिटे  
 मगळ मणित्ताट्टिलिनतिन शवक्कट्टिल ।  
 मितिदुम मुत्तिन पट्टम नेण्टिमलणिञ्जन्नि-  
 प्पोनिळम तुट्टुप्पुटप्पात्तैपुम् निरक्कळे,  
 सागरराजाविट वपहारवुम् चुम-  
 प्रागमिच्चिरन्नवराय माहिनिक्कळे,  
 वेट्टिनिलक्कुवतेन्तु पण्टत्ते महादय-  
 पट्टण' मिताम मुखम कुनिप्पिन् विलपिप्पिन ।

पायि वरळम् मूनु मुरियायाट्टिञ्ज वि-  
 ल्तायि सस्कारत्तिन व्राणपञ्जु क्किटक्कुत्तु ।  
 एतु वव्यिनियितिन् मुग्गि कूट्टीदुम ? व्राणिन्  
 मडुर मधुरमाम र्वमनिनिक्केळक्कुम् ?  
 वारित्तिलिनि महाजनशस्तिनन्निच्छा-  
 वारियाम् समुज्ज्वल वमतत्तोट्टुक्कुवान् ?  
 पावुक्कवथ किनाविन्टे पोन्वसविट्ट  
 पावु नेय्तात्तिन्नत्ते नग्नत मरयन्नामा ?  
 तेल्लु दूरत्ताय नीलप्पट्टिमेतारो पच्च-  
 वक्कल्लुपाल्लुत्तुक्कुवट्ट वापलिलन्नाणाक्कुत्तु ।  
 अळियुम् चकिरियिल् निम्न वाचनक्कम्पि  
 विळयिच्चूटम नित्य निस्वराणनिलाक्क ।  
 अवर तन् अरम्पिल मज्जयुम् कूट्टिक्कान्नु  
 सवमाक्कुत्तु दीन वरळथीये क्षामम् ।

उसका दृश्य आज कितना बदल गया है !  
 जन-सत्र के लिए जा मंगल-मणिमय पानना था  
 आज वही उसका गव-मच बन गया है !  
 सध्या के सुनहरी सिद्धरी रग में डूबी  
 डाल कर माथे पर उज्ज्वल मोतिया की लडी  
 हे मनमोहिनी लहरियो  
 तुम पहले यहाँ आया करती थी  
 सागर-राजा के लिए उपहार ले कर  
 आज इस तरह ठिठक कर क्या खडी हो ?  
 यही है प्राचीन महाद्वय नगर  
 सींग नवाओ, आसू बहाओ ।

वह केरल ता नष्ट हो गया  
 उस चाप के तीन टुकड़े हा गये  
 धनुष की प्रत्यचा ढीली पड गयी  
 अब, हाय, कौन इस अक्षत रखेगा  
 किस दिन सुनायी पड़ेगी इसकी प्रत्यचा की मन्द्र मधुर टकार ?  
 कौन इस पर सधानेगा  
 मानव शान्ति का उज्ज्वल अमाघ कम ?  
 जाने दें, वह कहानी  
 यदि मैं बुनू सपना के सुनहले साने-वाने  
 तो क्या ढेंक सकूंगा आज की नग्नता को ?  
 थाडी ही दूर पर जल विमान पर  
 दिखापी देने ह कई छोटे-छोटे द्वीप—  
 नीली मग्नमल पर रखे हरित भरवत-से सुन्दर  
 उनमें रहत है निपट अकिंचन जन  
 जा नारियल के सडे हुए द्यितका के रेगा स  
 बनाने ह साने क तार  
 किन्तु स्वयं उनकी गिराया की मग्ना तव को  
 कुतर-कुतर कर खा जाता है अवाल  
 बनाना है केरल-श्री का केवल गव ।

काट्टिनाल वेळळप्यायपळळ वीर्तात्तारलासम  
 नीटि टलाञ्जुलञ्जाटिवक्ळिकुम पल कप्पल,  
 मुन्नु सागरजात वाणिज्यश्रीतन वळळ-  
 क्कोम्पनानकळ पोल कत्ताटुमिटडळिल,  
 नालचु भीनिनायि मुड्डियुम पलप्पायुम  
 आलस्यत्तोटे वेरम वयराय पोड्डिडप्पानुम  
 अड्डिडडाय चिल चीनवल तन कालम मात्रम्  
 मड्डिड नित्तपतु काणाम् परुत्तिन मलनोट्टित्तिल ।  
 वोच्चु ताणियिल प्पट्टि ट च्चूण्टलिल मानम वण्णु  
 वेच्चु काण्टनद्व्याते चट्टित्ताप्पियुमायि  
 मवुमिक्किटात्तमार तन पूवरी नाट्टि  
 भावुकम पुलत्तिय नाक्कित्तलवमार ।  
 लीलयिल माताविट मट्टियिल वुत्तुमारमार  
 पोललक्कटलिलुम कायलिन नट्टविलुम्  
 तिर तन चवि पिट्टिच्चाट्टिच्चु दुस्सामय्यम्  
 तिरळुम कोटक्काटुकाट टु वनत्तिलुम्  
 ओट्टिय मरिक्कुमेन्नात्तिलुम वच्चिप्पाट्टु  
 पाट्टियुम् कुलुड्डात चिरिच्चुम रमिच्चवर ।  
 अवरिल् कोण्टुकाट्टि टन साहसम समुद्रत्ति-  
 न्नवसानमिल्लात्त गाभीयम रण्टुम् वण्टु  
 वेरळत्तिनु मरन्नीट्टुवान् वय्याद्वार-  
 धीररेत्तिरक्काद्यम् कट्टिञ्जाणरिञ्जारे ।

फनिल जलधिये नाक्कि जा —ननिन् पाय  
 जीनियुम कट्टिञ्जाणु मन्नु नायिनि नट्टुम् ?  
 एन्नु नम्मुट्टयाणन्नभिमानत्तान जभि-

पहने जहाँ जन विहार बग्न थे  
 वायु-सूने श्वेत-पात्राङ्ग अनज यान—  
 समुद्र से उत्पन्न वाणिज्य-स्तम्भी के सुन्दर गजराज जम—  
 वहाँ आज शिवायी देने ह बवल कुछ फोक जाल  
 खाली पट जा बालसपूवक हुक्की लगान ह और लें आत ह  
 दा-चार मडलिया चाला का निगराना में ।  
 चपटी टोपा पहने बैठे ह निश्चय छाटी-छाटा नावा में  
 कुछ बालक अपने दाटा पर नजर गडाये  
 उनके पूवज ही थे नाविक नेता  
 इस दग क सौभाग्य विधाना ।  
 वे समुद्रा और पच्छिमी के जन बिताना पर  
 उठनी तरगा क वान पकड कर  
 उन्हें नचान थे ।  
 चाहे क्या ही उग्र दरमानी तूफान आ कर लटे  
 और उनकी नावा का उतट देने की चुनौती द  
 तब भी डम मापर की गाद में  
 वे रहते थे अचञ्चल  
 गात ये नौका-गीत करत थे हाम-परिहाम  
 जस मा की गात्र में खलता है लाना-सालुप बालक ।  
 उनमें मन दखा था  
 आधी का साहस और सागर का अनन्त गाभीय ।  
 कसे भूल पायेगा केरल उन बारा का  
 जिन्होंने पहलें-पहल उद्धत तरग-नुरगा को  
 लगाम लगायी ।

मने दौडाया दृष्टि फनित नागर की आर  
 उमकी खोई हुई लगाम और जान  
 हम पायेंगे किम दिन ?  
 यह हमारा है—  
 इस स्वतंत्रता-वाय क गौग्व न पुनक्ति

कुरुतोरी वितानतिल केरळ वाणिज्यश्री  
 तनुटे युरवन्ळेयिच्छपाल मयान विटटु-  
 तिनु निभयम नुरप्पुविरत्ताटिप्पाटुम ?  
 एधु नम्मुटयाय नाटु काकुवान् दूरे-  
 च्चेन्निरम्पीटुम ताक्किन् कुरयाल परमार  
 ओनु वेट्टिच्चुम् कोण्टु नम्मुटे पटक्कप्पल-  
 तन निर कुतिच्चोटिक्कटलिल चुर मान्तुम ?

हा, वरम् वरम ननमाद्दिन मन नाटिट्टे-  
 पावन पताक्कळ कटलिल तत्तिप्पारम ,  
 हा वरम वरम नून माद्दिन मेन नाटिन्टे  
 नावनद्दिडयाल लोकम् थद्विक्कुम कालम वरम ।  
 ई विचारत्तिन मात विरियान निजोप्पळ-  
 भावन चुक्किक्कोप्पेन मनमिरिवरवे,  
 अन्तियिल् महादव क्षेत्रत्तिल् तिन्नुम् काटि टल्  
 नीन्ति वन्नीटुम क्षीणक्षीणमाम शप्पारावम  
 चेरमुभेलिक्कळुम तद्दडळिलकरलहिनडुम्  
 चेरमान् परम्पिन्टे नीण्ट रोन्म पोले  
 अम्पलम् पल पळ्ळिळ तद्दिन्ताप्पुक्कळ, कायल-  
 तन् परम्पिक्कळेयाक्क विह्वलमाविर  
 विलयिक्कयाय वानिलटे यात्माविल गान्त-  
 निलयेस्महिक्कात्तारन्तिनममुद्रत्तिल ।

केरल की वाणिज्य-लक्ष्मी  
 किस दिन छोड़ेगी अपनी नौकाओं को  
 जल वितान पर स्वच्छद विचरण के लिए  
 और किस दिन निमग्न हो कर तोड़ेगी  
 फना के कुसुम ?  
 गा-गा कर नाचेगी किस दिन ?  
 कब हमारे लडाकू जहाज  
 देश की रक्षा के लिए तनात,  
 विद्वर देश में जाकर अपनी तोपों की गरज में  
 दुश्मना को चौंकाते हुए  
 उछलते-कूदते दिखायी देंगे और  
 जल वितान को चीरते हुए आगे बढ़ेंगे ?

हा, आयेगा अवश्य आयेगा वह दिन  
 जब मेरे देश की पावन-भक्ताका  
 फहरेगी सातों समुद्रों के ऊपर,  
 हा, आयेगा, अवश्य आयेगा वह दिन  
 जब मेरे देश की वाणी ससार आदर से सुनेगा ।  
 अपनी भावनाओं को समेट कर,  
 इस विचार पर सँक-सँक कर  
 मैं उन्हें ऊँमल कर रहा था, तभी  
 महादेव के मन्दिर से, हवा पर तरता  
 आने लगा सध्यावालीन प्रक्षीण गखनाद—  
 यह था माना धेर राजधानी का एतन-स्वर  
 जहाँ आज साँप चट्टा-सी लडाईं मिडाईं चलती है,  
 मन्दिर-मस्जिद गिरजे और  
 नारियल व वगीचा को विह्वल करता हुआ  
 वह स्वर विलीन हो गया—  
 गगन में मेरी आत्मा में  
 और सभीपवर्ती जदात सागर में ।

तल पोक्कि वान नाक्कियाराणा गीलच्चीन—  
 बल केट्टि निल्कुनतीयपारतयिकल ?  
 मुक्किलत्तिळ्ळडुनु वपुत्तित्तिप्पाय  
 पक्कलिन चितम्पलिन वेणनुक्कडिन्डुडायि ।  
 दूरयाक्कपक्केपुम कुन्निटे मेलट टत्तु  
 नारेत्तिर निरक्कितिरानोरम्पळि मिन्नी  
 तुगमाम निर पर वेच्चतिन् मलम्भागत्तु  
 मगळम वळत्तुन्न तेडिडन् पूक्कुलपाले ।

—१९४२

सिर उठा कर  
 देखा मने ऊपर—  
 कौन खड़ा है यह इस अपारता में  
 अपना नीला जाल फलाये ?  
 ऊपर चमकते दिखायी दे रहे थे,  
 श्वेत-खण्ड छोटे छोटे  
 दिवस के चोइटे से  
 जो खिसक बच निकले थे !  
 दूर,  
 पूव की पहाडी के ऊपर  
 धवल रम्य किरणोज्ज्वल चन्द्रमा  
 चमक रहा था,  
 जैसे धान के मापक भाड पर धरी हा  
 नारियल की मागलिक मजरी !

—१९४२



## शवप्पेट्टि

कोच्चुतारकदडळे ।

नलक्कुविन इरट्टिटे

मच्चिलाविलुम निद्वण्ड

आत्मीयप्रकागते ।

नेरियारिपकळाल्

नेययुविन् स्तभिप्पिच्चु

पारिटम् वाप वारल्लि—

न्न्तिमावरणत्ते ।

मन्निने वैरक्कीटुम

इरळिन गळम् कोययान

उन्निय भास्वच्चन्नम

इळकुम करम पोविन,

तच्चिरविराधि तन्

नच्चिलूटवे तुळ्ळुम्

कुच्चिरोममात्तोरा

चुवप्पन कुनिरये

वम्पिट्टुमतिन् ररिम

वट्टिच्चु विट्टुम्वाण्टु

मुम्पिल वप्पेतिप्पायि

विस्वजतावाम नाळ ।

पूवुकळ वितरविन् आरमजावितत्ताला—

भावुयप्रतावा वरमा मागद्वण्डिन ।

पिच्चुमाट्टुक्कित्ता प्रूमामिरळू नच्चिल्लू

तच्चुवट्टमत्ति निनात्तिनुमुणन्नन्ता ।

## शव-पेटिका

नन्हे-नन्हे तारा !  
कातते रहो सूत आत्मीय प्रकाश का,  
भले ही रहो तुम  
अधकार की छत पर !  
बानने जाओ महीन घागा से  
अन्तिम आवरण, कफन, अधकार का  
जिसने किया है स्तब्ध जग को  
वरता है उम पर शासन ।  
सम्मुख पहुँचा है जग-जयी नूतन प्रमात  
भाम्बर रश्मियो का चक्र हाथ में उठाये  
विश्व को दग्ध करनेवाले अधकार का  
गला काटने के लिए  
चञ्चल अयाला वाले लाल घोडो की  
रास को ढीला कर  
अपने चिरन्तन विरोधी की छाती पर से  
सरपट दौड़ता हुआ ।

विखेर दो फून  
उम मग नदायी के भाग पर !  
जाग उठी हैं नन्हीं बलिकाएँ  
यद्यपि नूर अधकार खडा है उनकी छाता पर पाँव जमाये ।

पातिरथ्क्ववन् कक्म—  
 बलियिल, तनिक्वेलुम  
 णतिलुम् बलियताम  
 शक्तिये ग्रहिक्वाते  
 वन्कटल् विरिमारिल्  
 वाणमुक्कीटम् अललु  
 तन् कपलेतिक्वाति  
 चुम्बिच्चु विटन्नालुम  
 नवमाम स्वातयत्तिन  
 स्वच्छ दगानम् मूळुम्  
 पवमाननेकुम्भो—  
 रुक्कटावेशतोटे  
 पोन्तिटुम् तिरक्के—  
 च्चुरट्टियात्ताट्टिप्प—  
 मेन्तिन मलिननाम्  
 रिप्पुवोटेत्तिल्लो ।  
 मूतनामिरुट्टिने  
 मूटुवान शवप्पेट्टि—  
 क्कुत्तुम् नीलप्पट्टु  
 पुल्लुक्कळ निवत्तट्टे ।  
 इरुळिन् पुराहित—  
 रत्तयुम करुप्पुट्टु—  
 प्पियलुम् वव्वालुक्कळ  
 च्चेययट्टे शववमम् ।  
 जातक्कोत्तुक्कम ताप त्ति  
 मूटणम इरुळिने  
 प्रतवुम् कूटिप्पुर—  
 त्ततयानणयाते ।  
 नूरुनूरिळ्ळक्कळ वाणाताविलुमन्ता  
 नूरुनूरिळ्ळिनुम् पाराट्ट ट्ठसवप्पट्टि ।

बसा है यह सागर  
 आधी रात की बेला में खुराटे भर कर सोनेवाला—  
 बिसार कर अपनी अप्रमेय शक्ति  
 घूम रहा था उस अधिकार के चरण  
 जो चटा बठा था इसकी छाती पर ।  
 किन्तु सागर जब उद्यत हो गया है  
 अपने दप पूण शत्रु से जूझने के लिए,  
 उत्सुग तरंगों की मुट्ठी बाधकर  
 तब स्वातन्त्र्य गीतों को  
 गुनगुनानेवाले पवन की ओर से  
 उत्कट उत्तेजना पाई है उसने ।  
 तणदलो,  
 बिछा दो काला रेसामी कफन  
 मत अधिकार की गव-पेटिका को  
 समुचित ढँकने के लिए ।  
 लहराता हुआ काला चोगा पहननेवाले  
 ये चमगादड़ पुरोहित  
 सम्पन्न कर दें अत्येष्टि कम,  
 दफना दें इसे इतने गहरे  
 कि उसका प्रेत भी  
 फिर कहीं मडराने न पाये ।

राज किया है सौ-सौ अधिकारों ने इस धरा पर  
 पर सौ-सौ अधिकारों के लिए यह धरती है  
 एक ही गव-पेटिका ।

—१९४५

## भारतसन्देशम्

आवु ! सोदरि, चीने  
नी स्वतत्रयायल्ला,  
भावुकमाशसिष्णु  
निटे तोपियामित्य ।  
चेतन वेरतेया—  
यिल्ल तिघ्नता तीव्र—  
यातन नुकम तट्टि  
नीवकुवान कपिञ्जरलो ।

घोरयिल्वुक्कुळिच्चालुम्  
कण्णुनीर कुटिच्चालुम्,  
घोरमाम् एटटाप्पेट्टु  
युगमाय्वकपिच्चालुम्  
सारमित्तवयोन्नुम्  
नम्मुट्टयात्माविन्नु  
पारतश्च्यतिन् वाघ  
भीतिन्नावुदमत्र ।  
चीञ्चुपोम् चिन्ताशक्ति—  
यळियुम् स्वसस्वारम्  
माञ्चुपामात्मारोग्यम्—  
मृत्युवाणतिल् भन्म् ।  
नीष्टारा शस्त्रत्रिय  
नी सहिच्चिलेन्नाविल्  
वीष्टुमीयात्मीयमाम्  
सौभाग्यम् लनिप्परुत्तो ?

## भारत सन्देश !

हाय ! वहन, चीन !  
तुम तो स्वतंत्र हो गयी  
म तुम्हारी सखी  
मगल कामना करती हूँ !  
जिस तीव्र यानना को  
तुम्हारी चेतना पी गयी, वह व्यथ नहीं हुई,  
तुम अपने गले का  
जुआ हटाने में समर्थ हुई !

लहू में नहा उठी,  
आँसू पी गयी  
आठ भयानक वर्षों का  
तुमने एक पूरे युग की तरह बिताया  
काई चिन्ता नहीं—  
हमारी अल्पचेतना को परामून करनेवाली  
परतंत्रता ही भयानक अबुद-व्याधि है !  
उसके कारण  
चिन्तन की शक्ति हत हानी है  
संस्कृति संह जाती है  
आत्मा का चलय नष्ट हो जाना है,  
इसमे तो मृत्यु वही स्पष्टणीय है ।  
अगर तू  
न मर्ती यह सम्भ्रा गत्य प्रयोग  
तो क्या कर पाती यह आत्मीय मौभाग्य प्राप्त ?

चडडलयपिञ्जप्पाळ  
निनात्मावाकाशतिल्  
एडडनेयेल्लाम् चेय्नी—  
लान दनत्तम् तापी ?  
एडडनेयेल्लाम् दि य—  
स्वातन्याह ळादम् पाडिड—  
यडलक्कटलिलम  
कुनिलुम मुपडडील ?

नीळुवान् विरोधमि—  
ल्लात्ताराक्कयाल स्नह—  
माळुमीस्सहजये—  
योनु पुलकुक्का गडम् ।  
कोळमयिक्कोण्टीट्ट  
निनस्वतत्रागस्पर्णिल्  
मामकागकमटि—  
ताट्टये ! मुट्टियोळम ।  
हिमवल्प्पास्वत्तिकल  
आधु नी चेवियात्तिल्  
मम मानसम तुट्टि—  
क्कुन्नतु वेळक्काम् भद्रे ।

मट ट्ट राज्यत्तिन् इमशा—  
नत्तिमलान दाधु  
विट्ट ट्ट वीपिप्पोरल्ल  
नम्मट्टन्निरुन्नालुम्,  
नामरिञ्जीलाज्जप्पा—  
नात्महृत्यय्यकाम् पयूजि—  
यामयिल्क्केरम् मट्ट—  
यामुक्क मारेप्पाले,

जब तुम्हारी जञीरें खुली,  
तो हे सप्त,  
तुम्हारी जात्मा किस उल्लास से  
आकाश पर नृत्य करने लगी !  
स्वतंत्रता का दिय आह्लाद  
सागर में, शल में  
कहाँ कहीं न गृज उठा ?

जब तुम अपने स्वतंत्र करो से  
करो गाढ आर्लिगन  
अपनी इस बहन का ।  
तुम्हारे स्वाधीन शरीर के स्पर्श से  
पुलकित हो जाये मेरा शरीर  
नख शिखर पयन्त !  
भद्रे !  
अगर तुम हिमालय के पार्श्व में जाकर  
कान लगाओगी  
तो अवश्य मेरे मानस का स्पन्दन  
सुन सकोगी ।

हम दोनो  
अय राज्यों की चिता पर  
आनन्द के आँसू नहा बहाती,  
मगर, हमने नहीं सोचा था  
कि यह जापान  
आत्महत्या के लिए  
'फ्यूजियामा' पर चढ़नेवाले  
भूढ़ प्रेमिया की भाँति



तामसस्वभावयाय  
 मुनपिले पोम् साम्राज्य—  
 कामनयोटे दुरा—  
 रोहमाम् पन्म पूकि  
 ई विघम्, ओरु गति  
 वरे विल्लाते स्वीय—  
 जीवितम् लावाद्दार—  
 त्तिकल् वीप त्तिटमेन्नाय ।

प्राचि तन रक्षय्यवायि—  
 वकुलच्च विल्लाणन्नु  
 हा ! चिरम् भाविच्चोरा—  
 वक्त्रवित्रमक्करन्  
 पपुते मेय्यिल् प्पट्टुम्  
 रक्तदाहियाम वित्तन्—  
 पुपुवाय सहोदरि  
 निट्टे मेलनकाणप्पेट्टु !  
 चोरये, वक्कणीरिने  
 वप्पिननूट्टि स्वीया—  
 हारमाविनया त्रौय—  
 मिपञ्ज पाटोरोन्नुम्  
 दूरेयुमट्टिवेयु—  
 मात्र मोदरिमार तन  
 दूनदशनसाप्—  
 चरित्तित्ति मेलनकाणे  
 एदुडने मिपि वल—  
 द्दुत्ताते नोवुन्नु नम्मळ  
 एदुडने सापोक्तिये—  
 च्चुण्टिल् वक्करयक्कुन्नु ?

अपने जीवन को  
ज्वालामुखी के मुह में झोक देगा  
तामसी साम्राज्य कामना के  
बन्धे पर चढ़,  
गतिहीन बनकर ।

प्राची की रक्षा के लिए  
सज्जित धनुष का  
स्वाग रचनेवाला  
बह शूर कुटिल विश्रम  
दिखाई पटता था  
हाथ, बहन,  
तुम्हारे गरीर पर  
धनुषाकार रक्तमोही कीड़े-सा ।  
गाणित आसू और पमीना  
सबका  
अपना आहार बना डालनेवाले  
इस कीड़े के रेंगने का निगान  
दूर समीपवर्ती सभी सत्रेलिया की  
दुःख भरी  
पावन गाथा पर दिखाई दता है,  
तब हम बँस  
देख सकने हैं अकल्पित नयना स ?  
और कसे दवा सकने हैं  
गाप वचना का होठो म ?

नोवुमकथ सखि,  
निटे हृत्तटम् विट्टु  
पोवुक्, रिपुविनुम  
न म नेरु नम्मळ ।

पावनमुदिनमा—  
णित्रेनि, क्वेन सम्पत्तुम  
जीवनुमोरवना  
णेटे मोहनत्तासन ।  
इन्न, तज्ज मपत्तिल्  
शान्ति ! शाश्वतशान्ति !  
एनु वानवत्तिप्पू  
पारिम्मु मलस्सन्दशम् ।

सगरव्रणितमाम्  
सवराज्यतिट्टेयु—  
मगतिल् स्नेहम् पुर—  
ट्टीट्टुवान कपिञ्जेक्किल  
मानवन यत्तट्टे  
निर्मातावावाम्, यत्र—  
मावरतवन्, स्वयम्  
तीत्त यात्रिक्कसन्ति  
इन्न मानवात्माविन  
मारिल् निश्चलसन्ति —  
तोत्तुयत्तुवान् कपि—  
ञ्जिक्किला मनप्पत्वम् !  
पुरदाहवमाय  
रौद्रनत्रमाणोरा  
परमाणुवुम् आर—  
ण्णेन्नालुम् तुरक्काते

हे सखि,  
जाने दो वह वेदना भरी कहानी  
करें हम  
शनुआ की भी भगलकामना ।

आज का यह दिन  
मरे लिए पुण्यमय है,  
मेरा घन है और मरा प्राण है—  
माह्नदास  
आज उसवे जमदिन पर  
म दुहरा-दुहराकर ससार का  
अपना यह सदेह दे रही =  
'शान्ति ! शाश्वत शान्ति !

काग !  
मैं लडाई के घावा से भरे  
सारे देशा क शरीर पर  
प्यार का मरहम लगा पाती !  
मानव जो बना था यत्रा का निर्माता,  
वही अब बन गया है स्वय यत्र ।  
आज वह यत्र शक्ति  
जिसका निर्माण मानव ने किया  
मानव की ही छाती पर  
खडी होकर गरज रही है ।  
काग !  
उस अपलस्थ मनुजता को  
मैं उठा पाती !  
प्रत्येक परमाणु है  
पुरदाह्व रद्र नयन  
भगर उस नयन को खालने नहा देती

जनुव भय्याल् वाण  
 विश्वसन्नि तन्मुन्पिल  
 मनुजन् कुनियक्कात्त  
 तन्तल कुनिच्चैक्किल !  
 भूविलेडुडुमे विट—  
 श्नैक्किल् निमलात्मीय—  
 जीवितम् स्वातश्च्यत्ति—  
 शुज्वलप्रकाशत्तिल !  
 अल्ल, मत्तरमल्ल  
 जीवितम् यनम्तान—  
 शुल्लसिच्चखिलरम्  
 कममाचरिच्चैडिक्कल !  
 इल्ल मट टोह चिन्त—  
 यी महान्निक्किल  
 नल्लतु चराचर—  
 इडडस्वेल्लाम् भवियक्कट्टे !  
 अन्तियुम् जयन्ति यिल्—  
 प्पुक्कवोळ्ळम्भु कयिल  
 एन्तिय वेळ्ळित्तार—  
 त्तिन्निमल् वणनू न चुटि ट  
 मामक्स्वातश्च्यत्ते—  
 उजीवितचक्कत्ति मेल्  
 आमन्दम् नूट टुम कोण्डु  
 भवुमेन् मक्कन् वाय क !  
 सोत्तरि ! परापीन  
 तिन्न, जान् श्वसियक्कट्टु  
 मोदवुम् स्वातश्च्यवम्  
 माहनन् श्वसियक्कट्टुम्पाळ !

—१९४४

करुणामयी विश्वरक्षित,  
 काश ! मानव उसके सामने  
 अपना उद्धत शीश नवा देता !  
 काश !  
 स्वतंत्रता के उज्ज्वल प्रकाश में  
 निमल आत्मीय जीवन  
 सारे ससार में  
 विवस्वर हो पाता !  
 जीवन निरी स्पर्धा नहीं,  
 यह है पावन यम ।  
 इमी भावना के साय  
 सभी लोग कर्माचरण करते  
 कितना अच्छा होता !  
 आज के मंगलमय दिन  
 अथ कोई भावना नहीं—  
 मंगल हो सारे चराचरा का ।"

लो,  
 रजत तारे की तकली पर  
 मूत कातती हुई सध्या भी  
 इस जयन्ती में भाग ले रही है ।  
 मेरी स्वतंत्रता के मूत को  
 अपने जीवन के चरखे पर  
 निरलस होकर कातनेवाले  
 मेरे बटे की जय हो !  
 हे बहन,  
 मैं पराधीन हूँ क्षिप्त हूँ  
 लेकिन  
 मेरा मोहन जब साँस लेता है तो  
 मैं भी स्वतंत्रता और आनन्द की साँसें लेती हूँ ।

## कल्ककरियुटे कान्यम्

मदपरिपाटलम् लालसिक्कुम  
सुदतितन् गण्डतलमुरम्मि  
ओर वैळिच्चत्तिटे वट्टपोले—  
युरळुमा लोलाक्किन् वरमोति  
अक्केक्किटक्कुन्न वल्करिय—  
पुक्कयुटे कुञ्जिनेप्पोलक्कगति

'चिरि वरम, शस्त्रपरजननाय  
परिहसियक्कट्टे सहिच्चुक्कोळ्ळाम ।  
इरळिन्टे वट्टयिक्कल्करि जा—  
नरिय वैळिच्चत्तिन् प्पचिरियुम् ।  
उलयिल्क्कटनु ती तिसु चावा—  
मुलक्किल्प्परघ्नारी दुभगनुम  
चिल मक्कुट्टडडळ्ळ दप्पमायि  
विलमुवाः पोन्नारुमानुपोलम् !  
विमलयाम वण्णाटितन् करळिन्—  
दामवुम् मरविच्च धीरतपुम्  
चिरिपुरण्णोरेन्टे चुण्टु कोण्टाल्—  
त्तरियावु मेऽऽ सौमा यमोर्णु ।”

## कोयले का आदि-काव्य

सुन्दरी के

मदारण मनहर कपोल से सट कर  
भूलनेवाला क्षुब्ध का चमकदार हीरा प्रकाश-कण-सा,  
दूर पड हुए कायले को  
घुँँ का चच्चा समच कर  
बोला

“हैंसी आती है मुझे

हो सक्ता है अनात्मिक मुझे अण समझें,

मेरा उपहास करें

म उसे सहने को तयार हूँ ,

लेकिन, सत्य तो यही है कि

यह है कायला—

अघकार का टुकड़ा—

और म हूँ प्रकाश की मधुर मुस्मान ।

मह दुभय,

पदा ँआ है बूल्हे की चित्ता में

जल जल कर मरने के लिए,

और हम जमे हैं दुलभ राज-मुकुटा को सजाने के लिए ।

कसे सत्य हो सकता है यह

कि हम दोनो एक ह ?

विमल दपण के अन्तरण की

निष्प्राण शान्ति और जडवती धीरता

चूर चर हो जाती है मेरे मुस्मित अघरो का स्पश पाते ही ,

सोचता हूँ

मैं कितना सौभाग्यशाली हूँ ।’



'मति परिहासम् । सुदुम्बविद्धि—  
द्युति मुक्ताङ्गुली भाग्यवाने ।

युनुकुन्तळतिन् निपलु पटि ट,  
ननुननप्पोद्दुम् वियार्पिल् मुद्धि  
अरळुमद्दुनायवनित ट —  
योरु वैरुम वेप्पिन्क्णिवमात्रम् ।  
घरणिन्तन् गभत्तिन् चूटरिञ्जे,—  
नरचन्मुटियिलिरियक्कानल्ल,  
ललनमार तन् कविळोटुरम्मि—  
यलसमाय् मळिप्पतिनुमल्ल ।  
पेरिय मण्णुटि टन्नक्किरुन्नु  
चिरतपम् चेत किरातनिल्ले,  
वरकवि वाल्मीकि ?—या महानी—  
भरतराज्यत्तिटे जीवितत्ते,  
निरुपमदीप्तियुम चूट्टुमेकि—  
सुसुरचिरमाविनान त महस्माल् ।  
ओरु वाटनायिप्पिरन्नवन वा —  
नोरुपाट्टु मण्णिल्लत्तपिच्चवन वान्—  
अनवधि लाहमलिच्चलिच्चि—  
ट्टुनघमाकुम् मयि वानोरुक्कि,  
अनलन्टे नाळमाम् तूवलाले  
अनततन्नात्तादगाक्किळक्काम्  
नरनवसस्वारवीरकाव्यम्  
करुणरौद्रादिरसम् कलत्ति  
विविधयत्रत्तिन् वटिक्कपुन्न,  
विगल्लिक्किळ्ळिन् वान् पक्कत्ति ।  
अनुकरिक्कुन्नु जानामहाने —  
यनुक्कम्प्यनाणु नी भाग्यवाने ।'

'व द करा यह परिहास,  
 अरण कपोलो की मनोहारिता की  
 चूम चूम कर क्षमनवाले हे भाग्यवान !  
 तुम हो मिट्टी के पसीने की बूद  
 तरल अलका की छाया में  
 रह कर चलकनेवाले  
 किन्तु मैं हूँ वह जिसने जानी है धरती के गभ की गर्मी  
 इसलिए नहीं कि राजाओं के सिर पर विराजू  
 या ललनाओं के कपोला का स्पर्श करूँ  
 अलस विलास भाव से ।  
 याद है वह किरात,  
 जिसने ऊँची बाबी के भीतर बठ  
 तपस्या की थी—  
 कविवर वाल्मीकि—?  
 उस महा मा ने ही दिया था  
 इस भरतराज्य के जीवन का  
 अपनी तपस्या का अतुल तेज और उष्मा  
 बनाया था उसे अत्यन्त सुंदर ।  
 मैं जगली हूँ वन में जन्मा हूँ  
 जगली धरती के भीतर बहुत दिना तक तपा हूँ  
 अनेक धातुओं के घोल से  
 मने यह अमल मसि तयार की है ,  
 मैं अखित कर रहा हूँ अग्नि-ज्वाला की कूची से  
 विविध यन्त्रा की विगद लिपियों में  
 मानव की नव्य सस्कृति का  
 वीर काव्य—  
 करण रौद्रादि रसमय  
 जनता के आनंद  
 और उसके अन्तरंग का बल बताने के लिए ।  
 इस तरह मैं अनुकरण करता हूँ  
 उस महात्मा कवि का ।  
 हे भाग्यवाली तुम मरे लिए अनुकम्पा के पात्र हो

वरियुटे मौनतिनयमायि—  
क्कवि विचारिच्चतितायिरुत्तु ।

‘नरन्टेयात्मावु तननिपलाय—  
क्करतेण्ट धार्म्मिक सौम्यतये  
क्कनिवुकटतिनिक्काटु वट टान  
तुनियुमो ? काव्यम दुरन्तमामो ?’  
क्करितन्मुखतिलक्काळिमयिल—  
क्कविवण्टतीरशोकमायिरुत्तु ।

—१९४३

कोदला रह गया था मौन, किन्तु  
उसके मौन में कवि ने पढा यह भाव ।

“भेरी कामना है कि  
धार्मिक सौम्यता  
बनी रहे मानव की आत्मा का प्रतिबिम्ब,  
क्या उसे भी भेज दिया जायेगा  
निष्ठुरता के साथ बनवास में ?  
और काव्य ही जायेगा शोकान्त ?  
कोयले के मुख की कलाई में  
कवि ने इसी शोक का  
दसन किया ।

—१९४३

## नाटकम्

चूरलालत्रिचिचिट्ट नगरितन  
 चोर वान्निपुकीट्टन पाट्पोल  
 मारि कोण्ट कुपञ्जु चवत्पात्र  
 चोरिमण्ण पुतञ्जेपुम पातयिल  
 पोवुक्याण जान तनिच्चेन्तिनो  
 नोवुमस्वस्यमाय मनस्सुमाय ।  
 माळिक्वळिलनिन्नु कळक्काम चिरि-  
 वकोळिळक्कड्कळ रण्टु पाश्वत्तिलुम  
 नागरिकमाक्कोलुमनुराग-  
 रागमालपिप्पू स्वतन्नाहिकळ ।  
 पित्रिलनिन्नुमोह चुम वळक्कया-  
 लोन्निटयन्नु तिरिञ्जु जान् नोक्कवे  
 तन चुमलिलाह कुर तूमपय-  
 प्पिचुकुञ्जिनेप्पालेन्तिट्टुमाराळ  
 चाल्लि पात्रजमानने बाणुमो  
 वल्लतुम पणि ? नाक्कन् वलञ्जुपोप् ।

आ विळि कट्टु लज्जिच्चु पोयि जान् ,  
 पावमन्नप्पणक्कारनन्नण्णि ।  
 पल्लुमात्रमुष्णाट्टानया मुव -  
 तल्लुम तोलुमाय नीण्ट कयत्तण्डुवळ ।  
 कान्नि टनाट्टुम् परमपयोट्टुमा-  
 न्नेन्नि टटानाक् कीरमुष्ठीरनाप् ।

## नायकन्

म सडक पर से चला जा रहा था,  
जा थी वर्षा-जल स गीली भाल मिट्टी से लथपथ  
जस नगर के मुह पर बेंत मारने मे रक्त रिम आया हा,  
मन अस्वस्थ था अवमाद मे भरा था ।

बगल की अट्टालिकाआ स  
हास-कालाहल की लहर्ण आ रही थी  
आलाप रहे थे कई ग्रामोफोन  
नागरिक बनिताओ के वासना चपन गीत ।

किसी का खासना सुन कर  
म पीछे की तरफ मुडा—  
दखा कंधे पर छोटा सा फावडा धरे  
मानो जपने छोटे मे बच्च को सम्हाल रखा हो,  
एक नर पूछ रहा था  
'कौई काम मिलेगा बडे सरकार  
नायकन' बडी मुसीबत मे है ।

उमका सबोधन सुन कर म लज्जित हुआ,  
बेचारे ने मुने धनी समय लिया है ।  
उसके चहरे पर केवल दात है जो पिचके नही  
लम्बी-लम्बी भुजाएँ हठी चमडी मात्र बन गयी ह  
एक पटा पुराना भीगा चिचडा है तन पर  
भाषण हवा का और  
ममनाघार वर्षा का मामना करने के लिए ।

१ नायकन—फावण लेकर चलनवाले मजदूरो का एक वर्ग जा मिट्टी  
खोदकर तानाबन्ध भाण्डि माफ करके अपना निर्वाह करत हैं ।

आश हृत्तिलुम तेजसु कणिलुम,  
 लेगमिल्लातुपलुवयाणयाळ ।  
 ईविघत्तिलप्परपरप्पानिटुम  
 जीवितत्तिन पुरत्तुरञ्जीटिलुम्  
 मालुरविप्पिटिच्चु नीरुन्नार-  
 वकोलु कत्तिज्वलिवनात्ततम्भुतम ।

वेलतन्निलत्तणुत्तुरड्डम् महा-  
 ज्वाल पट्टुम् अट्टियुणरविल  
 आणुवाम्भयगाळड्डडळववाळु-  
 माळिट्टुम् महस्सानुळवाय्वरम्  
 वीशुमादाप्ति दिड्ढमुखत्ताक्केयुम्  
 पूणुमारक्तमाविन कुकुमम ।  
 हा नटुड्डुविन सौह्यजडडळ ।  
 वानम चुम्बियवतुमप्रयसौघड्डळ्ळे ।

चाल्लि वम्पुन्न चुण्णिनाल् वान पणि-  
 यिल्लिवियेयारेटवुम नायकरे ।  
 चाल्लि नोवुन्न हृत्तिनाल् वान करि  
 इक्कल्लिनक्काळक्कटुत्त निलक्क  
 निनकुरुत्तूम्पक्कोण्टु नी कोरक्,  
 चवु वट्टअमाय्पावणिल् पोवट्ट  
 नूतनमार जीवितम् पोड्डिन्धी-  
 भूतलत्तिल्समत नटुम् वरे ।

न मन में आगा रच मात्र

न नयना में तैज

सब वही चक्कर काट कर लाचार हो रहा हूँ बेचारा ।

अचरज है,

इस तरह के खुरदुरे जावन के निरंतर रगड़ खाने पर भी

तप्त पीटा से भरी यह धुधुआती तीली

जल क्या नहीं उठनी ?

यदि यह श्रमशान्त मुप्त महाज्वाल

अकस्मात् जाग उठे

तो उदय हागी एक महान ज्वाति

आणव आग्नेय गोला से भी

अधिक उग्रता से जलनेवाली,

वह ज्वाति फल फँस कर

सारी दिग्गओ के मुख पर

आरक्त कुकुम लगा देगी ।

हे गगनचुबी अट्टालिकाओ

हे सौख्य-जड-जना,

काँप उठो !

कम्पित हाटा से मैं बोला,

“यहाँ मैं नहीं हूँ वही, नायकन ।”

फिर बसकते कलेजे से मैं मन ही मन वाला—

हूँ नायकन

पत्थरा-सी कठोर परता को

तुम अपने छोटे फावडे से खोद हटाओ

जब तक कि

एक नवीन जीवन का सोता नहीं फटता है

और मूल में समता का सजन नहीं करता

अगर, तुम्हारा कलजा ही

पानी हो जाये ताँहा जाये ।

—१९४३



## तूपुकारि

हारियल्लिवळुट रूप मेमालीतूपु—  
वारितन मलिनमाम् करत्तिन विशुद्धत !

इप्परीमुखत्तिट कल—

च्चित्तरिवनाणाकुन्न  
चप्पुकळ चवरकळ,

अळिञ्ज शवडळुम्

नतनदिनत्तिटे

चक्किर चुम्बियक्कुन्न

पूतमाम पुरिकत्तिल्

वप्पुकळ पाटियवे

तन् करत्तिनाल् वाम्—

वेट्टिय चूलान पात—

यिक्कुनिन्नकट टुन्न

तन्निक्किळ्ळिक्काळ्व ।

नन्नयि सहादरि

नन्नु निन्पुरिकत्तिल्

मिन्नुमी मुत्तिल् नरुम

पाट्किळ्ळवन्नुम् वान्ति

माळ्किप्पुरत्तपुम्

काच्चम्ममार तन् हार—

पाळ्किळ कोत्तिप्पन्नणम्

जनसवनव्यये ।

तूलिक्कुत्तुम्पाल म्ळान—

चिन्नत्त मनाधम्म—

शानियामोर कला—

वारियन्ननुपोन

## म्हाडूवाली

उमके गठन में काइ खाम आवपण नही,  
फिर भा उम भगिन क गन्द हाथा में  
कितनी पवित्रता है ।

पलका पर उमर आयी ह पमीने की बूदें  
जिनका स्पग कर रही है

प्रभात की

नवल स्वण रश्मियाँ,

वह बुहारती फिरती है मडकों

अपना चाटू मे

जिमे उमने

अपने हाथा काटा-बनाया है

बुहारती फिर रहा है कूडे क नेर

गन्निन अवगप

जा महानगर के चहर पर

घन्ना का तरह चिपक हैं ।

घय बहन, घय !

तू टबी है आ प्राण जन-मेवा में

तरी भेवा पर दमकन

स्वेन विन्दुआ का आभा क सामने

फीकी पड जानी है आव

गाही महना की महिनाआ क हारज-हारा का ।

तूलिका की नाक स

एक नाजुक तम्बीर का सेवारत हुए

प्रनिभावान क नाका का तरह

पुनुक्कि मिनुक्कि नी

पट्टणम्, पुरीमुखम्—

मनुलारोग्य श्रीतन्

कयक्कोरु वात्क्वण्णादि ।

वनु नी पिरनेट्टिकल—

क्कवित्तन हूदन्तत्ति—

लेनुमुत्तमस्तिग्ध—

भावनारूपम् नेटि ।

वत्तिनिज्जनिच्चेट्टिनल

माज्जनि क्वियुटे—

युनतादशम् कोष्म

तूवलाय मत्थम तेटि ।

जीवितम् विपमय—

माबुमारं न्तेन्तेल्लाम

भाविलक्कारड्डळ,

जीष्णिच्च विश्वासड्डळ

जनमद्दन्तिटे

करयम कण्णोरिट्टे

ननवुम् मीते कालु—

मिरम्पनच्चैकोलुवळ,

तद्दड्डिलत्तल्लिक्कीरि—

याध्यत्तिन् चैगल् नारि

मद्दल्लार्तीट्टुम् जीष्ण—

मत्तत्तिन् कुप्पामड्डळ

नीतितन् चालिन वक्किल्

स्वायत्तिन पुट्टण्टानि

प्रीतियिलच्चाष्टेपु—

मिरण्णमाल्पयड्डळ—

ई वनयेल्लाम् पम्मे

नी पळ्ळञ्जेने निट्टे

तूवात्ताल्लत्तळ्ळिञ्जेन

जीवित्तम्पुवळ ।

तू शहर को नयी दमक से सँवार रही है,  
 यह नगर का चेहरा  
 अनुपम स्वास्थ्य-श्री के हाया मे  
 एक आईने-सा है ।

काश,  
 तू उत्पन्न हुई होती कवि के हृदय मे  
 अत्युत्तम स्निग्ध भावना का रूप लेकर,  
 काश,  
 तेरी झाड़ू जम लेती  
 कवि की आदशमयी कलम के रूप में,  
 तब तूने झाड़ू-बुहारकर  
 कूड़े की तरह पेंक दिया होता  
 "स विपम जीवन को,  
 ढहते हुए विश्वासा को  
 घुटती हुई भावनाओं को  
 पीड़ित जनो के  
 आसुओं की नमी को,  
 सपप की थाप पर बजती हुई  
 लौह-बडियो का,  
 एक-दूसरे पर उछाले जानेवाली  
 अधी कीचड को,  
 ह्यामो मुख धम के  
 कमजोर और धुधलाये  
 लिबास का,  
 न्याय की धारा के बगार पर निर्मित—  
 स्वायपरता के दडवा में  
 दुवकी प्रसन्न मुख  
 अथ ईर्ष्याजा को  
 और तब, तुम्हारी लेखना से  
 स्वच्छ और स्पष्ट हो गया होता  
 जीवन-पथ ।

मलिनविकारइडळ

गानतिनूक्केरीटु—

मालिविल्लक्कटिच्चुट्टुट्टुम्

चालुकळ निवघ्नेने ।

चोरतन् निरम् तिघ्न

धूळि पोडडाते स्नेह—

पूरत्ताल् ननच्चुर—

प्पिच्च कालत्तिलक्कटि,

चन्नवाळत्तेत्तनक्—

विरलालच्चुट्टि टच्चमको—

ण्टक्कमदळ्ळ कूर—

मुनयाल नोवेल्कवाते

मानवन् समुत्तत—

शिग्स्ताय पाटिप्पोत्तु

मान त्माणान दम्

पारतु नुक्कघ्नेने ।

हारियल्लिवळुटे रूप, मेत्तालीत्तुप्पु—

कारितन् मनिनमाम् करत्तिन विगुद्धत ।

—१९४४

छिनरा जाते वासना की गन्दी धारा के भँवर,  
और प्रवाहित हा उठती गीतो की सुदर  
स्वर-तहरिया ।

तब न उठती धूल  
जो सोल गयी रक्त की लाली को  
क्योकि सींच दिया गया होता काल-पथ स्नेह-जल से  
और बना दिया गया होता वह सुदृढ़ ।  
चल सकता तब मानव  
हिंसा के क्रूर अपराधो से बचकर  
सीना ताने, सिर उचा किये  
जँगलिया पर क्षितिज घुमाना हुआ ।  
आनंद तो वही है परमानंद,  
नाग, धरती उसे चख पाती ।

उसके गठन में कोई खास आकषण नहीं,  
फिर भी उस भगिन के हाथो में  
कितनी पवित्रता है !

—१९४४

# कल्विळ्ककॅ

१

पेरियार, चालकुटि-  
यारुमायिणचेनु  
पुरुपुल्कारत्तोटे  
पुळञ्जुमरियुनु ।  
कोटक्कार, च्चिरकुळ  
विर्तात्क्काटुवाट टु  
नाटोन्वेक्कुलुम्बिक्को-  
ण्टयुप्रम् परक्कुन्नु ।  
अरयोळवुम वेळ्ळ-  
तिलाण्टोर तद्दिडन-  
निरयात्तुत्तिवल्-  
पेटिञ्चु विरक्कुन्नु',  
वा पिळन्नपिमुल-  
तिड्दवल् वन्नार्तीट्टुन्नु  
कोपियक्कुम् वपौन्दृप्प-  
भीवरपारावारम्  
वायलाम् नेटुन्नुट्टु-  
नावुनीट्टियास्मत्वम्  
वायिलाक्कुन्नु नीळे-  
यापुत्तुम् गवड्दळे ।  
इड्दनेयोद वेळ्ळ-  
प्पावन्मुण्टायिट्टिल  
अड्दळ्ळनन् स्मरणयिल् ,  
मरविञ्चुपामोर्ताल् ।

धोटक्कुपल

## पत्थर की दीपदानी

१

पेरियार<sup>१</sup> चालक्कुटियार<sup>२</sup> से मिल कर,  
लिपट लिपटकर  
उग्र फूकार के साथ  
मदोमत्त लीला कर रही है।  
काले बरसाती बादलो के  
पख फलाकर  
सारे देश को शक्शोरता हुआ  
भयानक तूफान भँडरा रहा है।  
नदी-तीर के छोटे टीले पर  
कमर तक डूबे हुए  
भारियल के पेड  
भय से काँप रहे ह।  
वर्षा-काल का क्षुभित डरावना सागर क्रुद्ध होकर  
मुह बाये नदी-मुख पर आकर  
उमुक्न अट्टहास कर रहा है  
लपलपा कर  
कायल<sup>३</sup> की लम्बी-लम्बी लाल-लाल जीभ  
निगल रही है चारो ओर बहनेवाली  
लाशो को।  
ऐसी भयानक वाढ हमारी स्मृति में  
आज तक कभी नही उमडी  
उसकी याद आत ही  
प्राण मुन हा जाते ह।

१ २ केरल की दो नदियाँ

३ समुद्र का वह भाग जो किनारे से अन्दर चला आया हो।



कुम्पळवकुरूपोले  
 वेण्मयेरीटुम् पल्लिन्  
 तुम्पु काणुमारुळळ  
 नरुप्चिरियाटे  
 कायलिन् वक्कत्तन्ति-  
 यक्वेतिरेल्कुवान् करि-  
 च्चायलाळ वरारळळ-  
 ताक्कुम्पोळक्करळ वीड्डम्  
 पाय कीरियुम् वयर  
 पोट्टियुम तुपयिल्ला-  
 ताय वचियाय्प्पोय् जा-  
 नेन्नवन् विचारियक्कुम् ।

ओमलिन् इमगानत्तिल्-  
 क्कलविळक्कोन्नुण्टाक्कि  
 प्रेमविह्वलन् तिरि-  
 वयक्कुमारुण्टन्नाळुम् ।  
 अन्तियिल् विरियुन्न  
 रागत्तिन्मोट्टेण्णम्  
 षान्तिमत्तामा नाळुम्  
 मिन्नुमारुण्टेन्नाळुम् ।  
 नूरमाम् वेळळक्कुत्तिल्-  
 वन्नरण्नेल्लाटि टलुम्  
 सारमामतुक्कुटि  
 यापुक्किद्दूरेप्पोमी ।  
 याटिय म्मुन्नतोटा-  
 क्कल्विळक्केट्टाण्णु  
 सेटिक्कोण्टवन् चेन्नु  
 थायलिन् वरिञ्चुण्टिल् ।

कुम्हड़ के बीज की तरह वह मनोरम घवल  
 दन्त-पक्ति की मधुर मुस्कान के साथ  
 साँघ्या समय 'कायल' के किनारे  
 स्वागत करने के लिए  
 वह सुकेशिनी आया करती थी ।  
 उसकी याद आते ही  
 कलेजा फट-मा जाता है ।  
 वह सोचा करता है  
 कि मैं भी एक नाव हूँ  
 जिसका पाल फट गया है,  
 पतवार टट गयी है,  
 ड्राँड कट गयी है ।

प्रिया की समाधि पर  
 पत्थर की दीपदानी बना कर  
 वह प्रेम विह्वल  
 हर दिन वत्ती जला देता था ।  
 साँघ्या में खिलनेवाली  
 अनुराग-कलिका की भाँति  
 वह कात्तिमय दीप गिखा  
 हर दिन वहाँ चमका करती थी ।  
 जो 'कहणन' के लिए  
 सब से सारपूण वस्तु थी,  
 वह गयी थी  
 'कायल' के काले अधरो में  
 वह खाजने लगा म्लान-मुख,  
 अपने पत्थर की दीपदानी ।

अक्षरेत्तुहत्तिलनि-  
 मनेरम् वेळक्काम् कायि  
 "वाक्करक्का" वेत्तात्-  
 स्वरत्तिलक्कम् शब्दम् ।

चीटि ट्टुम् मलवेळळम्  
 मुक्कालुम् विपुड्डिय  
 चेट टप्पाय वृट्टिलि ट्टे  
 विरयक्कुम् मौन्तायत्तिल्  
 मरणम् मारित्क्वेरि-  
 नक्कुवानारभियक्कु-  
 मिरपोल् विळरिय  
 दीनमायोरम्मूम  
 इनियुम् तनियक्कुळळ  
 मुतलामप्पुवने-  
 क्कनिवाल् विटातेक्-  
 ष्टेक्काय् नितीट्टुम् ,  
 ओच्च पोद्दुत्तीलोम्  
 करयाना वृड्डक्कु,  
 वाच्च वननशुप्पिनाल्  
 मरविच्चुपोय् नावुम् ।

वरणन् चुट्टुम् नोक्की,  
 मृत्युविन मिपिपोले-  
 मुद्दुम् चुपिक्के  
 तामुन्पिल् वाण्मानुळ्ळु ,  
 पुद्दुक्कळ नृत्तम् चयनु  
 पोद्दुन्निपोले पोद्दिक्क  
 वम्बुक्कोण्टलरीट्टु-  
 भाट्टमे वाण्मानुळ्ळु ,

सुनायी दी तमी  
 टीले के उस पार  
 दीन स्वर में एक मुँ की बुकडूकू ।

एक गरीब बुद्धिया, पीतवण  
 बठी हुई थी, दुबकी,  
 छाती पर चट आयी मौत के शिक्वार-सी  
 पानी में हिनोरें खानी हुई  
 अपनी थापटी की छत पर  
 जो फुफकारती पहाटी नदी की  
 धारा क मुह में समाने से  
 बाल-बाल बची हुई थी ,  
 उसने स्नेह से चिपटा रखा था  
 अपना एकमात्र सम्पदा,  
 अपने मुँ का ।  
 वह बुद्धिया राने के लिए भी  
 आवाज नहा निवाल सकती थी,  
 तेज सरदी क कारण  
 उसका जीभ जड बन गयी थी ।

करुणन् ने चारा तर्फ देखा  
 मौत का आखा-जम  
 चक्करलाट भँवर ही  
 सामने दिखाई दे रहे थे  
 नाच-नाच कर आगे बन्नेवाले पहाडों-जसी  
 बडी-बडी लहरें  
 चार-चार से उड़नी  
 सामने दिखाई दे रही था

वानिटे वूटारत्ते  
 नरनरायिच्चीन्तुम्  
 वात्यतन् भयकरा-  
 रावमे वेळक्वानुळ्ळु ,  
 चेनुटन् तन्कोलामिल-  
 च्चरिञ्जु विटवकुन्न  
 तनुटे चेस्वचि-  
 योटवन् तिरिच्चेत्ति ।

कुत्पकायम् तोळिल्  
 वच्चु तन्मुष्टोन्नाञ्जु  
 मुक्कविक्कुत्ति क्षणम्  
 तोणियिलवन बेरि ।  
 'ओशुक्किल् नाम् रण्टाळ्ळुम्  
 वटलि लतल्लेडिक्क-  
 लिन्नु रक्षियक्कामाए-  
 मिल्लात्तक्किवपविये'  
 तोपर तन् पत्तपल  
 साहसम् पण्डुम् कष्ट  
 तोणियत्तिरवळिल्-  
 विक्कटन् तलयाट्टि ।  
 ऊत्तिट्टुम् कोट्टुवाटि टल-  
 प्पोत्तुम्पिन्पोप्पम् पाळि-  
 प्पात्तिट्टुवरवुम् वचि -  
 याळ्ळत्तेक्कुट्टाक्काते,  
 कायलिन्नु मादत्ते  
 मुत्तेट्टुम् मानिक्कनात्त  
 नायक्कन् तनिक्ककुप्पे-  
 त्तुट्टाळारा नाटयत्तोते,  
 पटन्नेक्किलुम्, नाल-  
 च्चवाळ्ळट्टुत्तान्निक्कत्ति-

आसमान के तम्वू को  
 सौ-सौ टुकड़ा में पाड़ डालनेवाली  
 आधी की भीषण गजना ही  
 सुनाई दे रही थी ।  
 वह जल्दी-जल्दी चल पडा  
 और बरामदे में तिरछी पडी  
 अपनी न-ही-सी नैय्या को ले कर  
 लौट आया ।

छोटा-सा डण्डा कंधे पर रखकर  
 लुगी बसकर बांधे  
 वह तुरन्त नाव में बठ गया ।  
 'या तो हम दोनो विलीन हागे समुद्र में  
 या हम बचा लेंगे उस असहाय बुन्दिया को !'  
 जानती थी नैया पहले से ही  
 अपने साथी के साहस को,  
 अतः उसने लहरा में  
 घिर हिलाकर हामी मरी ।  
 फत्वार करनेवाले तूफान में  
 लहरो की परवाह न करके  
 झट से वह नया आगे बढ़ी ।  
 जानती थी वह  
 'कायल' के उम्माद का  
 जिसने  
 कभी परवाह न की  
 वह नायक मेरे साथ है ।  
 नाव आधी राह ही पार कर पायी थी  
 कि  
 चार-पाँच लहरें एक साथ आगे बढ़ी

त्तटञ्जु मरियक्वयाय्  
 तुपयेगौनियक्वाते ।  
 नैचुरप्पोटापत्तिल्  
 नीन्तुमा युवाविने  
 वञ्चुपियोपुक्किन्टे  
 वालिनाल वरिञ्जुटन  
 वलिच्चु वलिच्चु तन्  
 वायिलाक्कुम्पोळव-  
 नलिवानम्मूमयक्कु  
 भाग्यमिल्लेने चाल्ली ।

इरद्धडी मलवेळ्ळम  
 कण्णुनीराटिवनाप्च  
 परवाना मुत्तदिश  
 पिन्नेयुम चिरम् वाणाळ ।  
 वायलिन् वक्कत्तरे-  
 व्वालमा युवाविने-  
 व्वात्तुतान् किटन्निता-  
 व्वालविळक्कनायमाय ।

—१९४६

और डाढ़ की परवाह किये बिना  
 उसको उलट दिया ।  
 इस विपत्ति की घडी में  
 धय के साथ तरनेवाले उस नौजवान का  
 भयानक भँवर जब  
 लहरा की पूछ में लपटकर  
 खीच-खीचकर अपने मुह में निगलने लगा  
 तो दयाद्र होकर वह केवल यही बोला—  
 'नानी का भाग्य खोटा है !'

बाढ़ उतर गयी,  
 और नानी जीती रही, नयनों में जाँसू लिये  
 यह कहानी सुनाने के लिए ।  
 'कायल' के किनार  
 पत्थर की वह दीपदानी  
 बहुत दिनों तक पडी रही  
 उस युवक की प्रतीक्षा में ।

—१९४६



## आ सन्ध्य

आरेयो विचारियुक्के,—

तुटुवकुम् कविळुमाय्

दूरेयाद्विविन ववव—

तिरियुक्कुम् साध्यालदिम

तुमुवान वेरिञ्जिट्ट

नीलमाम् दुकूलमपाल्

मिधुन्न तिरकाळाल—

च्चुळियुम् पारावारम्,

धेलुलाविट्टुम् वेरि—

युक्कवमेकटिप्पट्टु—

नूलकळोटिपुक्कुमपोल

रदिमकळ तिळड्डुमु ।

पाञ्जितेन् कळुट्टन्

पतुकोल्लत्तिन्मुन्नु

माञ्जुपोयोह रग—

त्तिकलेयुक्करियाते ।

अमु हा ! तुळुम्मुन्नो—

रनुरात्तिन् पात्र—

मेधुटेयात्माविटे

चुण्टटुप्पियुक्कुम् कालम्,

चिन्तयिलत्तोक्कि—

मगीनमृदुम्मारु—

धन्तरगत्तिन् स्वप्नम्

वीण वापियन्नुम् कालम्,

## बह सध्या

दूर

पश्चिमी दिशा के किनार पर  
हिमी की प्रतीक्षा में  
सध्या-सन्धी बठी थी,  
स्नेहामद् विचारा के कारण  
उसके कपोल आरक्त हा रहे थे,  
जमे उमने पना दिया हो नाम दुकूल  
कशीदाकारी के लिए,  
इस तरह अलमला रहा था सागर  
सहरा की सन्वटा भरा ।  
हिलारों लती हुई तरंगा के भीतर  
विरणों इस तरह चमक रही थी  
मानो तह किये हुए कपडे के भीतर स  
रेसम का धागा काटा जा रहा हा ।

अकस्मात् मरा मन

दस घण पहले घटी

विस्मय घटना की तरफ दौड पडा—

कम थे वे दिन

जब म अनुराग का लघानव भरा प्याला लगा रहा था

अपनी आत्मा के अधरा स ।

ये दिन

जब मेरे अन्तरग में सपना की वीन

इस तरह बजती थी

कि चिन्तन में अलौकिक सगीत का

धारा फूट निकलती थी ।

ओमलिन् कुनुचिल्लि—  
विल्लि मेल् स्वगति टे—

या मनोहरनील  
गोपुरम् काणुम कालम् ।

अनु वानितुपाले—  
युळ्ळोर् सायाह्लित्तिल्—

च्चेनु भद्रतन वीट्टिल—  
प्यतरम कालवेप्पाटे ।

लोलमामोरीक्किल्—  
क्करमुण्टाणेनामल

भेलणिञ्जिरन, ता  
क्कर वानाम्मिक्कुम्बु ।

चम्पवागितन् नेटि ट—  
त्तट्तिन प्रवागिच्च

कुम्पळक्कुरपोले  
च दनच्चेत्तापि ।

पातियुमेनूपेर तुन्नि—  
त्तीन्न पटटरमालु

पाययिलिवरटक्कुव—  
तेट्टुक्कान् कुनियवे

वातिचेयिनन् निट्टु—  
क्कत्तिनाल् नीलक्करिम्—

वायल् वेट्टुपिञ्जून्नि—  
ट्टापुनी तोट्टिनक्कूटि ।

पूचिकुरत्तेक्कयाल—  
पिन्निनेयवनाविनच्चुण्टिल्

पूचिरियमत्तिक्का—  
ण्टिळ्ळुम् मिपिमाटे

ओमलाळ निवगण्णाळ  
निदयमदाचार—

भीमगासनमन्टे  
क्कयुक्कळ भरन्नुपोम् ।

वे दिन

जब मैं प्रिया के भ्रू चाप में  
स्वर्ग के रम्य नील-गोपुर का दर्शन करता था ।

हा उस दिन

ऐसी ही एक संध्या में

'भद्रा के घर

मैं पहुँच गया आकुल पग धरता ।

मेरा मन

अब भी याद करता है

उस परिधान की काली पतली किनारी को

जिसे मेरी प्रियतमा

उस दिन पहने थी ।

उस चम्पकागी के मनोरम भाल पर

कुम्हड़े के बीज-सा

मनोहर चन्दन तिलक सुशोभित था ।

जब वह चुकी

चटाई पर पड़ा

रेशमी रमाल उठाने के लिए

जिस पर

अंकित हो चुका था मेरा जाया नाम

तो उस सक्पकापी आतियेया की

बजरारी बेणी खुलकर

कंधे पर से खिसक गयी ।

सुरभित मनोहर केण-गुच्छ को

पीछे की ओर समेटती

खिल आनेवाली मूसकान को दबाती

चंचल चितवनवाली

प्रिया खड़ी हो गयी

तो

हृदयहीन सत्वाचार का शासन भूल गये

मेरे दोना हाथ ,

'चापलम् । विट् । वरम्  
 बल्लोरम्, ह्यम् ।' एन्नोतुम्  
 कोपनयुटे चुण्टेन  
 चुण्टिनालमर्नुपोय् ।  
 भावु निल्वुम् मुट्ट—  
 तटितोदृट्ट, टत्तोळम्  
 पूवुमाय् तारम्पटे—  
 यावनापियेप्पोले ।  
 कूवियो कुयिल् ? इळम्—  
 तेन्नल् वीशियो ? कण्टो  
 घोविलेदडानुम् निन्न  
 तारकळ ?—अरिञ्जील !

पकलो पायुम् वेळळ—  
 कट्टिरप्पुरत्तेरि—  
 मक्कुम्नेरम् वेळळ—  
 प्परिच ताळिल्लुत्तविन्न,  
 सागरस्नानम् चैय्तु  
 रागमुग्घयायोटे ट—  
 मक्कागमिच्चोडुम् सोम्य—  
 स ध्ययेप्पुलिप्पोयि ।  
 पुरीवन्तुम्पाले टे  
 चित्तते वीण्डुम् वीण्डुम्  
 वरियेच्चयिच्चिट्टु  
 कण्णिनालेय्ताळोमल् ।  
 एदन्ने मारम् ? नीदडुम् ?  
 अनदडुम् ? पुट्टम् पू—  
 प्पट्टन्ने कुरच्चिट  
 निन्नुपोय् रण्टात्माक्कळ ।

"कमा चाचन्य है, आ जायेगा कोई  
 छोड़िये मुझे ।" —कृपित भ्रमगिमा से  
 बरजनेवाली के अघर  
 मेरे अघरा मे जुड गये ।  
 आगन में खडा था  
 नख निख मजरी विभूपित  
 आम्र काम-मूणीर-सा ।  
 क्या कायल बूक उठी ?  
 मन्द बयार चल पडी ?  
 गगन के तारा ने दख लिया ?  
 नही जानता ।

दिन चला गया—

त्वरितगामी घबल तुरग पर चडकर  
 रजतमय ढान का पीठ पर लटकाकर  
 सागर-स्नान करके  
 एकाकी चली आनेवाली  
 सौम्य सध्या का परिरम्भण करके ।  
 प्रिया ने मुझे  
 भ्रू-लताआ से बसकर बाँधा  
 और बनखिया से  
 निपट बेधा ।  
 कसे हटू ?  
 कसे चलू ?  
 कसे हिलू ?  
 बसी ही खडी रह गया  
 दो आत्माएँ थोडी देर,  
 पुलकित होकर ।

अधु जान् मट्टदुम्पोळ  
माविडे पिन्वे नाक्कि  
निन्नु पुचिरि तूका  
साकूतम् शगिलेख ।

‘आतिर’ निलावुव—  
ळेत्र जान् वण्डू पिन्ने,  
प्रीतिदड्डळ्ळणेल्लाम्,  
एक्किलुमनु वेरे ।  
स्नेहत्तिन्नधीगाधि—  
वारत्ते लघियक्काते  
गेहत्तिलारम्मयु—  
मच्छनुमा, यिक्कालम्  
क्केगवुम् विपादवुम,  
वपक्कुम् धीष्टुम् प्रेम—  
पेगलस्वराश्लेष—  
सन्तापड्डुमायि  
मेवुन्नतत्यानन्दम्—  
तन्ने, येन्नालन्नेन्नित्—  
त्तायिन हर्षोमादम्  
पायि । पायास्तध्ययुम् ।

—१९४६

उस दिन  
म जब लौटा  
तो आम्र शाखाओ की आड में खडी शशिलेखा  
भेद भरी मुस्कुरा रही थी ।

उसके बाद  
कितनी बार देखी है मने  
आर्द्रा की चादनी  
निश्चय ही जान-दायिनी है,  
किन्तु उस दिन की चाँदनी  
कुछ और ही थी ।

आज  
हम माता पिता बने ह,  
नही करते हैं प्रेम के एकान्त गायन का उल्लसन  
व्यतीत होते ह दिन  
क्लेश, विपाद और कृहा मुनी में,  
अनुराग डबे मनचाहे आलिंगन के उल्लास में ।  
यह भी निश्चय ही अत्यन्त जान-दायक है ।  
किन्तु  
चली गयी है वह सञ्चा  
बला गया है वह हर्षोन्माद ।

—१९४६



वन्दनम् पर्युक्त ।

वदनम् पर्युक्त, भारताविवे दवम—  
तन् दयवकहिंसतन् असिधारयिलक्कूटि,

दूरदुष्कर यात्र निवहिञ्चिता, दीना—  
कारयायालुम रक्तम् मेथियल् नितोलिञ्चालुम

इतले प्पुच्छम् पूष्ट राज्य लक्ष्मकळ वनि—  
दुभतात्भुतस्नेहमधुरम् पुणरवे

मगळस्वातन्यत्तिन उज्ज्वलोज्ज्वलमाय  
मजुळप्रभाततिलविदुतेतिञ्चेमू

प्राचियुम् प्रतीचियुम् जयारवम्  
वीचियायुमर्नेति मुवत्रुनु हिमवाने,

पौरर तन हृतीडतिल् निमुयन्ननिदङ्गळ  
सौरमागत्तिल् चेल्वू काटितन् चिरनिभेल् ।

रक्तदाहमाध्नोरु साम्राज्यसिंहतिटे  
धमनवुम् कुटिलवुमायिधताम दष्ट

वाणुक कापिञ्जना क्किट्पू निरम् मड्डिड—  
ताणुपाम् चद्वनल पापेयीपुलरियिल्

इरुळिन् तिळ्ळिङ्गिय वण्णुनळ, चरित्रति—  
धरनिल् वाणाम् मायुम् रष्टु तारवळ पाते ।

## शतश धन्यवाद !

कल्पामय की कल्पना को गतग धन्यवाद !  
हे जननि ! अहिंसा की असिधारा पर पग धर  
दुष्कर यात्रा का पूण, श्रमित-पद, क्षाम, क्षीण,  
अतत रक्त-शकिल गाने ! त पहुँच गयी  
उस आर जहा मुक्ताता है  
उज्ज्वल स्वतन्त्रता का मजुल मगल प्रभात !  
सारी धमुधा आनन्दलीन  
ह गुज रहे स्वागत में हृष विक्ल बल-बल  
उल्लसित पूव-पदिचम के ये गोलाढ्य युगल  
दाएँ-बाएँ उठ रही जयध्वनि की तरंग,  
उन्नत हिमाद्रि का भाल भीगता जाता है ।  
उठ रहा तिरंगा आच्छादिन कर सौर-भाग  
जागत जन-भन में ऊर्ध्वगमन की अभिलाषा  
जनता के हृदय पिण्ड से कढ आनन्द विहंग  
ऊपर झण्डे के पाम पहुँच मडराने ह ।  
वह उधर भित्तिज के पाम अधामुख कान्तिहीन  
जो डब रही है मन्द प्रभा,  
वह नही चन्द्र की कला,  
कुटिल शापिन पिपासु साम्राज्यवाद की दष्टा है ।  
ये दो तारे जो दीख रहे ह अस्तमान,  
आँखें के उसी दनुज की ह अधियारे में डूबी प्रकाश की कणिकाएँ  
इतिहास-गत में पडे हुए अगारो-भी ।  
बल तक जो हँसी उडानी थी तुमको पीडा पहुँचानी थी,  
वे राजतन्त्रिया आज चकित, विस्मित, विभार  
घर घर से बाँह बगती ह,  
तुमका अपनी अप्रज मान पूजा के हार पिहाती ह ।

निन् मुग्धमाकुम् बालिल्, सटयाल् पश्यमाम्  
तमुखमुहम्मिक्कोण्टा बद्ध सिंहम् निलूप ।

वय नीतिवळतु केवलम मरक्कुमो !  
घयमाम्निन् सौहादमेघ्रेतुम् पुलत्तुमो ?

वन्दनम् परयुक्, धमपालिके, दैवम्—  
तन् दयक्कानदाथुगदगदगदस्वरम् ।

पावने, पौरस्त्यमाम् दिङ्मुखम् तुट्टुक्कुट्टु  
तावक्स्वातथ्यतिन् स्वच्छमामुदयतिल् ।

एन्तित्तिङ्ङने शोणशोणमाकुवान ? ओत्तिल्  
निन्तिरवटियुटे हृदयम् तक्त्तुपोम् ।

इत्तलेत्तिस्वुटल् वरियेच्चुटिटच्चुन्टि,  
अत्तेदुम्क्पुमरत्तिक्कल नावुक्कळ्ळिट्टि

आयिरम् वरितुररयिलक्कूटित्तटे  
वायिटक्किट्टेक्कळ्ळिट्टिप्पुळ्ळुयुम् स्वेच्छानत्रम्

विपुड्डिक्केरिच्च निन् प्रिय पुत्रर तन् रक्क—  
मापुक्कि नुरक्कयाणिप्पापुमतिन् पित्त

ग्रामवुम् नगरवुम् वयलुम् वाटुम् मट्टु—  
मा महाधीरमार तन विटरम स्मृतिवळ्ळाल्,

अवत्तन्निन्नुक्कळ वीणिट्टुम वण्णङ्ङळान्,  
अवयिल्त्तिङ्ङट्टुम् त्यागामाद सौरभङ्ङळाल्

इत्तु वाळ्ळमयिर व्वाळ्वू निन् वणिणल् निन्नुम् रण्णु—  
मूत्तु निम्मलस्नेहानुत्तहक्कणिवत्त

पूतमाम् स्वात्तयत्ते इवमिक्कान् जीवित्तान्—  
पातराय् वाणत्तारपुत्तरिन पायित्तान्

वत्तनम् परयुक्, वारत्तानवे, दवम्—  
तन् दयक्कभिमानत्तीप्पमामात्तमात्त !

माँ ! देख, मुग्ध यह जीण सिंह  
 कैसे चरणा से सटा खटा  
 तरे पद को निज जिह्वा से सहलाता है ।  
 पर हाथ कहीं यह बय जीव  
 रक्ताक्त जिघासा को तजकर  
 करता भारत का शील ग्रहण  
 बन पाता तेरा अमिट मित्र ।  
 करुणामय की करुणा को शतश घायवाद !  
 हे धमपालिके परम पावनी मा ! तेरे  
 सौभाग्य-उदय से यह कसी लाली छिटकी,  
 सपूण पूव-जग का आनन जगमगा उठा,  
 है कहा आज वह स्वेच्छाचारी कुटिल तत्र  
 अथ काल-कथो के भीतर जीमें खोल,  
 अथवा फाँसी के तम्बा पर फण फुला फुला,  
 तेरे निरीह पुत्रा का शोणित पीता था ?  
 हो गये तिरोहित काल नाग  
 हो गये तिरोहित माँ, तेरे वे धीर तनय  
 जिनके शोणित से भाग्य देश भर का जागा,  
 पर हाथ,  
 जिहाने स्वाधीनता नहीं देखी ।  
 उन धीर हुनात्माआ की स्मृति के श्चिर फूल  
 उन धीर गहीदो की पगुडियो की लाली,  
 उन अजय योगिया के जीवन की त्याग-सुरभि  
 ये मिटे नहीं, ये सभी अभी भी जीवित हैं ।  
 उनसे ही तो सुरभित ह अपने ग्राम-नगर,  
 उनसे ही तो शोणित ह ये वन विपिन-वैत,  
 भुज उठा खडे ह उनको पूगा में पहाड,  
 नदियाँ गुण गाती हुई सरबनी जाती ह ।  
 माँ, आज पुष्प का पत्र, राहीदो की स्मृति में  
 अपने कृतन दो अधु बिन्दु ढल जाने दो  
 करुणामय की करुणा का गता घायवाद ।

चङ्गल विधिवृत्तमनु वच्चा दास्यतिन्  
 तोङ्गलतान् तनिकरलकारमाय् वारित्त्विन्,  
 भीरुवाय्—स्वातश्चमेनुच्चरिक्कुवान् पोलुम्  
 भीरुवाय्—तल्लन्न निन् जीविन् मयङ्गुम्पोळ,  
 निम्मा यपुत्रन् वीरतिलकन स्वातश्चम् तन्—

ज भाववाशम् तानेन्नाद्यमाय् प्ररयापिके  
 नट्टुङ्गी निन्नात्मावु 'यूनिपन् जाक्का' दुन्न  
 नेटुतामत्युन्नत ध्वजतिन् तरयाटे ।

एकिलुमतिन् षट् पुपङ्गुलीलनिन्निरळ  
 तकिट्टुम्निपल् नीण्टू निन्चरिक्कुत्तिलन्मूटी ।

शूरमामतिन्नट्टिपुतिरान् स्वरक्तम ना  
 धारधारयायन्ने पन्नूर्नीलतिक्कुप्पिन्ने ।

एन्नयो निरीटतिन् कल्लटिक्कुचुर पिच्चो—  
 रत्तरक्कुमेलेन्न साट्टसम् तक्कर्नील

धमतिन् नवायुपगालयिल् निन्नुम पिन्ने—

वह भी था मात एक समय  
 जब हम जड़ता में पड़े हुए अवमाद-ग्रस्त,  
 दासत्व-यास का विधि का वह अचल विधान मान,  
 सोये थे हा निश्चेष्ट  
 मुक्ति के हित आयास न करते थे ।  
 ऐसी कदयता थी मूल स  
 'स्वातन्त्र्य' शब्द कहने में भी हम डरते थे ।  
 तब पटी भीरता की बदली,  
 उच्चरित हुआ गगाधर के गभीर कंठ से महा-सत्य  
 केसरी तितक की वाणी में  
 जागृत स्वदेश का कठीरब  
 प्लुत में चिंघार पुकार उठा  
 'स्वातन्त्र्य हमारा जन्म निश्च अघिकार ।  
 उसे जैसे भा हा हम पाएँगे,  
 मन्तक का दे बलिद न  
 मुक्ति की मणि का मोन चुकाएँगे ।  
 फट गयी भीरता को बदली  
 फट गया गहनतम हिमाकार  
 नग्निका का जल ललवला उठा,  
 करबट लेकर जागे पहाड ।  
 यूनियन जक' तिलमिला उठा  
 ध्वज कापा नीचे नाव हिली  
 सत्ता का आनन म्यान हुआ  
 जनता को नूतन ज्यानि मिनी ।  
 तब से तू ने जाने किने पावर सायक समान किये  
 जमे हागे किने सत्  
 किने किंगार बलिगन किये ।  
 यूनियन जक' का उमनन पर ही न सका  
 सोने-चाँदी से पिटा हुआ ध्वज पिड मूल में था दृढतर,  
 ये किये हुए उमको अजय,  
 चरणा का कमवर गहे हुए निल्लज्ज विरीटा के पत्थर ।

ककमकोविदन् सत्यसगरन् शुचिब्रतन  
 वाळिनाल् मुरियाते, तीयिनाल् दहिक्कात  
 वाच्चिट्टुमोरायुधम् एति गाधिजियेत्ति,  
 विनयम पठिच्चपोलक्काटियता, धोर—  
 सुनये, निन्पादत्तिल तलताप्त्तिनिन्नलो ।

वदनमपरमुक्, विश्ववन्दिते, दैवम्—  
 तन् दयक्काशाकुल स्वच्छमानसतोटे ।

बालम् निन् धम्मार्जित स्वातथ्यमुदधोपिप्पान  
 नीलनिम्मल शब्द गुणमामाकाशत्ते  
 नोऽकुक्, महाघटयाक्कि वात्तु, नालु  
 दिक्कुक् छिरळत्तुणियतिल्निनूर्त्तीट्टुनु ।

श्रीलभामणियता बालुनु महा विश्व—  
 शालतन् मध्यत्तिलक् प्रिय दशनावारम् ।

मुत्परिञ्जिट्टिल्लात्त माक्कस्वातथ्यत्तिन  
 सम्पन्नपानत्ताले बूत्ताट्टुमारो वाट ट्टुम्  
 चलिक्केच्चलिव्केनिन्पूणमगळत्तिटे—  
 योलितान् तुळुम्पुनु चक्काळत्तिन् वक्किल्ल ।

वीरमद्दुम्बनिग्गळत्तळारावो—  
 दारमावत्तुधु मूधु सागरमिस्सदभम्  
 धारददिनादयधीनिवत्तुन्न स्वच्छ—  
 गौरमाम् वेळिच्चत्तिन्न वेण्काटट्टुवुट्टु मद्दम् ।

उन्नतस्वातथ्यत्तिन्न रत्त पीठत्तेद्देवि,  
 वन्नतपरिच्चालुम् ! निन्तामम्मुपड्डट्टे,

नूरभाययिल् नूरुनूरु गानत्तिल नूर—  
 नूरु नूरुन्नाराष्ट्रमडलत्तत्ति, लम्म ।

इतने में सचब्रती योगी, बमट्टा के पूषावनार  
 गाधों आये, खुल गया  
 कम के शस्त्रालय का नया द्वार ।  
 यह कम गस्त्र जो नहीं आग में जनता है,  
 जिसका न चाट मक्खनी नाहे की तलवारें,  
 जो ब्रह्म और पावन दाना पर ही सम-भक्ति स चलता है,  
 है धय बीर, जा यह धर्मास्त्र उठाना है  
 सौ बार धय वह पुष्ट अहिमा के नम्मुख  
 जो खड्ग पेंक लज्जित हा गीत झुकाता है ।  
 वह उसी पुष्पमय महास्त्र का फल सुन्दर  
 जो ध्वजा गूलवन कभी हृदय में चुभती थी  
 नहराती है वह विजयानता में भरकर ।

कदणामय की करुणा का गतन धयवाद ।  
 हे जगतपूजिते ! विद्वधाम के मध्यस्थिन  
 घटावन सगुणमय व्यापक यह महाध्याम,  
 तेरी महिमा तिन गाता है,  
 त्रिभुवन का तेरा धर्मास्त्रिन पावन स्वन शता का सन्देश सुनाता है ।  
 वह रहा क्षितिज का छ उद्वेलित मुक्त पवन  
 वनराजि मुक्त हा मजती है,  
 हम के पता में अनिल नही सीत्कार रण  
 हरिपाली में मागलिक वान यह बजता है ।  
 तीना समुद्र हूँकार रने गम्भीर नाद ।  
 गजन में भेरी की गत है ।  
 उस मन्दिर के ये मान भव्य निस्तवा किरीट  
 हम अबनीतल का सर्वोच्च शृण हिम-पत्रत है ।  
 प्रस्तुत स्वतन्त्रता का यह मणिमय मिहामन  
 बछी मौ, हम मिनकर आरला सजाएँगे ।  
 नाना भाषायो में लिखेंगे एक नाम,  
 नाना छन्दा में एक गान हम गाएँगे ।



वदनम् परयुव, रजितविश्वे, दैवम्—  
 तन् दयवकुत्स्न धरसु दराननयापि ।  
 अब, तिनूस्वातश्र्यत्तिन् चिह्नतेष्पारिकुम्भि—  
 तवरम् नीलच्छायमाय तन् कवचित्तिल ।  
 उ मुखम् हिमवानुम् विध्यनुम् मलयनुम्  
 नम्मुटे पताकयुत्पुल्लम् दशिनम् ।  
 एङ्ङुमिन्नविटत्तेयभिमानत्ताटोप्पम्  
 पोङ्ङमी त्रिवणङ्ङञ्च चत्राकमनोपङ्ङञ्च  
 लीलयिलपूर्वाभिमानत्तिल पाटुम् मल—  
 चोलकञ्च पोलुम् मारिल वैरिमेल् कुत्तीटुनु ।  
 नाळ्ळेयिस्वातश्र्यत्तिन् चिरविन काट्टेटि टट्टु  
 नीळ्ळेयेपलयापि हपत्ताल् विजम्भिवकुम् ।  
 नाळ्ळेयिस्ममाधान वाग्दानम् कण्ठिट्टेरे  
 नाटुकळाशापिच्छम् विरुत्ति नत्तम् चेषुम् ।  
 ई मज्ज्यतयुटे निपल् वाणुम्पाळ तोक्किन्  
 वाय तन्नत्तान् पोत्ति निल्क्कुम्भमिराज्यम्  
 भयमे, दूरे ! ददूरेयागके ! नवयुगा—  
 दयमाय्, नवरश्मि पूगुमिक्काटिकण्टा ?  
 मेटुकळ चमलुवळ चाटुपळ वटलुवळ,  
 नाटुपळ नगरङ्ङञ्चाननम् मले मेले,  
 ई अनुग्रहम् तूतुम् काटितनमौम्प्यस्तिग्ध—  
 च्छाययिन् प्रापिकरट्टे गानियुम्भयचुम् ।  
 वदनम् परयुव राष्ट्रनायिने दवम्—  
 तन् दय कम्भगुर भगळे, जयिच्चालुम् ।

—१९४७

करणामय की करणा का गतग ध्वजवाद ।  
 मात तैर चनाक केनु का व्याम-व  
 सादर सुनाल निज कचुक पर लहरात है ।  
 मस्तक चन्नत कर मलय, हिमानय, विष्णाचल,  
 शठे की छवि का दम्ब छक रह जान है ।  
 स्वात श्य-गष्ट का पश तान रगावाला,  
 इसके पाके सबत्र सौख्य वरमाणे ।  
 यह गान्ति-मुद्ररा क हाया का इद्र धनुष  
 बल इने दव आगा के रजित पिच्छ खान,  
 नाचेंगे राष्ट्रा के मयूर, उमव हागा ।  
 इस दुर्विजेयता की छाया का दव भात  
 अत्याचारा झुक जाएंगे ।  
 बन्दूका के मुख अनायास ही मूद्रित हागे,  
 सुन्ताणा समार गाति की छहि-उन्ने,  
 निश्चय, विमुक्त युद्ध क भय न भव होगा ।  
 हा दूर भविष्यत का चिन्ते । मानम के भय  
 री आगें । अब और नहा आतक जगा ।  
 हो चुना उदित प्राची के तट पर युग नवान  
 यह केनु उसी की किरणा में लहरता है ।  
 इस महारैतु के नीचे मार ग्राम नगर,  
 सागर, उपमागर, शल शृग वन-उपवन, खेत  
 युग-युग भागें मुख-शान्ति-स्नह में बंधे हुए ।  
 करणामय की करणा का गतग ध्वजवाद ।  
 भारत का मन सारा वसुधा से एक रहे ।  
 अग्नि राष्ट्रनायिक मगनमयि, तरा जय हा ।

अनुवाक—बदिवर शिंकरजी द्वारा,  
 रडियो कवि सम्मेलन में पठित

## चरित्रत्तिन्दे किनाद्युक्तम्

दीणमाम् च द्रव्यं  
पितृभ्युम् पटिञ्जारे-  
क्कोणिलेच्चितरिन  
मुक्तिनिन् वक्त्रिन्कूटि  
निजमाम् प्रकाशित्तिन्  
राज्यत्तेपीपद्रवन्-  
निरमामतिरिदु-  
नीळने तिरियूक्तुभु-  
उलकत्तिलेष्मिन्ति-  
योस्त्रेयुम तक्त्रुवा-  
नुणरुम् कोटुकाटि टन्  
सन्देगम् श्रवियुक्वाने-  
उलकत्तेयोप्रायि-  
क्कण्टुकाण्टाकाशित्ति-  
लुदयम् कोळ्ळुम् ज्योति-  
म्मयरे श्रद्धिष्मन्त ।

आप्रयिल् चरित्रत्ति-  
घ्राघाताल तत्र त-  
प्राप्रहृद्दाल् चूप-  
प्यन्टेयुम् महानकरु  
नटुद्विन्तेरिच्चात्तु  
नाशिसप्यापारामतिन्  
नटुविल् प्यन नूट टा-  
प्टाटिपीपरकरात्तु ।

## इतिहास के सपने

इस प्रशीण चन्द्रकला ने  
आकाश के पश्चिमी काने पर विंगरे  
बादला के किनारे पर  
अपने प्रकाश के साम्राज्य का समेट कर  
अलग हटा लिया है  
और  
साल रेखा की एक वारीक मामा बना ली है ।  
वह नहा मुननी है  
आँधी का आवाज  
जा जाग उठी है  
मसार क ममस्त भय का  
दूर करने क लिए  
वह नहा दखती है  
आकाश पर उल्टि हानेवाले  
ज्याति पुष्टपा को जा ह  
समस्त विश्व का अक्वण्डता क साथी ।

अपना साधा का मन में सजाये  
महान अक्बर  
इतिहास क आघाता मे भग्नाग,  
अक्स्मान जाग उठा  
गनातिया का नम्बी नी मे  
और  
उमने दगा चारा तरफ  
आगरा क उद्याना में ।

'वाटु वेरिय मन-  
 भ्रातिनु वेदत्तिटे-  
 येटुकळतोरम वाट्टि-  
 क्योटुत्तु देवक्यम् जान् ,  
 चोरतन् चुवप्पिलुम्  
 कण्णीरिन् पुळ्ळिप्पिलुम्  
 सारमाम मत्त्येक्यते-  
 वरुण्टेत्तिक्काणिन्चील ।”

अटञ्जू तळन्नोरा-  
 वणपोळ याववणिमे-  
 लटनू नेटुवीप्पाल  
 रण्टु चेम्पनीरितळ ,  
 मुटि टय सहोदर-  
 वलहत्तिक्कत्ति  
 नेटि टमलेट टोरित्य-  
 तञ्चारक्कणम् पोले ।

अम्पलम्, पलपळ्ळिळ,  
 हिडुवुम् मुसन्मानुम्  
 सम्पन्नमावित्तीत  
 नगरम नाट्टिन्पुरम्,  
 मनवरत्तिन् ज्यल-  
 ज्वानयाल मस्वारत्तिन्  
 चिनयावनात्तित्तु  
 विनुम्पुम यमुनया

चुपियिन् चुपियिलत्तन-  
 गारत्ते विपुट्टिन्नरो-  
 प्पापुडी दनयनीन-  
 कणियायुषात्तित्तु ।

“बबर धर्माघता को मने दिखाया  
 कुरान के प्रत्येक पन्ने में  
 ईश्वर की एकता का साक्ष्य ,  
 मगर हाय,  
 मने नही देखा न दिखाया  
 मानव की एकता को  
 खून की लाली में  
 और आसुओं के क्षार में ।’

मुद गयो धकी हुई के पलकें  
 क्षर कर गिर गई  
 गुलाब के फूलों की दो पलुरिया  
 उन आँखों पर  
 निश्वास के कारण,  
 माना  
 भाइया के ग्रह कलह म  
 भारत के ललाट पर  
 लगा हो कटार का घाव,  
 टपक पडे हो रक्त के कण ।

समीप से बहती रही  
 नीलाचल फलाये यमुना  
 भवर भँवर म  
 गोक का घूट पीती हुई  
 सुबकती हुई यह देखकर  
 कि हिंदू और मुसलमानों ने मिलकर  
 बनाया था सम्पन्न जिन  
 मन्दिर, मस्जिद और ग्राम-नगर को  
 वे जल रहे ह  
 धर्माघता की प्रचण्ड आग में  
 बना दी गयी है ससृष्टि की चित्ता ।

दिल्लियिलाह शव-  
 पट्टियिलर गसी-  
 बल्ललालुणने तो  
 तट्टेयोमयिलत्तप्पि ।  
 कार्तिक नक्षत्रङ्गळ  
 जपमालयाय कयिल-  
 च्चारत्तिय रावङ्गट्टोट्टु  
 नोक्कवे विळरिप्पोय ।  
 आरतु ?—शवक्कुटी-  
 रत्तिनेप्पश्चात्ताप-  
 धारयाल ननयक्कुमा-  
 क्कणिलेन्तार माट टम् ।

जपमालये राज्य-  
 लम्भित्तन् गळत्तिवल्-  
 ज्जयियामर गसी-  
 थिरुक्कुम वरेच्चुत्ति ट ,

धारदगनमायी  
 पवित्रम् जपमाल  
 चोरयालूक्कण्णीरिनात ,  
 चेंनालुम् जेरिञ्जलो ।

विरलिन्नट टत्तोळ्ळम्  
 धीग्नू मगाधमाम्  
 वरळ्ळिन्नटिन्नरे-  
 व्मक्कतनुमाणा महान् ।

एन्डिलुम् चरित्रत्तिन्  
 प्रीम्भाम स्वप्नम् पात्रे  
 तनुक्कण्णान् वाणवत्तन्ने  
 तन्न तन् माप्पायम् ।

जा पडा और देव  
 शिवों की एक कदम में  
 जो गाऊ नरा टापिने ना  
 बानी स्तुति  
 दया कि  
 कृतिमानवों की दुखदीह का  
 जने श्यों में लगे हुए थी रात  
 पह नी थी विन्दुव पीनी ।

पर कौन है ?  
 कैसा परिवर्तन आ गया है  
 इन बच्चों में  
 जो था जी है मकर का  
 पचात्राव क बान्जों म ।

विदेवा जी देव ने  
 बाँध ली था कम कर बना तसवीह  
 राय-नरमा क गने में  
 दिनाई देने ला  
 वह पवित्र जपमाना  
 बचन्त बानस  
 मून और आमुजा से तर  
 चूर-चूर हा गया ग्रासन-दण्ड ।

कसा था वह महान  
 नख गिल तक  
 वीरत्व से विमूषित  
 अगाध भक्तिभावना स परिपूरित

विन्दु  
 इतिहास के शानदार सपने की तरह  
 टुकड़े-टुकड़े हो गयी था सन्तनन  
 उमी की आँखा क सामने ।



इष्विनयटम्बत्रयाय  
 चनर्वात्त तनवण्णि-  
 त्तिमकळ पाटिच्चिल्लु-  
 पालेपुम वण्णीराटे ।  
 अन्तरीदात्तिन् मुल-  
 त्तियलुम् परिहास-  
 म्दहासम् पोलोरु  
 कोट्टिळ्ळीनुटन्मिती ।

पूनर्यिवत्तेप्पुरा-  
 तनमाम चित्तियलुम  
 दीनदशनम् रण्टु  
 नयनम मट्टिक्कण्टु ।  
 "इनियुम् ज्वलिक्कयो  
 हिट्टुराज्यत्तिन् स्वप्न-  
 मन्निवायमाम चरि-  
 त्तत्तिनेग्गणिववाते ।  
 मुसल्लमान् समुत्त-  
 माय तनगिरिस्सिवल  
 मुट्टि चूटियतनु  
 वान् सहिच्चित्ता , पयो,  
 हिट्टुरा यत्तिप्रट्टि-  
 त्तर वेत्तुवान् रक्क-  
 विट्टु वान् चारिन्नु  
 वालवुम् पोत्तीला ।'

गिवजि जलाद्रमाम्  
 वण्णिम चिम्मी तल  
 निवरम् भलवळी  
 वारु मूक्कमाय वेज्जा ।

गाहसाह ने बसकर बग कर ली अपनी आम्ने  
आसू की नन्ही-नन्ही बणिवाएँ  
उनम चमक उठी  
शीशे की बनिया-मी ।  
आकास के मुल पर  
जल उठी एक उल्का  
दूर परिहास की भाति ।

पूना की पुरानी चिता में  
दिखायी लिये  
दो नयन  
उदास टिमटिमाते  
अब भी  
इतिहास की दुषपता की उपक्षा कर  
जल रहा है सपना  
हिन्दू साम्राज्य का ?  
मुसलमाना न  
अपने समुन्नत सिर पर  
जो मुकुट पहना  
उस मन नहीं सहा ।  
हिन्दू साम्राज्य की  
नीब ढालन के लिए  
मन रक्त विदुओ का तपण किया  
उस बाल भी न सह सका ।  
शिवाजी ने  
अश्रुपूरित अपन नयन मूँ लिय  
मौन मूँ हाकर  
यह बाणी मुननवाले पवता ने  
अपना मन्मक उठाया ।

"इरळिल् निर्माणमाम्  
 भेदभावनयेलाम् ,  
 अरिय वेळिच्चमा-  
 विभित्तियेस्सहिय्वकुमो ?  
 मुक्कमाम् सत्यत्तिन्दे  
 चित्रमाम् किरणद्ध-  
 ळाक्के स्वमौलिक-  
 वधत्तेयोमिच्चैकिल् !  
 तद्धळिल्प्पुणनेडिक्कल !  
 माधुयम् चारिञ्जुको-  
 णटद्धने नवोदय-  
 मिविटेप्पुलनेडिक्कल !'  
  
 अन्तरीक्षत्तिन् मोन-  
 मी मनाहरमाय  
 चिन्तये लाळिच्चुको-  
 णटनद्धात्तिरियक्कवे  
 चोरतन् गधम् पूसि-  
 दशवसञ्चयम् नक्कि-  
 प्पारम्पेत्तरिप्पियक्कुम  
 जडमामारु वातम्  
 दिल्लियिल प्पञ्चाविल श्री-  
 नगरिल च्चुट्टि टप्पट्टि ट-  
 यल्लिलद्धने निर-  
 द्दुशमाम् विहरिच्चू ।

—१९४८

"भेद भाव की सारी दीवारें  
 अघकार की उपज ह  
 क्या मनोहर प्रकाश  
 इसे सहन करेगा ?  
 एक ही सत्य की ये विचित्र किरण ह  
 ये धम सारे  
 काग,  
 अपनी मौलिक एकता को याद कर पात  
 और आपस में आसिन्धु होत ये,  
 इस तरह यहाँ मुन्दर नवात्य का  
 प्रारम्भ होता । '

बूढ़ अन्तरिक्ष का मौन  
 धम मनाहर भावना को दुलरा रहा था  
 तभी आया दूषित वायु का एक निरकुण क्षात्रा  
 रक्त रजित गघ का अगलेप कर  
 लाशो का आढम्बर चाट कर  
 रात में घूम घूम कर पृथ्वी को भय प्रकम्पित करता  
 दिल्ली में,  
 पजाब में,  
 श्रीनगर में ।

—१९४८

## भारते दु

१

अम्पिठि । येपुपतुम  
कुरेयुम कात्लड्डडळकु  
मुत्पिलाणासकुम्मा नी ?  
इविटे प्यार वदरिल  
बलिय चेविकळुम्  
नीण्डुयत्तैपुम् मूक्कु-  
मलियुम् मिपिकळु-  
मात्तोर वृग्वालन्  
मुक्किलिन नीलवसाटिन्  
चित्तलवळ माटि टच्चिरि-  
च्चवलेच्चेन्लावळ  
नी वरान वक्किप्पोवे  
मेटयिल् ज्जनालयक्क-  
लेत्तिच्चुनाविरक्कोण्डु  
मविटारिल्ले मेम-  
लेलुमक्षमयाटे ?  
प्राणनाम् प्रियमाता—  
धुपवामत्ताल् परि-  
क्षीणयायारो जानि  
चक्कयाम् तापत्तेड्डो ।  
अम्मतन् कयेप्रम्बु  
नावणम् गृहत्तिद्वक्-  
त मन्नाळक्कयादुगा-  
स्वग्गमान्नुण्डाकुवान् ।

ओटक्कुपल

## भारतेन्दु (राष्ट्रपिता)

१

चाद ।

याद है तुझे,

साठेक बप पहले की जान है,

यहा इम पोरबंदर में

बडा-बडी आखें,

लम्बी ऊँची नाक,

और बडे-बडे कानावाला

एक दुबला-पतना बालक

छत पर खिचकी के पाम

उत्तरात्तर अधीर खडा रहना था

उमक-उमक कर पाकता था

जब देर हा जाती थी जाने में तुझे

वादला के नीलारण्य की डालिया हटाते-हटात ।

प्राणा-नी प्यारी मा

गायद उपवास से परिक्षाण हा कर

नीचे कही काम कर रहा हा ।

कितना कष्ट उठाना पडता है

माता के करा को

अपने बच्चा के लिए

घर में

एक दूमरे स्वर्ग की रचना करने में ।

म, म्मच्चिन्निनुम् तापे-  
यूक्कोटिच्चेन्नरियिच्चो-  
रम्म वाड्डणम मक्-  
नोनु नी नेरे चेत्ताल् ।

वत्सलमाताविटे-  
याद्रचुम्बनम्पोलो-  
हत्सवम् स्नेहिवकुमा  
'मोहनदास'तिल्ल ।

तारयळ हर्पाल चिम्मु-  
मिममेलानन्दाधु-

षारतनूतिळक्कमो-  
टक्कुमारने नाक्कि,

ई मक्कन् वळरुम्पा-  
ळाणु पुण्ययामित्ये ।

नी मन्निन् विरीटमा-  
कुन्नते धन्नाळोति ।

२  
अम्पिळि, निन्नेप्पोले  
सुन्दरनल्लेन्नालु-

मन्पिनोटक्कव-  
नमूतात्मवनायि

भारतचरित्रत्तिन्  
धन्नवाळत्तिल्स्मोम्पा-

दारदानन् पिन्ने  
मोहनन् मदम् पाद्दडी,

भीतिनिदचलमायि-  
क्कानत्तिन् मणत्तट्टिन्

पानि पूष्टुपाय्, क्कोटि  
तक्कन्नु, चाल् वाणाते,

क्किटन्न 'विपक्क', न-  
इडुन्ननु वाणाय्, वाणा-

ओटक्कुपल

अगर सामने चला जाता तू, चाँद,  
 तो वह छत से नीच दीड पड़ता  
 और माता को चन्द्रोदय का समाचार दे कर  
 उमका चुम्बन पाता  
 प्यार भरी माँ के  
 स्नेहाक्ष चुम्बन से बढकर  
 मोहनदास' के लिए  
 कोई दूसरा उल्लव ही नही था ।  
 हृष भुकुलित नयना से  
 आन-दाश्रु प्रदीप्त तारो ने  
 उस बच्चे की ओर देख कर  
 कहा

हे पुण्यभूमि भारत,  
 जब यह लाडला बडा हागा  
 तब तुम पृथ्वी का मुबुट बनोगी

२

हे चाँद,  
 यद्यपि तेरी भाति सुन्दर नही हुआ  
 तथापि वह अवलक  
 आद्र और अमृतात्मक बना  
 भारत के इतिहास के क्षितिज म  
 वह सौम्य, उदारदगान मोहन  
 फिर धीरे धीरे  
 ऊपर की ओर गतिशील हुआ ।  
 प्राची  
 जो काल के सवत म जायी घँसी  
 माग मली  
 भय से निश्चल हो कर  
 नेतु-खण्डित पडी थी  
 वह धीरे धीरे गतिमय लिखायी दी,



युटने चैतयतिन्  
वेलियेट टवुम नोडे

आयिरम तिरकळाय  
विशोभमलयसकु-

यायि, मुद्रडुक्यायी  
दुस्तरप्रतिवधम् ।

भूतकालति नृत्तापि त-  
यिटट नरूरम पोम्कान

नूरिवौतुवमान  
चरित्रमारभिच्चु ।

प्राचियडने पाडि-  
कुतिकोयात्तंतुन

वीचिकळटिञ्चेत्र  
राज्यदृष्टुणर्तिल ।

मरणविकारड-  
ळेतन्तु वाणिञ्चील

महियिलजम्यत भविञ्च  
साम्राज्यडळ ।

पारतश्चत्ति नृमिट-  
कुम्पायी विपविनन

ञ्चारयिल वरणीमिटे  
चुपियिल स्वयम तापि त

पानियुम् मरिपिञ्च  
साम्राज्यस्वाडळकावडुम्

पालोळि परतुम्  
गात्विनप्रवागतिल्

भारतडु हा, वाटि-  
कान्तुत्तानयम्

घारवुम् विष्टनवु-  
माय वम्मनिन् म्यम् ।

ओटवडुपल्

चारा आर

नयी चेतना का ज्वार लक्षित हुआ,  
सारे दुस्तर प्रतिग्रह डूब गये,  
हज़ारा लहरा में हलचल मच गयी  
इतिहास के अतीत के भीतर  
डाल दिये गये लगर को  
अत्यन्त आनन्द के साथ  
ऊपर खीचना शुरू किया ।  
जम प्राची उठी  
और आगे बढ़ी ता  
मदामत्त हो कर गरजती आती  
लहरो के ज्वार में  
कितने ही देश जाग उठे ।  
अजेयता के दप से भरे  
साम्राज्या ने  
कितने प्रपच नहीं रचाये ।

जिन साम्राज्यवादी लुटेरा न  
गुलामी में जकड़ी प्राची को  
खून और आसू के भँवर में  
डुबो कर अधमरा कर दिया था,  
उतपर भी  
भारतेन्दु ने  
दुग्ध धवल सात्विक प्रकाश फलाया  
और उस प्रकाश में  
उनके क्रूर कम का विह्वल रूप  
उजागर कर दिया ।

युटने चतयत्तिन्  
 वेलियेट टवुम नीळे  
 आयिरम निरवळाय  
 विसोभमनयक्कुक्-  
 यायि, मुड्डुक्कायी  
 दुस्तरप्रतिप्रथम ।  
 भूतवालतिल्लतापि त्त-  
 पिट्ट नकूरम पोक्कान  
 नूरिकीतुनमात्र  
 चरियमारभिच्चु ।  
 प्राचियड्डने पाडि-  
 क्तुतिक्केयात्तंतुन  
 वीचिक्कळिट्चेत्र  
 राज्यड्डुणनीन ।  
 मरणविवारड्ड-  
 लेन्नन्नु काणिच्चोन्न  
 महियिनज्ययन भविच्च  
 माम्नाज्यड्डळ ।

पारत श्र्यतिल्लुक्किट-  
 कुम्पायी विक्कपविने'  
 च्चारयिल, वारणीगिट  
 चुपियिन् स्वयम् तापित्त  
 पातियुम् मरिणिच्च  
 माम्नाज्यस्त्राड्डस्त्रावकुम्  
 पालोड्डि परत्तुन्न  
 मात्किक्कप्रपात्तिल  
 भारतेड्डु हा, पाट्टि-  
 वरात्तुत्तानयस्त्रे  
 पारवुम् विट्टवु-  
 माय कम्मत्तिन् रूपम् ।

श्रोतबनुयल

चारा आर

नयी चेतना का ज्वार लक्षित हुआ,  
सार दुस्तर प्रतिबंध डूब गये,  
हज़ारा लहरा में हलचल मच गयी,  
इतिहास व अतीत के भीतर  
ढाल दिये गये लगर को  
अत्यन्त आनन्द व साय  
ऊपर साचना शुरू किया ।  
जब प्राची उठी,  
और आगे बनी, ता  
मनामत्त हा कर गरजती आती  
लहरा के ज्वार में  
कितने हा देश जाग उठे ।  
अजयता व दप से भरे  
साम्राज्या ने  
कितने प्रपच नहीं रचाये ।

जिन साम्राज्यवादी लुटेरा ने  
गुलामी में जकडी प्राची को  
खून और आसू के भवर मे  
डुबो कर अधमरा कर दिया था,  
उनपर भी  
भारते-दु ने  
दुग्ध धवल सात्विक प्रकाश फलाया,  
और उस प्रकाश में  
उनके क्रूर कम का विकृत रूप  
उजागर कर दिया ।

भारतम् विपश्चिटे  
नेतृत्वम् वहिचिचिता  
भाविपिल विद्वासतो-  
टिनियुम् कुतियक्कुनु ।

३  
अम्पिळि, निनेप्पोले  
मोळिल निप्रिल्ला 'बाप्पु'  
तन्पिरनाटिड्मले-  
ञ्चेट टमणवुटिल्लारुम  
पुतिय वेळिच्चवुम्  
धैयवुम सौदयवुम  
पोतुविल् वळर्तुवान्  
स्वानत्रयम विटत्तुवान्  
मलिननिलड्डळिल्लु-  
क्कण्णीरिन वयड्डळि-  
लेळिय मनुष्यर् च-  
मार्द्रनाम् मग्ग चुटि ट ।  
स्नेहपूण्णमामुळ्ळम  
मातभूदु स्वत्तिटे  
दाहक् प्रसरत्ताल्  
परितप्नमाववे,  
वेवलसत्पत्तिने-  
तिरञ्जा महानाद्रं-  
जीवनिलहिमये-  
वाराट्टित्ति, यनिन् नाळम्  
मचनिव्वाने चूपुम  
रक्कसाट्टुवाटि टम्-  
स्सचरिव्वयापावुम  
वेळिच्चम् वारुवुवान् ।

कोटवपुयस

ला,

भारत प्राचा का नेतृत्व स्वीकार कर  
अपने उज्ज्वल भविष्य के प्रति आश्वस्त होकर  
और भी आगे की ओर बढ़ रहा है ।

३

हे चाँद,

तेरी भाति

बापू कभी अड़ूते ऊपर नहीं रहे ,

अपनी जन्मभूमि की

गरीब झोपड़ियों में

नया आलोक,

नया धीरज

और नया सौंदर्य पूरित करने के लिए,

स्वातंत्र्य भावना को विकसित करने के लिए,

जीवन के मलिन तटा पर

आसू के गहरे तला में

अविचन दीन मानवा के साथ ही

वह सदा घूमते रहे ।

जन्मभूमि के दुःख का

दाहक ताप पाकर

जब वह स्नेहपूर्ण हृदय

धुलस गया तो

एकान्त सत्य की खोज में निरत

उस महात्मा ने मानवों की आद्र आत्मा में

अहिंसा की ज्योति जगायी

जिसकी लौ चारों ओर के नारकीय चण्डवात में भी

बचल रहती है, और

सब को प्रकाश देने के लिए

चारों ओर जल गयी है ।

अम्पिळि, करयुव ,  
 कूरिगट्टिने वेनान  
 वेम्पुमा विश्वत्तिटे  
 मगळविळक्किने,  
 तन्चराचरस्नेहम  
 निरयुम विलालमाम  
 मणचेरात्तिने मर-  
 घेरियुम विळक्किने,  
 भूविनु यत्रत्तिटे  
 निपलाल मरञ्जेपुम  
 जीवने वीण्टुम् वाट्टि-  
 क्काटुकुम विळक्किने,  
 भेदबुद्धितन् करिम्  
 कोट्टुळ कत्तिरिनाल  
 भेदनम् चेयवान तेळि-  
 ञ्जाळिटुम् विळक्किने,  
 पारिलेखुतघ्नत-  
 याक्केयुमान्नायच्चन्न  
 पाप वन्नरमाशुण्टायी  
 मृतिमलरियुवान् !

पुलितन् वनल्वण्णुम  
 सिहत्तिन् रत्ताद्रमाम्  
 वनिय नपड्ळुम्  
 मणत्तिन् विपप्पलुम्  
 मानर्गत्तिन् लस्मूधि-  
 यक्कुन्नाए परिण्टुत-  
 मानवराणिष्णाग्लि -  
 मगमाणिष्णुम मत्त्यन् !

हे चाद,  
 करो हदन,  
 क्यावि  
 आज एक पापी हाथ  
 समस्त वृत्तघ्नता का पुजीभूत रूप  
 प्रस्तुत हुआ पटक देने के लिए मृत्यु गिला पर  
 विश्व के उस भगल-दीप का,  
 जा आतुर था  
 घोर अधकार को ध्वस्त करने के लिए  
 जो परिपूर्ण था  
 चराचर के प्रेम से,  
 जो जल रहा था  
 अपनी क्षीण काया की उपेक्षा कर,  
 ज्यातित था जो  
 इसलिए कि  
 पृथ्वी को दिखा दे फिर से  
 यत्रा की परछाई में छिपी उसकी आत्मा को,  
 जो था अत्यन्त प्राग्ज्वलित  
 अपनी किरणा से दिन भिन करने के लिए  
 भेद भावना के तमस परकाटो को ।

अपने अन्तरग में पालते ह  
 ये सम्य मानव  
 बाघ की जलती हुई जात  
 सिंह के रक्त भरे नग  
 साँप के विपले दाँत  
 सचमुच आज का मानव पगु ही तो है ।



जीविततिने स्वच्छ-

प्राथनयाक्वक्काष्टु

भूविले विशुद्धियाय

वापोरश्शान्ताकारन

हिन्दुवे, मुसल्माने-

शिशखनेयारे सत्य-

बिदुविन् विकारमा-

णेल्लामे तोम्मिप्पिक्के,

सुन्दरसनातन-

चैत यत्तिलेयुक्केव-

सान्दत्तालवरटे

हृत्तिनेयुयत्तवे

छत्रिली प्रपत्ते

प्रपत्तिङ्गलत्तने-

त्तन्नेयुमापूण्णमाय

दक्षिच्चु वक्कूप्पुम्पोळ

मानवधगतिन्टे

पापत्ताल पिळ्ळिन्निता

मारिटम् चरित्रति, -

शैट्टुक्ळ चुवत्तुपोय ।

पिळ्ळु विश्वत्तिटे

शुभ्रमाम हत्तुम, रक्तोद्-

गळनाल ननञ्जुपाय्

निम्मलत्ता घ्याम्बरम् ।

पक्कलित् मुग्गत्तुनि-

शेट्टु चोरत्तुळ्ळिळ

परिपाटलमाय

भानुविम्भत्तिलक्कूटि ।

कालत्तिन् मिपियिन-

क्कण्णुनीक्कण्णमायि -

क्कण्णुक्क विक्कट्टुव-

यायी जट्टटे गाळम् ।

वह मौम्याकार,  
 जिमने  
 जीवन का बनाया एक पावन प्राथना  
 और विगजित हुआ जा  
 भूमि की विगुद्धि के रूप में,  
 हिन्दू, मुसलमान सिख—मद का सिगाया  
 कि ह मत्र  
 एक ही सभकणिका के विविध अंग,  
 सुन्दर मनातन चैतन्य की आर  
 एक ही मन्दन मे उनके चित्त का ऊच्चमुची किया,  
 जब वह अपने में  
 सारा ममार  
 और सार ममार में  
 अपने का दखकर  
 हाथ जाड बन्दना कर रहे थे,  
 ता मानव वग्न के पापों ने  
 उनका हृदय विन्नीण कर डाला,  
 इतिहास के पत्रे खाल हा गये !  
 पट गया  
 विन्व का निमत वक्ष,  
 रक्त बहा प्तना कि  
 विमल मन्व्याकारीन आनाग  
 भोग गया !  
 दिवस के मुख से  
 हन पना गौर रिम्ब  
 रक्त का बूद-सा !  
 ला,  
 काल के आनन पर हुलके अथुनग-सा  
 हमार यह भूगाल  
 अभी भा वमित  
 सिगाया देता है !

अम्पिळि ! दिक्किन् तोळिल  
 मूर्च्छियक्कयल्ली ? नीयुळ्-  
 क्काम्पिने वेक्किक्कुमी-  
 क्कथयाल् विळत्तल्लो ।

इनि विस्तरिक्कुती-  
 लार्द्रात्मन् ! चुटुकणीर्,  
 किनियुम् वरळुमा-  
 यित्य निल्कट्टे , पोक्क !

पारिलम्पिळि ! नी त-  
 धरळुम् जगमनो-  
 हारियाम् वेळिच्चम् पोय्-  
 मरयुम् निन्नोटोप्पम् ।

वटलिन् वाचालमाम्  
 चुण्टिलो वेळ्ळाम्पलिन्  
 वरळिडक्कले स्निग्ध-  
 मधुराश्रुविकलो,

मलतन् चिन्तामूक्-  
 तगमाम् गिरस्सिलो  
 निलक्कोळ्क्कयिल्लितिन्  
 त्तमयुम् कुळिर मयुम् ।

भारते दुवो तिरा—  
 भूतनाय्तीर्न्नालुम्  
 धीरमाम् तल्मन्देग-  
 धार्म्मिकप्रभापूरम्

जीवितगरणिये-  
 स्मुन्दरमाक्किक्कोण्टु  
 भाक्कियिल् निरन्तरम् !  
 परक्कुम् वट्टुक्करम् !

चाद !

क्या तू

दिगाया के कंधे पर सिर रख कर

मूर्च्छित हो गया है !

दिल दहलानेवाली इस क्या को सुनकर

तू फक् पड गया है ?

नहीं बखानूंगा यह क्या

हे आद्र हृदय,

विदा लो तुम ,

जलते आंसुआ से मरा हृदय लेकर

यह भारत खडा रहे शोकमग्न !

हे चाँद,

तेरे जाते ही

विदा ले लेगा ससार से

तेरा जगभाहिन प्रकाश !

नहीं टहर पायेगी भुमगता

सागर के वाचाल अधरा पर

धवल कुमुदा के उर के

स्निग्ध मधुर अश्रु में

पवत के चिन्तामूलक उत्तुग हृदय में !

यद्यपि

भारतेन्दु तिरोहित हो गया,

उसके धीर सन्देश का घामिक प्रभा पूर

जीवन के पथ का

सुंदर और आलोकमय बनाता हुआ

भविष्य में बहुत दूर तक फैलेगा !

नाळत्तेवकेटुत्तुवान्

पाञ्जेत्तुम करिम्पाट ट

चीळनु चिरकट टु

चाम्पलाम , नाळम नित्वनुम्,

चित्तयिलद्दहिच्चतु

मृत्युविन् चिरकत्रे ,

जितमत्युवाभात्मा-

वैत्तेनुम जयियक्कुम्भू !

—१९४८

ज्वाला का बुझाने के लिए  
 कूद पड़ते हैं काले काले पतंग  
 किन्तु वे जल्दी ही पखहीत बन कर  
 राख हो जाते हैं,  
 तब भी ज्वाला रहती है अक्षुण्ण ही  
 चित्ता म जो जला  
 वह तो केवल मृत्यु का पक्ष है  
 आत्मा जो जितमृत्यु है,  
 चिरन्तन रहा करती है !

—१९४८